2018-2020

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन

(PMMMNMTT)

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन के अंतर्गत संचालित)

शिक्षा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

शिक्षा विद्यापीठ

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन (PMMMNMTT)

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन योजना के अंतर्गत संचालित)

शिक्षा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

अनुक्रमणिका

1.	परिचय	4
2.	प्रमुख उद्देश्य	5
3.	संकाय सदस्यों / अधिकारियों के विवरण	6
4.	विद्यापीठ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों का विवरण :	7
	4.1 शिक्षण एवं अधिगम का निर्माणवादी उपागम	9
	4.2 एस.पी.एस.एस. के माध्यम से सामाजिक विज्ञान में अनुप्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ	27
	4.3 भारतीय शिक्षा पद्धति	29
	4.4 एस.पी.एस.एस. के माध्यम से सामाजिक विज्ञान में अनुप्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ	33
	4.5 चार दिवसीय अकादमिक नेतृत्त्व प्रशिक्षण कार्यक्रम	43
	4.6 गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं अधिगम	56
	4.7 शैक्षिक अनुसंधान के डॉक्टरेट कार्यक्रम हेतु पाठ्यचर्या विकास	57
	4.8 अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम	61
	4.9 संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम : फेस-1	71
	4.10 शैक्षिक शोध में संबंधित साहित्य समीक्षा लेखन	84
	4.11 संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम : फेस-2	88
	4.12 भाषा, पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति	112
	4.13 शिक्षण कौशल कार्यशाला	121
	4.14 जीवन कौशल कार्यशाला	129
	4.15 शिक्षण सहायक सामग्री का विकास	132
	4.16 शैक्षिक अनुसंधान में प्रतिमान विस्थापन	134
	4.17 भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि	146
	4.18 संकाय विकास कार्यक्रम	157
	4.19 सभ्यता की विरासत एवं भविष्य की सभ्यता: गांधी एवं धर्मपाल की दृष्टि	162
	4.20 अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियां, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य	165
	4.21 संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम : फेस-3	180
	4.22 अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम	197
	4.23 अध्यापक शिक्षा के लिए ई -पाठ्य वस्तु तथा मूक्स का विकास	205

परिचय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में शिक्षा विद्यापीठ की स्थापना वर्ष 2014 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन (Pandit Madan Mohan Malaviya National Mission on Teachers and Teaching) परियोजना के अंतर्गत की गई है। जिसका प्रस्ताव महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के द्वारा रखा गया तथा पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन (PMMMNMTT) परियोजना के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ ने नियमित पठन, पाठन का कार्य वर्ष 2017 से प्रारंभ किया।

शिक्षा विद्यापीठ की स्थापना के उद्देश्य अध्यापक शिक्षा, वैकल्पिक शिक्षा, विज्ञान शिक्षा, शिक्षा दर्शन, भाषा शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, शैक्षिक तकनीकी तथा ज्ञानमीमांसा एवं निर्माणवादी शिक्षा पर अनुसंधान एवं नवाचार पर बल तथा पाठ्यचर्या रूपरेखा के बदलते परिप्रेक्ष्य में अधिगम एवं आकलन के वैकल्पिक प्रविधियों का विकास एवं एकीकरण करना है।

विश्वविद्यालय के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन के अंतर्गत स्थापित शिक्षा विद्यापीठ

प्रमुख उद्देश्य

शिक्षा विद्यापीठ निम्नलिखित कार्यक्रमों / योजनाओं के प्रति समर्पित है-

1. सत्र 2019-20 में माध्यमिक स्तर पर एकीकृत अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम (विज्ञान एवं कला) का प्रारंभ।
2. सत्र 2019-20 में शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम का प्रारंभ।
3. सत्र 2019-20 में अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिए हिंदी शिक्षणशास्त्र पाठ्यक्रम का प्रारंभ।
4. शैक्षिक अध्ययन के डॉक्टरेट कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में वैशिष्ट्य विषय-पत्रों के शिक्षण-अधिगम के लिए क्षेत्रीय कार्य का समावेश।
5. 'वैकल्पिक एवं नवाचारी अनुदेशन', 'पाठ्यचर्या संशोधन', 'संज्ञानात्मक विज्ञान एवं शिक्षा' जैसे शोध क्षेत्रों में अनुसंधान पर बल।
6. अत्याधुनिक पुस्तकालय, शैक्षिक स्टूडियो, भाषा प्रयोगशाला तथा स्मार्ट कक्षाओं का विकास।
7. शिक्षा विद्यापीठ परियोजना, PMMMNMTT के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन –
    - 'मूक्स के माध्यम से शिक्षण क्षमता का विकास' विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला।
    - कुलसचिव / परीक्षा नियंत्रक / सहायक कुलसचिव / वित्त अधिकारी के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम।
    - संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम -Phase-3।
    - शैक्षिक अनुसंधान में प्रतिमान विस्थापन विषयक - राष्ट्रीय परिचर्चा।
    - सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा में कौशल विकास कार्यक्रम विषयक राष्ट्रीय परिचर्चा।

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**, **प्रो. मनोज कुमार** तथा शिक्षा विद्यापीठ के अध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** बैठक करते हुए।

संकाय सदस्यों/अधिकारियों के विवरण

डॉ .गोपाल कृष्ण ठाकुर
(अध्यक्ष, शिक्षा विभाग)

प्रो.रजनीश कुमार शुक्ल
(माननीय कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि.)

डॉ .शिरीष पाल सिंह
(अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग)

डॉ. ऋषभ कुमार मिश्रा
(सहायक प्रोफेसर)

श्रीमती सारिका राय शर्मा
(सहायक प्रोफेसर)

श्रीमती शिल्पी कुमारी
(सहायक प्रोफेसर)

श्री समरजीत यादव
(सहायक प्रोफेसर)

डॉ. आर पुष्पा नामदेव
(सहायक प्रोफेसर)

श्री धर्मेन्द्र शंभरकर
(सहायक प्रोफेसर)

डॉ. सुहाषिनी बाजपेयी
(सहायक प्रोफेसर)

डॉ. भरत कुमार पंडा
(सहयक प्रोफेसर)

डॉ. अप्रमेय मिश्रा
(सहायक प्रोफेसर)

डॉ. शेष कुमार शर्मा
(सहायक प्रोफेसर)

श्रीमती प्रीति खोड़े
(सहायक प्रोफेसर)

सरिता चौधरी
(सहायक प्रोफेसर)

डॉ. रामार्चा प्रसाद पाण्डेय
(सहायक प्रोफेसर)

शिक्षा विद्यापीठ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों का विवरण

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन (PMMMNMTT) के अंतर्गत (2018-20) में आयोजित कार्यक्रम

कार्यक्रम

क्र. स.	कार्यक्रम – विवरण	कार्यक्रम का स्वरूप	अवधि	कार्यक्रम स्थल	आयोजक
1	शिक्षण एवं अधिगम का निर्माणवादी उपागम	राष्ट्रीय कार्यशाला	30 जनवरी से 01 फरवरी, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
2	एस. पी. एस. एस. के माध्यम से सामाजिक विज्ञान में अनुप्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ	राष्ट्रीय कार्यशाला	12-15 फरवरी, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
3	भारतीय शिक्षा पद्धति	राष्ट्रीय परिचर्चा	23 फरवरी, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
4	एस. पी. एस. एस. के माध्यम से सामाजिक विज्ञान में अनुप्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ	राष्ट्रीय कार्यशाला	21-28 मार्च, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
5	उच्च शिक्षा संस्थानों में माननीय कुलपति, प्रति माननीय कुलपति, निर्देशक, अधिष्ठाता, अध्यक्ष एवं विभागाध्यक्षयों के लिए चार दिवसीय अकादमिक नेतृत्त्व प्रशिक्षण कार्यक्रम	राष्ट्रीय कार्यशाला	01-04 मई, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
6	गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं अधिगम	विद्यालयी प्रधानाचार्य सम्मेलन	24 जुलाई, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
7	शैक्षिक अनुसंधान के डॉक्टरेट कार्यक्रम हेतु पाठ्यचर्या विकास	राष्ट्रीय कार्यशाला	10-12 सितंबर, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
8	अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम	राष्ट्रीय कार्यशाला	26-28 सितंबर, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
9	संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम	अनुप्रेरण कार्यक्रम	16 नवंबर-14 दिसंबर, 2018	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
10	शैक्षिक शोध में संबंधित साहित्य समीक्षा लेखन	राष्ट्रीय कार्यशाला	04 – 05 अप्रैल, 2019	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
11	संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम	अनुप्रेरण कार्यक्रम	24 जून -23 जुलाई , 2019	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
12	भाषा, पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति	राष्ट्रीय संवाद	25-26 जून, 2019	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा

13	शिक्षण कौशल कार्यशाला	राष्ट्रीय कार्यशाला	1-15 जुलाई , 2019	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
14	जीवन कौशल कार्यशाला	राष्ट्रीय कार्यशाला	24-26 जुलाई , 2019	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
15	शिक्षण सहायक सामग्री का विकास	राष्ट्रीय कार्यशाला	30-31 जुलाई, 2019	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
16	शैक्षिक अनुसंधान में प्रतिमान विस्थापन	राष्ट्रीय कार्यशाला	10- 14 दिसंबर, 2019	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
17	भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि	राष्ट्रीय कार्यशाला	05-07 फरवरी, 2020	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
18	संकाय विकास कार्यक्रम	राष्ट्रीय कार्यशाला	10-15 फरवरी, 2020	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
19	सभ्यता की विरासत एवं भविष्य की सभ्यता: गांधी एवं धर्मपाल की दृष्टि	राष्ट्रीय संगोष्ठी	18-19 फरवरी, 2020	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
20	अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियां, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य	राष्ट्रीय संगोष्ठी	20-21फरवरी, 2020	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
21	संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम : फेस-3	अनुप्रेरण कार्यक्रम	24 फरवरी से 24 मार्च, 2020	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
22	अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम	राष्ट्रीय कार्यशाला	26-28 फरवरी, 2020	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा
23	अध्यापक शिक्षा के लिए ई -पाठ्य वस्तु तथा मूक्स का विकास	राष्ट्रीय कार्यशाला	02-06 मार्च, 2020	वर्धा	शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा

1. 30 जनवरी से 01 फरवरी, 2018 को आयोजित 'शिक्षण एवं अधिगम का निर्माणवादी उपागम' (Constructivist Approach of Teaching and Learning)

दिनांक : 30-01-2018

उद्घाटन सत्र : (समय- 10:00- 11:30 AM)

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक एवं गांधीवादी विचारक **प्रो. मनोज कुमार** (कार्यकारी माननीय कुलपति एवं अधिष्ठाता, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा) ने किया।

कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए मुख्य अथिति **प्रो. मनोज कुमार** एवं **प्रो. एम. ए. सिद्दीकी**

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में **प्रो.एम.ए. सिद्दीकी** *(पूर्व अध्यक्ष, एन.सी.टी.ई., मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली)* उपस्थित थे। डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर *(अध्यक्ष, शिक्षा विभाग एवं कार्यशाला निदेशक)* ने अपने शब्द सुमनों से अतिथियों का स्वागत किया तथा कहा कि इस सत्र के मुख्य अतिथि **प्रो.एम.ए. सिद्दीकी** किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं, वे स्वयं में निर्माणवाद के प्रतिमूर्ति हैं। इन्होंने बताया कि निर्माणवादी उपागम इस बात की वकालत करता है कि ज्ञान का स्थानांतरण नहीं होता, अपितु प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान का निर्माण स्वयं करता है। वह अपने परिवेश के साथ अंत:क्रिया के फलस्वरूप प्राप्त अनुभवों को ज्ञान में रूपांतरित करता है। आज आवश्यकता है कि हमारी शिक्षण-अधिगम व्यवस्था निर्माणवादी उपागम को व्यापक स्थान प्रदान करें।

डॉ. शिरीष पाल सिंह *(सह प्रोफेसर, शिक्षा विभाग एवं कार्यशाला सचिव)* ने कार्यशाला की प्रस्तावना प्रतिभागियों के समक्ष रखी तथा उन्हें इसके लक्ष्यों एवं उद्देश्यों से अवगत कराया। इन्होंने बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य निर्माणवादी शिक्षण-अधिगम उपागम के विभिन्न तत्वों की आलोचनात्मक समझ विकसित करना तथा अपने दैनंदिन शिक्षण-अधिगम के लिए ऐसे युक्तियों, प्रतिमानों का चयन या निर्माण करना है, जहाँ बच्चे स्वयं ज्ञान का निर्माण करें तथा शिक्षक इस प्रक्रिया में एक सहयोगी एवं मार्गदर्शक की भूमिका निभाएं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ICT के एकीकरण के द्वारा पारस्परिक सहयोग एवं अंत:क्रिया के

अवसर किस प्रकार उत्पन्न किए जा सकते हैं, कार्यशाला में इस पर भी चर्चा किया गया। साथ ही निर्माणवादी कक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधियों पर भी विचार किया गया। आगे इन्होंने यह बताया कि निर्माणवादी शिक्षण शास्त्रीय सिद्धांतों का उपयोग करते हुए विभिन्न विषयों में पाठ योजना का निर्माण करना इस कार्यशाला का मुख्य लक्ष्य होगा।

डॉ. शिरीष पाल सिंह (सह प्रोफेसर, शिक्षा विभाग) प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करते हुए।

प्रो.एम.ए. सिद्दीकी ने अपने उद्बोधन में बुनियादी शिक्षा (1937) का संदर्भ लेते हुए बताया कि **डॉ. जाकिर हुसैन** को बुनियादी शिक्षा योजना का ड्राफ्ट तैयार करने का जिम्मा सौंपा गया। अपने वक्तव्य में इन्होंने बताया कि बुनियादी शिक्षा योजना निर्माणवाद का बहुत ही सटीक उदाहरण है तथा आज भी वह उतनी ही प्रासंगिक है। इन्होंने फिनलैंड की शिक्षा व्यवस्था में किस प्रकार निर्माणवाद को समाहित किया गया है, इसका भी उल्लेख किया। अपने वक्तव्य में **प्रो. एम.ए.सिद्दीकी** ने कहा कि बच्चों के अंदर जो खजाना (विचार) है उसको कक्षा में स्थान देने का प्रयास करें। प्रत्येक बच्चे का अपना सीखने का तरीका और सीखने का स्तर होता है, एक निर्माणवादी शिक्षक को इन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी ने 1937 में शिक्षा का जो वैकल्पिक मॉडल दिया। उस पर हमें पुनःविचार करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही इन्होंने कार्यशाला के सफल आयोजन की शुभकामनाएं भी दी।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित **प्रो. एम.ए. सिद्दीकी** (शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली)

प्रो. मनोज कुमार ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि 1917 में ही चंपारण में बुनियादी विद्यालय खोला गया, जो कि निर्माणवादी पद्धति पर ही आधारित हैं। आपने अपने वक्तव्य में कहा कि मनुष्य सांवेगिक प्राणी के साथ-साथ एक तार्किक प्राणी भी है वह लोगों के आचरण एवं व्यवहार से अधिक सीखता है तथा अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करता है। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ.भरत कुमार पंडा *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग)* ने अपने करिश्माई भाव-भंगिमा के साथ किया।

कार्यशाला में वक्तव्य देते हुए **प्रो. मनोज कुमार** (अधिष्ठाता, मानविकी एवं समाज विज्ञान विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा)

समापन सत्र में श्रीमती शिल्पी कुमारी *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग एवं कार्यशाला समन्वयक)* ने सभी अतिथियों, विषय विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

श्रीमती शिल्पी कुमारी (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग) उद्घाटन सत्र समापन करते हुए।

प्रथम सत्र: (समय 11:40 AM-1:30 PM)

विषय: शिक्षण एवं अधिगम में निर्माणवादी उपागम की सैद्धांतिक अवधारणा (Theoretical Concept of Constructivist Approach of Teaching and Learning)

विषय विशेषज्ञ : डॉ. दिबाकर सारंगी, डॉ. शबाना अशरफ, विषय प्रवर्तन- डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर

प्रथम सत्र के आरंभ में **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** ने विषय प्रवर्तन करते हुए वर्तमान शैक्षिक जगत में नवाचार हेतु निर्माणवादी उपागम की उपयोगिता पर चर्चा की। इन्होंने प्रागनुभाविक (Apriari) एवं अनुभव आश्रित (Posteriori) ज्ञान की व्याख्या करते हुए बताया कि मनुष्य अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं इसी जीव जगत में अपने अनुभवों द्वारा करता है। इसके पश्चात उन्होंने **डॉ. दिबाकर सारंगी** *(सह प्रोफेसर, डॉ पी एम. इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन एजुकेशन, संबलपुर)* को इस सत्र की विषय-वस्तु पर चर्चा के लिए आमंत्रित किया।

प्रथम सत्र में **डॉ. दिबाकर सारंगी** ने निर्माणवादी शिक्षणशास्त्र के दार्शनिक आधार (Philosophical Foundations of Constructivist Pedagogy) पर प्रकाश डालते हुए निर्माणवादी तत्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा के संबंध में विस्तारपूर्वक चर्चा की। इन्होंने बताया कि क्या पढाएँ?, क्यों पढाएँ? और कैसे पढाएँ? इन प्रश्नों का उत्तर निर्माणवादी तत्वमीमांसा में ढूँढ सकते हैं। निर्माणवाद एक पूर्ण दार्शनिक स्थिति की तुलना में प्रायः एक परिप्रेक्ष्य माना जाता है। यह वास्तविकता की मौजूदगी को नकारता नहीं है, अपितु हम जो विश्व के बारे में जानते हैं, वह केवल हमारे अनुभवों पर आधारित एक व्याख्या है। एक ही वस्तु के बारे में लोगों का प्रत्यक्षण अलग-अलग हो सकता है। साथ-ही-साथ प्राप्त अनुभवों के द्वारा किसी वस्तु के संबंध में हमारे विचारों में परिवर्तन भी आ सकता है। मानव के लिए प्रासंगिक दुनिया उसकी वस्तुनिष्ठ दुनिया का संकल्पनात्मक मॉडल है। निर्माणवादी ज्ञानमीमांसा की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि कोई ज्ञान अंतिम नहीं है, अपितु यह व्यक्तिनिष्ठ है।

कार्यशाला में आए हुए मुख्य अतिथि **डॉ. दिबाकर सारंगी** अपने वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए।

मनुष्य न तो निष्क्रिय रूप से ज्ञान प्राप्त करता है और न ही बाह्य स्रोतों से ज्ञान की खोज करता है, अपितु वह अपने जीवन में व्यक्तिगत या सामजिक रूप से प्राप्त अनुभवों को ज्ञान में रूपांतरित करता है तथा वर्तमान ज्ञान अनुवर्ती ज्ञान को ढालता है। ज्ञान

व्यक्ति और संस्कृति में वितरित होता है तथा यह व्यक्तियों के समूहों और परिवेश में कलाकृतियों के साथ अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप निर्मित होता है। वैज्ञानिक सच्चाई भी वस्तुतः मानवीय अनुभवों और अवधारणाओं का सामान्यीकृत सार ही है।

विषय विशेषज्ञ डॉ. दिबाकर सारंगी के पश्चात **डॉ. शबाना अशरफ** *(सहायक प्रोफेसर, सी.टी.ई, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, भोपाल)* को निर्माणवादी सिद्धांतों पर वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया गया। महोदया ने अपने वक्तव्य में 'सीखने का निर्माणवादी सिद्धांत-संज्ञानात्मक, सामाजिक और मौलिक निर्माणवाद पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। संज्ञानात्मक निर्माणवादी जहाँ वास्तविकता के यथार्थ, मानसिक संरचना के निर्माण पर बल देते हैं तथा मौलिक निर्माणवादी एक अनुभवात्मक वास्तविकता के निर्माण पर, वहीं सामाजिक निर्माणवादी आपसी सहमति तथा सामाजिक रूप से निर्मित वास्तविकता के निर्माण पर जोर देते हैं। इन्होंने बताया कि शिक्षकों को बच्चों के स्तर के अनुसार शिक्षण करना चाहिए। बच्चा कोई कोरा स्लेट नहीं है, वह अपने अवलोकन तथा अनुभव से निरंतर सीखता रहता है। कक्षा में बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने की छूट दी जानी चाहिए तथा व्यावहारिक स्तर पर निर्माणवाद को प्रभावी रूप से विद्यालय में किस प्रकार क्रियान्वित किया जाए, इस पर विचार किया जाना चाहिए।

डॉ. शबाना अशरफ अपने वक्तव्य देते हुए।

द्वितीय सत्र (समय 2:30-5:30 PM)

विषय: सीखने की निर्माणवादी प्रविधियाँ एवं प्रतिमान (Constructivist Strategies and Models of Learning)

द्वितीय सत्र के आरंभ में **डॉ. लोकनाथ मिश्रा** *(सह प्रोफेसर, स्कूल ऑफ एजुकेशन, मिजोरम यूनिवर्सिटी, ऐजवल)* ने **समस्या समाधान (Problem Solving)** विषय पर अपना व्याख्यान दिया। आपने व्यावहारिक उदाहरणों द्वारा किसी समस्या को किस तरह हल किया जाए। इस पर विस्तारपूर्वक चर्चा की और बताया कि एक गणित के शिक्षक को कक्षा में प्रत्येक बच्चे से प्रश्न पूछने, अन्वेषण करने, गणितीय समस्याओं के समाधान और गणितीय संकल्पनाओं के स्पष्टीकरण के लिए प्रोत्साहित

करना चाहिए। साथ ही शिक्षकों से उम्मीद की जाती है कि वे बच्चों के ज्ञान निर्माण की गुणवत्ता का समुचित मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करें।

डॉ. संजय कुमार पंडागले *(सह प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)* ने **बुद्धि मंथन (Brain Storming)** विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि कैसे चरण दर चरण बुद्धि मंथन का प्रयोग निर्माणवादी तरीके से किया जा सकता है। इन्होंने ओसबर्न की विधि का वर्णन करते हुए समूह सदस्यों के बीच सामाजिक अवरोध को कम करने, विचारों की उत्पत्ति को उत्प्रेरित करने तथा समूह की संपूर्ण सृजनात्मकता की संवृद्धि के सिद्धांतों पर चर्चा की। और बताया कि विद्यार्थियों को विभिन्न समूहों में बाँटा जाता है जिसमें अनुभवी एवं अधिक परिपक्व तथा नए विद्यार्थी दोनों शामिल होते हैं। उन्हें प्रत्याशित तथा अप्रत्याशित दोनों प्रकार के विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो समस्या समाधान में सहायक होता हैं। विचारों की कोई आलोचना या चर्चा नहीं की जाती। ये विचार बाद में निर्णय लेने के लिए आरक्षित किए जा सकते हैं। डॉ. संजय कुमार पंडागले ने अधिगम प्रक्रिया में बुद्धि मंथन के एकीकरण के लिए बच्चों से प्रश्न पूछने तथा अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के संभावित अवसर प्रदान करने का समर्थन किया। तथा बुद्धि मंथन के विभिन्न युक्तियों जैसे- Nominal Group, Group Passing, Team Idea Mapping, Director brainstorming, Guided Brainstorming की सोदाहरण व्याख्या करते हुए प्रभावशाली सामूहिक बुद्धि मंथन में आनेवाली चुनौतियों से भी अवगत कराया और एक समय में कई प्रश्न या समस्याओं पर विचार करने के स्थान पर एक समय में एक ही प्रश्न पर बुद्धि मंथन करने पर बल दिया।

अंत में इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे विषय विशेषज्ञ **डॉ. दिबाकर सारंगी** ने ICON- MODEL के विभिन्न चरणों- स्थितिगत अवलोकन, व्याख्या निर्माण, प्रासंगिकता, संज्ञानात्मक शिक्षुता, सहयोग, बहु व्याख्या एवं बहु अभिव्यक्ति की व्याख्या की तथा 'पदार्थ की अवस्था' प्रकरण का उदाहरण देते हुए ICON- MODEL पर आधारित अधिगम प्रारूप पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। इन्होंने बताया कि बच्चे अपने प्राकृतिक संदर्भ में मौजूद प्राथमिक अधिगम सामग्री पर टिप्पणियाँ करते हैं तथा इसके समर्थन में अपना तर्क प्रस्तुत करते हैं। साथ-ही-साथ वे अपने स्पष्टीकरण के लिए संदर्भों का निर्माण करते हैं। शिक्षक बच्चों को अवलोकन, व्याख्या तथा संदर्भो के निर्माण में आवश्यक सहायता प्रदान करते हैं तथा बच्चे पारस्परिक सहयोग द्वारा प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का प्रयास करते हैं। बच्चों को अन्य बच्चों तथा विशेषज्ञों के उदाहरणों तथा व्याख्याओं के संपर्क में होने के कारण संज्ञानात्मक लचीलापन प्राप्त होता है तथा वे एक ही व्याख्या के कई अभिव्यक्तियों को देखते हुए हस्तांतरणीयता प्राप्त करते हैं। इन्होंने आगे कहा कि सामान्यत: बच्चे स्वयं से पढ़ने एवं सीखने की कोशिश करते हैं, लेकिन जहाँ वे नहीं पहुँच पाते हैं वहाँ उन्हें पहुँचाने की जिम्मेदारी शिक्षकों की है।

सत्र के अंत में अध्यक्षता कर रहे विषय विशेषज्ञ **डॉ. दिबाकर सारंगी**

दिनांक : 31-01-2018

तृतीय सत्र (9:30 AM- 1:30 PM)

विषय: निर्माणवादी कक्षा-शिक्षक की भूमिका, विद्यार्थियों की भूमिका तथा कक्षा प्रबंधन, निर्माणवादी कक्षा में आकलन- सीखने के लिए एवं सीखने के रूप में आकलन, निर्माणवादी कक्षा में प्रौद्योगिकी का एकीकरण- वेब 2.0 प्रौद्योगिकी।

अध्यक्षता : प्रो.मंजुला राव, सह-अध्यक्ष : डॉ. सीता लक्ष्मी, समन्वयक : प्रो. आरती श्रीवास्तव,

अन्य सदस्य : डॉ. सोमू सिंह, डॉ. पतंजलि मिश्रा, डॉ. जसपिंदर कौर, डॉ.एन.अमरेश्वरन, डॉ.जुबली पद्मनाभन, डॉ. दिनेश चहल,

डॉ. संदीप पाटिल सर्वप्रथम इस सत्र में प्रो. मंजुला राव (अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर) ने 5 E मॉडल (ENGAGE, EXPLORE, EXPLAIN, ELABORATE, EVALUATE) पर अपना वक्तव्य दिया। प्रो.मंजुला राव ने बताया कि किस प्रकार कक्षा में इस मॉडल का उपयोग बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में संलग्न करते हुए उन्हें पाठ्यवस्तु संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु अन्वेषण के लिए निर्देशित करता है। बच्चे समूह में पारस्परिक सहयोग से कार्य करते हैं तथा एक-दूसरे की व्याख्या एवं उदाहरणों के आलोक में अपने विचारों का विस्तार करते हैं। आपने बताया कि बच्चा एक संकल्पना को दूसरी संकल्पना के साथ जोड़ते हुए सीखता है तथा उसका पूर्व ज्ञान, अनुभव उसे नए विचारों को सीखने में सहायता प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में वह परासंज्ञानात्मक कौशल का विकास करता है तथा धीरे-धीरे अपनी गलतियों को समझने लगता है और बताया कि छात्र क्या सीखता है? यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, अपितु वह कैसे सीखता है तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है? यह अधिक महत्वपूर्ण है। साथ-ही इन्होंने बच्चे को स्व-मूल्यांकन के लिए अभिप्रेरित करने पर भी बल दिया, ताकि वे अपनी अधिगम प्रगति के लिए चिंतनशील रहें।

प्रो.मंजुला राव (अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर) अपने वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए।

डॉ. पतंजलि मिश्रा *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा)* ने '**निर्माणवादी कक्षा कैसी होनी चाहिए**' इस विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। डॉ. मिश्रा ने बच्चों का संज्ञान लेते हुए कुछ प्रश्नों को प्रतिभागियों के समक्ष रखा- बच्चे को हम ऐसे क्यों पढ़ाते हैं जैसे कि हम पढ़ाना चाहते हैं, ऐसा क्यों नहीं पढ़ाते, जैसा कि वे पढ़ना चाहते हैं? आगे इन्होंने बताया कि बच्चा बोझिल मन से विद्यालय की तरफ जाता है तथा छुट्टी होने पर भागते हुए घर की तरफ लौटता है, आखिर ऐसा क्यों होता है, यह विचारणीय बिंदु है। विद्यालय तथा कक्षा का वातावरण कैसा हो कि बच्चे को विद्यालय तथा अपनी कक्षा में बैठने में आनंद का अनुभव हो।

डॉ. पतंजलि मिश्रा प्रतिभागियों के समक्ष प्रश्न रखते हुए।

इन प्रश्नों के उत्तर में उन्होंने शिक्षक तथा शिक्षार्थी की कक्षा में भूमिका स्पष्ट करते हुए बताया कि शिक्षक सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया में बच्चों का सहयोगी तथा मार्गदर्शक होता है तथा उस पाठ्यवस्तु को बच्चों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से जोड़कर पढ़ाना चाहिए, ताकि बच्चे में उस विषय को पढ़ने की रुचि उत्पन्न हो तथा वह आसानी से पाठ्यवस्तु को समझ सके।

डॉ. सोमू सिंह *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी)* ने **'निर्माणवादी कक्षा का स्वरूप'** विषय पर अपने वक्तव्य में कहा कि शिक्षक को कक्षा में बच्चों के स्वतंत्र रूप से सोचने-विचारने के संभावित अवसर उत्पन्न करना चाहिए तथा सिर्फ आदर्श विचार न पढ़ाकर व्यावहारिक समस्याओं एवं विवादित मुद्दों पर भी चर्चा करनी चाहिए। शिक्षक कई बार छात्रों को बीच में प्रश्न पूछने से रोकते हैं, उन्हें ऐसा न करके शिक्षण-अधिगम के किसी भी सोपान पर छात्रों के प्रश्नों को स्वीकार करना चाहिए तथा उन्हें अभिप्रेरित करना चाहिए। साथ ही उन्होंने बच्चों के पाठ्यवस्तु संबंधी दैनंदिन अनुभवों को कक्षा में एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. सोमू सिंह 'निर्माणवादी कक्षा का स्वरूप' विषय पर अपने वक्तव्य देते हुए

डॉ. सीता लक्ष्मी *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय)* ने 4-E मॉडल पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। आपने बताया कि सीखने की प्रक्रिया में सर्वप्रथम विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को प्रकाश में लाना चाहिए तथा सीखने की प्रक्रिया 'लक्ष्य अवधारणा' पर केंद्रित होनी चाहिए। बच्चों के विचारों को चुनौती देना चाहिए तथा सीखने के अनुभवों की परिपूर्णता पर विचार करना चाहिए। इन्होंने आगे बताया कि निर्माणवादी कक्षा समूह अधिगम, शिक्षक-छात्र अंतःक्रिया, छात्र-छात्र अंतःक्रिया को सम्मिलित करता है। बच्चों के बैठने की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए, जिसमें सभी लोग एक-दूसरे से मुखाभिमुख हो सके तथा भौतिक सुविधाएँ ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों के विचारों को उत्पन्न करने में मददगार हो। साथ-ही इन्होंने निर्माणवादी कक्षा में I.C.T का उपयोग किस प्रकार किया जाए, इस पर भी चर्चा की तथा ऐसे I.C.T. उपकरणों के उपयोग पर बल दिया, जो अधिगमकर्त्ता को अपने विचार अभिव्यक्त करने में सहायता करता हो तथा उन्हें सीखने की प्रक्रिया में संलग्न करते हुए सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देता हो।

डॉ. सीता लक्ष्मी 4-E मॉडल पर विस्तारपूर्वक चर्चा की।

डॉ. जगप्रीत कौर *(सहायक प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन एंड कम्युनिटी सर्विस, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला)* ने निर्माणवादी कक्षा में तकनीकी के प्रभावी एकीकरण के लिए प्रौद्योगिकी, शिक्षणशास्त्र एवं विषयवस्तु ज्ञान के एकीकरण पर बल देते हुए TPACK (Technological Pedagogical Content Knowledge) की रूपरेखा पर व्यापक चर्चा की। प्रौद्योगिकी, शिक्षणशास्त्र, विषयवस्तु, ज्ञान एवं शिक्षण संदर्भ में व्यक्तिगत रूप से अथवा एक साथ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभाते हैं। प्रौद्योगिकी के साथ सफलतापूर्वक शिक्षण के लिए आवश्यक है कि सभी घटकों के बीच एक गतिशील संतुलन बनाए रखा जाए। आपने कहा कि कंप्यूटर और इंटरनेट द्वारा जानकारी इकट्ठा करने में आसानी हो गई है जो बच्चों को सीखने में सहायता प्रदान करती है। शिक्षक तथा बच्चों के मध्य अंतःक्रिया को बढ़ावा देने के लिए ऐसे तकनीकी का चुनाव करना चाहिए, जो बच्चों को आकर्षित करे तथा जिसका उपयोग शिक्षक एवं बच्चे सुगमता के साथ कर सके। इस दिशा में वेब 2.0 टेक्नोलॉजी, जिसे सहयोगात्मक वेब टेक्नोलॉजी भी कहा जाता है, का उपयोग किया जाना चाहिए।

डॉ. जगप्रीत कौर अपने विषय में प्रतिभागियों से चर्चा करते हुए।

डॉ. एन. अमरेश्वरन *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, NEHU, शिलांग)* ने कहा कि सीखना एक सतत प्रक्रिया है तथा इस प्रक्रिया में मात्रा की बजाय गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाना चाहिए। हमारी यह जिम्मेदारी है कि कक्षा में विद्यार्थियों को बोलने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किए जाए तथा उन्हें प्रश्न पूछने के लिए अभिप्रेरित किया जाए। बच्चों का पूर्व ज्ञान उनके सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है तथा उनकी प्रारंभिक समझ स्थानीय होती है वैश्विक नहीं, अतः बच्चों के पूर्व ज्ञान को सीखने की प्रक्रिया में व्यापक स्थान दिया जाना चाहिए तथा उनके स्थानीय परिवेश से जोड़ते हुए सीखने की प्रक्रिया संचालित करनी चाहिए। इन्हें विश्व के उभरते सिद्धांतों के साथ विचारकों के रूप में देखा जाना चाहिए तथा उनके साथ अंतःक्रियात्मक तरीके से व्यवहार करना चाहिए। शिक्षण के संदर्भ में बच्चों के सीखने का आकलन किया जाना चाहिए तथा कार्य के दौरान शिक्षक द्वारा बच्चों का अवलोकन तथा प्रदर्शनी एवं पोर्टफोलियो के माध्यम से उनका समग्र रूप से आकलन किया जाना चाहिए। आगे अपने वक्तव्य में इन्होंने वेब 1.0, 2.0, 3.0, टेक्नोलॉजी के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की तथा बताया कि किस प्रकार वेब 2.0 टेक्नोलॉजी जैसे- ब्लॉग (Blog), ग्रुप्स (Groups), विकिपीडिया (Wikipedia), यू-ट्युब (You tube), सोशल नेटवर्किंग साइट्स (Social Networking Sites) आदि के उपयोग द्वारा ऑनलाइन तथा ब्लेंडेड अधिगम को बढ़ावा देते हुए स्व-आकलन एवं समूह साथी मूल्यांकन को संवर्धित किया जा सकता है।

डॉ. जुबली पद्मनाभन *(सहायक प्रोफेसर, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ पंजाब, भटिंडा, पंजाब)* ने निर्माणवादी कक्षा में मूल्यांकन की प्रक्रिया विषय पर व्याख्यान देते हुए 'सीखने का आकलन','सीखने के लिए आकलन','सीखने के रूप में आकलन' एवं 'सीखने में आकलन' की संकल्पना पर विस्तृत रूप से चर्चा की। डॉ. पद्मनाभन ने बताया कि 'सीखने का आकलन' समेकित होता है। शिक्षक सीखने का प्रारूप स्वयं निर्धारित करता है, साक्ष्य एकत्रित करता है तथा एकत्रित साक्ष्यों के आधार पर निर्णय लेता है कि बच्चों ने क्या सीखा और क्या नहीं सीखा? 'सीखने के लिए आकलन' सतत एवं समग्र रूप से बच्चों की प्रगति का आकलन करता है तथा इसकी प्रकृति रचनात्मक होती है शिक्षक वैकल्पिक आकलन उपकरणों के माध्यम से बच्चों के अधिगम का निरंतर आकलन करता है जिससे उसे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार हेतु आवश्यक प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है। 'सीखने के रूप में आकलन' के अंतर्गत शिक्षक और बच्चा अधिगम, मूल्यांकन तथा सीखने की प्रगति के नक़्शे का सह-निर्माण करते हैं तथा 'सीखने में मूल्यांकन' बच्चे को सीखने के केंद्र में रखता है तथा बच्चा स्वयं सीखने की प्रक्रिया का मूल्यांकन करता है। इसके अंतर्गत स्व-मूल्यांकन एवं समूह-साथी मूल्यांकन सम्मिलित होते हैं। इन्होंने आगे अपने वक्तव्य में निर्माणवादी कक्षा के मूल्यांकन के लिए उपयोगी उपकरण एवं तकनीकी जैसे- पोर्टफोलियो, ई-पोर्टफोलियो, रूब्रिक्स, रिफ्लेक्टिव डायरी, साक्षात्कार अनुसूची, अवलोकन, समूह-साथी आकलन, स्व-आकलन के विभिन्न तत्वों तथा प्रारूप के बारे में बताया।

डॉ .जुबली पद्मनाभन ने निर्माणवादी कक्षा में मूल्यांकन की प्रक्रिया विषय पर व्याख्यान देते हुए।

डॉ. दिनेश चहल *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा, महेंद्रगढ़, हरियाणा)* ने **निर्माणवादी कक्षा** विषय पर चर्चा की जिसमें बताया कि निर्माणवादी कक्षा एक ऐसी कक्षा है जहाँ सीखने की प्रक्रिया में बच्चा सक्रिय रूप से संलग्न होता है तथा उसे अपनी जिज्ञासा एवं विचार अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता होती है।

डॉ. दिनेश चहल (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हरियाणा, महेंद्रगढ़, हरियाणा) ने निर्माणवादी कक्षा विषय पर चर्चा की।

आपने बताया कि निर्माणवादी कक्षा में तीन 'H'- His Subject, His Students, Himself / Herself यानि कक्षा में पढ़ाया जा रहा विषय या प्रकरण, शिक्षक के विद्यार्थी एवं शिक्षक स्वयं सबसे महत्वपूर्ण है। शिक्षक को बच्चे के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से जोड़कर तथा उनकी अभिरुचि एवं अभिक्षमता के अनुरूप पाठ्यवस्तु का संप्रेषण करना चाहिए, ताकि बच्चा पाठ्यवस्तु को आसानी से समझ सके तथा अपने दैनिक जीवन की समस्याओं के समाधान में इस ज्ञान का उपयोग कर सके। ऐसे अधिगम विधियों एवं युक्तियों का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे बच्चा अन्य बच्चों तथा शिक्षक के साथ

अधिक-से-अधिक अंतःक्रिया कर सके तथा सहयोगात्मक वातावरण में एक दूसरे के विचारों पर मनन करते हुए कक्षा में उभर रहे प्रश्नों के उत्तर ढूँढ सके।

डॉ. संदीप पाटिल *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, आजाद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सतारा)* ने "**निर्माणवादी कक्षा में शिक्षक एवं विद्यार्थी की भूमिका**" विषय पर व्याख्यान दिया। डॉ. पाटिल ने बताया कि कक्षा में शिक्षक की भूमिका एक सुगमकर्ता तथा सीखने के लिए प्रेरित करने वाले एक प्रेरक की हैं। शिक्षक बच्चों की सहायता से अधिगम अनुभवों का प्रारूप तैयार करता है तथा बच्चा एक सक्रिय अधिगमकर्ता के रूप में अन्य बच्चों तथा शिक्षक के साथ अंतःक्रिया करते हुए इन अनुभवों द्वारा पाठ्यवस्तु की समझ विकसित करता है। शिक्षक अन्य बच्चों की तरह ही सह-अधिगमकर्ता की भूमिका में होता है तथा किसी भी समस्या के समाधान की खोज में वह बच्चों को आवश्यक संसाधन एवं मार्गदर्शन प्रदान करता है।

डॉ. संदीप पाटिल (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, आजाद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सतारा) ने "निर्माणवादी कक्षा में शिक्षक एवं विद्यार्थी की भूमिका" विषय पर व्याख्यान दिया।

प्रस्तुतीकरण के बीच में इस सत्र की समन्वयक **डॉ. आरती श्रीवास्तव** *(सह प्रोफेसर, NIEPA, नई दिल्ली)* ने प्रस्तुतीकरण कर रहे विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान का सार बताते हुए कार्यशाला में प्रतिभागियों के साथ संपर्क स्थापित किया।

चतुर्थ सत्र (2:30-5:30 PM)

चतुर्थ सत्र में कार्यशाला में आए हुए समस्त प्रतिभागियों को उनके विषय समूह (सामाजिक विज्ञान, गणित, भौतिकी विज्ञान एवं जीव विज्ञान) में विभाजित कर दिया गया। प्रत्येक विषय समूह की अध्यक्षता एवं समन्वयन उस विषय में पारंगत विषय विशेषज्ञों ने की। समस्त विषय विशेषज्ञों द्वारा सामूहिक चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि विभिन्न विषयों में शिक्षण के लिए पाठ योजना का विकास 5-E मॉडल पर किया जाए। प्रत्येक विषय समूह में विषय विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को उस विषय के शिक्षण के लिए 5-E मॉडल के विभिन्न चरणों का उदाहरण देकर व्यावहारिक रूप से अभिमुखीकरण किया, तत्पश्चात प्रतिभागी किसी कक्षा स्तर पर उस विषय की किसी एक प्रकरण पर पाठ योजना तैयार करने लगे।

समस्त विषय समूहों में पाठ योजना का निर्माण अध्यक्ष की देख-रेख में किया गया। प्रतिभागी पूर्णतः सक्रिय होकर सहभागिता कर रहे थे, उन्हें प्रश्न करने एवं सुझाव देने की समुचित स्वतंत्रता थी। प्रतिभागियों की आपस में तथा विषय समूह समन्वयक के साथ लगातार अंतःक्रिया हो रही थी, पाठ योजना के निर्माण में विषय समूह समन्वयक एवं प्रतिवेदक ने भी पूर्ण सहयोग दिया। समस्त चर्चा तथा प्रायोगिक कार्य के पश्चात सभी विषय समूह के प्रतिभागियों को अपनी पसंद के विषय प्रकरण पर एक-एक पाठ-योजना का निर्माण करके अगले दिन लाने का गृह कार्य दिया गया। इसके लिए प्रत्येक विषय समूह में प्रतिभागियों ने 2-5 उप-समूहों में विभाजित होकर सामूहिक रूप से पाठ योजना का विकास किया। विभिन्न विषय समूह के नाम, अध्यक्ष, समन्वयक तथा प्रतिवेदक के नाम अग्रलिखित हैं-

जीव विज्ञान शिक्षण समूह की अध्यक्षता **प्रो. मंजूला राव** एवं समन्वयक **डॉ. जुबली पद्मनाभन** तथा प्रतिवेदन के दायित्व का निर्वहन **डॉ. शबाना अशरफ** ने किया।

भौतिक विज्ञान शिक्षण समूह की अध्यक्षता, **डॉ. दिबाकर सारंगी**, सह-अध्यक्षता **डॉ. सीता लक्ष्मी**, समन्वयक **डॉ. संजय कुमार पंडागले**, सह-समन्वयक **डॉ. जगप्रीत कौर** तथा प्रतिवेदन के दायित्व का निर्वहन **डॉ. सी.आर. बाविस्कर** ने किया।

भौतिक विज्ञान शिक्षण समूह की अध्यक्षता करते दौरान **डॉ. दिबाकर सारंगी** एवं प्रतिभागियों के साथ समूह फोटो

गणित शिक्षण समूह की अध्यक्षता **डॉ. लोकनाथ मिश्रा**, सह-अध्यक्षता डॉ. आशीष श्रीवास्तव *(सह प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, विनय भवन, शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल)*, समन्वयक डॉ. प्रमिला रमानी *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ तमिलनाडु, तिरुवरुर, तमिलनाडु)* तथा प्रतिवेदन के दायित्व का निर्वहन श्री ऋषिकेश बहादुर (शोधार्थी, शिक्षा विभाग) ने किया।

गणित शिक्षण समूह की अध्यक्षता करते हुए **डॉ. लोकनाथ मिश्रा,** सह-अध्यक्षता **डॉ. आशीष श्रीवास्तव**, समन्वयक **डॉ. प्रमिला रमानी**

भाषा शिक्षण समूह की अध्यक्षता **डॉ. राकेश राय** *(सह-प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, नागालैंड यूनिवर्सिटी)*, समन्वयक **डॉ. पतंजलि मिश्रा** तथा प्रतिवेदन के दायित्व का निर्वहन श्री देवेन्द्र यादव *(शोधार्थी, शिक्षा विभाग)* ने किया। सामाजिक विज्ञान शिक्षण में अधिक प्रतिभागियों के होने के कारण इसके दो समूह बनाए गए, जिसके प्रथम समूह की अध्यक्षता **डॉ. आरती श्रीवास्तव**, सह-अध्यक्षता **डॉ. सोमू सिंह**, समन्वयक **डॉ. दिनेश चहल** तथा प्रतिवेदन के दायित्व का निर्वहन **डॉ. एन. पापा राव** *(कल्याण पी.जी. कॉलेज, भिलाई नगर, छत्तीसगढ़)* ने किया।

समूह की अध्यक्षता करते **डॉ. नरेश कुमार (सहायक प्रोफेसर, NIEPA, नई दिल्ली** एवं प्रतिभागियों के साथ समूह फोटो

सामाजिक विज्ञान शिक्षण के दूसरे समूह की अध्यक्षता **डॉ. नरेश कुमार** *(सहायक प्रोफेसर, NIEPA, नई दिल्ली)*, समन्वयक डॉ. नारंगनेती अमरेश्वरन तथा प्रतिवेदन के दायित्व का निर्वहन डॉ. संदीप पाटिल ने किया।

ग्रुप प्रतिभागी के मध्य प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए **डॉ. संदीप पाटिल** (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, आजाद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सतारा)

दिनांक : 01-02-2018

चतुर्थ सत्र में विभिन्न विषय समूहों से प्रतिभागियों ने गृह कार्य में दिए गए पाठ योजना को अपने-अपने विषय विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया। विषय विशेषज्ञों ने समस्त प्रतिभागियों के पाठ योजना पर अपनी प्रतिक्रियाएँ दी तथा अन्य प्रतिभागियों ने भी उस पर अपने विचार व्यक्त किए। विशेषज्ञों से प्राप्त प्रतिपुष्टि के आधार पर प्रतिभागियों ने अपने पाठयोजना का संशोधन किया।

पंचम सत्र (2:30- 4:00 PM)

अध्यक्ष: प्रो. पी. मंजूला राव, सह-अध्यक्ष- डॉ. दिबाकर सारंगी, समन्वयक- डॉ. जुबली पद्मनाभन, एवं अन्य सदस्य- डॉ. पतंजलि मिश्रा, डॉ. सीता लक्ष्मी तथा पैनल में बैठे सभी विषय विशेषज्ञों ने अपने-अपने विषय समूह में विकसित पाठ योजना का संक्षिप्त वर्णन किया तथा पाठ योजना निर्माण के दौरान प्रतिभागियों के साथ अंतःक्रिया के अपने अनुभवों तथा उनके द्वारा पूछे गए रोचक प्रश्नों, प्रस्तुत उदाहरणों तथा दृष्टांतों को सभी के समक्ष रखा। उदाहरण के लिए- डॉ. जुबली पद्मनाभन ने अपने विषय समूह में घटी एक घटना का जिक्र किया। 'विभिन्न प्रकार के पौधे' प्रकरण पर पाठ योजना निर्माण के दौरान 5-E मॉडल के Explore (खोज) स्तर पर प्रतिभागियों के साथ चर्चा करते समय एक प्रतिभागी ने मुझसे पूछा कि मैम China Rose के पौधे को Shrub के वर्ग में रखा जाता है, गुलाब के पौधे को Herb के वर्ग में रखा जाता है तो एलोवेरा तथा बोन्साई के पौधे को किस वर्ग में रखा जाना चाहिए। यदि Shrub तथा Herb अलग-अलग तरह के पौधे होते हैं तो सभी प्रकार के पौधों से प्राप्त खाद्य पदार्थों, पौधे के रस, फल के रस इत्यादि को हर्बल ही क्यों कहा जाता है? इस प्रकार यदि बच्चों को किसी प्रश्न का उत्तर स्वयं ढूँढने की प्रक्रिया में संलग्न किया जाए तो कई नए एवं रोचक आयाम सामने आ सकते हैं, जिसकी कल्पना शिक्षक ने भी नहीं की होगी। विषय विशेषज्ञों ने बताया कि सभी प्रतिभागी उत्सुकता के साथ पाठ योजना का निर्माण कर रहे थे तथा आशा है कि वे भविष्य में भी इसी उत्सुकता के साथ अपने दैनंदिन विषय शिक्षण के लिए निर्माणवादी उपागम का उपयोग करते हुए कक्षा का संचालन करेंगे। जहाँ बच्चे किसी भी पाठ्यवस्तु को अपने परिवेश एवं अनुभव के आधार पर समझ सके। सभी विषय-

विशेषज्ञों ने कार्यशाला के आयोजन के विभिन्न पक्षों पर अपनी प्रतिपुष्टि भी दी। इन्होंने कार्यशाला की संकल्पना तथा कार्यशाला आयोजन समिति की कार्यशैली की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ ही भविष्य में ऐसे कार्यकम के आयोजन के लिए शुभकामनाएँ भी दी।

समापन सत्र (4:10-5:30 PM)

राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र का आरंभ **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** *(अध्यक्ष, शिक्षा विभाग)* के स्वागत वक्तव्य के साथ हुआ। डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर अपने स्वागत वक्तव्य में इस सत्र में आमंत्रित अतिथियों के शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण योगदानों पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला के अपने अनुभवों को सभी के समक्ष रखा। डॉ. ठाकुर ने अपने वक्तव्य में कहा कि कार्यशाला के लिए देश के विभिन्न स्थानों से आए प्रतिभागियों ने पूरी तन्मयता के साथ इसके विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लिया, जो इस बात का परिचायक है कि यह कार्यशाला कहीं न कहीं अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रही है। शिक्षा विद्यापीठ भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन को लेकर उद्दिष्ट है। श्रीमती आर. पुष्पा नामदेव *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग एवं कार्यशाला संयोजक)* ने कार्यशाला के तीन दिनों के विभिन्न सत्रों का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए आमंत्रित अतिथियों कों कार्यशाला में आयोजित विभिन्न क्रियाकलापों से अवगत कराया।

इसके पश्चात कुछ विषय विशेषज्ञों तथा प्रतिभागियों ने अपने कार्यशाला का अनुभव सभी के साथ सांझा किया। प्रतिभागियों ने कार्यशाला आयोजन समिति के प्रयासों की सराहना की तथा इसे एक शानदार शुरुआत के रूप में माना। उन्होंने कहा कि यदि ऐसे प्रयास जारी रहे तो यह भविष्य में निर्माणवादी शिक्षा के क्षेत्र में एक नया मील का पत्थर साबित होगा। इसी क्रम में एक विषय विशेषज्ञ ने कहा कि भविष्य में जब कभी भारत में निर्माणवादी शिक्षा पर इतिहास लिखा जाएगा तो इस कार्यशाला का जिक्र अवश्य किया जाएगा।

अतिथि वक्ता, प्रो. अरविंद कुमार झा *(प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, बी.बी.ए.यू.,लखनऊ)* ने निर्माणवादी शिक्षण एवं अधिगम उपागम के ज्ञानमीमांसीय परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि निर्माणवाद दर्शन नहीं, अपितु एक विचार है, जो व्यक्ति के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के संदर्भ में ज्ञान के निर्माण पर बल देता है। व्यक्ति का संज्ञान व्यक्ति के अंदर नहीं, अपितु उसकी संस्कृति में स्थापित रहता है, अतः ज्ञान का निर्माण समूह में व्यक्तियों के मध्य अंतःक्रिया द्वारा होता है। प्रो. अरविंद कुमार झा ने पियाजे के संज्ञानात्मक निर्माणवाद तथा वाइगोत्सकी के सामाजिक निर्माणवाद के पारस्परिक द्वंद्व पर भी प्रकाश डाला।

अतिथि वक्ता, प्रो. अरविंद कुमार झा अपने वक्तव्य को प्रतिभागियों के समक्ष रखते हुए।

इसके पश्चात विशिष्ट अतिथि प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल *(अधिष्ठाता, भाषा विद्यापीठ)* ने भाषा सीखने और सिखाने में निर्माणवादी उपागम की उपयोगिता तथा ज्ञान के निर्माण में सृजनात्मकता की भूमिका पर चर्चा की तथा 'निर्माणवाद' शब्द के स्थान पर 'रचनावाद' शब्द के उपयोग पर शिक्षाविदों को विचार करने के लिए उद्बोधित किया।

विशिष्ट अतिथि प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल (अधिष्ठाता, भाषा विद्यापीठ) ने अपने शब्द प्रतिभागियों के समक्ष रखा।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. आनंद वर्धन शर्मा *(माननीय प्रतिकुलपति एवं अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ)* ने बताया कि यदि बच्चों को किसी कार्य को करने की स्वतंत्रता दी जाए तथा अधिगम को उनके अनुभव से जोड़ा जाए तो अधिगम अधिक सार्थक होता है, अतः उनके लिए इस प्रकार के अवसर अधिक से अधिक उत्पन्न किए जाने चाहिए। इस कार्यशाला का समापन डॉ. शिरीष पाल सिंह के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें इन्होंने सभी आमंत्रित अतिथियों, विषय-विशेषज्ञों, शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों, कर्मियों तथा विशेष रूप से सभी प्रतिभागियों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

2. एस.पी.एस.एस. के माध्यम से सामाजिक विज्ञान में अनुप्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ दिनांक (12-15 फरवरी, 2018)

दिनांक : 12-02-2018

प्रथम दिन के उद्घाटन सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में विश्वविद्यालय के माननीय प्रतिकुलपति **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** तथा **प्रो. एस. के. त्यागी** *(पूर्व अधिष्ठाता, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर)*, **प्रो. अनिल कुमार** *(NITTTR, भोपाल)*, कार्यशाला निदेशक **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** *(संकायाध्यक्ष, शिक्षा विभाग)*, कार्यशाला सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह, कार्यशाला समन्वयक डॉ. सुहासिनी बाजपेयी मंच पर उपस्थित थे। स्वागत वक्तव्य देते हुए डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। तत्पश्चात डॉ. शिरीष पाल सिंह ने कार्यशाला की भूमिका प्रस्तुत की। उद्घाटन सत्र में माननीय प्रतिकुलपति **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** ने अध्यक्षीय उद्बोधन में 'एस.पी.एस.एस.' के महत्व को बताते हुए सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम के अंतिम चरण में डॉ. सुहासिनी बाजपेयी ने कार्यशाला की सम्पूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत की।

विश्वविद्यालय के माननीय प्रतिकुलपति **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** एवं अतिथि **प्रो. एस. के. त्यागी**, **प्रो. अनिल कुमार** और कार्यशाला निदेशक **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन के साथ करते हुए।

विशेषज्ञ उद्बोधन में **प्रो. एस.के. त्यागी** ने सामाजिक विज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग पर प्रकाश डालते हुए इसके महत्त्व को बताया। इसके बाद प्रो. अनिल कुमार ने अपना परिचय देते हुए 'एस.पी.एस.एस.' पर संक्षिप्त चर्चा की।

प्रो.एस .के .त्यागी (पूर्व अधिष्ठाता, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर) सामाजिक विज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग पर प्रकाश डालते हुए।

प्रथम दिन के द्वितीय सत्र में **प्रो. अनिल कुमार** ने 'एस.पी.एस.एस.' का परिचय और मात्रात्मक एवं गुणात्मक आंकड़ों के विश्लेषण के मूलभूत प्राचलिक एवं अप्राचलिक परीक्षण में सांख्यिकी पर प्रकाश डालते हुए प्राचलिक परीक्षण के टी-टेस्ट, एनोवा के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

प्रो.अनिल कुमार (NITTTR, भोपाल) अपने वक्तव्य में 'एस .पी .एस .एस.' की जानकारी देते हुए।

प्रो.अनिल कुमार ने केंद्रीय प्रवृत्ति के विभिन्न मानों– माध्य (MEAN), बहुलक (MODE), और माध्यिका (MEDIAN) के पश्चात मानक विचलन एवं प्रसरण के प्रसंग पर चर्चा की। उन्होंने सांख्यिकी पर प्रकाश डालते हुए और इसकी विशेषताओं पर चर्चा करते हुए यह भी अवगत कराया कि किस समय वर्णनात्मक सांख्यिकी एवं आनुमानिक सांख्यिकी का उपयोग करना चाहिए। 'एस.पी.एस.एस.' के माध्यम से सांख्यिकी विधियों का उपयोग करने में कम श्रम एवं समय से वांछित परिणाम तक पहुँच सकते हैं।

दिनांक : 13-02-2018

दूसरे दिन के **प्रथम सत्र** में विषय-विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. नौशाद हुसैन** *(सहायक प्रोफेसर, CTE भोपाल)* ने काई स्क्वायर टेस्ट की शुरुआत करते हुए उदाहरणों के माध्यम से समझाया। इसके बाद उन्होंने शून्य परिकल्पना (Null Hypothesis) के प्रत्यय को स्पष्ट करते हुए काई स्क्वायर की गणना तथा उसके एप्लीकेशन को 'एस.पी.एस.एस.' के माध्यम से प्रयोग करके बताया, साथ ही 'एस.पी.एस.एस.' की सहायता से काई स्क्वायर के परिणामों की विवेचना से परिचित कराया।

द्वितीय सत्र में **प्रो. सुशील कुमार त्यागी** और **प्रो. अनिल कुमार** ने बताया कि किस तरह से किसी डेटा को काई स्क्वायर के माध्यम से हल करने के लिए 'एस.पी.एस.एस.' में भरा जाता है तथा Hands-On Practice को 'एस.पी.एस.एस.' में डेटा भरने एवं उपयोग करके सीखने का अवसर प्रदान किया और बीच-बीच में प्रतिभागियों की समस्याओं तथा जिज्ञासा को भी शांत किया। तत्पश्चात प्रो. सुशील कुमार त्यागी, प्रो. अनिल कुमार तथा डॉ. नौशाद हुसैन ने मिलकर विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से 'एस.पी.एस.एस.' में काई स्क्वायर के प्रत्यय को और अधिक स्पष्ट किया तथा अभ्यास करने के लिए कुछ प्रश्नों को गृहकार्य के लिए दिया।

दिनांक :14-02-2018

राष्ट्रीय कार्यशाला के तृतीय दिन **प्रथम सत्र** में **डॉ. विवेक बेलहेकर** ने अपने व्याख्यान का प्रारंभ सांख्यिकी से किया। इन्होंने सांख्यिकी (Mean-Variance) और (Co-variance) पर चर्चा की तथा आंशिक सह-संबंध (Partial Co-Relation), खोजपूर्ण कारक विश्लेषण (Exploratory Factor Analysis) के विभिन्न चरणों तथा Factor Pattern Matrix से अवगत कराया तथा उन्होंने Univarient Outlier तथा Multivarient Outlier और Partial Correlation, Rotation Component Matrics के दो प्रकार Orthogonal Rotation एवं Oblique Rotation पर विस्तार से चर्चा की।

प्रो. अनिल कुमार ने 'टी-परीक्षण' एवं 'शून्य परिकल्पना' से सामान्य परिचय कराया और प्रो. एस. के. त्यागी ने 'परिकल्पना परीक्षण' की चर्चा करते हुए दिशात्मक परिकल्पना (एक-पुच्छीय परीक्षण, द्वि-पुच्छीय परीक्षण) का अभ्यास करवाया। इसके बाद उन्होंने Data की सामान्यता, समरूपता और माध्य के बीच अंतर का महत्व (Normality, Homogenity, and Significance of Difference Between Mean) की जाँच करना बताया।

दिनांक : 15-02-2018

कार्यशाला के **चौथे दिन** विषय विशेषज्ञ के रूप में **प्रो. शेफाली पंड्या** *(शिक्षा विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय)* ने Multiple Co-Relation का परिचय कराया और 'एस.पी.एस.एस.' के अलावा एक महत्वपूर्ण ऑनलाइन वेबसाइट VASSARSTAT के माध्यम से Multiple Co-Relation तथा Partial Correlation की हस्तचालित अभ्यास (Hands-on Practice) कराया। इस दौरान प्रो. शेफाली पंड्या ने प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा शांत की। साथ-ही-साथ प्रो. पंड्या ने Multiple Co-Relation तथा Partial Correlation के परिणामों की व्याख्या किस प्रकार लिखी जाती है, इसको भी बताया। अंत में प्रो. एस.के. त्यागी ने ANOVA को समझाते हुए उदाहरणों के माध्यम से हल करके बताया। सायं 5 बजे समापन समारोह में प्रतिभागियों ने अपने अनुभवों को साझा किया तथा कार्यशाला समन्वयक डॉ. सुहासिनी बाजपेयी ने सफल कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अंत में कार्यशाला सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह ने विषय विशेषज्ञों का आभार प्रकट करते हुए सभी प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

3 . भारतीय शिक्षा पद्धति (Indian Education System) दिनांक (23 फरवरी, 2018)

दिनांक : 23-02-2018

विचार की प्रासंगिकता एवं भारतीय सांस्कृतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए **'भारतीय शिक्षा पद्धति'** विषय पर आधारित एक दिवसीय राष्ट्रीय परिचर्चा का आयोजन **23-02-2018** को ग़ालिब सभागार में किया गया, जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** द्वारा की गई। इस परिचर्चा का संचालन शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य डॉ. भरत कुमार पंडा द्वारा किया गया।

इस परिचर्चा में विश्वविद्यालय के माननीय प्रतिकुलपति **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा**, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, *(अध्यक्ष,शिक्षा विभाग)*, डॉ. शिरीष पाल सिंह *(अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग)* एवं विभाग के संकाय सदस्य श्रीमती सारिका राय शर्मा, श्रीमती शिल्पी कुमारी, श्री धर्मेन्द्र शंभरकर, श्री समरजीत यादव, डॉ. रामानंद यादव, डॉ. रामार्चा प्रसाद पाण्डेय तथा अतिथि प्रवक्ता एवं विभाग के समस्त विद्यार्थी उपस्थित थे।

प्रो. गिरीश्वर मिश्र *(माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय)*, **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** *(माननीय प्रतिकुलपति)*, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर *(पूर्व कुलानुशासक)*, डॉ. शिरीष पाल सिंह, **डॉ. अशोक मोदक** एवं **प्रो. मक्खन लाल** ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके पश्चात शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** ने स्वागत वक्तव्य दिया। तत्पश्चात शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं विश्वविद्यालय के माननीय प्रतिकुलपति **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** ने पंडित मदन मोहन मालवीय के विचारों से प्रेरणा लेने और चरित्र की उन्नति पर विशेष बल देने का आह्वान किया। **प्रो. मक्खन लाल** ने बताया कि 18 वीं –19 वीं शताब्दी में भारत की साक्षरता 85 % थी, लेकिन अंग्रेजी हुकूमत ने 'भारतीय शिक्षा पद्धति' रूपी सुंदर वृक्ष की जड़ें खोदकर उसे सूखने हेतु छोड़ दिया। परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षा पद्धति मुरझा गई जिसे पुनः हम सभी को मिलकर हरा-भरा करना होगा।

प्रो. गिरीश्वर मिश्र (माननीय कुलपति), **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** (माननीय प्रतिकुलपति), **डॉ. अशोक मोदक** एवं **प्रो. मक्खन लाल** द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए।

डॉ. अशोक मोदक ने बाल गंगाधर तिलक से प्रेरणा लेने की बात कही। महोदय ने बच्चों को शिक्षा के तीन दुश्मनों आलस्य, जल्दबाजी तथा लोभ से दूर रहने और आपस में एक दूसरे से प्रेम भाव रखते हुए सहयोग करने की बात कही।

डॉ. अशोक मोदक अपने वक्तव्य से विद्यार्थियों को लाभान्वित करते हुए।

प्रथम सत्र का समापन माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** के अध्यक्षीय उद्बोधन से हुआ, जिसमें प्रो. मिश्र ने 'भारतीय शिक्षा पद्धति' पर विस्तृत प्रकाश डाला और यह भी बताया कि भारतीय शिक्षा में मात्रात्मक वृद्धि तो हुई, लेकिन गुणात्मक वृद्धि उतनी नहीं हुई जितनी अपेक्षित थी। अतः हम सभी को शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि हेतु सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है। प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने बताया कि शिक्षा समाज की रीढ़ है अतः समाज के विकास हेतु शिक्षा का विकास करना आवश्यक है।

सत्र समापन के दौरान माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** अपने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए।

द्वितीय सत्र का आरंभ **प्रो. गीता सिंह** के व्याख्यान से हुआ, जिसमें उन्होंने शैक्षिक समस्याओं को दूर करने हेतु आत्म-मंथन की जरूरत बताई और कहा कि शिक्षा समाज का एक आतंरिक भाव है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। इसके बाद **प्रो. एस.पी. बंसल** *(माननीय कुलपति, इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय, हरियाणा)* ने सत्य, अहिंसा, इंद्रिय संयम, और आत्मिक संबंधों पर बल देने की बात कही और बताया कि राधाकृष्णन के अनुसार हमें तो बेस्ट माइंड चाहिए।

प्रो. गीता सिंह अपने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

डॉ. बाल मुकुंद *(संगठन मंत्री)* ने अपने व्याख्यान में बताया कि संसार में सबसे बड़ा दान विद्या दान है। विद्या ही विनय प्रदान करती है और विद्या से ही सुख प्राप्त होता है। बच्चों में संस्कार पैदा करने का काम माता-पिता के साथ-साथ आचार्यों का भी है। अतः अध्यापक वर्ग के ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है। अंत में उन्होंने अम्बेडकर जी के विचार 'शिक्षा शेरनी का दूध है' की व्याख्या कर अपने व्याख्यान का समापन किया।

डॉ. बाल मुकुंद (संगठन मंत्री) ने व्याख्यान दिया तथा आए हुए समस्त विद्यार्थियों को अपने वाक्य से लाभान्वित किया।

प्रो. रामदेव भारद्वाज *(माननीय कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी, हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल)* ने बताया कि प्राचीन भारतीय शिक्षा आत्म-बोध पर आधारित थी, जिसमें ब्रह्मचर्य, योग, स्वाध्याय आदि मुख्य थे, लेकिन जैसे ही भारत में अंग्रेजों का शासन आया शिक्षा में रटने का प्रभाव बढ़ने लगा और शिक्षा को पैसा कमाओ यंत्र के रूप में देखा जाने लगा जिसके दो साधन विज्ञान और प्रौद्योगिकी थे। अंत में प्रो. रामदेव भारद्वाज ने बताया कि मात्रात्मकता गुणात्मकता का स्थान कभी नहीं ले सकता।

प्रो. रामदेव भारद्वाज (माननीय कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल)

अंत में विश्वविद्यालय के माननीय प्रतिकुलपति **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** ने परिचर्चा का समापन करते हुए बताया कि हम सभी को यह विचार करना पड़ेगा कि '**शिक्षा कैसे आत्म-विस्तार का साधन बने**'? और आए हुए सभी विद्वत जनों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** (माननीय प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

4. एस.पी.एस.एस. के माध्यम से सामाजिक विज्ञान में अनुप्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ दिनांक (21-28 मार्च, 2018)

दिनांक : 21-03-2018

शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) द्वारा "एस.पी.एस.एस. के माध्यम से सामाजिक विज्ञान में अनुप्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ" पर सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला (21/03/2018 से 28/03/2018) तक आयोजन किया गया। इस राष्ट्रीय कार्यशाला में भारत के अन्य राज्यों से 20 तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से 43 शोधार्थियों के साथ-साथ विभिन्न विषय विशेषज्ञ सम्मिलित हुए।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कार्यशाला के निर्देशक तथा शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** के द्वारा की गई। मंच संचालन का कार्य सुश्री सारिका राय शर्मा *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग)* के द्वारा की गई।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** मुख्य अतिथि **प्रो. उदय जैन** (पूर्व माननीय कुलपति, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश) का पुष्प गुच्छ, सूत माला, अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत करते हुए।

उद्घाटन सत्र में सर्वप्रथम शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित **प्रो. उदय जैन** *(पूर्व माननीय कुलपति, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश)* का स्वागत पुष्प गुच्छ, सूत माला, अंग वस्त्र तथा विश्वविद्यालय दैनंदिनी से स्वागत किया गया।

तत्पश्चात इस कार्यशाला के आयोजन सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह *(एशोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग)* द्वारा देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से पधारे शिक्षा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रो. सुशील कुमार त्यागी का पुष्प गुच्छ, सूत माला, अंग वस्त्र तथा विश्वविद्यालय दैनंदिनी से स्वागत किया।

डॉ. शिरीष पाल सिंह (एशोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग) द्वारा देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से पधारे शिक्षा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष, **प्रो. सुशील कुमार त्यागी** का पुष्प गुच्छ, सूत माला, अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत करते हुए।

इसी क्रम में इस कार्यशाला के समन्वयक **डॉ. अमित कुमार त्रिपाठी** *(सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग)* द्वारा 'एन.आई.टी.टी.टी.आर.' भोपाल से पधारे विषय विशेषज्ञ **प्रो. अनिल कुमार** का स्वागत किया गया तथा कार्यक्रम के अंत में **डॉ. अप्रमेय मिश्रा** *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग)* द्वारा विषय विशेषज्ञों सहित सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

कार्यशाला समन्वयक **डॉ. अमित कुमार त्रिपाठी** विषय विशेषज्ञ **प्रो. अनिल कुमार** का स्वागत करते हुए।

कार्यशाला के **उद्घाटन सत्र** में **डॉ. शिरीष पाल सिंह** द्वारा इस सात दिवसीय कार्यशाला के आयोजन करने के उद्देश्यों को बताया गया। आयोजन सचिव **डॉ. शिरीष पाल सिंह** द्वारा "**एस.पी.एस.एस**" की पृष्ठभूमि, इसका शोध में उपयोग, उपयोग करने के नियम तथा शोध की गुणवत्ता का परिमार्जन "एस.पी.एस.एस" सॉफ्टवेयर के द्वारा कैसे किया जाए, इस विषय पर चर्चा द्वारा सरल तरीके से प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त डॉ. शिरीष पाल सिंह ने इस सात दिवसीय कार्यशाला के प्रत्येक दिन होने वाली गतिविधियों तथा उस दिन में विषय विशेषज्ञ के रूप में आने वाले विशेषज्ञों की जानकारी भी प्रदान की।

इसी क्रम में **प्रो. सुशील कुमार त्यागी** ने मात्रात्मक आंकड़ों की प्रकृति के बारे में जानकारी प्रदान की तत्पश्चात प्रो. अनिल कुमार द्वारा सांख्यिकी तथा "**एस.पी.एस.एस**." के संबंध को सरल शब्दों में बताया गया तथा अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (मध्य प्रदेश) के पूर्व माननीय कुलपति **प्रो. उदय जैन** ने मात्रात्मक शोध के संदर्भ में Strategies, Designs तथा Methods के बारे में बताया। अपने अध्यक्षीय उदबोधन में इस कार्यशाला के निदेशक तथा शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने '**एस.पी.एस.एस**.' के उपयोगों के साथ-साथ, शोध, नवीन ज्ञान की रचना तथा ज्ञान की आवश्यक शर्तों पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र का समापन कार्यशाला के समन्वयक डॉ. अमित कुमार त्रिपाठी द्वारा सभी का धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

प्रो. सुशील कुमार त्यागी विद्यार्थियों को 'एस.पी.एस.एस' को सरल शब्दों में समझाते हुए।

कार्यशाला के **द्वितीय सत्र** में **प्रो. अनिल कुमार** द्वारा सांख्यिकी के विभिन्न संप्रत्ययों जैसे- चर, शोध समस्या, मात्रात्मक तथा गुणात्मक आंकड़ों, शोध उपकरण, मापन स्केल आदि को बहुत ही सरल शब्दों में समझाया गया। प्रो. अनिल कुमार ने प्रतिभागियों द्वारा इन संप्रत्ययों को समझने में आने वाली समस्याओं का प्रभावी तरीके से निराकरण भी किया। इस सत्र के अंत में जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पी-एच.डी. शोधार्थी अन्वेषण सिंह ने सभी प्रतिभागियों के समक्ष कार्यशाला संबंधित अपने अनुभवों को साझा किया।

तीसरे सत्र की शुरुआत **प्रो. अनिल कुमार** ने सांख्यिकी का उपयोग कब करें? को समझाते हुए की, इसके अतिरिक्त प्रो. अनिल कुमार ने वर्णनात्मक तथा आनुमानिक सांख्यिकी, प्राचलिक तथा अप्राचलिक सांख्यिकी की प्रकृति तथा इनको शोध में उपयोग करने की आवश्यक शर्तों को समझाते हुए NPC के विषय में भी बताया।

चौथे सत्र में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर से शिक्षा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष **प्रो. सुशील कुमार त्यागी** ने अप्राचलिक सांख्यिकी के एक संप्रत्यय 'मान्- विटनी यू परीक्षण' का परिचय, इसके उपयोग की आवश्यकता एवं अवधारणाओं, शोध में इसके उपयोग तथा इसकी सीमाओं का वर्णन किया। इन्होंने एक काल्पनिक समस्या में प्रयुक्त मात्रात्मक आंकड़ों को लेकर मैनुअल तरीके से इसकी गणना करके दिखाया। तथा प्रतिभागियों के समक्ष एक समस्या से संबंधित मात्रात्मक आंकड़े प्रस्तुत कर प्रयोगात्मक तरीके से इसकी गणना करना तथा प्राप्त परिणामों की व्याख्या करना भी सिखाया ।

पाँचवें सत्र में प्रो. सुशील कुमार त्यागी ने उपरोक्त दोनों समस्याओं में दिए गए मात्रात्मक आंकड़ों का 'एस.पी.एस.एस'. सॉफ्टवेयर की सहायता से 'मान्- विटनी यू परीक्षण' परिकलित करके दिखाया साथ ही प्राप्त परिणामों की व्याख्या की। प्रो. सुशील कुमार त्यागी ने सभी प्रतिभागियों को स्वयं 'एस.पी.एस.एस.' सॉफ्टवेयर द्वारा प्राप्त इन आँकड़ों का 'मान्- विटनी यू परीक्षण' परिकलित करने तथा प्राप्त परिणामों की व्याख्या करने का अवसर दिया।

इस सत्र के अंत में प्रो. सुशील कुमार त्यागी ने सभी प्रतिभागियों को गृह कार्य के रूप में 'SPSS' सॉफ्टवेयर के माध्यम से 'मान्- विटनी यू परीक्षण' परिकलित करने हेतु कुछ मात्रात्मक आंकड़े दिए। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के एम. फिल. शोधार्थी श्री गणेश शुक्ल द्वारा किया गया।

दिनांक : 22-03-2018

कार्यशाला के **द्वितीय दिन** में कार्यशाला के समन्वयक **डॉ. अमित कुमार त्रिपाठी** (सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग) द्वारा एन.आई. टी. टी.टी. आर. भोपाल से पधारे मुख्य विषय विशेषज्ञ **प्रो. अनिल कुमार** का स्वागत किया गया। प्रो. अनिल कुमार ने प्रथम सत्र की शुरुआत में सांख्यिकी विधियों के चयन की 6 कसौटियों को बताया जो कि निम्नलिखित हैं –

- उपकरण के आधार पर आंकड़ों का एकत्रीकरण
- मापन के स्तर के आधार पर
- प्रतिदर्श के आधार पर
- प्रतिदर्शन के आधार पर
- सामान्य प्रायिकता वक्र के आधार पर

प्रो. अनिल कुमार ने मूल्य शिक्षा के विषय में चर्चा की और बताया कि मूल्य को सिखाया नहीं जा सकता बल्कि इसे अनुसरण कर सीखा जा सकता है। प्रो. अनिल कुमार ने बताया कि शिक्षक को विद्यार्थियों में मूल्य का विकास करना चाहिए जिससे वे किसी भी क्षेत्र में जाए तो उनका प्रदर्शन हमेंशा अच्छा हो और उन्होंने यह भी कहा कि जो शिक्षण मॉडल हमें बी.एड. एवं एम.एड. में सिखाए जाते हैं उन्हें कक्षा-शिक्षण के दौरान अध्यापक को प्रयोग करना चाहिए।

कार्यशाला के दूसरे दिन के **द्वितीय सत्र** में **प्रो. अनिल कुमार** ने बताया कि सामाजिक विज्ञान के विभिन्न ज्ञानानुशासन में सभी शोधार्थियों को अनुसंधान के विषय तथा सांख्यिकी के विषय से परिचित होना चाहिए, इस बात पर बल दिया। सांख्यिकी के प्रयोग के लिए उनकी मान्यताओं के बारे में जानना बहुत आवश्यक है। आगे विषयवस्तु से संबंधित भ्रांतियों को दूर करने के लिए विभिन्न शोधार्थियों की शोध समस्याओं को लेकर समस्या को हल करने तथा शोध के उद्देश्य को बनाने का तरीका बताया और बताया कि यदि शोध में उपकरण सही हैं तो शोध भी सही दिशा में आगे बढेगा। अंत में इन्होंने प्रश्नावली से प्राप्त आँकड़ों को गुणात्मक से मात्रात्मक में परिवर्तित करने का तरीका भी बताया तथा सामान्य प्रायिकता कर्व पर चर्चा की। अंतिम सत्र के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शोधार्थी द्वारा किया गया।

तृतीय सत्र का आरंभ **प्रो. सुशील कुमार त्यागी** ने किया। जिसमें उन्होंने पहले दिन बताए गए मान विटनी u परीक्षण के एक-पुच्छीय तथा द्वि-पुच्छीय प्रकारों के बारे में विस्तार से बताया। प्रो. सुशील कुमार त्यागी ने t – परीक्षण तथा मान विटनी u-परीक्षण में अंतर को स्पष्ट किया और किस स्थान पर t-परीक्षण का प्रयोग किया जाएगा तथा किस स्थान पर u-परीक्षण का, इसके बारे में भी जानकारी दी।

तृतीय सत्र के पश्चात z स्कोर कैसे निकाला जाता है इसके बारे में जानकारी दी। साथ-ही-साथ व्यावहारिक रूप से भी सिखाया। आगे उन्होंने एक-पुच्छीय तथा द्वि-पुच्छीय परिकल्पना को बनाने का तरीका बताया तथा इस पर कुछ उदाहरण देकर इसे समझाने की कोशिश की। सत्र के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शोधार्थी भोलानाथ द्वारा किया गया।

दिनांक : 23-03-2018

कार्यशाला के **प्रथम सत्र** की व्याख्याता **प्रो. रेखा शर्मा**, उपनिर्देशक, मानव संसाधन विकास केंद्र, नागपुर विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र उपस्थित थी। प्रो. रेखा शर्मा ने अपनें व्याख्यान विषय '**बुनियादी वर्णनात्मक प्रदत्तों का एस.पी.एस.एस. में उपयोग**' के प्रारंभिक चरण में सांख्यिकीय विधियों के बारे में अवधारणात्मक जानकारी प्रदान की। आपने प्राचल व अप्राचल सांख्यिकीय विधियों पर चर्चा के साथ ही मापन के विभिन्न स्तरों जैसे – नामित, क्रमित, अंतराल एवं अनुपात पर भी प्रकाश डाला। प्रो. शर्मा ने एक्सल सॉफ्टवेयर पर विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से प्रतिभागियों को अभ्यास कराया एवं उदाहरण के रूप में प्रतिभागियों को कई प्रकार के आँकड़े भी दिए। तत्पश्चात एस.पी.एस.एस. के माध्यम से कैसे विश्लेषण किया जाता है, यह समझाने का प्रयास किया।

समय 12:20 PM से कार्यशाला का **द्वितीय सत्र** प्रारंभ हुआ। इस सत्र की व्याख्याता **प्रो. रेखा शर्मा** ने की। इन्होंने प्रथम सत्र के व्याख्यान विषय को ही और आगे बढ़ाया। द्वितीय सत्र में प्रो. रेखा शर्मा ने वर्णनात्मक विश्लेषण 'एस.पी.एस.एस.' पर कैसे किया जाता है, इसको बताने का प्रयास किया तथा सभी प्रतिभागियों को प्रदत्त विश्लेषण करना सिखाया। इसके साथ ही नामित स्तर के आँकड़ों के विश्लेषण पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा की। प्रो. रेखा शर्मा ने द्वितीय सत्र में अवधारणात्मक जानकारी के बजाय प्रदत्तों के विश्लेषण के अभ्यास पर अधिक बल दिया।

कार्यशाला के **तृतीय सत्र** के व्याख्याता **प्रो. वी.पी. सिंह** *(NCERT, नई दिल्ली)* उपस्थित थे। इन्होंने 'एस.पी.एस.एस.' से जुडी व्यावहारिक जानकारी के साथ नवीनतम तथ्यों से भी अवगत कराया। प्रो. वी.पी. सिंह ने विभिन्न उदाहरणों एवं कहानियों के माध्यम से 'एस.पी.एस.एस.' की उपयोगिता पर विस्तारपूर्वक चर्चा की और एस.पी.एस.एस. से Matrix का Invers तथा एक्सल से Matrix का Invers कैसे निकालते हैं?, आदि महत्वपूर्ण तथ्यों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रो. वी.पी. सिंह ने मध्यमान, मध्यांक तथा बहुलक पर बात करते हुए प्रतिभागियों के पूर्व ज्ञान को जानने का प्रयास किया।

टी-टेस्ट, तथा इसके उपयोग पर चर्चा करने के साथ-ही-साथ प्रो. वी.पी. सिंह ने प्रतिदर्श डिजाइन व सर्वे आदि महत्वपूर्ण संप्रत्ययों के संदर्भ में भी जानकारी प्रदान की। प्रो. सिंह ने शोध प्रारूप के चरण व इसके विभिन्न पहलुओं पर भी बात की तथा मानक विचलन एवं मध्यमान पर भी विस्तार से चर्चा की। महोदय ने अपने व्याख्यान विषय 'टी-टेस्ट का अनुप्रयोग' के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की।

चतुर्थ सत्र की व्याख्याता डॉ. सुदेशना लाहिड़ी, सह-प्रोफेसर, कलकत्ता विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल थी। अपने व्याख्यान विषय 'टी-टेस्ट का निष्कर्ष व 'एस.पी.एस.एस.' के माध्यम से इसका उपयोग' पर प्रतिभागियों की विषयगत पृष्ठभूमि जानने के बाद अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। इन्होंने व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से सांख्यिकी की विश्वसनीयता को समझाने का प्रयास किया। अपने सरल व सहज वाणी के द्वारा डॉ. सुदेशना लाहिड़ी ने प्रतिभागियों को अभिप्रेरित करने के साथ ही साथ विभिन्न संप्रत्ययों को स्पष्ट किया। इसके बाद महोदया ने टी- टेस्ट तथा सांख्यिकीय अवधारणाओं के सैद्धांतिक पक्ष पर भी प्रकाश डाला।

दिनांक: 24-03-2018 को विभिन्न सांख्यकीय विधियों की 'एस.पी.एस.एस.' के माध्यम से गणना के प्रशिक्षण क्रम में आज विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. सुदेशना लाहिड़ी**, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, मौजूद थी। डॉ. लाहिड़ी द्वारा 'टी- परीक्षण' एवं काई-वर्ग की गणना के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन सत्रों में संपन्न हुआ एवं चतुर्थ सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए जिसमें दोनों बाह्य तथा आतंरिक प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रस्तुतियाँ दीं।

प्रथम सत्र के दौरान **डॉ. सुदेशना लाहिड़ी** द्वारा टी- परीक्षण के सैंद्धातिक पक्ष पर प्रकाश डाला गया। टी- परीक्षण के बारे में चर्चा को प्रारंभ करते हुए इन्होंने बताया कि टी- परीक्षण का उपयोग दो समान समूहों जिनका चयन एक ही जनसंख्या से किया गया हो, के बीच के अंतर की सार्थकता के परीक्षण हेतु किया जाता है। इसके अंतर्गत इन्होंने टी- परीक्षण के प्रमुख अभिग्रहों और टी- परीक्षण के उपयोग की कौन-कौन सी दशाएँ होती हैं, के बारे में भी बताया। साथ-ही-साथ डॉ. सुदेशना लाहिड़ी ने मध्यमान एवं मानक विचलन के सैंद्धातिक एवं व्यावहारिक पक्षों को बताया। मानक विचलन यह बताता है कि किसी जनसंख्या के मध्यमान से वैयक्तिक भिन्नता कितनी है या दूसरे शब्दों में कहें तो मध्यमान के फैलाव से है। इस सत्र में टी-परीक्षण की परिकल्पना को कैसे बनाया जाए एवं साथ ही टी- परीक्षण में सार्थकता का क्या महत्व है, इस पर भी चर्चा हुई। डॉ. सुदेशना लाहिड़ी द्वारा टी-परीक्षण के अतिरिक्त एनोवा, सह-संबंध, प्रतिगमन विश्लेषण की शून्य परिकल्पना को कैसे लिखा जाए, इन सांख्यिकीय विधियों का संक्षिप्त परिचय दिया एवं इन विधियों के वितरण तालिका निर्माण के बारे में बताया।

द्वितीय सत्र में पुनः विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. सुदेशना लाहिड़ी** उपस्थित थीं। इस सत्र में डॉ. सुदेशना लाहिड़ी द्वारा 'एस.पी.एस.एस.' के इतिहास के बारे में परिचय दिया गया तथा बताया कि इसे नॉर्मन 'एच. नाइ, डले एच. बेंट' और सी. हदलाई हल्ल द्वारा 1968 में विकसित किया गया।

एक बार पुनः महोदया ने टी- परीक्षण के प्रकार - स्वतंत्र टी- परीक्षण, समूह टी- परीक्षण एवं एक समूह टी- परीक्षण एवं इनकी मान्यताएँ क्या है और ये कब उपयोग में लाए जाते हैं इत्यादि के बारे में मार्गदर्शित किया। इस सत्र में टी- परीक्षण के लिए 'एस.पी.एस.एस.' में डाटा इनपुट एवं गणना के बारे में डॉ. सुदेशना लाहिड़ी द्वारा प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया। इसके साथ ही विशेषज्ञ द्वारा टी- परीक्षण उपयोग करने के पूर्व लिवीन सार्थकता के बारे में बताया गया कि लिवीन सार्थकता बताती है कि क्या टी- परीक्षण लगाया जाए अथवा नहीं।

तृतीय सत्र में **डॉ. सुदेशना लाहिड़ी** ने काई वर्ग के बारे में विस्तार से चर्चा की जिसमें नामिक या श्रेणीबद्ध प्रदत्तों के प्रत्येक दो या दो से ज्यादा स्तरों वाले एक या ज्यादा स्वतंत्र चरों का मूल्यांकन शामिल है। काई वर्ग परीक्षण की सार्थकता एवं सार्थकता के स्तरों के बारे में भी डॉ. सुदेशना लाहिड़ी ने बताया। साथ-ही-साथ इन्होंने यह भी बताया कि यदि काई वर्ग परीक्षण सार्थक हो तो मानकीकृत अवशिष्टों के परीक्षण (test of the standardized residuals) करना चाहिए। जिसके अंतर्गत पोस्ट हॉक विश्लेषण किया जाता है जो यह निर्धारित करता है कि कौन से कोष्ठक काई वर्ग परीक्षण की सार्थकता में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। काई वर्ग परीक्षण के इन सैद्धातिक पक्षों के बाद डॉ. सुदेशना लाहिड़ी ने 'एस.पी.एस.एस.' के माध्यम से काई वर्ग की गणना का प्रशिक्षण दिया, इसके बाद परिणामों के प्रस्तुतीकरण के बारे में बताया।

चतुर्थ एवं **अंतिम सत्र** में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस सत्र में कई आंतरिक एवं बाह्य शोधार्थी जो प्रतिभागी के रूप में मौजूद थे, सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभागिता की। कार्यक्रम के अंत में विभिन्न प्रतिभागियों ने बाह्य विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित कलकत्ता विश्वविद्यालय की सह-प्रोफेसर डॉ. सुदेशना लाहिड़ी का एवं इस कार्यशाला के आयोजक शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हि.वि., वर्धा के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिनांक 26-03-2018 को विभाग के सहायक प्रोफेसर **डॉ. रामानंद यादव** द्वारा भोपाल से पधारे विषय विशेषज्ञ **डॉ. सभाकांत द्विवेदी** का स्वागत किया गया। डॉ. सभाकांत द्विवेदी ने **प्रथम सत्र** की शुरुआत में प्रसरण के विषय में सबको अवगत कराया। डॉ. द्विवेदी ने मुख्य रूप से व्यावहारिक दृष्टि में कहा कि प्रसरण झूठ पकड़ने की मशीन है ("Analysis of variance is lie detecting machine") जिसके द्वारा हम यह जान पाते हैं कि आँकड़ें किसी एक ही समूह से लिया गया है या दो अलग-अलग समूह से लिए गए है। जब प्रत्युत्तर में हाँ / नहीं में होता है तो उसे बाइनरी प्रदत्त कहते हैं। यह वैज्ञानिक प्रदत्त होता है। जब इस प्रदत्त को प्रतिशत या दशमक में बदल देते हैं तो यह ज्यादा विश्वसनीय हो जाता है।

डॉ. सभाकांत द्विवेदी ने बताया कि किस प्रकार झूठे आँकड़ों के आधार पर भी सही परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। इस प्रत्यय का विकास सेलुकस एस. सिराकास ने किया। इन्होंने एनोवा के तीन प्रकार F- परीक्षण एक-मार्गीय एनोवा और द्वि-मार्गीय एनोवा के विषय से सभी को अवगत कराया। चाय अंतराल के उपरांत **डॉ. सभाकांत द्विवेदी** ने एनोवा टेबल के बारे में

बताया और किस प्रकार से इस टेबल का विश्लेषण करें इसकी जानकारी दी, साथ ही साथ उन्होंने कुछ प्रश्नों का अभ्यास भी कराया।

कार्यशाला के **द्वितीय सत्र** में **डॉ. विजय कुमार चेची** (लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी) ने 'एस.पी.एस.एस.' के माध्यम से प्रतिगमन के विभिन्न प्रकारों (Vicariate & Multivariate) पर चर्चा की। चर्चा के दौरान ही सभी प्रतिभागियों को व्यावहारिक रूप से अभ्यास कराया ताकि सभी प्रतिभागी 'एस.पी.एस.एस.' की सहायता से प्रतिगमन को हल करने में सक्षम हो सके। कार्यशाला के अंतिम सत्र में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शोधार्थी आलोक कृष्ण द्विवेदी द्वारा किया गया।

दिनांक 27-03-2018 के **प्रथम सत्र** के आरंभ होने की औपचारिक घोषणा मनोविज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर **डॉ. अमित कुमार त्रिपाठी** द्वारा किया गया। इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. विजय कुमार चेची**, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, पंजाब, उपस्थित थे। डॉ. चेची ने कारक विश्लेषण (Factor Analysis) के बारे में बताया। इसके उपरांत उन्होंने वैधता (Validity) के विभिन्न प्रकारों के बारे में जानकारी दी। वैधता के प्रकारों में विषय वैधता (Content Validity), निर्माण वैधता (Construct Validity), मानदंड कसौटी वैधता (Criteria Validity), समवर्ती वैधता (Concurrent Validity) तथा आभासी वैधता (Face Validity) के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। इन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि प्रश्नावली को किस प्रकार विधिमान्यकरण (Validate) किया जाता है तथा किस प्रश्नावली की कौन-सी वैधता निकाली जाती है। इसके साथ-साथ उन्होंने प्रश्नावली निर्माण के नियमों, सिद्धांतों व सावधानियों के बारे में भी जानकारी दी। विषय विशेषज्ञ डॉ. विजय कुमार चेची द्वारा कारक विश्लेषण (Factor Analysis) के विभिन्न अवधारणाओं को क्रमश: प्रसामान्यता (Normality) तथा रैखिकता (Linearity) से अवगत कराया गया। आपने यह भी बताया कि कारक विश्लेषण किस परिस्थिति में करनी है व इसकी प्रक्रिया क्या है। इसके पश्चात उन्होंने कारक विश्लेषण (Factor Analysis) से जुड़ी विभिन्न सांख्यिकी से सबको अवगत कराया। तत्पश्चात महोदय ने 'एस.पी.एस.एस. में कारक विश्लेषण' (Factor Analysis) का प्रयोग करके बताया।

द्वितीय सत्र के आरंभ की औपचारिक घोषणा शिक्षा विभाग के सह-प्रोफेसर **डॉ. शिरीष पाल सिंह** द्वारा किया गया। इस सत्र की विषय विशेषज्ञ प्रो. शेफाली पंड्या, शिक्षा संकाय, मुंबई विश्वविद्यालय, का स्वागत शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर सुश्री सारिका राय शर्मा द्वारा किया गया। इस स्वागत सत्र में शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर एवं शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रामानंद यादव उपस्थित थे।

प्रो. शेफाली पंड्या द्वारा इस सत्र में www.vassarstats.net ऑनलाइन वेबसाइट द्वारा सह-संबंध कैसे ज्ञात किया जाता हैं तथा प्राप्त परिणामों की व्याख्या किस प्रकार की जाती है, इसकी जानकारी दी गई। इसके उपरांत इन्होंने सह-संबंध के

तीन उदाहरणों को लेकर www.vassarstats.net ऑनलाइन वेबसाइट में आँकड़ों को प्रवेश करके प्रायोगिक रूप से परिणाम निकालकर बताया। इसके बाद F Max for computing ऑनलाइन वेबसाइट की भी जानकारी दी। तत्पश्चात इन्होंने www.vassarstats.net ऑनलाइन वेबसाइट में आव्यूह (Matrix) के निर्माण के बारे में बताया। साथ ही इन्होंने बहु सह-संबंध (Multiple Correlation) की गणना करना सिखाया।

तृतीय सत्र में पुन: **डॉ. विजय कुमार चेची** ने कारक विश्लेषण का प्रायोगिक अभ्यास प्रतिभागियों को कराया। इन्होंने प्रतिभागियों को www.vassarstats.net ऑनलाइन वेबसाइट में आँकड़ों को प्रवेश करना भी सिखाया। कारक विश्लेषण के प्रायोगिक अभ्यास के उपरांत डॉ. विजय कुमार चेची ने द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण (Two-Way ANOVA) का अनुप्रयोग 'एस.पी.एस.एस.' द्वारा करना सिखाया तथा प्रतिभागियों से प्रायोगिक अभ्यास कराया।

चतुर्थ सत्र में **प्रो. शेफाली पंड्या** ने पार्श्विक सह-संबंध पर प्रकाश डाला। इन्होंने पार्श्विक सहसंबंध के विभिन्न उदाहरणों को www.vassarstats.net ऑनलाइन वेबसाइट के द्वारा समझाया और टी-परीक्षण को www. vassarstats.net ऑनलाइन वेबसाइट के द्वारा प्रयोग करना सिखाया। प्रो. शेफाली पंड्या प्रतिभागियों को www.vassarstats.net ऑनलाइन वेबसाइट में आँकड़ा प्रवेश करना भी सिखाया।

राष्ट्रीय कार्यशाला के अंतिम दिन (28 मार्च, 2018) के **प्रथम सत्र** के विषय विशेषज्ञ **डॉ. समीर बाबू,** सहायक प्रोफेसर *(शिक्षा विभाग, केरल विश्वविद्यालय)* ने सर्वप्रथम उपकरण निर्माण के बारे में बताया। इन्होंने Data Filter SPSS के माध्यम से किस प्रकार किया जाए तथा आँकडों का वर्गीकरण 'एस.पी.एस.एस.' के माध्यम से किस प्रकार करें। इसके लिए उन्होंने बताया कि अलग-अलग चरों को आँकडों के द्वारा वर्गीकृत किया जाता है। प्रतिभागियों एवं विशेषज्ञ के बीच अलग-अलग प्रश्नों के माध्यम से उपकरण में किस प्रश्न को रखना है और किस प्रश्न को नहीं रखना हैं। उन्होंने विभिन्न प्रकार के उपकरण के पहले किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। इस संबंध में जाँचसूची (Checklist), प्रश्नावली (Questionnair) अनुसूची, पैमाना (Scale), सूची (Inventory) आदि का निर्माण किस प्रकार करना चाहिए इस विषय पर चर्चा की तथा वस्तु विश्लेषण (Item Analysis) के बारे में बताया। इसके साथ ही साथ विश्वसनीयता के विभिन्न प्रकारों जिसमें Test-Retest Reliability, Split Half Reliability, Cronbach's Alpha के विषय में तथा वैधता के विभिन्न प्रकार Face Validity, Content Validity, Construct Validity आदि के बारे में बताया। इसके बाद Norms और Administrate करने के साथ ही Parametric और Non Parametric Probability के प्रसंग में भी चर्चा की।

द्वितीय सत्र में एस.पी.एस.एस के माध्यम से Split Half Reliability कैसे निकाली जाए इसके लिए सभी प्रतिभागियों के अपने लैपटाप पर अभ्यास कराया गया। किसी उपकरण को किस प्रकार से मानवीकृत उपकरण बनाया जाता है। इस संदर्भ में पर्यावरण जागरुकता का उदाहरण देते हुए एस.पी.एस.एस. के माध्यम से बृहद रूप से बताया गया।

5. उच्च शिक्षा संस्थानों में माननीय कुलपति, माननीय प्रतिकुलपति, निर्देशक, अधिष्ठाता, अध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष्यों के लिए चार दिवसीय अकादमिक नेतृत्त्व प्रशिक्षण कार्यक्रम (दिनांक 01-04 मई, 2018)

शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा अकादमिक नेतृत्व एवं शैक्षिक प्रबंधन केंद्र, मुस्लिम अलीगढ विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में उच्च शिक्षा संस्थानों के माननीय कुलपति, माननीय प्रतिकुलपति, निर्देशक, अधिष्ठाता, अध्यक्ष, विभागाध्यक्षों के लिए चार दिवसीय अकादमिक नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 01-04 मई, 2018 तक किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य उच्च शिक्षा के क्षेत्र में देश के लिए ऐसे शैक्षिक अग्रणी तैयार करना था, जिसमें उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रभावी प्रबंधन एवं संचालन के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति हो जिससे वे उच्च शिक्षा के अकादमिक, वित्तीय एवं प्रशासनिक पक्षों में विद्यमान चुनौतियों का सामना सक्षमता से कर सकें। तथा इसे नई ऊंचाइयों पर ले जा सकें। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों से आए लगभग 41 निदेशक, अधिष्ठाता, अध्यक्ष, विभागाध्यक्षयों तथा विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्यों ने सहभागिता की तथा देश की उच्च शिक्षा में अकादमिक नेतृत्व क्षेत्र से जुड़े कई प्रख्यात विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

दिनांक : 01-05-2018

उद्घाटन सत्र

अकादमिक नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का आरंभ दीप प्रज्वलन तथा विश्वविद्यालय की संस्कृति की पहचान, कुलगीत के गायन के साथ हुआ, जिससे पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो उठा। इस उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** द्वारा की गई। इस सत्र के मुख्य अतिथि दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्थापक माननीय कुलपति प्रो. जनक पाण्डेय थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के माननीय प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा तथा विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययन का शिक्षण-अधिगम केंद्र (TLCHS- Teaching Learning Centre in Hindi Studies) के निदेशक प्रो. के.के. सिंह मंचासीन थे। मंच संचालन का कार्य डॉ. भरत कुमार पंडा (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा) द्वारा किया गया। अतिथियों तथा सभागार में उपस्थित विषय विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों का स्वागत डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर (विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हि.वि.,वर्धा) ने अपने शब्द सुमन के साथ किया। डॉ. ठाकुर ने यह आशा व्यक्त किया कि यह कार्यक्रम एकतरफा नहीं होगा, क्योंकि कार्यक्रम के सभी प्रतिभागी अनुभवी है|

मुख्य अतिथि **प्रो. जनक पाण्डेय** (माननीय कुलपति, बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय) एवं अध्यक्षता कर रहे माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** और विश्वविद्यालय के माननीय प्रतिकुलपति **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** साथ-साथ दीप प्रज्ज्वलन करते हए।

उनके अनुभव कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों के विचार-विमर्श का महत्वपूर्ण हिस्सा होंगे। इसके पश्चात कार्यक्रम के समन्यवयक डॉ. शिरीष पाल सिंह (सह प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हि.वि., वर्धा) ने कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम के लक्ष्यों एवं इसके उद्देश्यों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। तत्पश्चात प्रो. के. के. सिंह ने अपने वक्तव्य द्वारा प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। और कहा कि जो लोग शिक्षण के कार्य से जुड़े है उनसे हमारा समाज कुछ अधिक की अपेक्षा करता है, कुछ अधिक की मांग करता है यही कारण है कि हमारी जिम्मेदारी अन्य लोगों की तुलना ज्यादा है और उन्होंने इसके उपरांत दिनकर जी की एक पंक्ति सुनाई:-

चिंतन कर यह जान की तेरी क्षण-क्षण की चिंता से दूर दूर तक के भविष्य का मनुष्य जन्म लेता है,
उठा चरण यह सोच कि तेरे पग के नीक्षेपों की आगामी युग के कानों में ध्वनियाँ पहुँच रहे हैं।

प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने अपने वक्तव्य में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की संरचना का उदाहरण देकर पंडित मदन मोहन मालवीय जी की सोच कितनी गहरी थी कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की पहली पंक्ति में छात्रावास होगा, उसके बाद खेल का मैदान होगा। उसके बाद की पंक्ति संकायों की होगी तथा केंद्र में कार्यालय होंगे, जो विश्वविद्यालय के हृदय में मौजूद होंगे।

प्रो. आनंद वर्धन शर्मा (माननीय प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय) अपने वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए।

इस क्रम में मुख्य अतिथि **प्रो. जनक पाण्डेय** ने बताया कि हमारे यहाँ लगभग 47 केंद्रीय विश्वविद्यालय है। IIT की संख्या 25 हो गई है तथा प्रत्येक राज्य में एक आई.आई.एम., आई.आई.टी. तथा एन.आई.टी. की स्थापना प्रस्तावित है। विज्ञान के विकास के लिए IISER संस्था शुरू की गई है। इन संस्थानों को अपने लक्ष्य की विस्तार करने, विश्व के विभिन्न विषयों को व्यापक स्थान देने तथा इन विषयों के बीच अंतराफलक को बढ़ावा देने तथा समाज की समकालीन आवश्यकताओ के अनुसार नए-नए विषयों को शरू करने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि **प्रो. जनक पाण्डेय** (माननीय कुलपति, बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय) प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

इन्होंने बताया कि किसी भी संस्था का विकास तभी होगा जब वहाँ के कर्मचारी, संकाय सदस्यों तथा विद्यार्थियों के मध्य पारस्परिक विश्वास का रिश्ता स्थापित होगा।

प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने अपने वक्तव्य में "विश्वविद्यालय में अकादमिक नेतृत्व का विकास किस प्रकार किया जाए? इस मुद्दे पर विचार–विमर्श के लिए प्रतिभागियों को प्रेरित किया। आपने बताया कि हम हमेंशा अपने वर्तमान की कमजोरियों पर पर्दा डालने के लिए अपने इतिहास का महिमा मंडल करते रहते हैं, किंतु तात्कालिक आवश्यक यह है कि किस प्रकार इस इतिहास को दोहराया जाए।

प्रो. मिश्र ने बताया कि 1857 में अंग्रेजों ने जो विश्वविद्यालय कोलकाता, मद्रास तथा मुंबई में स्थापित किए, उनका उद्देश्य ज्ञान का सृजन करना नहीं था बल्कि इस बात का मूल्यांकन करना था कि निर्धारित पाठ्यक्रम को सही ढंग से चलाया जा रहा हैं या नहीं, परीक्षा सही ढंग से ली जा रही है या नहीं। आज भी वही स्थिति बनी हुई है, एक विश्वविद्यालय कई महाविद्यालयों को मान्यता देता है जो बिना किसी योजना के तहत चल रहा है। इससे सबसे बड़ी क्षति यह हुई है कि जो गुणवत्ता हमारे विश्वविद्यालयों की होनी चाहिए, वह ख़त्म होती चली जा रही है, उसका क्षरण होता चला जा रहा है। इसके उन्नयन के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम का संचालन नितांत आवश्यक है। तत्पश्चात कार्यक्रम की संयोजिका **श्रीमती शिल्पी कुमारी** (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हि.वि.,वर्धा) ने सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों, आमंत्रित विशेषज्ञों तथा प्रतिभागियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया।

विषय: भारत में उच्च शिक्षा की संघीय तथा राज्य व्यवस्था (Federal and State System of Higher Education in India)

प्रथम सत्र (11.40 AM-1:10 PM)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो. गिरीश्वर मिश्र, माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

मंच संचालन : डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र

स्वागत वक्तव्य : डॉ. रामार्चा पाण्डेय

धन्यवाद ज्ञापन : श्रीमती आर. पुष्पा नामदेव

प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने अपने व्याख्यान विषय **'भारत में उच्च शिक्षा की संघीय तथा राज्य व्यवस्था (Federal and State System of Higher Education in India)'** पर बताया कि भारत में आरंभ में जो विश्वविद्यालय बने वे विभिन्न महाविद्यालयों की व्यवस्था करने के लिए बनाए गए थे, ताकि उनकी परीक्षा ठीक-ठाक ढंग से हो, उनके पाठ्यक्रम का स्वरूप ठीक हो। उसके बाद राज्य की भूमिका बढ़ी और राज्य में विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। 1970 के चरण में उच्च संस्थाओं के विकास और व्यापक में वृद्धि का घनिष्ट अंतर्संबंध था। हमें मानव संसाधन के रूप में समकालीन व्यापक के लिए ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता थी जिनमें इन व्यापारों से संबंधित कौशल विद्यमान हो। इस पर बल देते हुए कई प्रोफेशनल और वोकेशनल संस्थान खोले गए तथा सन 2000 के बाद प्राईवेट संस्थान बड़ी तेजी के साथ खुले। आगे इन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय कहीं न कहीं देश व समाज की पहचान के साथ जुड़ा होता है, अंत: इस बात पर विचार मंथन किया जाना चाहिए कि इसे किस प्रकार सामान्य जीवन के साथ जोड़ा जाए। इस संदर्भ में उन्होंने हावर्ड विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक गार्डनर की बात को उद्धृत किया- "हमारी बुद्धि, हमारा मस्तिष्क कई प्रकार का है यह केवल संज्ञानात्मक ज्ञान को ही नहीं सीखता, बल्कि अन्य प्रकार के ज्ञान को भी सीखता है।" जैसे- नृत्य की अपनी एक बुद्धि है, शारीरिक कार्यों के लिए अलग प्रकार की बुद्धि है, हम कैसे समाज में अपना

स्थान बनाए, यह भी एक प्रकार की बुद्धि है और यह विविधता स्वाभाविक है, परंतु हमारी उच्च शिक्षा व्यवस्था में बल नहीं दिया जाता है। उच्च शिक्षा एकांगी नहीं होनी चाहिए, यहाँ अंतरानुशासनिक हस्तक्षेपों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

द्वितीय सत्र (2:10-3:40 PM)

विषय: उच्च शिक्षा में प्रतिनिधिमंडल और विकेंद्रीकरण (Distribution of Authority / Delegation and Decentralization in Higher Education)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो. जनक पाण्डेय, पूर्व माननीय कुलपति, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय

मंच संचालन : डॉ. सुहासिनी बाजपेयी

स्वागत वक्तव्य : डॉ. रामानंद यादव

धन्यवाद ज्ञापन : श्री समरजीत यादव

प्रो. जनक पाण्डेय ने अपने व्याख्या विषय 'शिक्षा में प्रतिनिधिमंडल और विकेंद्रीकरण (Distribution of Authority / Delegation and Decentralization In Higher Education)' के सबंध में बताया कि विश्वविद्यालय का निर्माण किसी विशेष उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है, किंतु विश्वविद्यालयों के माननीय कुलपति एवं माननीय प्रतिकुलपति या तो संस्था के मिशन से अनभिज्ञ होते हैं या उनके लिए उनका अपना दृष्टिकोण संस्थान के मिशन से अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। उन्होंने कहा कि सभी माननीय कुलपतियों को अपने विश्वविद्यालय के क्रियाकलापों तथा उनसे संबंधित चुनौतियों से परिचित होना चाहिए और इसके समाधान के लिए तैयार रहना चाहिए। साथ ही उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विश्वविद्यालय के क्रियाकलाप संस्था के मिशन एवं लक्ष्यों के अनुरूप हों। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार राजनीतिक पार्टियाँ स्वयं के फायदे के लिए विश्वविद्यालय की स्वायत्तता छीन लेती हैं।

मुख्य अतिथि **प्रो. जनक पाण्डेय**, पूर्व माननीय कुलपति, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय के शिक्षक के विषय में उन्होंने कहा कि शिक्षकों को सबल बनाने के लिए नवाचार के व्यापक अवसर प्रदान किए जाने चाहिए क्योंकि शिक्षण विश्वविद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण इकाई होता है- विश्वविद्यालय शिक्षकों से नहीं बनता बल्कि शिक्षक स्वयं ही विश्वविद्यालय होता है।

प्रो. जनक पाण्डेय ने बताया कि उनके अनुसार विश्वविद्यालय का कार्य सिर्फ नए ज्ञान का निर्माण करना ही नहीं, बल्कि पुराने ज्ञान का संरक्षण करना भी है। वर्तमान समय में संस्थानों का जिस प्रकार से व्यवसायीकरण किया जा रहा है। इससे विश्वविद्यालय के ज्ञान निर्माण का क्षेत्र सीमित होता जा रहा है। आगे इन्होंने उच्च शिक्षा प्रणाली में एकीकृत शिक्षा प्रणाली पर बल देते हुए बायो-टेक्नोलॉजी, नैनो-टेक्नोलॉजी जैसे विषयों को शुरू किए जाने की बात की, जो शिक्षार्थियों के लिए ज्यादा उपयोगी सिद्ध होते हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में हमेंशा कोई बड़ा कार्य करने की जरुरत नहीं है, किसी छोटे कार्य को भी आप बड़े स्तर पर व्यापक रूप से कर सकते है। प्रो. जनक पाण्डेय ने आगे विकेन्द्रीकरण पर चर्चा करते हुए कहा कि प्रत्येक शिक्षक की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने अधिकारों से परिचित हो तथा अपना कर्तव्यों का निर्वहन ईमानदारी से करे। वर्तमान समय में विश्वविद्यालय की शक्ति पूरी तरह माननीय कुलपति में निहित होती है किंतु संस्थाओं के बेहतर प्रबंधन तथा प्रदर्शन के लिए इसे विकेंद्रित किए जाने की आवश्यकता है।

द्वितीय सत्र

विषय : उच्च शिक्षा में शोध क्षमता का विकास तथा व्यवहारकुशल नियोजन (Developing Research Capacity and Strategic Planning in Higher Education)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो .अनिल कुमार,एन .टी .टी.आर., भोपाल

मंच संचालन : श्री धर्मेन्द्र शंभरकर

स्वागत वक्तव्य : श्री कृष्णानंद दन्नाना

धन्यवाद ज्ञापन : डॉ. शेष कुमार शर्मा

प्रो. अनिल कुमार ने शैक्षिक प्रशासन और प्रबंधन में शोध की भूमिका से प्रतिभागियों को अवगत कराया। प्रो. अनिल कुमार ने कहा कि शोध सिर्फ उपाधि के लिए नहीं होते, अपितु इसे शोध की संस्कृति के रूप में देखा जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि हमारे देश में जीडीपी का 0.6 प्रतिशत शोधकार्य में लगाया जा रहा है, ऐसा इसलिए है कि हमारे यहाँ शोध की कोई संस्कृति नहीं है। यह भी एक मुख्य कारण है जिसकी वजह से हमारे देश के विश्वविद्यालय, विश्व के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में अपना स्थान नहीं बना पा रहे हैं।

दिनांक : 02-05-2018

प्रथम तथा द्वितीय सत्र

विषय : संस्थागत प्रदर्शन तथा बेहतर प्रशासन (Institutional Performance and Better Governance), विद्यार्थियों की सफलता के लिए उच्च प्रभावी अभ्यास (High Impact Practices for Student Success)

मंच संचलन : डॉ. भरत कुमार पंडा

स्वागत वक्तव्य: डॉ. तक्षा शंभरकर

धन्यवाद ज्ञापन : श्रीमती सरिता चौधरी

प्रो. वाई नरसिमहुल ने अपने वक्तव्य में बताया कि एक आदर्श विश्वविद्यालय ऐसा विश्वविद्यालय होता है जो अपने अध्येताओं को बेहतर सोचने तथा बेहतर चयन करने का समुचित अवसर प्रदान करता है। उन्होंने वर्तमान सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य में एकीकृत कौशल विकास पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय में चलाए जाने की आवश्यकता की ओर प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित किया। आपने उच्च शिक्षा संस्थानों के बेहतर प्रदर्शन के लिए शत प्रतिशत आतंरिक मूल्यांकन तथा शिक्षकों के कार्यों के आकलन के लिए विद्यार्थियों द्वारा शत प्रतिशत पृष्ठपोषण को अपनाएँ जाने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि जिस वक्त संस्था के कर्मचारी अपने उत्तरदायित्व को समझने लगे, समझिए तभी से संस्था पुष्पित और पल्लवित होने लगती है।

विश्वविद्यालय जिस इलाके में स्थित होता है, उस इलाके तथा आस-पास के इलाकों के सामाजिक– आर्थिक विकास की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय की होती है। साथ ही उन्होंने इस बात पर बल दिया कि उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम समग्र विकास को संवर्धित करने वाले होने चाहिए, जहाँ ज्ञान, शोध तथा परामर्श द्वारा समाज का विकास हो सके।

कार्यक्रम में आए हुए मुख्य अतिथि **प्रो. वाई नरसिमहुल** एवं आए हुए अन्य अतिथिगण

तृतीय सत्र

विषय : टीम का निर्माण, कर्मचारियों को पोषित करना तथा गठबंधन को सुदृढ़ करना (Building Teams, Nurturing Staff and Strengthening Alliances)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो. जनक पाण्डेय, पूर्व माननीय कुलपति, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय

मंच संचालन : श्रीमती शिल्पी कुमारी

स्वागत वक्तव्य : श्री कृष्णानंद दन्नाना

धन्यवाद ज्ञापन : श्री मनोज चौधरी

अकादमिक नेतृत्त्व प्रशिक्षण कार्यक्रम के **द्वितीय दिन** के **तृतीय सत्र** में दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व माननीय कुलपति **प्रो. जनक पाण्डेय** ने "**टीम का निर्माण, कर्मचारियों को पोषित करना तथा संगठन को सशक्त करना**" विषय पर अपने व्याख्यान की शुरूआत 1947 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में सम्मिलित पंडित जवाहरलाल नेहरु के वक्तव्य से की। पंडित जवाहरलाल नेहरु ने कहा था कि विश्वविद्यालय का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जहाँ मानवता पल्लवित-पुष्पित हो। विश्वविद्यालय आदर्श के स्तंभ होते हैं जिसका कार्य अपने संकाय सदस्यों को सबल बनाने, उनमें आदर्शों तथा मूल्यों का विकास करना होता है। आगे चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अपने संकाय सदस्यों को पोषित तथा सबल बनाने के लिए उन्हें विश्वविद्यालय के वातावरण से जोड़ता है तथा उनके मध्य मतभेदों को दूर करने के लिए संप्रेषण तथा पारस्परिक विश्वास स्थापित करने पर बल देता है। विश्वविद्यालय एक सजीव संस्था है, वहाँ उसी संजीदगी के साथ कार्य होना चाहिए।

विषय विशेषज्ञ **प्रो. जनक पाण्डेय**, पूर्व माननीय कुलपति, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय के संदर्भ में अपना व्याख्यान दिया।

विश्वविद्यालय का वातावरण ऐसा हो जहाँ पर सभी को समान अधिकार प्राप्त हो तथा सभी के बीच उत्तरदायित्व का वितरण समान रूप से हो। साथ ही इन्होंने दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय में अपने पदभार ग्रहण करने के दौरान सामने आई चुनौतियों तथा उनके समाधान के लिए किए गए कार्यों से संबंधित अपने अनुभवों को प्रतिभागियों के साथ साझा किया।

चतुर्थ सत्र

विषय : उच्च शिक्षा में शोध क्षमता का विकास तथा व्यवहारकुशल नियोजन (Developing Research Capacity and Strategic Planning in Higher Education)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो .अनिल कुमार, एन.आई.टी.टी.टी.आर., भोपाल

मंच संचालन : डॉ. सुहासिनी बाजपेयी

स्वागत वक्तव्य : डॉ. रामानंद यादव

धन्यवाद ज्ञापन : श्रीमती सरिता चौधरी

प्रो. अनिल कुमार ने कहा कि चूँकि हम उच्च शिक्षा में प्रशासनिक अधिकारियों के लिए सक्षमता निर्माण की बात कर रहे हैं, अत: हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि प्रशासन में जितने भी प्रकार के निर्णय लिए जाए, वे शोध तथा आँकड़ों के विश्लेषण पर आधारित हो, तभी हम सही मायनों में एक प्रशासनिक अधिकारी तथा प्रबंधक के रूप में सफल हो सकते हैं। साथ ही उन्होंने इस ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया कि जो निर्णय हम ले रहे हैं वह किसके हित में है – स्वहित में या देश हित में, इस पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रो. अनिल कुमार ने अपने विषय में शिक्षा में प्रशासनिक अधिकारियों के लिए सक्षमता निर्माण पर चर्चा करते हुए।

दिनांक : 03-05-2018

प्रथम सत्र एवं द्वितीय सत्र

विषय : उच्च शिक्षा में नवाचार एवं नेतृत्त्व तथा विश्वविद्यालयों में डिजिटलाइजेसन की चुनौतियाँ एवं अवसर (Challenges and Opportunities for Digitalization in Universities Innovation and Leadership in Higher Education)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो. एम. एस. सालुंखे, माननीय कुलपति, भारती विद्यापीठ, पुणे

मंच संचालन : श्री ऋषभ कुमार मिश्र एवं श्री अनवर अहमद सिद्दकी

स्वागत वक्तव्य : श्रीमती आर. पुष्पा नामदेव

धन्यवाद ज्ञापन : श्री धर्मेन्द्र शंभरकर

प्रो. एम.एम. सालुंखे ने अपने वक्तव्य का आरंभ नेलसन मंडेला के एक वाक्य '**शिक्षा परिवर्तन का एक सशक्त हथियार है**' के साथ किया। प्रो. एम.एम. सालुंखे ने विश्वविद्यालयों में होने वाले डिजटिलीकरण (Digitalization) की समस्याओं एवं इनके कारणों तथा इनको दूर करने के उपायों पर विस्तृत चर्चा की। प्रो. सालुंखे ने बताया कि CAAN विश्वविद्यालयों में डिजिटल उपकरणों तथा तकनीकी के उपयोग को विश्वविद्यालय की गुणवत्ता के लिए आवश्यक मानक माना जाता है। उन्होंने विश्वविद्यालयों के प्रयोजन को लेकर राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पटल पर चल रहे वाद-विवाद पर प्रकाश डाला।

प्रो. एम.एम. सालुंखे, माननीय कुलपति, भारती विद्यापीठ, पुणे अपना व्याख्यान वक्तव्य देते हुए।

इन्होंने विश्वविद्यालय की परिभाषा तथा उनको स्थापित करने के उद्देश्यों पर भी चर्चा की। आपने बताया कि वर्तमान समय में विश्वविद्यालयों के समक्ष निम्नलिखित मुख्य 3 मुद्दे हैं-

1. भारतीय विश्वविद्यालयों का विश्व की श्रेष्ठता सूची में स्थान।
2. भारतीय विश्वविद्यालय उद्यमी कैसे बनें।
3. 21 वीं सदी में शोध की गुणवत्ता में सुधार।

प्रो. एम.एम. सालुंखे ने एक विश्वविद्यालय में प्रभावी नेतृत्त्व शैली की अनेक विशेषताओं का भी वर्णन किया तथा उच्च शिक्षा संस्थान में नेतृत्त्व के दौरान होने वाले द्वंद के कारणों को कैसे जाना जाए एवं उनका निराकरण कैसे किया जाए, इस पर भी अपने विचार रखे। उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रबंधन को पारदर्शी बनाने तथा उच्च शिक्षा अभिजात वर्ग से आम लोगों तक पहुँचाने पर बल दिया। उन्होंने प्रौद्योगिकी एकीकृत अधिगम पर बल देते हुए जीवन की सततता के संवर्धन के लिए उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों को पुन: संरचित करने के लिए प्रेरित किया।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

विषय : उच्च शिक्षा में पाठ्यचर्या सुधार तथा इसका प्रबंधन (Curricular Reforms and its Management in Higher Education)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो. एन.एन. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.सी.ई.आर.टी.) नई दिल्ली

मंच संचालन : श्री अनवर अहमद सिद्दीकी

स्वागत वक्तव्य : श्री समरजीत यादव

धन्यवाद ज्ञापन : श्री शेष कुमार शर्मा

प्रो. एन.एन. प्राचार्य महोदय ने सबसे पहले पाठयक्रम की परिभाषा बताते हुए कहा कि जो कुछ अध्ययन-अध्यापन की वकालत करता हो, वह पाठ्यक्रम है। पाठ्यक्रम दो प्रकार का होता है, पहला प्रत्यक्ष जैसे- कक्षा, पुस्तकालय, परीक्षा के मूल्यांकन का तरीका आदि तथा दूसरा अप्रत्यक्ष जैसे - मूल्य, ईमानदारी और मूल्य का अनुशासन; जिसमें पाठ्यक्रम अदृश्य है। वहाँ पाठ्यक्रम को पुन: आकार देने की आवश्यकता है। प्रो. प्राचार्य ने बताया कि पाठ्यक्रम के सुधार का हिस्सा पुन: समरूप बनाना है, जैसे- उनके आर्थिक और राजनीतिक क्रिया-कलाप और विद्यार्थियों की दिलचस्पी, विषय के विद्यार्थी और शिक्षक, सरोकार–सामग्री के प्रति अनुभववादी विचार आदि। चर्चा को और आगे बढ़ाते हुए उन्होंने पाठ्यक्रम विकास के मॉडल– हिल्डा ताबा मॉडल (Hilda Taba,1962 और टाइलर मॉडल (Tyler Model), (Ralph Tyler 1991) की व्याख्या की। इसके बाद आपने पाठ्यक्रम सुधार के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की, जिसमें मुख्य है प्रौद्योगिकी का बड़े पैमाने पर उपयोग जिसमें मूक्स (MOOCs), ई.पी.जी.- पाठशाला (e-P.G. Pathshala), स्वयं (SWAYAM) आदि शामिल है। तत्पश्चात उन्होंने उच्च शिक्षा में प्रयुक्त शिक्षण-अधिगम रणनीतियों जैसे– समस्या समाधान, सहयोगात्मक अधिगम, आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र आदि विषय पर विस्तार से बताया। अंत में उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण प्रश्नों पर चर्चा की तथा भारतीय संदर्भ में पाठ्यक्रम सुधार के कदमों को विस्तारपूर्वक समझाया।

दिनांक : 04-05-2018

प्रथम सत्र

विषय : उच्च शिक्षा का वित्तपोषण (Financing of Higher Education)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो. एम. ए. सिद्दीकी

मंच संचालन : श्री अनवर अहमद सिद्दीकी

धन्यवाद ज्ञापन : श्री शेष कुमार शर्मा

प्रो. मोहम्मद अख्तर सिद्दीकी ने शिक्षा के वित्तपोषण की ऐतिहासिक पृष्टभूमि को स्पष्ट करते हुए योजना आयोग के द्वारा संचालित विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में शिक्षण पर किए गए खर्च का आलोचनात्मक विश्लेषण किया। उन्होंने शिक्षा में वित्त पोषण के तीन स्तरों-निष्पक्षता, पर्याप्तता तथा दक्षता पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। भारत शिक्षा पर कैसे खर्च कर रहा है उन्होंने इस पर बताया कि भारत ने शिक्षा पर 1951-52 में 64 करोड़ खर्च किया और 2013-2014 में यह खर्च 4 प्रतिशत बढ़कर 142 करोड 65 लाख हो गया। अगर इसे हम कुल जीडीपी के हिसाब से देखें तो ये वृद्धि दर 0.64 से बढ़कर 4.13 गई है, किंतु इस महत्वपूर्ण वृद्धि को जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, छात्रों की संख्या में वृद्धि एवं मूल्यों में बेतहासा वृद्धि ने नकारात्मक ढंग से प्रभावित किया। उन्होंने बताया कि कुल जीडीपी में शिक्षा नीति पर 1968 में 6 प्रतिशत खर्च शिक्षा पर करने का लक्ष्य रखा गया था। उन्होंने प्रश्न किया कि अगर रेलवे का अलग से बजट हो सकता है तो फिर शिक्षा का क्यों नहीं?

इसी क्रम में उन्होंने योजना खर्च एवं गैर योजना खर्च की बात भी रखी। योजना खर्च में रखरखाव से संबंधित व्यय आता है और इसको उन्होंने शिक्षा में प्रमुख हिस्सा कहा है। इसी क्रम में उन्होंने संसाधनों के अंतरकार्यात्मक आबंटन से संबंधित विचार रखा तथा इसके स्वरूप- रेकरिंग और नान-रेकरिंग पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने शिक्षा में वित्त को लेकर केंद्र एवं राज्य के मध्य के संबंधों को भी बताया। आगे उन्होंने बताया कि किस प्रकार हमारे देश में शिक्षा में हुए वित्त पोषण पर समितियों का अवलोकन हुआ और उन्होंने अपनी रिपोर्ट दी, इस उद्देश्य से हमारे देश में कुल तीन समितियों का गठन हुआ- राममूर्ति समिति, 1990; यशपाल समिति, 1992 और पुनैया समिति, 2009 । तीनों समितियों ने अपने अपने सुझाव दिए । यशपाल समिति ने अपने सुझाव में कहा कि राज्य अपने उच्च शिक्षा के उत्तरदायित्व से मुकर नहीं सकता एवं पहली बार इसी समिति द्वारा विभेदीकृत फी स्लैब कि बात रखी गयी। राममूर्ति समिति ने कहा कि सभी प्रकार के टेक्निकल एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों को स्ववित्तपोषित होना चाहिए। साथ ही इस समिति ने वित्त के कई श्रोत भी बताए और शामिल भी किया जाए। जैस- बैंक, सामुदायिक सहायता, शुल्क में वृद्धि, हाउस लोन, संस्थान इत्यादि। पुनैया समिति ने भी कई प्रकार के महत्वपूर्ण सुझाव दिए जिसकी चर्चा अपने वक्तव्य के माध्यम से उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया।

द्वितीय सत्र

विषय : संगठनात्मक व्यवहार (Organisational Behaviour)

अतिथि विषय विशेषज्ञ : प्रो. शैलेन्द्र सिंह, निदेशक, आई.आई.एम., रांची

मंच संचालन : श्रीमती आर. पुष्पा नामदेव

स्वागत वक्तव्य : श्रीमती तक्षा शंभरकर

प्रो. शैलेन्द्र सिंह ने अपने वक्तव्य विषय 'संगठनात्मक व्यवहार (Organisational Behaviour)' पर बताया कि संस्था में व्यक्ति का व्यवहार संस्था का मुख्य अवयव है। इसी से संस्था की प्रभावकारिता बनती है। उनका सराहनीय प्रयास और हो, उन्होंने अपने वक्तव्य में एक सूत्र भी दिया – P = F (A x M x O) और बताया कि बहुत से ऐसे व्यक्ति है जिनके पास योग्यता एवं अवसर दोनों है, परंतु अनुभव नहीं है तत्पश्चात उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को खुद को रोजगारपरक बनाएँ रखने के लिए आवश्यक है कि उस संदर्भ से जुड़ी अपनी योग्यता एवं कौशल को अद्यतन करते रहे और अपनी संकल्पना को स्थिर बनाए रखे। उन्होंने इस संदर्भ में अनेक महत्वपूर्ण शख्सियत के उदाहरण भी प्रस्तुत किए जैसे- सत्य नडेला, शाहरुख़ खान, सचिन तेंदुलकर, लता मंगेशकर, महात्मा गाँधी, रतन टाटा, लक्ष्मीपति सिंघानिया आदि। अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए संवेगात्मक बुद्धि पर भी विचार व्यक्त किए एवं डेनियल गोलमैन के शब्दों से इसे स्पष्ट किया– "Ability to Monitor and regulate one's own and others Felings, and Use Feling to Guide Through & Action" इसी क्रम में उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण सवाल पूछा कि एक सफल एवं प्रभावशाली नेतृत्व में से आप किसे अच्छा मानते हैं और इस संदर्भ को भारतीय संस्कृति से जोड़कर कई उदाहरण दिए। गणेश जी के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया कि स्मार्ट वर्क के साथ स्मार्ट थिंकिंग भी जरूरी है। और पूछा कि आप किसे अच्छा मानते हैं श्रीकृष्ण या श्रीराम, इनमें से कौन प्रभावशाली थे और कौन सफल। यह भी स्पष्ट किया।

तृतीय सत्र

विषय : पृष्टपोषण सत्र

समन्वयक : डॉ. शिरीष पाल सिंह

अध्यक्ष : डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर

मंच संचालन : श्री अनवर अहमद सिद्दीकी

धन्यवाद ज्ञापन : श्री धर्मेन्द्र नारायण शंभरकर

इस सत्र में प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अपने अनुभवों को साझा किया। उनके अनुभव काफी सकारात्मक रहे तथा उन्होंने इस कार्यक्रम हेतु आयोजन समिति तथा विश्वविद्यालय के प्रति अपना आभार प्रकट किया।

समापन सत्र

कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय प्रतिकुलपति **प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** द्वारा किया गया। मंच संचालन श्रीमती सरिता चौधरी (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग) द्वारा किया गया। सर्वप्रथम शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने गणमान्य सदस्यों का स्वागत किया साथ-ही-साथ डॉ. कलाम और उनके गुरु सतीश धवन के उदाहरण के माध्यम से नेतृत्व क्षमता की व्यावहारिक व्याख्या की। तत्पश्चात कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती शिल्पी कुमारी, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग द्वारा कार्यक्रम का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित प्रो. मनोज कुमार, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ ने दर्शन और ज्ञान को व्याख्यायित किया और बताया कि ज्ञान वह है जो हमारी जिज्ञासा को शांत करते हुए कुछ नया जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करें। जहाँ तत्पश्चात धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. शिरीष पाल सिंह, सह प्रोफेसर, शिक्षा विभाग द्वारा किया गया और अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की गई।

6. गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं अधिगम (Quality Teaching and Learning)

दिनांक : 24-07-2018

शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र (पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा प्रायोजित 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं अधिगम' जैसे- महत्वपूर्ण विषय पर विद्यालय प्रधानाचार्यों का एक दिवसीय सम्मेलन दिनांक 24 जुलाई, 2018 को आयोजिन किया गया। जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। मंचासीन विशिष्टजनों में विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के.के. सिंह, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, शिक्षा विभाग के सह-प्रोफेसर मनोविज्ञान और प्रबंधन के विभागाध्यक्ष डॉ. शिरीष पाल सिंह रहे। तथा इस सम्मेलन में वर्धा जिले के विभिन्न विद्यालयों से पधारे प्रधानाचार्य उपस्थित रहे। सम्मेलन के दौरान शिक्षा विभाग के सभी प्राध्यापक, छात्र-छात्राएँ, शोधार्थी छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारंभ छात्राओं द्वारा गुरु वंदना की प्रस्तुति से किया गया।

माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने शिक्षा के सूत्र को गुरुब्रह्मा, गुरुविष्णु, गुरुदेवो महेश्वर: से जोड़कर गुरु की भूमिका के साथ-साथ शिक्षकों के उत्तरदायित्व एवं संभावनाओं पर भी विस्तृत चर्चा की। इसके पश्चात प्रो. के.के. सिंह ने संचार प्रणाली में बाधा डालने में मोबाइल के व्यवधान की विस्तृत चर्चा की

प्रो. गिरीश्वर मिश्र, माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने गुरु की भूमिका पर विस्तृत रूप से चर्चा करते हुए।

विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने शिक्षा को कर्म से जोड़ने की वकालत की और बताया कि शोधार्थियों के लिए सदैव शिक्षक को चिंतनशील होना अपेक्षित है। वर्धा शहर के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने सार्थक शिक्षण एवं प्रक्रिया में संवाद, ज्ञान व शिक्षकों के व्यक्तित्व के महत्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर उन्होंने विगत वर्षों में शिक्षा विभाग के छात्राध्यापकों की योग्यता एवं लगन की प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में वर्धा के दौलत सिंह विद्यालय, राष्ट्रीय सामाजिक विद्यालय, रत्नीबाई, सुशील हिम्मत सिंगका विद्यालय, राष्ट्रसंत तुकडोजी विद्यालय, स्वावलंबी बालक विद्यालय एवं स्वावलंबी कन्या विद्यालय, कमला नेहरु विद्यालय, किशोर भारती विद्यालय, राष्ट्र भाषा विद्यालय, अजिंठा विद्यालय आदि के लगभग 20 प्रधानाचार्यों एवं 200 अध्येताओं ने सहभागिता की। यह कार्यक्रम सुश्री सारिका राय शर्मा के संचालकत्व, डॉ. भरत कुमार पंडा एवं श्री धर्मेंद्र शंभरकर के संयोजकत्व में संपन्न हुआ।

7. शैक्षिक अनुसंधान के डॉक्टरेट कार्यक्रम हेतु पाठ्यचर्या विकास (Curriculum Development for Doctoral Programme in Educational Research) दिनांक (10-12 सितंबर, 2018)

दिनांक : 10-09-2018

उद्घाटन-सत्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ में पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत पाठ्यचर्या, शोध नीति एवं शैक्षिक विकास केंद्र के तहत 'शैक्षिक अनुसंधान के डॉक्टरेट कार्यक्रम हेतु पाठ्यचर्या विकास' विषय पर त्रि-दिवसीय (10-12 सितंबर, 2018) राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का शुभारंभ माननीय कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया।

माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए।

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग ने स्वागत वक्तव्य देते हुए देश के विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों से आए हुए संकाय सदस्यों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। साथ ही आपने शैक्षिक अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं से हमें अवगत कराया।

डॉ. शिरीष पाल सिंह, कार्यशाला सचिव एवं सह प्रोफेसर, शिक्षा विभाग के द्वारा कार्यशाला की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की गई। इसके अंतर्गत डॉ. सिंह ने वर्तमान समय में चल रहे डॉक्टरेट पाठ्यक्रम की चर्चा करते हुए यह बताया कि इस पाठ्यक्रम को शोधार्थियों के दृष्टिकोण से और अधिक उन्नत करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त इन्होंने कार्यशाला के दौरान प्रतिदिन की जाने वाली क्रियाकलापों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। इसके पश्चात सभी विषय विशेषज्ञों के परिचय प्राप्त किया गया। प्रो. के.के. सिंह, कुलसचिव महोदय द्वारा सभी सदस्यों का स्वागत कर कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु शुभकामनाएँ दी गई।

माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** के द्वारा अध्यक्षीय संबोधन दिया गया। प्रो. मिश्र ने डॉक्टरेट पाठ्यक्रम के वर्तमान स्थिति का समीक्षात्मक मूल्यांकन करते हुए उस पर अपने विस्तृत विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने अपने वक्तव्य के दौरान अमेरिका और भारत के डॉक्टरेट पाठ्यक्रम की तुलना करते हुए भारत में चल रहे डॉक्टरेट पाठ्यक्रम में आवश्यक सुधार के कुछ मुख्य बिंदुओं की ओर ध्यान केंद्रित किया। श्रीमती आर. पुष्पा नामदेव, कार्यशाला समन्वयक एवं सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग के द्वारा उद्घाटन सत्र के अंतिम चरण में समस्त विषय विशेषज्ञों, संकाय सदस्यों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। इसके साथ ही साथ श्रीमती आर. पुष्पा नामदेव द्वारा कार्यक्रम आयोजक सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह से चार कोर पाठ्यक्रमों के लिए समूह निर्माण का आग्रह किया गया। इस मंच का संचालन डॉ. ऋषभ कुमार मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग के द्वारा किया गया।

माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** अध्यक्षीय संबोधन देते हुए।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में कार्यक्रम आयोजक सचिव **डॉ. शिरीष पाल सिंह** के द्वारा सभी सदस्यों (विषय विशेषज्ञों, संकाय सदस्यों एवं पी.एच.डी. शोधार्थियों) को चार समूहों में विभक्त किया गया। प्रत्येक समूह को उनकी विशेषज्ञता एवं रुचि के अनुसार पी.एच.डी. पाठ्यक्रम के चार कोर पेपर की पाठ्यवस्तु का विकास करने का दायित्व दिया गया। सभी समूह के सदस्यों ने पेपर के उद्देश्य को ध्यान में रखकर उस विषय की विभिन्न इकाइयों, अधिगम उद्देश्य, अधिगम संलग्नता तथा उनके अंतर्गत विस्तृत पाठ्यवस्तु का विकास किया।

दिनांक : 11-09-2018

प्रथम सत्र

आज के **प्रथम सत्र** में प्रत्येक समूह द्वारा बनाए गए कोर पेपर का प्रस्तुतीकरण उस समूह के प्रमुख के द्वारा किया गया। **प्रथम समूह** से **प्रो. रमेश घंटा** द्वारा 'शिक्षा में शोध : गुणात्मक परिप्रेक्ष' (Research in Education : Qualitative Perspectives) के विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण किया गया। **द्वितीय समूह** से **प्रो. शोएब अब्दुल्लाह** द्वारा 'शिक्षा में मात्रात्मक शोध एवं अकादमिक लेखन व प्रकाशन' (Qualitative Perspectives of Research in Education and academic writing Publication) कोर पेपर का प्रस्तुतीकरण किया गया तथा अन्य सदस्यों द्वारा दिए गए सुझावों को भी समाहित किया गया। **तृतीय समूह** से **डॉ. समीर बाबु** द्वारा 'शैक्षिक अनुसंधान में कंप्यूटर के अनुप्रयोग' (Computer Applications in Education Research Paper) के पाठ्यक्रम का प्रस्तुतीकरण किया गया तथा अन्य सदस्यों द्वारा आवश्यक सुझावों को ध्यान में रखकर संशोधन किया गया। **चतुर्थ समूह** से **प्रो. सरोज शर्मा** द्वारा चतुर्थ पेपर 'विकास हेतु शैक्षिक शोध' (Educational Research for Development) हेतु निर्मित अध्ययन सामग्री का प्रस्तुतीकरण कर आवश्यक विषयवस्तु का समावेश किया गया।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में सभी सदस्यों को उनकी अभिरुचियों तथा विशेषज्ञता के आधार पर 09 विभिन्न समूहों में विभाजित किया गया। सभी समूह के सदस्यों नें अपने-अपने विषय विशेषज्ञता से संबंधित ऐच्छिक विषयों की अध्ययन सामग्री का निर्माण कर प्रस्तुतीकरण किया। जिसमें :

1. **डॉ. सुनीता माग्रे** ने 'मूल्य, मानवाधिकार एवं शांति के लिए शिक्षा' (Education for Value, Human Rights and Peace) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया।
2. **प्रो. रमेश घंटा** ने 'पाठ्यचर्या विकास' (Curriculum Development) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया।
3. **प्रो. नित्यानंद प्रधान** ने 'शिक्षा में शिक्षक-शिक्षा और सम-सामायिक मुद्दे' (Teacher Education and Contemporary issues in Education) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया।
4. **प्रो. सरोज शर्मा** ने 'शैक्षिक प्रशासन, प्रबंधन एवं नेतृत्व' (Educational Administration, Management and Leadership) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया।
5. **डॉ. तरुणा ढाल** ने 'भाषा शिक्षा में शोध' (Research in Language Education) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया।
6. **प्रो. आरती श्रीवास्तव** ने 'शिक्षा का अर्थशास्त्र' (Economics of Education) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया।
7. **प्रो. शोएब अब्दुल्लाह** द्वारा 'शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन' (Educational Measurement and Evaluation) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया।
8. **डॉ. पंकज अरोड़ा** ने 'सामाजिक विज्ञान शिक्षा और शोध' (Research in Social Science Education) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया।
9. **प्रो. राकेश राय** द्वारा 'शिक्षा का दर्शनशात्र' (Philosophy in social Science Education) का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

दिनांक : 12-09-2018

प्रथम सत्र

आज के प्रथम सत्र में सभी सदस्यों को उनकी अभिरुचियों तथा विशेषज्ञता के आधार पर 02 समूह में विभाजित किया गया। इस सत्र का मुख्य उद्देश्य शोधार्थियों के लिए शोध एवं शिक्षण उपसदस्यता (Research and Teaching Associateship) हेतु गतिविधियों का निर्माण करना था। इस गतिविधियों के माध्यम से शोधार्थियों को विभिन्न शोध एवं शिक्षण कार्यों में संलग्न कर उन्हें अकादमिक रूप से दक्ष बनाना है।

प्रथम समूह की प्रस्तुति **प्रो. रमेश घंटा** के द्वारा किया गया। इनके द्वारा शोधार्थियों को अधिक से अधिक शोध गतिविधियों में शामिल किए जाने की बात कही गई और शोधार्थियों के संलग्नता के संबंध में भी विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गई। प्रस्तुती के दौरान आवश्यक सुझावों को भी शामिल किया गया। **द्वितीय समूह** में **डॉ. पंकज अरोड़ा** द्वारा शोधार्थियों को कक्षागत गतिविधियों के साथ विभागी गतिविधियों में शामिल करने पर बल दिया गया और उनके द्वारा यह भी बताया गया कि शोध के साथ समझौता नहीं किया जा सकता। इनके द्वारा शिक्षण उपसदस्यता के लिए निश्चित समय एवं दिन के अनुसार क्रियाकलापों के विभाजन कर कार्य करने पर सुझाव दिया गया।

8. अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम (Blended Learning Approach for Teacher Educators) दिनांक (26-28 सितंबर, 2018)

प्रथम सत्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ में दिनांक 26 से 28 सितंबर तक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में देश के विभिन्न भागों से आए 10 विषय विशेषज्ञों तथा 46 बाह्य प्रतिभागियों ने सहभागिता की। प्रथम सत्र का उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** तथा अन्य विश्वविद्यालय के सम्मानित शिक्षकगणों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात विश्वविद्यालय के कुलगीत का गान हुआ जिससे पूरे परिसर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ।

उद्घाटन सत्र के दीप प्रज्वलन के समय उपस्थित समस्त अतिथिगण

कार्यक्रम के शुरुआत में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने विश्वविद्यालय और शिक्षा विद्यापीठ की स्थापना और विकास क्रम से सभी को अवगत कराया। डॉ. ठाकुर ने बताया कि तकनीकी ने वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अपना एक अलग अस्तित्व बना लिया है। आगे डॉ. ठाकुर कहते हैं कि सीखने के लिए और संगठित रूप से या मिश्रित रूप से सीखने के लिए पूछताछ का समुदाय और सीखने का समुदाय (Community of Enquiry and Community of Learning) का होना जरुरी है। मिश्रित अधिगम के लिए सहभागिता और सहयोग (Interaction and Collaboration) दो महत्वपूर्ण घटक होते हैं।

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग विकास क्रम से सभी को अवगत कराते हुए।

कार्यशाला की समन्यवयक **डॉ. शिल्पी कुमारी** ने कार्यशाला की विस्तृत रूपरेखा के विषय में लोगों को अवगत कराया। तत्पश्चात **प्रो. के.के. सिंह** ने मिश्रित अधिगम के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि ज्ञान को प्रेम से मिलाने की जरूरत है।

प्रो. के.के. सिंह ने मिश्रित अधिगम के विषय में जानकारी देते हुए।

कार्यशाला के अतिथि विषय विशेषज्ञ **प्रो. सी. राजामौली** तथा **प्रो. प्रदीप मिश्रा** ने सभी को कार्यशाला की सफलता के लिए शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम की अगली अतिथि सदस्या **डॉ. निशा सिंह** ने मिश्रित अधिगम उपागम को दीप से दीप जले उदाहरण के माध्यम से समझाने की कोशिश की और ऑनलाइन स्रोतों के क्या-क्या फायदे होते हैं इस विषय पर भी अपना संज्ञान सबके साथ साझा की।

डॉ.सी.राजा मौली, बी.आर.अम्बेडकर, मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने विशेष कक्षाओं का विचार प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने वर्तमान समय में इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण किस प्रकार से हमें प्रभावित कर रहे हैं और किस प्रकार से इसका दिन-प्रतिदिन जीवन में विस्तार हो रहा है इस पर अपने विचार प्रकट किए। ई-पाठशाला, ई.पी.जी.- पाठशाला, ई- माध्यम के अन्य साधन जितने भी हैं वे सभी हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। ये सभी शिक्षण-वातावरण के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने बताया कि शिक्षण के दो माध्यम हैं- (1) आमने-सामने, (2) ई-माध्यम।

प्रो. गिरीश्वर मिश्र, माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षकों के लिए अधिगम उपागम विषय पर संबोधित करते हुए।

कार्यक्रम के **प्रथम सत्र** के अंत में **डॉ. शिरीष पाल सिंह** ने सभी उपस्थित शिक्षकों एवं शोध विद्यार्थियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. शिरीष पाल सिंह सत्र के समापन में उपस्थित शिक्षकों एवं शोध विद्यार्थियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

द्वितीय सत्र

स्वागत समारोह के पश्चात **द्वितीय सत्र** में बी.आर. अम्बेडकर, मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद से पधारे **डॉ. सी.राजा मौली** ने मुक्त विश्वविद्यालय में शिक्षण की व्यवस्था पर अपने विचार रखे। डॉ. सी. राजा मौली ने बताया कि अकादमिक निर्देशनकर्ता का कार्य विषय को स्पष्ट करना होता है न कि शिक्षण करना। बी.आर. अंबेडकर, मुक्त विश्वविद्यालय अधिगमकर्ता के लिए रविवार को विशेष कक्षाओं का आयोजन करता है, विषय से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन दूर संचार के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है और अधिगमकर्ता को सीखने की स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। इन्होंने बताया कि 1960 में मिश्रित अधिगम के संप्रत्यय की शुरुआत हुई और तब से यह विकास की प्रक्रिया में है। इंटरनेट के माध्यम से विद्यार्थी एक स्थान पर बैठे-बैठे शिक्षा संबंधी विभिन्न गतिविधियों से अवगत हो सकता है। डॉ. सी. राजा मौली ने अधिगमकर्ता के लिए Lab Rotation Model, Individual Model, Flipped Classroom, Flex Model, ALA Carte Model, Enriched virtual Model आदि मॉडल के संबंध में जानकारी प्रदान की। सत्र के अंत में सभी प्रतिभागियों से उपर्युक्त विषय पर उनके सुझाव एवं प्रश्न आमंत्रित किए गए।

तृतीय सत्र

कार्यशाला के **तृतीय सत्र** (दोपहर भोजनोपरांत) का शुभारंभ **डॉ. निशा सिंह** डिप्टी डायरेक्टर, आई. यू.सी., इग्नू (Deputy Director, IUC, IGNOU) के 'मुक्त शैक्षिक संसाधनों और मिश्रित उपागम' (Open Educational Resources OER and Blended Learning) पर व्याख्यान के साथ प्रारंभ हुआ। जिसमें इन्होंने सर्वप्रथम हमें बताया कि मिश्रित उपागम (Blended Learning) को हम संकर सीखना (Hybrid Learning), प्रौद्योगिकी मध्यस्थता निर्देश (Technology Mediated Instruction), वेब उन्नत निर्देश (Web Enhanced Instruction), मिश्रित मोड निर्देश (Mixed Mode Instruction), मुक्त शैक्षिक संसाधन **(Open Educational Resources)** आदि नामों से भी जानते हैं।

आगे महोदया ने OER (Open Educational Resources) क्या है? इसके बारे में विस्तृत रूप से जानकारी साझा की। तत्पश्चात उन्होंने कौन-कौन से खुले एक्सेस (Open Access), विषयवस्तु (Open Content), खुला पाठ्यक्रम (Open Course ware), खुला स्रोत सॉफ्टवेयर (Open Source Software) खुली शिक्षा / ई –लर्निंग (Open Education / E-Learning) तथा खुले शैक्षिक संसाधन **(Open Educational Resources)** हैं, उनके बारे में विस्तृत व्याख्या की। ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज के निर्माण में उन्होंने यूनेस्को के कामनवेल्थ ऑफ लर्निंग के योगदान को बताया तथा उनके अनुसार ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज क्या है? इसकी व्याख्या करते हुए इन्होंने बताया कि यह एक ऐसी शिक्षा सामग्री है जिसे कोई भी बिना किसी की अनुमति के प्रयोग कर सकता है और न ही इसके प्रयोग करने की कोई लागत लगती है। इन्होंने यह भी बताया कि 1998 में डेविड विली ने खुले विषयवस्तु की संकल्पना को शैक्षिक समूह के बीच बिना किसी लागत के उपलब्ध कराने की वकालत की तथा इसके पश्चात उन्होंने इसमें अपना कुछ योगदान भी दिया। तत्पश्चात 2007 में केपटाउन में हुए खुले शैक्षिक घोषणा को बताया। 2012 में पेरिस में हुए ओ.ई.आर. (OER) घोषणा के बारे में चर्चा की, जिसके बाद लोगों में तेजी से ओ.ई.आर. (OER) के बारे में जागरूकता का विकास हुआ।

डॉ. निशा सिंह डिप्टी डायरेक्टर आई. यू. सी. इग्नू दूसरे सत्र का शुभारंभ अपने व्याख्यान के द्वारा किया।

शिक्षा में आईसीटी के प्रयोग का विकास हुआ। अगले कड़ी में उन्होंने ओ.ई.आर. (OER) की पाँच मूलभूत संकल्पना के बारे में बताया -

REUSE- ओ.ई.आर. (OER) के विषयवस्तु को हम स्थिरता के साथ बार-बार प्रयोग कर सकते हैं।

REVISE - ओ.ई.आर. (OER) के विषयवस्तु को हम उसी रूप में स्वीकार कर सकते हैं, सुधार कर सकते हैं, उसे अपने अनुरूप संशोधित कर सकते हैं।

REMIX – मूलभूत ओ.ई.आर. (OER) के विषयवस्तु को हम संशोधित कर नए ओ.ई.आर. (OER) का निर्माण कर सकते हैं।

REDISTRIBUTE - ओ.ई.आर. (OER) के विषयवस्तु को हम दूसरों के साथ मूलभूत रूप में अथवा मिश्रित करके साझा कर सकते हैं।

RETAIN - ओ.ई.आर. (OER) के विषयवस्तु को हम सीखने के बाद इसे हम अपने पास सुरक्षित रख सकते है और इसे अपने साथ कहीं भी ले जा सकते हैं।

आगे इन्होंने कापीराइट और ओ.ई.आर. (OER) के विषयवस्तु के बारे मे विस्तृत व्याख्या कर सबको बताया कि हम किस प्रकार ओ.ई.आर. (OER) के विषयवस्तु का प्रयोग कर सकते हैं जिसमें हम साहित्यिक चोरी से बच सकते हैं। इन्होंने विभिन्न कापीराइट और (OER) लाइसेन्सों का प्रयोग कर सभी प्रतिभागियों के समक्ष दिखाया और उससे अवगत कराया।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र के वक्ता **डॉ. वैभव जाधव,** सहायक प्राध्यापक, सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे उपस्थित थे। इन्होंने हम सभी को EDMODO सॉफ्टवेयर के बारे में बताया। जिसकी सहायता से हम अपनी कक्षा को और अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं। जिसमें इन्होंने बताया कि यह सॉफ्टवेयर बहुत ही लोकप्रिय सोशल साइट फेसबुक की तरह होता है। जिसमें हमें ग्रुप से जुड़ने के लिए किसी भी ई-मेल या मोबाइल नंबर की आवश्यकता नहीं होती है। इसमें दो कक्षाओं को एक साथ बहुत ही आसानी से पढ़ाया जा सकता है। इस सॉफ्टवेयर में दो ग्रुप होते हैं, एक I am a student तथा दूसरा I am a teacher जिसकी सहायता से हम अपनी कक्षा का निर्माण कर सकते हैं। इस सॉफ्टवेयर में जब अध्यापक छात्रों के ग्रुप का निर्माण करता है तब उन्हें एक कोड मिलता है जिसके द्वारा हम छात्रों को अपने ग्रुप से जोड़ सकते हैं। इस ग्रुप से जुड़ने के बाद छात्र आपकी कक्षा से जुड़ जाता है। इस सॉफ्टवेयर में नोटिस बोर्ड की सुविधा होती है जिससे हम कहीं भी रहते हुए छात्रों को सूचना दे सकते हैं। इसमें यदि हम छात्रों को किसी भी संबंध में वोटिंग कराना चाहे तो करा सकते हैं। इसमें हम छात्रों को उनके

डॉ. वैभव जाधव के व्याख्यान में उपस्थित शिक्षक, विद्यार्थी एवं उपस्थित अतिथिगण

इंटर्नशिप का नोट भी दे सकते हैं तथा उसके लिए एक समय निश्चित कर सकते हैं उस समय के पश्चात छात्र उस ग्रुप की कक्षा में अपने नोट को नहीं डाल सकता है। इस सॉफ्टवेयर में लाइब्रेरी की सुविधा होती है। इसमे हम पीडीएफ किताबों को छात्रों को प्रदान कर सकते हैं।

इसमें डिजिटल ड्रॉप बॉक्स की सहायता से यदि हम कई दिनों तक बाहर है तब भी अपनी कक्षाओं को ले सकते हैं। इसके द्वारा हम वेब लिंक को जोड़ सकते हैं। इसमें अपनी कक्षा की कैलेंडर को सेव कर सकते हैं तथा कब परीक्षा होगी, इसकी सूचना छात्रों को दे सकते हैं। इसमें छात्रों की प्रगति को जाँचा जा सकता है तथा छात्रों के अंकों को लिख सकते हैं और उसे सीधा एक्सेल पर ले जा सकते हैं। यह सब बताने के बाद उन्होंने इन सब का हमें इस सॉफ्टवेयर की सहायता से भी प्राक्टिकल करके सीखने में मदद की तथा यह आशा भी कि हम सभी इसका उपयोग अपनी कक्षाओं में करेंगे।

दिनांक : 27-09-2018

प्रथम सत्र

आज के कार्यशाला के सत्र का शुभारंभ चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से पधारे **प्रो. प्रदीप** द्वारा हुआ। इन्होंने OER पर विस्तृत रूप से व्याख्यान दिया। मिश्रित अधिगम के विविध उपागमों को बहुत ही रोचक तरीके से प्रतिभागियों के समक्ष बताया। प्रयोगात्मक सत्र को पूरे चार समूहों में विभक्त कर अभ्यास कराया गया।

वर्तमान समय के सामाजिक मनोवैज्ञानिक चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला कि कैसे वर्तमान युग का अधिगमकर्त्ता सीखता है एवं विषम परिस्थितियों का सामना करता है। अध्यापक शिक्षकों हेतु यह बताया कि हमें अपने विद्यार्थियों को नीरस तरीके से नहीं पढ़ाना चाहिए उनको विविध प्रकार के अधिगम उपकरण एवं OER के माध्यम से पढ़ाना चाहिए।

इसके पश्चात क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान से पधारे **डॉ. रमाकांत मोहलिक** ने अपने सत्र का शुभारंभ 'Mobile Application and Blended Learning' से किया। मिश्रित अधिगम में अध्यापक एवं विद्यार्थियों की क्या-क्या भूमिका होनी चाहिए इसे बहुत ही सुंदर ढंग से बताया। उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि हम सभी अध्यापकों का ऐसा पेशा है जिसमें हमें हमेंशा बोलना पड़ता है।

जो बच्चे 2010 के बाद जन्म लिए हैं उनको हम Digital Natives कहते हैं। इसके बाद उन्होंने 'Concept of Mobile Learning' के बारे में बताया कि वह अधिगम जिसे हम कहीं भी किसी समय सीख सकते हैं। फिर उन्होंने यह भी बताया कि शिक्षा में मोबाइल का सदुपयोग कैसे कर सकते हैं। मोबाइल सीखने के लिए, व्यावसायिक विकास के लिए, शिक्षण हेतु एवं शैक्षिक प्रशासन के लिए प्रयोग की जाती है। सत्र के अंत में सबसे महत्वपूर्ण एवं उपयोगी बात विद्यार्थियों एवं शिक्षकों हेतु 'Application for Mobile Learning' के बारे में बताया कि कैसे हम किसी सॉफ्टवेयर को डाउनलोड कर के अधिगम कर सकते हैं।

द्वितीय सत्र

कार्यशाला के **द्वितीय सत्र** का आरंभ **डॉ. रमाकांत मोहालिक** ने मोबाइल अधिगम के विषय में सभी को अवगत कराया साथ-ही-साथ इससे संबंधित कुछ प्रयोगात्मक कार्य भी सहभागियों से करवाए। डॉ. रमाकांत मोहालिक ने EDMODO का शिक्षक के संदर्भ में प्रयोग एवं इसके उपयोग के विषय पर सभी को जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के अगले वक्ता **डॉ. विक्रमजीत सिंह** ने 2.0 वेब पर विस्तृत चर्चा की। वेब क्या है, इसका विकास, विभिन्न वेब में अंतर तथा शैक्षिक वेब के विषय में सभी को अगवत कराते हुए बताया कि शिक्षक और विद्यार्थी किस प्रकार से इसका उपयोग कर सकते हैं, साथ-ही-साथ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग में लाए जा रहे मुक्त शैक्षणिक स्रोत के विषय में भी जानकारी प्रदान की और प्रायोगिक तौर पर इसका अभ्यास भी करवाया।

डॉ. रमाकांत मोहालिक मोबाइल अधिगम के विषय में अवगत कराते हुए।

कार्यशाला के प्रमुख वक्ता **डॉ. यशपाल शर्मा** ने कॉपी राईट की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने 6 प्रकार के कॉपीराइट के विषय में बताते हुए अभ्यास करवाया।

कॉपी राईट की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए प्रमुख वक्ता **डॉ. यश पॉल शर्मा**

दिनांक : 28-09-2018

प्रथम सत्र

आज के **प्रथम सत्र** में **डॉ. यशपाल शर्मा** तथा **डॉ. गौरव सिंह** ने MOOCs, SWYAM और SWYAMPRABHA के विषय में अवगत कराते हुए अधिगम का अभ्यास करवाया।

डॉ. गौरव सिंह ने अपने व्याख्यान में ई –लर्निंग के कुछ विषय को स्पष्ट किया।

द्वितीय सत्र

कार्यशाला के **द्वितीय सत्र** में विशेषज्ञ **प्रो. एस.के. बावा**, विभागाध्यक्ष, केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा ने सर्वव्यापी अधिगम क्या है?, इसके महत्व आदि के बारे में उदाहरण सहित विस्तृत चर्चा की। इस अधिगम में शैक्षिक संस्था की क्या भूमिका है, साथ ही एक शिक्षक इस अधिगम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कैसे कर सकते हैं, इसके बारे में बताया।

प्रो. एस. के. बावा, विभागाध्यक्ष, केंद्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा ने अपने व्याख्यान में सर्वव्यापी अधिगम को समझाया।

तत्पश्चात अपने अध्यापन प्रक्रिया में हो रहे महत्वपूर्ण परिवर्तन के बारे में बताया। आपने वेब 1,2,3 एवं 4 के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। अगले कड़ी में सर्वव्यापी अधिगम विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहा कि वेब माध्यम से अधिगम में स्थायित्व, उपलब्धता, तात्कालिकता, अंतःक्रिया, परिस्थिति जन्य उद्देश्य एवं अनुकूलनशीलता होती है। आपने यह बताया कि इस अधिगम के माध्यम से निम्न अधिगम स्तर से उच्च अधिगम स्तर संप्रत्यय कैसे विकसित किया जा सकता है। साथ ही सर्वव्यापी अधिगम नए पैराडाइम के रूप में उभर कर आ रहा है इसके बारे में विस्तृत चर्चा की। इसके अलावा इन्होंने भिन्न भिन्न प्रकार के शैक्षिक वेब ब्राउजर की चर्चा की जैसे क्वेनटॉक, गूगल ड्राइव, एडूब्लॉग इत्यादि।

इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन समारोह में **डॉ. शेष कुमार शर्मा**, सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, महत्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के द्वारा मंच का संचालन किया गया। इस समापन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर **प्रो. मनोज कुमार** (महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय) ने मिश्रित अधिगम उपागम एक शिक्षक के लिए किस प्रकार से महत्वपूर्ण है और यह किस प्रकार से जनसंचार का माध्यम बन सकता है, साथ ही इसमें उत्पन्न होने वाली बाधाएँ तथा उन बाधाओं से निराकरण कैसे पाया जा सकता है, इस पर विस्तार से जानकारी प्रदान की।

डॉ. शेष कुमार शर्मा, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महत्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा मंच का संचालन करते हुए।

तत्पश्चात **श्री कृष्णानन्द दन्नाना**, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग के द्वारा इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का संक्षिप्त प्रतिवेदन समस्त प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात प्रतिभागियों द्वारा कार्यशाला से संबंधित उनके अनुभव आमंत्रित किए गए और प्रतिभागियों द्वारा अनुभव साझा किया गया। अंत में श्रीमती. शिल्पी कुमारी, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा आए हुए मुख्य अतिथि, अतिथियों एवं देश के विभिन्न संस्थानों से आए हुए समस्त प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस तीन दिवसीय कार्यक्रम का समापन किया गया।

9. संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम (Faculty Induction Program) दिनांक (16/11/2018 से 14/12/2018)

दिनांक : 16-11-2018

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के द्वारा संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 16 नवंबर से 14 दिसंबर 2018 तक किया गया।

प्रथम सत्र

दिन का पहला सत्र प्रतिभागियों के पंजीकरण के साथ शुरू हुआ और प्रतिभागियों के पंजीकरण के पश्चात कार्यक्रम किट प्रदान किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम समन्वयक के द्वारा इस संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर होने वाले चर्चा तथा व्याख्यान के संबंध में जानकारी प्रदान की गई।

द्वितीय सत्र

प्रथम दिन के द्वितीय सत्र में डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, कार्यक्रम समन्वयक ने संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम की विषयवस्तु प्रस्तुत की तथा एक दूसरे का परिचय प्राप्त करने हेतु सभी प्रतिभागियों ने एक-एक करके अपना आत्म परिचय दिया। तत्पश्चात डॉ. शिरीष पाल सिंह (सह प्रोफेसर, शिक्षा विभाग एवं कार्यशाला सचिव) ने कार्यक्रम के संचालन की प्रक्रिया, इसके संचालन हेतु आवश्क निर्देश दिए तथा इस कार्यक्रम में होने वाले विभिन्न गतिविधियों एवं इसके 12 मॉड्यूल के संबंध में जानकारी प्रदान की।

तृतीय और चतुर्थ सत्र

तृतीय और चतुर्थ सत्र में इस संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि माननीय कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र (म.गां.अं.हिं.वि, वर्धा) के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ प्रारंभ किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथियों का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया गया। अपने स्वागत वक्तव्य में **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** (अध्यक्ष, शिक्षा विभाग एवं समन्वयक, पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन) में आए हुए सभी सम्मानित मुख्य अतिथियों, अधिकारियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत अपने शब्द सुमन से किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में कार्यशाला सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह ने कार्यक्रम के विषय की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की तथा उन्होंने बताया कि कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर नए शामिल शिक्षकों के लिए यह संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम कितना महत्वपूर्ण है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए जिम्मेदार और उत्तरदायी शिक्षक बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया और अपने संबोधन में उन्होंने कई मोर्चों में हमारी शिक्षा प्रणाली की विफलता के लिए अपनी चिंता दिखाई और इस तरह की विफलता के कुछ कारणों का उल्लेख किया।

एक जिम्मेदार और उत्तरदायी शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए, जिम्मेदार और उत्तरदायी शिक्षक बनाना आवश्यक है जो शिक्षार्थियों को नई सामाजिक समस्याओं, तकनीकी प्रगति आदि के माध्यम से आने वाली नई चुनौतियों का जवाब देने के लिए शिक्षित कर सकें। अंत में उद्घाटन सत्र का समापन कार्यक्रम के सह-समन्वयक **श्री धर्मेंद्र शंभरकर** द्वारा किया गया।

संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र,** म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

दिनांक : 23-11-2018

प्रथम सत्र

इस सत्र का शुभारंभ संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के प्रतिभागी श्री किशोर दम्भारे के द्वारा मुख्य अतिथि **डॉ. विनोद कुमार शनवाल** (मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, गौतम बुद्धा विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा) के स्वागत के द्वारा किया गया। **डॉ. विनोद कुमार शनवाल ने अपने व्याख्यान** विषय '**काम पर भावनात्मक खुफिया**' की अवधारणा को समझाते हुए बताया कि बुद्धि क्या है, आत्महत्या के कौन-कौन से कारक है, मानसिक स्वास्थ्य क्या है और इसको प्रभावित करने वाले कौन-कौन से कारक है, व्यक्तित्व और प्रकृति छंद पोषण क्या है। यह मनुष्य को कैसे प्रभावित करता है। इसके संबंध में विस्तारपूर्वक परिचर्चा की।

कार्यक्रम के **दूसरे सत्र** में **डॉ. विनोद कुमार शनवाल** ने अपने विषय को ही आगे बढ़ाया जिसमें उन्होंने भावनात्मक भागफल, बुद्धि के साथ व्यक्तित्व, भावना क्या है और उनके कारणों को समझाया और बताया कि भावना और महसूस करने के चार घटक, आत्म प्रबंधन के साथ संपन्न सत्र के अंत में प्रतिभागी में से एक की मदद से भावना के लिए जैविक प्रतिक्रियाएँ, स्वयं प्रेरणा संबंध प्रबंधन, आरेख की मदद से सफलता की सीढ़ी और जब आपको कोई समस्या होती है। इस बात पर पूरे प्रतिभागी ने बहुत आनंद लिया तथा उनकी चर्चा ने आईक्यू, ईक्यू और भावना से संबंधित प्रतिभागी के संदेह को समाप्त किया।

तीसरे और **चौथे सत्र** में विश्वविद्यालय परिसर के महापंडित राहुल सांकृत्यायन केंद्रीय पुस्तकालय का परिभ्रमण की योजना बनी। सभी प्रतिभागियों ने पुस्तकालय का परिभ्रमण किया और यह जाना कि पुस्तकालय की शिक्षा में क्या भूमिका है। पुस्तकालय अध्यक्ष ने पुस्तकालय के महत्व की जानकारी सभी प्रतिभागियों को दी।

दिनांक : 27-11-2018

प्रथम और द्वितीय सत्र

दिनांक 27 नवंबर, 2018 के अध्यक्ष के तौर पर **प्रो. शितल गुंजाटे** उपस्थित थी, जिन्होंने अपना सत्र सहजता से प्रारंभ किया और अपने विषय पर व्याख्यान देते हुए प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। **चाय अंतराल** के पश्चात के सत्र में **डॉ. टी. करूणा करन** ने "Learning Made Easy – a Guide book of planning activities for Nai Talim" विषय पर हमें काफी मात्रा में छोटी-छोटी कथाओं के माध्यम से ज्ञान की बाते समझाने की कोशिश कर हम सभी को लाभान्वित किया।

तीसरे सत्र

इस सत्र में **श्री कादर नवाज खान** (वित्त अधिकारी, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा) मौजूद थे इन्होंने हमें प्रारंभ में Pay, T.A., NCPS, LTC आदि के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया और साथ ही हमारे काफी सवालों के जवाब भी दिए। जिससे हम सभी लाभान्वित हुए।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र में **प्रो. अवधेश कुमार शुक्ला** (हिंदी विभाग, साहित्य विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा) ने '**कार्य के प्रति अपना जवाबदेही होना**' इस विषय पर हमसे कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं के माध्यम से चर्चा की जो कुछ इस प्रकार है (1) नियोजन (2) प्रबंधन (3) सकारात्मक सोच (4) कार्य करने का ढंग (5) विषयवस्तु का ज्ञान (6) संकल्प (7) निष्ठा, लगन, ईमानदारी, तत्परता (8) उत्साह (9) कार्य का परीक्षण, आदि इस तरह के अनेक महत्वपूर्ण बाते बताई और हमारे सवालों का जवाब देकर हमें अपने ज्ञान से लाभान्वित किया। तत्पश्चात सत्र के अंत में सभी ज्ञानी जनों का आभार व्यक्त कर सत्र का समापन किया गया।

दिनांक : 29-11-2018

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन परियोजना के अंतर्गत आयोजित 28 दिवसीय संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के 14 वें दिन का आरंभ प्रतिभागी वैशाली महोदया के संयोजकत्व में सफीर महोदय के द्वारा पूर्व दिन का प्रतिवेदन की प्रस्तुति के साथ हुआ। इसके पश्चात कलकत्ता विश्वविद्यालय से पधारी **डॉ. सुदेशना लाहिड़ी** ने 'कक्षा व्यवस्थापन तथा अधिगमकर्ता का बोध' विषय पर विशेषज्ञता प्रस्तुत की। उक्त विषय का

अनुभव कराने हेतु **डॉ. लाहिड़ी** ने विभिन्न क्रियाकलापों का प्रयोग किया। जिसमें प्रथम क्रियाकलाप के रूप में जन्म माह के अनुसार प्रतिभागियों को पाँच-पाँच समूह में बाँट कर समूह मे गुणधर्मों का उद्भवन करने हेतु प्रेरित किया तत्पश्चात **डॉ. विनोद कुमार शनवाल** ने बेन फ्रैंकलिन के कथन कि मुझे शामिल करें मैं सीखूंगा (Involve me I will learn) का उदाहरण देते हुए कहा कि छात्रों को अधिगम में नियोजित करने वाला उत्तम शिक्षक चाहिए न कि केवल पी.एच.डी शिक्षक। इन्होंने कहा कि शिक्षकों के भूमिका को गिनना उनके कार्य के प्रति अन्याय या अपमान होगा। उन्होंने पुनः प्रतिभागियों को विभिन्न समूह में विभाजित कर किसी शैक्षणिक व्यवस्था में शिक्षकों की कक्षा में लक्ष्य एवं उद्देश्य, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया हेतु मेरे संसाधन, विभिन्न शिक्षा संस्थानों से मेरी अपेक्षा एवं कक्षा में आनंद का क्षण आदि अपेक्षाओं को स्मरण कराने हेतु प्रेरित किया। इन्होंने प्रभावी शिक्षकों के गुणों को विभिन्न समूह में प्रस्तुत करते हुए कहा कि इन समूहों की संख्या भी असंख्य हो सकती है। साथ-ही-साथ प्रभावी शिक्षकों के कक्षा प्रबंधन के कसौटियों को उपस्थापित किया तथा पुनः शिक्षकों से समूह चर्चा के द्वारा कक्षा प्रबंधन न होने के कारणों को उजागर कराया एवं **डॉ. विनोद कुमार शनवाल ने** स्वयं भी कई कारणों को स्पष्ट किए। शिक्षक के लिए कक्षागत परिस्थिति एवं छात्रों की शिक्षकों से अपेक्षा को समझना महत्वपूर्ण है। अतः समूह में बाँट कर प्रतिभागियों से छात्रों की वैयक्तिक विभिन्नताओं के चुनौती के साथ कक्षा प्रबंधन कौशल को अवगत कराने हेतु संवाद अभिनय कराया। कक्षा प्रबंधन की नीति को स्पष्ट करते हुए शिक्षक के लिए नियम, दिनचर्या, पुनर्वलन, दुर्व्यवहार, नियुक्तता आदि पांच प्रकारों से व्याख्या किया। कक्षा प्रबंधन में चुनौतियों को सामूहिक चर्चा से प्रतिपादित करते हुए अंतिम कड़ी में उत्तम शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास करता है। इसके साथ व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया। अंतिम में सभी प्रतिभागियों का बहिर्मूखत्व, अन्तर्मूखत्व, तंत्रिका रुग्मता, स्थिरता एवं सामाजिकता आदि व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों का परीक्षण किया।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग के **प्रो. अवधेश शुक्ल** ने अपने साहित्यिक ढंग से विश्वविद्यालय की व्यवस्था, उच्च शिक्षा में गुणवत्ता, विश्वविद्यालय में नियुक्तियाँ, विश्वविद्यालय की तमाम आवश्यकताओं आदि विषयों को अत्यंत सहज रूप में बोधगम्य कराया। तथा आरक्षण की आवश्यकता, उपयोगिता एवं समस्याएँ आदि विषयों को ज्वलन्त उदाहरणों के साथ प्रतिपादित किया। अंत में संयोजिका महोदया के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन हुआ।

दिनांक : 01-12-2018

प्रथम सत्र

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने उच्च शिक्षा में शोध (Research in Higher Education) मोड्यूल के अंतर्गत **'वैज्ञानिक आलेख लिखने की शैली'** पर विस्तृत रूप से बात की। इस कड़ी में उन्होंने सबसे पहले इस बात पर जोर दिया कि आम लेखन एवं वैज्ञानिक लेखन में मूलभूत अंतर क्या है। इसको जानना आवश्यक है।

जर्नल में प्रकाशन के लिए हमारे लेखन को वैज्ञानिक होना पड़ता है क्योंकि यह पब्लिक स्कूटनी का हिस्सा होती है और ऐसी किसी भी वैज्ञानिक लेखन को तभी मान्यता मिलती है जब वह किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से मुक्त हो एवं शैली, कथ्य में वस्तुनिष्ठ हो। साथ ही वह बहुत ही साधारण एवं सबको समझ में आने लायक भाषा में लिखी गई हो। इसी क्रम में प्रो. मिश्र ने वैज्ञानिक लेखन की विभिन्न शैलियों पर बात की। जिसमें उन्होंने रिव्यू, स्पेशल आर्टिकल, नोट, संस्मरण, श्रद्धांजलि एवं बुक रिव्यू की चर्चा की। महोदय ने इस बात पर भी जोर दिया कि एक वैज्ञानिक लेखन में निम्नलिखित अंतर्वस्तु होनी चाहिए - जैसे सबसे पहले शीर्षक। शीर्षक हमेशा स्पष्ट, छोटा, आकर्षक और शोध के उद्देश्य को प्रतिबिंबित करने वाला होना चाहिए। इसकी शब्द संख्या 100 शब्दों से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। इसके बाद सार-संक्षेप की बारी आती है जो 150 से 250 शब्दों के बीच होनी चाहिए। सार-संक्षेप से हमारे पूरे शोध की बारीकी का पता चलता है। इसलिए इसको लिखते समय परिदृश्य, समस्या, प्रविधि एवं संभावित आशय को स्पष्ट लिखना चाहिए।

द्वितीय सत्र में **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने **'साहित्य के पूर्वालोकन के महत्व एवं वैज्ञानिक लेखन'** के संदर्भ में बात की। प्रो. मिश्र ने कहा कि इसके अंतर्गत अभी तक हुए शोध में प्रचलित रिव्यू को जरूर देखना चाहिए। उदाहरण के रूप में आई.सी.एस.एस.आर. द्वारा विभिन्न समाज वैज्ञानिक विषय पर रिव्यू प्रकाशित किया जाता है, उसे भी देखना चाहिए। साहित्य के पूर्वालोकन का मूल उद्देश्य अभी तक हुए शोध में जो अंतर आ गया है उसका पता लगाना है। इसके साथ ही इसका उद्देश्य समस्यायीकरण एवं शोध की वैधता पर भी सवाल खड़ा करना है। शोध प्रविधि में तथ्य संकलन, विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण पर जोर देना चाहिए और इन तीनों को समेकित तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए। इसके बाद इन्होंने वैज्ञानिक शोध लेखन के लिए संदर्भ लेखन के महत्व को बताते हुए कहा कि अनेक प्रकार की सदर्भ शैलियाँ है, जैसे – ए.पी.ए., एम.एल.ए. तथ्यों के प्रस्तुतीकरण हेतु ग्राफ, चार्ट, टेबल आदि। इसका प्रयोग किस तरह से किया जाए, इस पर भी विस्तार से चर्चा की।

तृतीय सत्र

इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विकास केंद्र (एच.आर.डी.सी.) की सहायक निदेशक **डॉ. फायजा अब्बासी** ने **आइक्यूएसी, अकादमिक स्टाफ कॉलेज एवं एच.आर.डी.सी. के उद्देश्यों, कार्यों एवं वर्तमान समय में शिक्षकों के शिक्षण-प्रशिक्षण** से जुड़े महत्व को रेखांकित किया। इसी क्रम में उन्होंने भारतीय व्यवस्था में शिक्षकों के प्रशिक्षण की बात की।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र के अंतर्गत **डॉ. फायजा अब्बासी** ने **'उच्च शिक्षा प्रशासन'** के महत्व पर अपनी बात रखी। आज के समय में उच्च शिक्षा में कई तरह के बदलाव की जरूरत है। इसके लिए एक रणनीति बनाने की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया, ताकि समयबद्ध तरीके से लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। संस्थागत स्तर पर साझेदारी एवं सूचना प्रौद्योगिकी का भरपूर इस्तेमाल करने

पर भी उन्होंने जोर दिया। आज के समय में एक अच्छे प्रशासक के लिए जरूरी है कि वह पाठ्यक्रम, शिक्षण एवं अन्य गतिविधियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करें। एक प्रभावी प्रशासक के लिए जरूरी है कि पारदर्शिता एवं जवाबदेही के लक्ष्यों को सभी के लिए आवश्यक बनाए। अंत में **डॉ. फायजा अब्बासी** ने प्रभावी प्रशासन के लिए पांच सिद्धांतों की बात की। जिसमें एक प्रशासक के चरित्र एवं संस्था के लिए उनकी प्रतिबद्धता सबसे जरूरी कदम के रूप में माना गया। इसके बाद विविधता को स्वीकार करने की उनकी क्षमता एवं दूसरों की मदद करते हुए नेतृत्व के गुणों का विकास करने की क्षमता एक कुशल प्रशासक की निशानी मानी गई।

दिनांक : 03-12-2018

आज के इस सत्र का आरंभ प्रतिभागी समन्वयक श्री शफीर द्वारा किया गया। इन्होंने पहले दो सत्रों में मुख्य अतिथि श्री **निरंजन श्रीवास्तव** (अध्यक्ष, कंप्यूटर सेंटर, इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, डी.ए.वी.वी., इंदौर) का स्वागत किया और अपना व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। श्री निरंजन श्रीवास्तव ने **"टीचिंग में आईसीटी एप्लीकेशन"** विषय पर बात की। प्रश्नों और उदाहरणों की मदद से, इन्होंने आईसीटी को अलग से परिभाषित किया और जो शब्द डेटा, मेमोरी, रैम, एम.आई.सी.आर., एल.ई.डी. आदि से संबंधित हैं उनको समझाया तथा इन्होंने वर्तमान में डिजिटलाइजेशन के महत्व, उपयोग और भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया और बताया कि शिक्षक प्रतिभागियों को बुनियादी आगामी जरूरत और मांग के अनुरूप अपने विषय के साथ अपने शिक्षण कौशल का उन्नयन और आधुनिकीकरण करना चाहिए। आपने भविष्य में आईसीटी के उपयोग, उपलब्ध संसाधनों और ई-लर्निंग के लाभों के बारे में चलचित्र दिखाकर समझाया। तथा अंत में प्रतिभागियों से प्रतिपुष्टि भी प्राप्त किया। तत्पश्चात धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया।

तृतीय सत्र और चतुर्थ सत्र

इस सत्र के मुख्य अतिथि वक्ता **प्रो. अनिल कुमार पांडेय**, विभागाध्यक्ष, भाषाविज्ञान और भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, म.गां.अं.हिं.वि. वर्धा, एक व्याख्याता और सर्वेक्षक के रूप में उपस्थित थे। डॉ. पांडेय के सर्वेक्षण में अनुसूची के अनुसार पंद्रह शिक्षक प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी विषय विशेषज्ञता पर पीपीटी प्रस्तुति दी। प्रतिभागियों के प्रस्तुति के बाद प्रो. पांडेय ने अपना व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों के शिक्षण कौशल की सराहना के साथ कुछ सुझाव भी दिए। सत्र का समापन प्रो. पांडेय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

दिनांक : 04-12-2018

प्रथम सत्र

आज के सत्र का प्रारंभ **डॉ. भरत कुमार पंडा,** सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संचालकत्व में हुआ। इन्होंने मुख्य अतिथि **डॉ. निरंजन श्रीवास्तव** तथा अन्य सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उसके पश्चात शेष प्रतिभागियों ने अपना प्रस्तुतीकरण अधोलिखित विवरणानुसार दिए।

1. डॉ. कृष्णकांत - बच्चों में सूचना खोज जिज्ञासा तथा व्यवहार की कसौटी में हिंदी साहित्य का आधुनिक मॉडल।
2. श्री विद्या जी - अभिप्रेरण।
3. विजय सूर्यवंशी - सूर्य नमस्कार के लाभ।
4. डॉ. भरत कुमार पंडा - सृजनात्मक लेखन।
5. डॉ. संदीप कुमार - टीचिंग फॉरेन लैंग्वेज इंपोर्टेंस और चैलेंजिस।
6. श्री कृष्णानंद - मनोविश्लेषणवाद।
7. डॉ. शेष कुमार शर्मा - जैव विविधता संकट और उसका समाधान

इस प्रकार सुंदर प्रस्तुतीकरणों के द्वारा प्रथम सत्र का समापन हुआ।

द्वितीय सत्र

इस सत्र के मुख्य अतिथि **डॉ. अनुपमा कुमारी** (एन.आई.टी., नागपुर) उपस्थित थी। इनके द्वारा '**शोध प्रतिवेदन कैसे लिखे**' विषय पर व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में इन्होंने शोध प्रतिवदेन की प्रस्तावना कैसे लिखना चाहिए, शोध प्रतिवेदन लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए और शोध प्रतिवेदन का प्रारूप कैसा होना चाहिए, इन सब विषयों पर उन्होंने विस्तार से चर्चा की और यह सुझाव दिया कि अनुसंधान का शीर्षक संक्षिप्त, सरल आकर्षक और शोध के उद्देश्य को प्रतिबिंबित करने वाला होना चाहिए।

तृतीय एवं **चतुर्थ सत्र**

इस सत्र के मुख्य अतिथि **डॉ. पंकज कुमार मिश्रा**, संस्कृत विभाग, स्टीफन कॉलेज, दिल्ली उपस्थित थे। इन्होंने 'कॉलेज प्रशासन और संरचना' विषय पर अपना व्याख्यान दिया तथा बताया कि कॉलेज संरचना अपने उद्देश्यों के अनुसार सभी कॉलेज बनाते हैं। तीन मुख्य कमेटी होती हैं सुप्रीम काउंसिल, गवर्निंग बॉडी और स्टाफ काउंसिल। कॉलेज को चलाने के लिए गवर्निंग

बॉडी और स्टाफ काउंसिल की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं जिसमें गवर्निंग बॉडी वित्त से संबंधित सभी निर्णय लेते हैं और अकादमिक संबंधित सभी निर्णय स्टाफ काउंसिल के द्वारा लिया जाता है।

दिनांक : 05-12-2018

आज के इस कार्यक्रम के अध्यक्ष **डॉ. मिथिलेश कुमार** और मुख्य अतिथि के रूप में **डॉ. पंकज कुमार मिश्रा** उपस्थित थे, जिनका स्वागत डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने अंगवस्त्र, सूतमाला, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया।

प्रथम सत्र

इस सत्र में डॉ.पंकज कुमार मिश्रा '**ग्लोबल ट्रेंड एजुकेशन के वर्तमान रुझान**' विषय पर चर्चा की जिसमें भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव, शिक्षा का अर्थ आदि बिंदुओं पर उन्होंने वास्तविक जीवन और ऐतिहासिक उदाहरणों के माध्यम से भी समझाया।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट, भोपाल से पधारी **प्रो. रेखा सिंघल** ने व्यवहार के तत्व, प्रदर्शन के निर्धारक आदि कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं की मदद से व्यवहार के विषय पर चर्चा की, उन्होंने न केवल विषयवस्तु प्रस्तुति की, बल्कि उस विषय के बारे में कुछ गतिविधियाँ करके भी बताया।

तृतीय सत्र

इस सत्र में **प्रो. रेखा सिंघल** ने सामरिक योजना प्रक्रिया, ताकत, कमजोरी, अवसर और खतरे के मूल्यों आदि बिंदुओं पर गतिविधियों के माध्यम से चर्चा करते हुए अपने 'रणनीतिक योजना और दूरदर्शिता' विषय को स्पष्ट किया तत्पश्चात मिशन और दृष्टि के बीच के अंतर के बारे में भी प्रतिभागियों को अवगत कराया।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र में विषय विशेषज्ञ **प्रो. नम्रता शर्मा**, देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इंदौर उपस्थित थी। उन्होंने अपने विषय "**संघर्ष प्रबंधन और संघर्ष संकल्प**" पर संघर्ष प्रबंधन, विरोधाभास प्रबंधन, संघर्ष की वास्तविकता, संघर्ष के मामले, संघर्ष के प्रकार आदि बिंदुओं की मदद से उक्त विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की और प्रतिभागियों के प्रश्नों का कुशलतापूर्वक निराकरण भी किया तथा उनसे प्रतिपुष्टि भी प्राप्त की।

दिनांक : 06-12-2018

प्रथम सत्र

आज के इस सत्र की शुरुआत श्रीमती **प्रीति खोड़े**, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हिं.वि. द्वारा दिनांक 05/12/2018 के प्रतिवेदन की प्रस्तुति के साथ हुआ। इस सत्र के अतिथि विशेषज्ञा **प्रो. नम्रता शर्मा** (DAVV, इंदौर), द्वारा अपने विषय '**स्ट्रेस एंड टाइम मैनेजमेंट**' पर पीपीटी के माध्यम से चर्चा किया तथा चर्चा के दौरान ही उन्होंने पीटर ड्रकर के बयान को पढ़ा कि जब तक समय का प्रबंधन नहीं किया जाता है, तब तक कुछ भी प्रबंधित नहीं किया जा सकता। इसलिए हमें समय की कीमत का एहसास होना चाहिए। इन्होंने टाइम मैनेजमेंट मैट्रिक्स के बारे में बताते हुए दिन, सप्ताह, महीने, और वर्ष की गतिविधियों को निर्धारित कर तनाव को कम करने के सूत्र भी प्रदान किए।

दूसरा सत्र

इस सत्र में **प्रो. नम्रता शर्मा** ने 'तनाव और समय प्रबंधन के लिए संगठनात्मक दृष्टिकोण' पर बात की। प्रो. शर्मा ने प्रभावी समय प्रबंधन में आने वाली विभिन्न बाधाओं जैसे- अस्पष्ट उद्देश्य, व्यक्तिगत अव्यवस्था, न कहने में असमर्थता, तनाव और थकान आदि को स्पष्ट किया।

तृतीय सत्र

प्रो. एन. रामकृष्णन (प्रमुख, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, तमिलनाडु, शिक्षक शिक्षा विश्वविद्यालय) जिनका विषय '**आई.सी.टी. आधारित मूल्यांकन पद्धति**' था। उन्होंने वर्तमान समय में चल रहे सीखने के लिए आई.सी.टी. समर्थित मूल्यांकन की व्याख्या की और बताया कि आज व्यक्तियों, व्यापारियों, संस्थानों आदि द्वारा इंटरनेट का प्रयोग इस सीमा तक पहुँच चुका है कि इंटरनेट सेवाओं का एक वैश्विक बाजार बन गया है।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र में **प्रो. एन. रामकृष्णन** ने अपने विषय 'ई-सामग्री का विकास' के विभिन्न आयामों; जैसे पाठ, चित्र, एनिमेशन, प्रस्तुतियाँ, ध्वनि, वीडियो आदि के बारे में विस्तृत चर्चा की और बताया कि विभिन्न प्रकार के ई- सामग्री है जो अधिगम में बहुत ही सहायक है। इस ई- सामग्री को हम कहीं भी आसानी से उपयोग कर अधिगम कर सकते हैं।

दिनांक : 07-12-2018

प्रथम सत्र

इस सत्र का शुभारंभ प्रो. एन. रामकृष्णन (विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, शिक्षक शिक्षा विश्वविद्यालय, तमिलनाडु) की अध्यक्षता में हुआ। उन्होंने अपने व्याख्यान विषय "**मूल्यांकन के साधनों का उद्देश्यपूर्ण विकास**" पर चर्चा की। तत्पश्चात आपने अनुसंधान के लिए मूल्यांकन के उपकरणों के बारे में विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की नेतृत्व शैली का उदाहरण देते हुए इस अवधारणा को समझाया तथा एक उपकरण की तैयारी के सभी चरणों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। आपने सामान्य कारकों, विशिष्ट कारकों, सामग्री उद्देश्य अनुरूपता (आई.ओ.सी.) और भेदभाव सूचकांक के बारे में भी प्रतिभागियों को अवगत कराया।

द्वितीय सत्र

इस सत्र के विषय विशेषज्ञ म.गां.अं.हिं.वि. के भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष **प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल** थे जिन्होंने अपने व्याख्यान विषय 'मॉड्यूल 1.5 और '**विश्वविद्यालय प्राधिकरण**' पर विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। प्रो. शुक्ल ने शैक्षणिक परिषद, विश्वविद्यालय अधिनियम और कार्यकारी परिषद पर बात की और उन्होंने इसके गठन, संसद के महत्व तथा विश्वविद्यालय के अधिकारियों के लिए संसद द्वारा बनाए गए नियमों के बारे में भी प्रतिभागियों को जानकारी प्रदान की।

तृतीय सत्र

इस सत्र का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में **डॉ. रामगणेश**, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, भारतदासन विश्वविद्यालय, तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु मौजूद थे जिन्होंने अपने विषय '**डिजिटल कक्षा और शिक्षक की तैयारी**' पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में 'ग्रे' क्रांति पर भी बात की तथा हम प्रतिभागियों को इसके बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र में **डॉ. ई. रामगणेश** ने 'Dichotomy of Higher Education' पर बात की तथा गुणवत्ता एवं मात्रा, गतिविधि तथा श्रेष्ठता, पाठ्यक्रम, रोजगार और शिक्षा, अधिकारिता आदि पर ध्यान केंद्रित कराया। आपने KSV के उच्च प्रभाव यानी ज्ञान, कौशल और मूल्य के बारे में भी बात की तथा उच्च शिक्षा में प्रतिमान की ओर इशारा किया। सत्र का समापन डॉ. शिरीष पाल सिंह द्वारा डॉ. ई. रामगणेश का धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

दिनांक : 10-12-2018

प्रथम सत्र

प्रथम सत्र में कार्यक्रम निदेशक **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** उपस्थित थे। इन्होंने अपने वक्तव्य में कहानियों के माध्यम से बताया कि आचारशास्त्र और नैतिकता क्या है तथा प्राचीन समय और वर्तमान समय में शिक्षक और छात्र के संबंधों की चर्चा की। चर्चा के दौरान छात्रों, शिक्षकों, संस्कृति, समाज आदि पर सारांश भी दिया तथा कहा कि शिक्षक और छात्र के संबंधों में आए बदलाव के लिए कौन जिम्मेदार हैं। इसके अलावा आपने छात्रों की विचार क्षमता, विश्लेषण शक्ति, विभेदक शक्ति और सह-संबंध शक्ति का आकलन कैसे करें इसके लिए परीक्षा में प्रश्न पूछने या सेट करने के तरीकों पर विचार करने की आवश्यकता है, इस बात पर महोदय ने जोर दिया।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में **डॉ. शिरीष पाल सिंह**, (एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हिं.वि.,वर्धा) उपस्थित थे। इन्होंने अपने सत्र में शोध और प्रकाशन पर विस्तृत व्याख्यान दिया और कहा कि हम जर्नल स्तर के मैट्रिक्स, लेख स्तर के मैट्रिक्स और लेखक स्तर के मैट्रिक्स कैसे माप रहे हैं। जर्नल स्तर के मेट्रिक्स के तहत उन्होंने SCOPUS, SCI जैसे- वेब ऑफ साइंस, जर्नल प्रभाव कारक और इंडेक्सिंग डेटाबेस; लेखक स्तर के मैट्रिक्स के तहत, उन्होंने एच-इंडेक्स, एम-इंडेक्स और आई-10 इंडेक्स पर चर्चा की। डॉ. शिरीष पाल सिंह ने अल्टीमेट्रिक, प्रति प्रकाशन प्रभाव, डिजिटल ऑब्जेक्ट पहचानकर्ता और मैथ्यू प्रभाव पर भी चर्चा की। अंत में उन्होंने यह भी बताया कि व्यक्ति को ISSN, सहकर्मी की समीक्षा या ऑनलाइन जमा, स्कोपस / एससीआई / एसएससीआई / थॉमसन रॉयटर्स में इम्पैक्ट फैक्टर इत्यादि की जानकारी होना आवश्यक है। इसके जानकारी के अभाव में कार्य कुशलतापूर्वक करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

तृतीय सत्र

इस सत्र में **प्रो. अंजली बाजपेयी** उपस्थित थी। इन्होंने अपने व्याख्यान विषय 'सूक्ष्म शिक्षण' पर वक्तव्य दिया तथा सीमित कौशल, सीमित समय और कौशल के साथ छात्र के छोटे से समूह के एक आकार के संदर्भ में सूक्ष्म-शिक्षण का अर्थ बताते हुए सूक्ष्म-शिक्षण चक्र, विशेषताएँ, शिक्षण कौशल के विभिन्न चरणों और उसके लाभों पर चर्चा की।

चतुर्थ सत्र में **प्रो. ज्योति वर्मा** मुख्य व्याख्याता के रूप में उपस्थित थी। उन्होंने सामान्य रूप से चर्चा करते हुए व्यवहार, फ्रायड की अवधारणा और प्रभावी शिक्षण कैसे तैयार करें जैसे अनेक मुद्दों पर चर्चा की। चर्चा के दौरान प्रतिभागियों द्वारा बहुत से रोचक प्रश्न पूछे गए जिनका समाधान उत्तरों के माध्यम से आपने बहुत ही सुगम तरीके से दिया तथा प्रश्न पूछने के तरीकों के विषय में भी प्रतिभागियों को अवगत कराया।

दिनांक : 11-12-2018

प्रथम सत्र

इस सत्र में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के शिक्षाविद **प्रो. अंजलि बाजपेयी** मुख्य व्याख्याता के रूप में उपस्थित थीं। आपने अपने व्याख्यान विषय **'मूल्यांकन के रूप'** को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से शैक्षिक उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए बताया कि शिक्षण का उद्देश्य व्यवहार-केंद्रित करने के साथ-साथ उन्हें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रेरित करना भी है।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में प्रो. अंजलि बाजपेयी ने मापने के उपकरणों, माप के मूल्यांकन और निर्धारण के बीच के अंतर पर प्रकाश डाला। आपने प्रतिभागियों को सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रकिया से अवगत कराते हुए सतत मूल्यांकन की आवश्यकता, महत्व आदि बिंदुओं पर चर्चा करते हुए सतत मूल्याकन प्रक्रिया के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर प्रतिभागियों का ध्यान आकृष्ट कराया।

तृतीय सत्र

इस सत्र में जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में कार्यरत तकनीकी शिक्षाविद **प्रो. हरजीत कौर भाटिया** मुख्य व्याख्याता के रूप में उपस्थित थी। प्रो. भाटिया ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से 'Flipped Learning Pedogogy' के रूप, आवश्यकता और इसके महत्व के बारे में बताया। शिक्षण कला में जिज्ञासा पैदा करने के लिए उन्होंने बहुत ही महत्वपूर्ण तकनीकी उपकरणों एवं संसाधनों के उपयोग करने के तौर तरीकों से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र में **प्रो. हरजीत कौर भाटिया** ने 'Flipped Classroom' की अवधारणा को व्यक्त करते हुए, प्रतिभागियों को विषय के अनुसार कई समूहों में विभाजित कर उनका मार्गदर्शन किया। प्रो. भाटिया के निर्देशानुसार शैक्षणिक गतिविधि में 'Flipped Learning Pedogogy' का उपयोग करने वाले इन समूहों ने अपना अपना कार्य बहुत ही रचनात्मक तरीके से पूर्ण करके बारी-बारी से अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। इस सत्र के अंत में संचालक के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया।

दिनांक : 12-12-2018

प्रथम सत्र

आज के इस **उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि** के रूप में **डॉ. कृष्णकांत मिश्रा** तथा **डॉ. माधुरी हुड्डा**, एम. डी. यूनिवर्सिटी, रोहतक, हरियाणा उपस्थित थे।

डॉ. सुहासिनी बाजपेयी ने मुख्य अतिथि डॉ. माधुरी हुड्डा का आभार व्यक्त करते हुए उनका स्वागत किया। तत्पश्चात अपने वक्तव्य के प्रारंभ में डॉ. हुड्डा ने ई-कंटेंट डेवलपमेंट, ई-ट्यूटोरियल, ई-कंटेंट असेसमेंट और डिस्कशन फार्म के चार क्वैडेंट्स को परिभाषित करते हुए भारत में उच्च शिक्षा के वर्तमान संदर्भ में 'ई-सामग्री के विकास के महत्व' पर जोर दिया। महोदया ने शिक्षण के आधुनीकीकरण (Digitization) के बारे में भी चर्चा की और बताया कि शिक्षकों को शिक्षण प्रौद्योगिकी के लिए तैयार करने पर बल देना चाहिए। इसके पश्चात डॉ. माधुरी हुड्डा ने प्रजेंटेशन सॉफ्टवेयर 'प्रजेंटेशन ट्यूब, स्क्रेंकास्ट-ओ-मैटिक और स्क्रैन्कास्टीज' के उपयोग की विशेषताओं से अवगत कराया जिसमें सभी प्रतिभागियों ने प्रजेंटेशन सॉफ्टवेयर के विभिन्न उपयोगों का सक्रिय रूप से अनुभव किया। आपने प्रतिभागियों को Google छवियों और Bing के माध्यम से लाइसेंस प्राप्त छवियों और वीडियो का उपयोग कर सीखने सिखाने के तरीकों को बताया तथा प्रतिभागियों को इन सॉफ्टवेयर का उपयोग कर अपने शिक्षण कौशल को विकसित करने हेतु प्रेरित किया।

द्वितीय सत्र

आज के इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ला, विभागाध्यक्ष, भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा उपस्थित थे। आपके और श्री धर्मेंद्र नारायणराव शंभरकर के कुशल निर्देशन में समस्त प्रतिभागियों का एम.सी.क्यू. परीक्षण लिया गया। इस संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम में एम.सी.क्यू. परीक्षण के लिए संबंधित संसाधन व्यक्तियों के विचार-विमर्श के आधार पर परीक्षण में 30 बहुविकल्पीय प्रश्न रखे गए। जिसके आधार पर समस्त प्रतिभागियों ने अपना अपना परीक्षण दिया। इसके बाद प्रो. शुक्ल ने सर्वप्रथम प्रतिभागियों की सराहना करते हुए अपने व्याख्यान को प्रारंभ किया और प्रतिभागियों को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक निकायों और अधिकारियों की विभिन्न भूमिकाओं और कार्यों से अवगत कराया। इस सत्र में प्रतिभागियों ने प्रो. शुक्ल के समक्ष कुछ प्रश्न रखे जिसका उन्होंने बहुत ही सरल शब्दों में उत्तर देकर उनकी शंका का समाधान किया। फिर उन्होंने शैक्षिक परिषद सिंडिकेट ऑफ बोर्ड ऑफ स्टडीज के कार्यों पर चर्चा करते हुए रजिस्ट्रार रेक्टा के कार्यों और विश्वविद्यालय के अधिकारियों के कर्तव्यों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। अंत में डॉ. कृष्णकांत मिश्रा के शपथ के साथ शपथ दिवस समारोह सत्र का समापन हुआ।

दिनांक : 13-12-2018

प्रथम व द्वितीय सत्र

कार्यक्रम के इस सत्र की विशेषज्ञा व निर्णायिका अमरावती विश्वविद्यालय से पधारी प्रसिद्ध शिक्षाविद **प्रो. बर्षा एस. कुमार** रही उनके पर्यवेक्षण में संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के सभी प्रतिभागियों ने उच्च शिक्षा में **'गुणवत्ता एवं नवाचार'** विषय पर अपने-अपने उत्कृष्ट विचार पांच मिनट की समयावधि में प्रस्तुत किए तत्पश्चात **प्रो. कुमार** ने प्रतिभागियों के सभी शंकाओं व समस्याओं का समाधान भी किया।

तृतीय सत्र

इस सत्र में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में कार्यरत शिक्षाविद **डॉ. जगप्रीत कौर** उपस्थित थी। आपने पाठ्यक्रम, पाठ्यवस्तु तथा कोर्स ऑफ स्टडी के अंतर को स्पष्ट करते हुए पाठ्यक्रम के प्रत्यय, आवश्यकता, प्रकार व मूल्यांकन को भी विस्तृत ढंग से समझाया और यह संदेश दिया कि शिक्षा बच्चों के लिए हैं बच्चे शिक्षा के लिए नहीं।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र में भी **डॉ. जगप्रीत कौर** ने पाठ्यक्रम निर्माण व सुधार में शिक्षकों की भूमिका को गतिविधियों के माध्यम से समझाने हेतु प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने प्रतिभागियों को विषयानुसार चार समूहों (साहित्य, शिक्षाशास्त्र, सामाजिक विज्ञान व शारीरिक शिक्षा) में विभाजित किया और अपने-अपने विषय के पाठ्यक्रम की पाँच-पाँच प्रमुख समस्याओं की पहचान करने तथा उनका समाधान करने हेतु सुझाव देने को कहा। इन समूहों ने अपने-अपने विषय की समस्याओं को चिन्हित करते हुए उनके समाधान हेतु प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुतियाँ दी। अंत में सत्र संचालक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ आज के सत्र का समापन किया गया।

10. शैक्षिक शोध में संबंधित साहित्य समीक्षा लेखन (Workshop on Review of Related Literature) दिनांक (04-05 अप्रैल, 2019)

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ द्वारा **'शैक्षिक शोध में संबंधित साहित्य समीक्षा लेखन'** विषय पर दिनांक 04-05 अप्रैल, 2019 तक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के एम.एड. (2017-19) तथा (2018-20) पाठ्यक्रम के अध्येताओं तथा एम.फिल (2018-20) एवं पी-एच. डी. (2017-18) सत्र के शोधार्थियों तथा देश के विभिन्न भागों से पधारे प्रतिभागियों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला के व्याख्यान के लिए देश के विभिन्न प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों से चार विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया।

दिनांक : 04-04-2019

उद्घाटन सत्र

राष्ट्रीय कार्यशाला के **प्रथम** दिन का उद्घाटन सत्र का प्रारंभ दीप प्रज्वलन के साथ आरंभ हुआ। तत्पश्चात विश्वविद्यालय की संस्कृति की पहचान कुलगीत का गायन हुआ। जिससे पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो उठा। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार द्वारा की गई। उन्होंने संबंधित साहित्य पुनरावलोकन की शैक्षिक शोध में आवश्यकता के संबंध में हमारा मार्गदशन किया तथा कार्यशाला की सफलता के

लिए शुभकामनाएँ दीं। मंच पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, शिक्षा विभाग के सह-प्रोफेसर डॉ. शिरीष पाल सिंह तथा विषय विशेषज्ञ प्रो. संध्या गिहर, संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, IGNTU, अमरकंटक से उपस्थित थे। मंच संचालन का कार्य सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, डॉ. शिल्पी कुमारी (कार्यशाला समन्वयक) के द्वारा किया गया। कार्यक्रम को बिना किसी विलंब के विद्यार्थियों के अधिगम के लिए प्रारंभ कर दिया गया।

प्रो. मनोज कुमार, अधिष्ठाता शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए।

प्रथम सत्र

कार्यक्रम के पहले सत्र में IGNTU, अमरकंटक से पधारी शिक्षा संकाय की संकायाध्यक्ष **प्रो. संध्या गिहर** ने 'शैक्षिक शोध से संबंधित साहित्य समीक्षा लेखन' विषय पर विस्तार से परिचर्चा की तथा यह बताया कि शोध के कौन-कौन से चरण में इसका उपयोग किया जा सकता है।

मुख्य अतिथि के रूप में अपना व्याख्यान देते हुए **प्रो. संध्या गिहर,** संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, IGNTU, अमरकंटक।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में NIEPA, नई दिल्ली से पधारी **डॉ. अनुपम पचौरी** ने 'शैक्षिक शोध में संबंधित साहित्य समीक्षा' कैसे लिखे?, उसका स्वरूप क्या हो तथा लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखें, इस पर अपना विचार प्रस्तुत किया। डॉ. पचौरी ने बताया कि पढ़ना भी एक कौशल है। इसके अलावा शोध विषय की पुष्टि किस प्रकार बेहतर की जा सकती है, इससे विद्यार्थियों को अवगत कराया।

मुख्य अतिथि **डॉ. अनुपम पचौरी**, NIEPA, नई दिल्ली ने 'शैक्षिक शोध में संबंधित साहित्य समीक्षा' पर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करते हुए।

डॉ. अनुपम पचौरी ने बताया की आप समीक्षा करते समय उस आख्या के विषय में निर्णय कर रहे होते हैं, इसलिए कोई भी निर्णय जल्दबाजी में नहीं करनी चाहिए। साहित्य की समीक्षा करते समय स्वयं के शोध विषय से संबंधित प्रश्नों के आधार पर साहित्य की समीक्षा से संबंधित सूचनाओं को प्रदान करने के उपरांत आपने सभी विद्यार्थियों को पांच अलग-अलग समूहों में बाँट दिया तथा सभी को प्रयोग के तौर पर लेख लिखने के प्रेरित किए।

दिनांक : 05-04-2019

प्रथम सत्र

कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र की शुरुआत डॉ. अनुपम पचौरी ने किया। इस सत्र में विद्यार्थियों से साहित्य की समीक्षा का अभ्यास करवाया गया तथा अपने शोध विषय से संबंधित किन शोध अध्ययनों को समीक्षा में शामिल किया जाएगा तथा किन्हें नहीं शामिल किया जाए, इससे विद्यार्थियों को परिचित कराया।

दूसरे सत्र के विषय विशेषज्ञ **डॉ. वैभव जाधव** (सावित्री बाई फूले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे) थे। आपने "Citation, Indentation and Referencing" के विषय में विद्यार्थियों को विस्तार से बताया। महोदय ने Reference, Bibliography and Webliography तीनों में अंतर को स्पष्ट किया। इसके अलावा लेख के मध्य में Citation कैसे लिखा जाता है, इस पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विद्यार्थियों को जानकारी दी। डॉ. वैभव जाधव ने संदर्भ ग्रंथ से संबंधित सूचनाओं को प्रदान करने के साथ ही उसका अभ्यास भी करवाया।

विषय विशेषज्ञ **डॉ. वैभव जाधव** (सावित्री बाई फूले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे) प्रतिभागियों को पीपीटी के माध्यम से समझाते हुए।

कार्यक्रम के आखिरी **सत्र** में **प्रो. एस.के. त्यागी** (पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर) ने बताया कि शोध की थीम के आधार पर संबंधित साहित्य की समीक्षा की जानी चाहिए। प्रो. एस.के. त्यागी ने आगे बताया कि शोध में किसे साहित्य कहेंगे तथा साहित्य लिखते समय कौन-कौन-सी सावधानियाँ बरतनी चाहिए, जिससे कि साहित्यिक चोरी से बचा जा सकें।

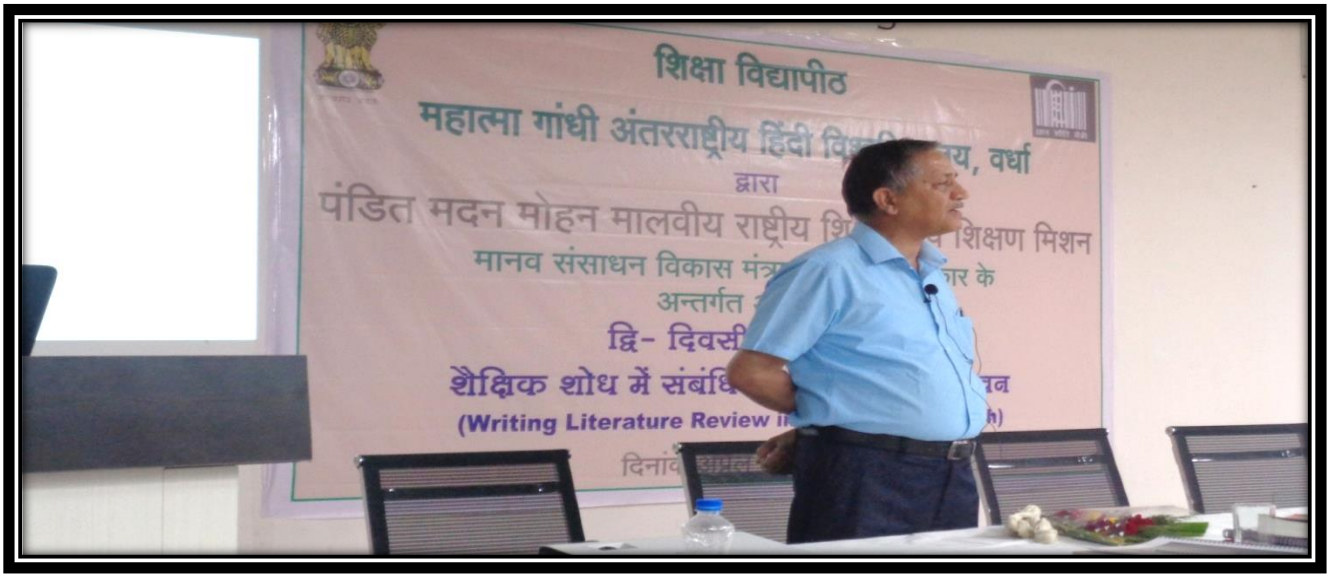

सत्र के अंत में **प्रो. एस.के. त्यागी** (पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर) ने शोध की थीम पर चर्चा की।

डॉ. अनुपम पचौरी ने सत्र को आगे बढाते हुए संबंधित शोध साहित्य समीक्षा लेखन शैली से विद्यार्थियों को अवगत कराया तथा इससे संबंधित प्रत्यक्ष गतिविधि भी आयोजित की।

मुख्य अतिथि **डॉ. अनुपम पचौरी**, NIEPA, नई दिल्ली शोध साहित्य समीक्षा लेखन शैली विषय में विद्यार्थियों को अवगत करते हुए।

कार्यक्रम के आखिर में **श्रीमती शिल्पी कुमारी** ने दो दिवसीय कार्यशाला से होने वाले लाभों के विषय में सभी को अवगत कराया और दो दिन में हुए सभी प्रस्तुतीकरण का सार प्रस्तुत किया। शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर श्री धर्मेंद्र नारायण शंभरकर (कार्यशाला सह-समन्वयक) ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

11. संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम (Faculty Induction Programme) दिनांक (24 जून-23 जुलाई, 2019)

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा '**संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम**' का आयोजन दिनांक 24 जून, 2019 से 23 जुलाई, 2019 तक किया गया।

दिनांक : 24-06-2019

प्रथम सत्र (10:00 AM से 1:30 PM)

इस कार्यक्रम के प्रथम सत्र का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार, बाह्य विषय विशेषज्ञ के रूप में पधारे **प्रो. चंद्र भूषण शर्मा**, अध्यक्ष, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS), दिल्ली; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के.के. सिंह, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, इस संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के आयोजक सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह (सह-प्रोफेसर) शिक्षा विभाग एवं विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान एवं प्रबंधन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा तथा अन्य प्राध्यापकों ने दीप

प्रज्जवलन तथा उद्घाटन सत्र में हिस्सा लिया। तत्पश्चात महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलगीत का गान हुआ जिससे पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल के द्वारा प्रो. चंद्र भूषण शर्मा का स्वागत अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह, पुष्पगुच्छ एवं किट प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. सरिता चौधरी ने किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल एवं विषय विशेषज्ञ प्रो. चंद्र भूषण शर्मा एवं अन्य अतिथिगण

शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर के स्वागत वक्तव्य से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। डॉ. ठाकुर ने सर्वप्रथम मुख्य अतिथि प्रो. चंद्र भूषण शर्मा का परिचय कराते हुए बताया कि इन्होंने देश के लगभग 15 लाख अप्रशिक्षित शिक्षकों को मल्टीमीडिया एजुकेशन एवं टीवी चैनल्स का सीधे प्रसारण के माध्यम से प्रशिक्षित किया। तत्पश्चात विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल का भी परिचय देते हुए इस कार्यक्रम का परिचय, इसके उद्देश्य एवं महत्व से सभी को अवगत कराया तथा कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ भी दी।

कार्यक्रम के आयोजक सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह (एसोसिएट प्रोफेसर) के द्वारा कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की गई जिसमें उन्होंने बताया कि यह अनुप्रेरण कार्यक्रम अलग-अलग 12 मॉड्यूल्स पर आधारित होगा तथा पूरे कार्यक्रम अवधि में प्रतिदिन इन मॉड्यूल्स पर व्याख्यान एवं पारस्परिक विचार-विमर्श होंगे।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में सत्र को संबोधित करते हुए शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अधिष्ठाता एवं गांधीवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि भारत में आश्रम में रहकर गुरु के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने की परंपरा रही है, किंतु आज ये परंपरा समाप्त हो गई है। क्या यह कार्यक्रम फिर उसी गुरुत्व की परंपरा को पुनर्जीवित करने में सहायक सिद्ध होगा, यह विचार करने योग्य है। गांधीवादी दृष्टिकोण के अनुसार कोई विद्यार्थी हमारे आचरण का अनुकरण करके ही कुछ सीखता है न कि हमारे कहने पर। इसीलिए शिक्षक को आचार्य की संज्ञा भी दी जाती है अर्थात् जिसका आचरण अनुकरणीय हो। आज के पाठ्यक्रम को नया स्वरूप देने की आवश्यकता है जिससे कि

बच्चे समय के साथ-साथ रोजगार हेतु तैयार हो सके। आगे उन्होंने कहा कि आत्महीन शिक्षा व्यर्थ है। आज समाजोन्मुख शिक्षा की कमी है। किसी भी विश्वविद्यालय को जागृति का केंद्र होना चाहिए क्योंकि शिक्षा की बुनियादी मूल्यों पर चर्चा की जरूरत है। गाँवों से जोड़कर पाठ्यक्रम का विकास किया जाना चाहिए। ये पाठ्यक्रम किसान, मजदूर, छात्र आदि के अनुरूप होनी चाहिए। 21 वीं सदी में 22 वीं सदी के अनुसार शिक्षा तैयार करने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के.के. सिंह ने कार्यक्रम के आयोजन के लिए साधुवाद देते हुए कहा कि हमें गुरुओं से प्राप्त प्रेरणा का प्रयोग प्रेरक बनने हेतु करना चाहिए। उन्होंने तुलसीदास एवं कबीरदास जैसे महाकवियों की पंक्तियों का संदर्भ देते हुए बताया कि प्राचीन समाज में गुरुओं का अत्यंत सम्मान किया जाता था तथा गुरु एवं शिक्षार्थी के स्वस्थ संबंध हैं। आचार्य का संबंध आचरण से है। शिष्य गुरु के आचरण का ही अनुकरण करते हैं। किसी भी शिक्षक से न्याय एवं विवेक की अपेक्षा की जाती है। हमें गुरु के रूप में ढलने की जरूरत है। उन्होंने अपने वक्तव्य का समापन जयशंकर प्रसाद की पंक्तियों के साथ किया। इस अनुप्रेरण कार्यक्रम को एक पाथेय की तरह बताते हुए उन्होंने इसकी सफलता के लिए शुभकामनाएँ भी दी।

प्रो. के. के. सिंह, कार्यकारी कुलसचिव, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा अपना वक्तव्य देते हुए।

इसके पश्चात बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, महाराष्ट्र, पंजाब आदि से प्रतिभाग कर रहे प्रतिभागियों ने अपना-अपना संक्षिप्त परिचय दिया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के चेयरमेन प्रो. चंद्रभूषण शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षण का कार्य बड़ा ही जटिल है। हम कब प्रवचन देते हैं और कब शिक्षण देते हैं। इसमें दुविधा की स्थिति होती है। उन्होंने शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था दोनों पर चिंता व्यक्त की। प्रो. शर्मा ने कहा कि क्या हमारे विश्वविद्यालय की स्थापना किसी एक लघु या सीमित उद्देश्य को लेकर की गई है। उन्होंने शिक्षकों से कहा कि आप किस परिप्रेक्ष्य में शिक्षण करेंगे। आज के समय में विद्यार्थियों ने कहाँ से ज्ञान प्राप्त किया जिसके कारण वे ऐसा व्यवहार कर रहे हैं, यह जानने की जरूरत है। प्रो. शर्मा ने राष्ट्रहित के अनुसार पाठ्यक्रम को विकसित करने की बात कही। उन्होंने बीजूभाई बजूथा का उदाहरण देते हुए कहा कि शिक्षकों को अवकाश के समय में नए विचारों को सीखना चाहिए।

इसी हेतु यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है जिससे हमें यह सहायता मिलेगी कि नए सत्र के बच्चों को किस प्रकार पढाएँ। उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि वे नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 पर चर्चा कर अपने विचार प्रस्तुत करें। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि हमें ऐसा कार्य करना चाहिए जिसकी चर्चा अन्य लोग करें। हम शिक्षा पर बजट का केवल 3 प्रतिशत खर्च कर रहे हैं ये बात पूर्ण रूप से सत्य नहीं है। वास्तविकता यह है कि भारतीय अपने बच्चों की शिक्षा पर 12 प्रतिशत से अधिक खर्च कर रहे हैं लेकिन इसकी गणना अभी तक नहीं की गई है। NIRF के अनुसार भारत का कोई भी संस्थान शीर्ष पर नहीं हैं। किसी संस्था का मूल्यांकन किन मापदंडों पर किया जाए, यह विचारणीय प्रश्न है। अपने उद्बोधन के अंत में प्रो. शर्मा ने कार्यक्रम की सफलता की शुभकामनाएँ दी।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। प्रो. शुक्ल ने शिक्षक की क्या भूमिका है, इस पर चर्चा की। उन्होंने लिंकन द्वारा अपने बेटे के टीचर को लिखे गए पत्र का उल्लेख किया। प्रो. शुक्ल ने शिक्षा के मूल अर्थ को स्पष्ट करते हुए उच्चारण की शिक्षा की बात की। उन्होंने कहा कि हम जो शिक्षा दे रहे हैं क्या वह सही अर्थों में संप्रेषित हो रहा है। उनके द्वारा देश के प्रत्येक नागरिक से देश नई शिक्षा नीति पर चर्चा करने के लिए आवाहन किया गया। आज की शिक्षा तकनीकी केंद्रित अधिक हो गई है। उच्च शिक्षा का स्वरूप क्या भारतीय जीवन शैली के अनुरूप है। इस बात पर उन्होंने चिंता व्यक्त की। देश में सर्वप्रथम शिक्षा के प्रारूप पर गांधी ने चर्चा की। शिक्षा मनुष्य के निर्माण पर आधारित होनी चाहिए तथा इससे सभी प्रकार के लोगों की भलाई भी होनी चाहिए। भौतिकवादी शिक्षा एक का विकास करती है तथा दूसरे का विनाश करती है। गांधी जी के कथन- 'एक जीव को शिक्षा, एक जीव उद्धार' को संदर्भित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा LLL मॉडल (उठाओ, प्रकाशित करो और मुक्त करो) पर आधारित होनी चाहिए। नई नीति एवं नई दृष्टि के विकास की प्रेरणा इस कार्यक्रम से मिलेगी ऐसी आशा उनके द्वारा व्यक्त की गई।

अंत में शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. सुहासिनी बाजपेयी के द्वारा मुख्य अतिथि, माननीय कुलपति, कुलसचिव, अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, कार्यक्रम आयोजक, प्रतिभागियों, शोधार्थियों, छात्रों एवं कर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। इसके पश्चात कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के समापन की घोषणा की गई।

माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल अपना अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए।

द्वितीय सत्र (02:30 PM-05:30 PM)

इस सत्र में विशिष्ट वक्ता के रूप में संत गाड़गे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय, अमरावती से पधारी डॉ. वर्षा एस. कुमार उपस्थित थीं। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर के द्वारा डॉ. वर्षा एस. कुमार का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, प्रतीक चिन्ह और किट प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन विभाग के सह-प्रोफेसर डॉ. शिरीष पाल सिंह के द्वारा किया गया।

डॉ. वर्षा एस. कुमार ने मानव संसाधन विकास केंद्रों (HRDC) के समस्त क्रियाकलापों एवं उद्देश्यों से प्रतिभागियों को परिचित कराते हुए पदोन्नति में रिफ्रेशर एवं शॉर्ट टर्म कोर्सेस के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था रचनात्मकता में विद्यार्थी को मुख्य माना। तथा कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ भी दी।

दिनांक : 27-06-2019

प्रथम सत्र (10:00 AM से 1:30 PM)

आज के इस कार्यक्रम की शुरूआत डॉ. कृष्णकांत मिश्रा के संचालकत्व में की गई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में गुरू नानकदेव विश्वविद्यालय से पधारी प्रो. दीपा सिकंद के द्वारा **'नवाचार एवं रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में अधिगम'** प्रकरण की शुरूआत करने से पहले सभी प्रतिभागियों से एक-एक करके उनका परिचय प्राप्त किया गया। इसके पश्चात प्रो. सिकंद ने स्वयं अपना परिचय दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि अधिगम एवं शिक्षण व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक ज्ञान के आधार पर की जाती है। शिक्षक को अधिगम के लिए अपने को हमेशा अद्यतन किए रहना चाहिए। उन्होंने आगे बताया व्यवहारवाद, संज्ञानात्मकता एवं रचनावाद को विधिवत उदाहरण सहित बताया। तथा यह भी बताया कि जिज्ञासा आत्म बोध से जुड़ी हुई होती है। मस्तिष्क का आधार केवल सीखना ही नहीं होता बल्कि उसे अपने जीवन में ढालना भी होता है। सीखना प्रभावकारी (Effective) तथा लाभदायक (Gainful) होना चाहिए।

द्वितीय सत्र (02:30-06:00)

द्वितीय सत्र में डॉ. कृष्णकांत मिश्रा द्वारा मुख्य वक्ता के रूप में गुरुनानक देव विश्वविद्यालय से पधारे प्रो. अमित कौट्स का स्वागत किया गया। तत्पश्चात प्रो. अमित कौट्स को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम प्रो. कौट्स ने प्रतिभागियों से उनका विचार मांगा कि वे इस कार्यक्रम में क्या सोचकर आए हैं। इसके बाद उन्होंने उच्च शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के बारे में बताया। इन्होंने अपने व्याख्यान में संकाय विकास शिक्षण (Faculty Development Teaching), IUCTE की तरह 22 School of Education, टीचिंग क्या है। लर्निंग क्या है। टीचिंग कैसी होनी चाहिए, मूल्यों एवं उद्देश्यों, SWAYAM, Swayam Prabha, ई-पीजी पाठशाला, NRC (National Resource Center), MOOC's Courses, Research Paper एवं Article, Open Education Resource आदि बिंदुओं को स्पष्ट किया। अंत में Presentation Tube एप्लीकेशन के माध्यम से वीडियो अपलोड करना, पीपीटी बनाना आदि के बारे में बताया तथा प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान किया।

दिनांक : 28-06-2019

प्रथम सत्र (10:00 AM से 1:30 PM)

आज के सत्र के प्रारंभ में डॉ. शिरीष पाल सिंह, सह-प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा के द्वारा सभी प्रतिभागियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किया गया। तत्पश्चात प्रो. अवधेश शुक्ल (साहित्य विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा) का स्वागत डॉ. शिरीष पाल सिंह के द्वारा किया गया। डॉ. पाल ने प्रो. शुक्ल को अपने व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। प्रो. अवधेश कुमार शुक्ल ने अपने व्याख्यान में बताया कि सीखने का प्रथम संस्थान उसका अपना घर होता है और उसके माता-पिता ही उस संस्थान के प्रथम शिक्षक होते हैं। उसके माता-पिता और अभिभावक ही प्रबंधन की सीख देते हैं। आजकल इसका दायरा बढ़ गया है। अब प्रबंधन एक विषय के रूप में हम लोगों के बीच है। उन्होंने आगे बताया कि हमें बड़े उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए छोटे-छोटे उद्देश्यों को त्यागना होता है। हमें अपने लक्ष्य की प्राप्त के लिए सकारात्क सोच, दूर दृष्टि और पक्का इरादा रखने हेतु बल दिया। आगे प्रो. शुक्ल ने बताया कि संकल्प से सिद्धि एवं दृष्टि बदलने से सृष्टि बदलती है इस बात से भी अवगत कराया। 'आत्मविश्लेषण से दृष्टि बदलती है, दृष्टि बदलने से सृष्टि बदलती है। इसके संबंध में कबीर का एक दोहा 'बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना मिलया कोई, जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा ना कोय' प्रस्तुत कर अपने व्याख्यान को समाप्त किया।

द्वितीय सत्र (02:30-06:00)

इस द्वितीय सत्र के प्रारंभ में समन्वयक श्री सचिन कुमार बेहरा के द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र.) से पधारी प्रो. संध्या गिहर का स्वागत किया गया। इसके पश्चात प्रो. संध्या गिहर ने अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। प्रो. गिहर ने अधिगम (Learning) के उद्देश्यों का वर्णन करते हुए अधिगम के परिणामों की व्याख्या की। तत्पश्चात उन्होंने Strategic Planning के प्रकारों पर चर्चा करते हुए इसके लाभों को भी बताया। प्रो. गिहर ने Strategic Planning की प्रक्रिया-SWOT Analysis, Vision-Mission, Values (Moral, belief, Operational) पर सविस्तार चर्चा की। उन्होंने Mission Statement के विकास पर बल देते हुए Strategic Planning में Stakeholders को भी सम्मिलित करने की बात की। उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम Strategic Planning के लक्ष्यों को निर्धारित करना चाहिए तत्पश्चात उनका विकास करना चाहिए। सभी लक्ष्य सुस्पष्ट होने चाहिए तथा क्रियान्वयन की योजना बनाई जानी चाहिए। इसके पश्चात योजना का मूल्यांकन करना चाहिए। Strategic Planning में कुछ कमियाँ भी हो सकती हैं उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

दिनांक : 29-06-2019

प्रथम सत्र (10:00 AM से 1:30 PM)

आज के इस सत्र में प्रतिभागी श्री प्रदीप विश्वकर्मा ने सत्र समन्वयक की भूमिका निभाई। प्रारंभ में प्रतिभागी श्री गणपति कुमार के द्वारा पिछले दिवस के सभी सत्रों के प्रतिवेदन की प्रस्तुति दी गई। इसके पश्चात मुख्य वक्ता के रूप में बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से पधारे प्रो. आर.पी. पाठक का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया गया। तत्पश्चात प्रो. आर.पी. पाठक का संक्षिप्त परिचय बड़े ही सारगर्भित शब्दों में दिया गया। प्रो. आर.पी. पाठक ने उच्च शिक्षा के ऐतिहासिक

विकास एवं विभिन्न समितियों का परिचय आलोचनात्मक रूप से दिया गया। उन्होंने कहा कि हम क्या थे?, क्या है? और क्या होगे? इस पर आज हमें सूचना और ज्ञान के अंतर को समझना होगा। इसके बाद उन्होंने NCF की भी विस्तृत चर्चा की तथा पुराने विश्वविद्यालयों की प्रशंसा करते हुए नए विश्वविद्यालयों के विकास में राज्य सरकार व केंद्र सरकार के प्रयासों की भी सराहना की और उन्होंने यह आशा भी व्यक्त की कि वर्तमान समय में चल रहे उच्च शिक्षा संस्थानों व विश्वविद्यालयों के उन्नयन हेतु राज्य व केंद्र सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से प्रयास होता रहेगा। तत्पश्चात आपने UGC के दिशा-निर्देशों, शिक्षा में पारदर्शिता व सहयोग, प्रशासकीय स्थिति व आम जन की भागीदारी और शिक्षा में पैरामीटर्स की भी चर्चा की।

द्वितीय सत्र (02:30 PM-06:00 PM)

दूसरे सत्र में NAAC सहित सभी राष्ट्रीय संस्थाओं की उपयोगिता पर विस्तृत चर्चा की गई तदुपरांत नई शिक्षा नीति 2019 व भाषा विवाद पर चर्चा हुई। हमें सरकार से आशावान होने की जरुरत है। ICSSR के फंड व्यवस्था एवं शोध के संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की। प्रो. आर.पी. पाठक, विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, शिक्षा विभाग, एस.एल.बी.एस.आर. संस्कृत विद्यापीठ (डीम्ड विश्वविद्यालय) नई दिल्ली ने भारत के प्राचीन वैभव व उसकी शिक्षा परंपरा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। और बताया कि हमारी मानसिकता में परिर्वतन ही आज की सभी विद्रुपताओं का हल है। तदुपरांत उन्होंने पाठ्यचर्या के Misguide और आदर्श शिक्षक की पहचान व अनुसरण पर चिंतन (Meditation) करने पर बात की। आज के समन्वयक गणपति कुमार ने मुख्य अतिथि के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

दिनांक : 01-07-2019

प्रथम सत्र (10:00 AM से 1:30 PM)

आज के प्रथम सत्र की शुरूआत डॉ. किरण नामदेवराव कुंभरे ने अतिथि व्याख्याता **प्रो. रमेश कुमार पांडेय** माननीय कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली का स्वागत करने हेतु डॉ. शिरीष पाल, सह प्रोफेसर एवं संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के सचिव, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा को आमंत्रित किया। डॉ. पाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ. किरण कुंभरे ने मुख्य अतिथि का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्हें व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया।

प्रो. पांडेय ने अपने वक्तव्य में उच्च शिक्षा के संबंध में बात करते हुए बताया कि समाज में अध्यापकों का पूजनीय स्थान है। और एक अध्यापक का मूल कार्य अध्यापन करना है। वह प्रमाण के साथ अपनी बात रखता है और विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाता है। उन्होंने शिक्षण कार्य में उच्चारण की भूमिका को बहुत महत्व दिया। शिक्षक अगर बच्चों के मन में जिज्ञासा पैदा करने में सफल हो जाता है तो उसका उद्देश्य पूर्ण माना जाता है। प्रो. पाण्डेय ने गुरु और शिक्षक के बीच अंतर को स्पष्ट करते हुए बताया कि हर अध्यापक गुरु नहीं होता है। गुरु को तत्व का ज्ञान होता है और वह अपने शिष्य के हित में लगा रहता है। आज के अध्यापकों को उन्होंने गुरु न मानकर ज्ञान का व्यापारी कहा। उन्होंने शिक्षकों के लिए दो प्रमुख

गुण स्वयं ज्ञान प्राप्त करने में कुशल और ज्ञान का संक्रमण करने में कुशल को आवश्यक माना है। तत्पश्चात उन्होंने उच्च शिक्षा को डिग्री से अधिक व्यक्तित्व को उच्चता प्रदान करने के लिए आवश्यक बताया और ज्ञान की परंपरा के जैसे - धैर्य, क्षमा, मानव धर्म आदि पर बात करते हुए शिक्षक के व्यक्तित्व का एक रूपांतर भी खींचा। उन्होंने बताया कि शिक्षक का व्यक्तित्व पाँच गुणों (विद्या, वसुधा, विषय का ज्ञान, वस्त्र, विमर्श) से युक्त होना चाहिए। इसके साथ ही शिक्षक को तपस्वी और ज्ञानशील होने के साथ-साथ इतना धैर्यवान होना चाहिए कि विद्यार्थियों के द्वारा बार-बार प्रश्न पूछने पर भी वह क्रोधित न हो।

द्वितीय सत्र (02:30-04:15)

दूसरे सत्र की शुरुआत मुख्य अतिथि प्रो. अंजली बाजपेयी, शिक्षा विभाग बी.एच.यू., वाराणसी के स्वागत के साथ हुआ। तत्पश्चात प्रो. बाजपेयी ने अपना वक्तव्य उच्च शिक्षा के अंतरराष्ट्रीयकरण पर दिया। उन्होंने ह्वेनसांग से अपने वक्तव्य की शुरूआत करते हुए मोरक्को, तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी आदि पुराने विश्वविद्यालयों के बारे में बताया। तत्पश्चात उन्होंने कहा कि विदेशों से आने वाले विद्यार्थियों को बेहतर सुविधाएँ देकर वित्तीय व्यवस्था को उन्नत बनाया जा सकता है। प्रो. बाजपेयी ने बताया कि शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थियों के एक से दूसरे देशों में आवागमन से भी देशों के मध्य रिश्तों में सुधार होता है। उन्होंने बताया कि कई देश आज एक ही प्लेटफॉर्म पर आकर खड़े हो गए हैं। हमीद करजई का उदाहरण देते हुए बताया कि जिस देश में शिक्षा प्राप्त की जाती है उससे एक जुड़ाव का रिश्ता बन जाता है। ऐसा व्यक्ति जब निर्णय लेने की स्थिति व पद को प्राप्त करता है तो वही जुड़ाव दो देशों के बीच के रिश्ते बेहतर बनाने की नींव रखता है। प्रो. अंजली बाजपेयी ने विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने एवं भ्रमण करने हेतु USIEF, UKIERI जैसी फेलोशिप की बात की। साथ ही उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमारी शिक्षा व्यवस्था को और बेहतर बनाने की आवश्यकता है। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट को हम न भी मानें तो हमें अपनी शिक्षा के मानदंड को ऐसा तय करना चाहिए जिससे कि पूरा विश्व मानें। उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि आज इस बात की आवश्यकता है कि हमारे यहाँ जो बेहतर चीजे हैं उसे विश्व के सामने भी प्रकट करें।

तृतीय सत्र (04:30-06:00)

अंतिम सत्र में डॉ. कौशल किशोर ने मूल्यांकन (Assessment और Evaluation) पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि Assessment प्रक्रिया के समय अर्थात सीखने के समय का किया गया मूल्यांकन है जबकि Evaluation सीखने के बाद किया गया मूल्यांकन है। इसके बाद उन्होंने MOOC एवं SWAYAM पर अपनी बात रखी। अंत में सभी अतिथि विशेषज्ञों का आभार व्यक्त कर सत्र समापन किया गया।

दिनांक : 03-07-2019

प्रथम सत्र

इस सत्र की शुरुआत इस सत्र के समन्वयक डॉ. मोनिका कदियान के संचालन में प्रारंभ हुआ। डॉ. मोनिका कदियान ने आज के मुख्य अतिथि वक्ता प्रो. प्रदीप कुमार मिश्र, फैकल्टी ऑफ एजूकेशन, सी.सी.एस. विश्वविद्यालय, मेरठ का स्वागत अंगवस्त्र, सूतमाला, पुष्पगुच्छ एवं किट देकर किया।

इसके पश्चात प्रो. मिश्र का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्हें अपने व्याख्यान विषय 'मिश्रित अध्ययन' (Blended Learning) पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। प्रो. मिश्र ने कहा कि पहले हम लोग किसी के घर आने की आगामी सूचना नहीं देते थे फिर भी वह व्यक्ति हमारा स्वागत सम्मान पूरे विधि विधान से करता था। परन्तु आज के समय में एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से संवाद करने तथा आपसी मिल मिलाव हेतु प्रयाप्त समय न मिलने के कारण मनुष्य निरंतर मानसिक बीमारियों का शिकार होता जा रहा है। इसके पश्चात उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दिए जैसे कि:-

1. खोपड़ी मॉडल ऑफ टीचिंग
2. सत्यनारायण कथा मॉडल ऑफ टीचिंग
3. पढने और पढ़ाने के तौर तरीके नहीं बदले क्यों सब बदल गया, Psycho Social Challenges of Present Age साइको सोशल
4. बेचैन आत्माएँ (Fickeing Sauls)
5. डाटा सिंड्रोम (Data Syndrome) पक्ष प्रश्न सबसे चंचल कौन है? युधिष्ठिर जी – मन
6. तारीफ सिंड्रोम(Like Syndrome) प्रश्न दो पथिक कौन है? सूर्य चन्द्रमा
7. नकारात्मकता
8. व्यक्तिवाद (आत्ममुग्धता) (Individualism) आत्ममुद्धता
9. सब चाहिए (Every gain)
10. बिना कुछ करे चाहिए (Easy Gain Sharluts)
11. देना नहीं केवल पाना (No upload only download)
12. आभासी दुनिया (Meandmy Virtual World)
13. वर्तमान में टीचर केवल फैसिलिस्टेर- सुविधादाता होता जा रहा है। (According to a Position Paper Blended Learning)

द्वितीय सत्र

इस सत्र का आरंभ डॉ. आशीष श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, विश्व-भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, पश्चिमी बंगाल के अध्यक्षता के साथ हुआ। डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने अपने व्याख्यान विषय 'कार्य योजना और उसके प्रबंधन को समझना' (Under Standing Work Planning and its Management) पर बात की। और उन्होंने यह भी बताया कि हमें कार्य योजना एवं प्रबंधन को समझने तथा अपने कौशल को बढ़ाने के लिए सदैव सकारात्मक एवं सक्रिय प्रयास करते रहना चाहिए। जिससे कि व्यक्ति के कौशल का विकास समय पर सही सकारात्मक प्रबंधन के साथ हो। तथा उन्होंने यह तथ्य को एक महत्वपूर्ण उदाहरण के माध्यम से समझाया -

करत-करत अभ्यास के जडमति होत सुजान।

रससी आवत-जात से सिल पर परत निशान।।

तत्पश्चात डॉ. श्रीवास्तव ने कार्य योजना (Work Planning), कार्य स्थल (Work Place), कार्य संबंधित व्यक्ति (Work Person), कार्य भार (Work Load), दृष्टि (Vision), मिशन (Mission), लक्ष्य (Goal), प्रक्रिया और नियम (Process and Rules) के बारे में 'द स्टोरी ऑफ फिलासफी और द आइडिया ऑफ यूनिवर्सिटी एजुकेशन एण्ड ह्यूमेन एजुकेशन बुक्स' आदि का विस्तृत रूप से वर्णन किया और इसे उन्होंने बहुत ही सरल एवं व्याख्यायित रूप में प्रतिभागियों के समक्ष भी प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र

कार्यक्रम के इस सत्र में प्रो. नम्रता शर्मा, डायरेक्टर, यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, म.प्र. ने अपने विषय 'तनाव प्रबंधन' (Stress Management) में कार्य करने का तनाव, कार्यस्थल पर जाने का तनाव, नौकरी का तनाव आदि के विषय में चर्चा की। आगे उन्होंने यह भी बताया कि तनाव को हमारे ऊपर हाबी नहीं होने देना चाहिए क्योंकि तनाव से ज्यादा समस्या एवं दुर्घटना उत्पन्न होती हैं। इसके बाद उन्होंने समय के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करने पर बल दिया। साथ ही उन्होंने व्यक्ति में सहनशक्ति कम होने के कारण एवं उनके सुनने-बोलने की शक्ति के बुरा प्रभाव पड़ने पर बात की अंत में उन्होंने जीवनशैली में सुधार, बोलना, सहनशीलता में वृद्धि करने के बारे में बताया। और अपने व्याख्यान के द्वारा प्रतिभागियों का मार्गदर्शन तथा समय-समय पर प्रतिभागियों की जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास भी किया। अंत में कार्यक्रम संचालक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ आज के सत्र का समापन हुआ।

चतुर्थ सत्र

कार्यक्रम के चतुर्थ सत्र में प्रो. नम्रता शर्मा, डायरेक्टर यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, म.प्र. ने अपने विषय 'समय प्रबंधन' (Time Management) पर व्याख्यान प्रारंभ किया।

उन्होंने कहा कि समय ही संपत्ति है। समय ही व्यक्ति को राजा बनाता है। समय ही व्यक्ति को रंक बनाता है। जिसने समय को बाध लिया या समय में बध गया वहीं व्यक्ति सर्वोत्तम एवं सर्वोपरि हो जाता है। जो व्यक्ति जग का संताप मिटाने के लिए जो सुख समाधि को ठुकराता है वह मानव ही इस वसुधा पर नर से नारायण बन जाता है। इस संदर्भ में उन्होंने एक कविता का पाठ भी किया-

अवधेश में सुंदर राज तजा

हरिश्चंद्र को हाट विकाना पड़ा

मद पार्थ को सामने भिल्लन के

मलहाथ के यूँ ही रह जाना पड़ा

एक दानी महा नृप को नृग से

गा भूल पे सर्व गवाना पड़ा

मन में अब धीरज धारे रहो

किसको नहिं कष्ट उठाना पड़ा।।

अंत में उन्होंने अपने विषय पर आधारित एक विडियो के माध्यम से प्रतिभागियों को सिखाया और सभी प्रतिभागियों से अपने अपने अनुभव सांझा करने को कहा तत्पश्चात आज के कार्यक्रम संचालक के द्वारा मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त के साथ सत्र के समापन की घोषणा की गई।

दिनांक : 04-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

आज के प्रथम एवं द्वितीय सत्र का प्रारंभ पूर्व दिन के प्रतिवेदन प्रस्तुति के साथ हुआ। प्रो. पवन कुमार शर्मा का स्वागत शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर के द्वारा सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट देकर किया गया इसके बाद आज के कार्यक्रम समन्वयक सुश्री केतकी संभलकर के द्वारा मुख्य अतिथि **प्रो. पवन कुमार शर्मा** का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्हें अपने व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। प्रो. शर्मा ने अपने व्याख्यान विषय **'वैश्विक उच्च शिक्षा, इसके प्रभाव और भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के रुझान'** (Currents Trends of Global Higher Education and its influence and the Indian higher Education system.) पर बताया कि वैश्वीकरण के संबंध में भारतीय उच्च शिक्षा एवं विद्या के अंतर को समझना चाहिए वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में उस समय शिक्षा, विद्या, बुद्धि का प्रयोग संज्ञा के रूप में होता था। और 18 वीं शताब्दी में व्यवस्थाएँ बदली। जहाँ भारतीय सनातन संस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति थी उसको अंग्रेज बदलना चाहते थे। अंग्रेजों का मुख्य लक्ष्य एवं उद्देश्य इस प्रकार था-

1. भारतीयों के सनातन संस्कृति संस्कारों के सीखे हुए को भुलाना।
2. भारतीय सनातन संस्कृति को नष्ट करना।
3. भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में गलत क्षेपण प्रस्तुत करना।
4. भारतीयों की सभ्यता संस्कृति के प्रति भ्रम एवं हीन भावना पैदा करना।
5. भारतीयों में भेद-भाव, ऊँच-नीच का व्यावहार पैदा करना।
6. फूट डालो राज करो की नीति अपनाना।
7. भारतीय संस्कृति अवधारणा को सबसे निम्न दर्जा देना जिससे कि भारतीयों में भ्रम फैले।
8. डोमेस्टिक सेविंग को तोड़ना।
9. ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से भारत की संपूर्ण प्रभुता पर शासन करना।

10. भारत के कलकत्ता विश्वविद्यालय कर क्लर्क भर्ती कर संपूर्ण भारत में क्लर्कों के माध्यम से अपना कब्जा जमाना।

11. भारतीय भाषाओं के विभेद क्षेपण के भ्रम द्वारा भेद-भाव पैदा करना।

12. भारतीय भाषाओं का यूनीकोड में टाइप होना।

13. मातृभाषा पर प्रहार करना।

14. विद्या शिक्षा में अंतर को प्रस्तुत करना।

तत्पश्चात प्रो. शर्मा ने विद्या की शाखाएँ– लौकिक और अलौकिक के बारे में बताया। साथ ही विद्या के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा विद्या का मुख्य उद्देश्य मानव को श्रेष्ठतम् श्रेणीबद्ध श्रृंखला में स्थापित करना और विहित कर्तव्यों द्वारा मानवीय संवेदना को जागृत करने को भी बताया। भारतीय सनातन संस्कृति में तीन प्रकार के ऋण होते हैं एक पितृ ऋण, दूसरा देव ऋण और तीसरा गुरु ऋण। उन्होंने ऋग्वेद के आधार पर सभी को ब्राह्मण कहा तथा रामचरित मानस का एक उदाहरण- ईश्वर अंश जीव अविनाशी से की। और इसके पश्चात प्रो. शर्मा ने संस्कृत में वर्णित विद्या की महिमा का वर्णन को एक श्लोक के माध्यम से भी स्पष्ट किया।

विद्या ददाति विनयम्, विनयम् ददाति पात्रताम्।

पात्रताम् याति धनम् प्राप्नोति धनादि सुखम्।

और कहा कि विद्या से विनम्रता आती है, विनम्रता से पात्रता आती है, पात्रता से धन प्राप्त होता है, धन से धर्म का कार्य होता है जिससे सुख प्राप्त होता है। इस प्रकार के अनेक उदाहरण देकर प्रो. शर्मा ने प्रतिभागियों की जिज्ञासा को भी शांत किया। अंत में इस सत्र के कार्यक्रम संचालक द्वारा प्रो. शर्मा का धन्यवाद ज्ञापन कर सत्र के समापन की घोषणा की गई।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

इस सत्र के कार्यक्रम समन्वयक ने आज के मुख्य वक्ता प्रो. शरद सिन्हा RMSA, राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के स्वागत के लिए शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर को आमंत्रित किया। डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने मुख्य वक्ता प्रो. शरद सिन्हा का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट देकर किया। तत्पश्चात इस सत्र के समन्वयक ने मुख्य अतिथि प्रो. शरद सिन्हा को अपने व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। प्रो. सिन्हा ने अपने व्याख्यान में 'शैक्षणिक शासन - नई शिक्षा नीति का मसौदा' (Academic Governance – Draft New Education Policy) विषय पर बात कि की नेशनल एकेडमिक गवर्नेस ड्राफ्ट एवं नई शिक्षा नीति के संबंध में नेतृत्व को विकसित करना आवश्यक है इस बात पर जोर दिया।

प्रो. सिन्हा ने नेतृत्व (Leadership) की भूमिका के संबंध को बहुत अच्छी तरह समझाया। तथा Moral Modeling, Objectives, Independence leadership, सेल्फ गवनर्ड हायर एजुकेशन इस्टीट्यूट्स, इंटर लेक्चुअल परफार्मेंस इन अनर्चिंग कल्चर, कैपेबिल एंड अर्थकल लीडरशिप, सेलेक्शन फार अदर लीडरशिप रुल्स आदि के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

महोदया ने नेशनल काउन्सिल एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, नई शिक्षा पाठ्यक्रम व्यवस्था आदि के द्वारा नेतृत्व को विकसित कर राष्ट्र को नया संदेश देने, प्रेरणा देने, मार्गदर्शन करने जैसी अनेक गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। अंत में इस सत्र के समन्वयक द्वारा मुख्य अतिथि के प्रति आभार व्यक्त कर आज के सत्र के समापन की घोषणा की गई।

दिनांक : 06-07-2019

प्रथम सत्र

कार्यक्रम के प्रथम सत्र का प्रारंभ पूर्व दिन के प्रतिवेदन प्रस्तुति के साथ हुआ। इस सत्र के मुख्य विषय विशेषज्ञ प्रो. एच.बी. पटेल, अधिष्ठाता, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर का स्वागत सूतमाला, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं किट प्रदान कर किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि प्रो. एच.बी. पटेल को अपने विषय 'Coping Mechanism' पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। प्रो. पटेल ने अपने व्याख्यान में तनावपूर्ण परिस्थितियों, कष्टदायक तथा कठिन संवेदनाओं से होने वाले तनाव का सामना करने के लिए कई महत्वपूर्ण रणनीतियों के बारे में बताया। और कहा कि यह हमें तनाव, क्रोध, एकाकीपन, चिंता और अवसाद को कम करने में सहायता करती है। इसके पश्चात सत्र के अंत में इस सत्र के समन्यवयक द्वारा मुख्य अतिथि का धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में प्रतिभागियों ने अपने व्यावसायिक क्षेत्रों में अवसाद के विभिन्न कारणों की पहचान की, जैसे- मार्गदर्शन का अभाव, सहयोग का अभाव, विद्यार्थियों की अनुपस्थिति आदि। प्रो.एच.बी. पटेल ने अवसाद से निपटने के दो तरीके के बारे में बताया। और सकारात्मक रूप को यूस्ट्रेस तथा नकारात्मक रूप को डिस्ट्रेस कहा। महोदय ने अवसाद से निपटने की शैलियों को स्पष्ट करते हुए उन्हें मुख्यता दो प्रकार में बाँटा, समस्या केंद्रित और संवेदना केंद्रित। तथा आगे उन्होंने अडेप्टिव कोपिंग की चर्चा करते हुए उनके समस्या समाधान, हसी-मजाक, शारीरिक गतिविधि, सीमाओं का निर्धारण, विवाद से दूर रहने का सुझाव और व्यवस्थित रहने पर बल दिया। और उन्होंने लोगों द्वारा अपनाए जा रहे नकारात्मक तरीकों पर भी प्रकाश डाला।

तृतीय सत्र

इस सत्र के मुख्य अतिथि **प्रो. उपेन्द्र चौधरी**, निदेशक, आई.सी.सी.एस.एस.आर. उपस्थित थे। जिनका व्याख्यान विषय शोध प्रस्ताव और बजट था। उन्होंने अपने व्याखान में आई.सी.सी.एस.एस.आर. (ICSSR) द्वारा प्रदान किए जा रहे अंतरराष्ट्रीय अनुदानों के बारे में जानकारी प्रदान की। इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न संगोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन करने हेतु विभिन्न अनुदानों की भी जानकारी दी। तथा विद्वानों द्वारा प्रशिक्षण और सक्षमता निर्माण कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए भी निर्धारित अनुदानों की सूचना दी।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. उपेन्द्र चौधरी थे जिनका व्याख्यान विषय **'शोध प्रस्ताव कैसे लिखे'** इस पर आधारित था। प्रो. चौधरी ने अनुसंधान परियोजना के शीर्षक को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए उसे स्पष्ट, संक्षिप्त और आकर्षक बनाने की बात की। तथा कहा कि अनुसंधान परियोजना का सार 300-500 शब्दों का होना चाहिए और इसमें प्रस्ताव की रूपरेखा दी जानी चाहिए। और आगे उन्होंने अनुसंधान परियोजना के उद्देश्यों, अवधारणात्मक संरचना, अनुसंधान प्रश्न और परिकल्पना के महत्वपूर्ण और अनिवार्य गुणों की विस्तार से चर्चा की। तथा संबंधित सामग्री का अवलोकन, अनुसंधान विधि, प्रासंगिकता और निष्कर्ष लिखते हुए ध्यान रखने वाली प्रमुख बाते स्पष्ट कीं। तथा उन्होंने कहा कि अनुसंधान प्रस्ताव अधिकतम 12 पृष्ठों का होना चाहिए जिसमें दो पृष्ठों की ग्रंथ सूची होनी चाहिए। सत्र के अंत में कार्यक्रम संचालक के द्वारा मुख्य अतिथि का धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र की समाप्ति की घोषणा की गई।

दिनांक: 08-07-2019

प्रथम सत्र

इस दिन के प्रथम सत्र की शुरूआत पहले दिन के प्रतिवेदन प्रस्तुती के साथ हुआ। कार्यक्रम में आए हुए प्रतिभागी श्री गणपति कुमार के द्वारा मुख्य स्रोत व्यक्ति प्रो. धर्म राजा का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह एवं किट देकर किया गया। इसके पश्चात प्रो. धर्म राजा ने अपने व्याख्यान विषय **'अनुसंधान साधनों का निर्माण (Construction of instrumentation tools)'** पर अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। और साधनों के निर्माण की प्रक्रिया एवं उनकी आवश्यकताएँ के बारे में चर्चा की। तत्पश्चात उन्होंने Item, Question एवं Statement के मध्य के अंतर को स्पष्ट किया।

इसके साथ ही उन्होंने अनुसंधान (Research) के बारे में भी चर्चा की। तथा विधान या प्रश्न किस तरह से लिखने चाहिए, यह भी बताया। महोदय ने कहा कि अच्छे पुस्तक के बिना हम अच्छे विधान या प्रश्न नहीं बना सकते हैं। इसके साथ ही उन्होंने प्रश्न तथा विधान की क्या विशेषताएँ होती है इसके बारे में भी उल्लेख किया। प्रो. धर्म राजा ने यह भी बताया कि किसी प्रश्नावली को बनाते समय विशेषज्ञों से भी राय लेने की आवश्यकता है। प्रश्नावली या अन्य साधनों का निर्माण करते हुए यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि वह साधन वैध (Valid), विश्वसनीय (Reliable) तथा उपयोगी (Usable) हैं। यह कहने के पश्चात उन्होंने वैधता, विश्वसनीयता तथा उपयोगिता के बारे में विस्तार से चर्चा की। तत्पश्चात आज के इस कार्यक्रम समन्यवयक के द्वारा मुख्य अतिथि का धन्यवाद ज्ञापन किया गया ।

द्वितीय सत्र

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र के आरंभ में पुनः मुख्य अतिथि प्रो. धर्म राजा को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। जिसमे प्रो. धर्म राजा ने शोध-प्रतिवेदन (Research Report) के संदर्भ में बात करते हुए, अनुसंधान क्या है इसके बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की

तथा उन्होंने कल्पना (Imagination) को अनुसंधान का सबसे बड़ा स्रोत कहा। साथ ही प्रतिभागियों को शोध-शीर्षक, साहित्य पुनरावलोकन, प्रोजेक्ट स्केलेबिलिटी, संकल्पनात्मक समझ (Conceptual Understanding) अनुसंधान के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं, यह भी बताया। शोध में प्रतिवेदन कैसे लिखा जाना चाहिए और शोध में लिखते समय हमारा एपीआई स्टाइल किस तरह का होना चाहिए इस पर भी सविस्तार चर्चा की।

तृतीय सत्र

इस सत्र का आरंभ मुख्य अतिथि वक्ता प्रो. अनीसुर रहमान के स्वागत के साथ हुआ। प्रो. अनीसुर रहमान ने अपने व्याख्यान में शिक्षक के लिए अनुसंधान कितना महत्वपूर्ण है इसके बारे में बताया और यह भी कहा की जो नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2009 का ड्राप्ट आया है उसे हर शिक्षक को पढ़ना चाहिए तथा इस पर अपने अभिप्राय तथा सुझाव देना चाहिए। प्रो. रहमान ने अनुसंधान की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए बताया कि अनुसंधान एक ज्ञान निर्माण का मार्ग तथा विचार का मार्ग है।

चतुर्थ सत्र

चतुर्थ सत्र में प्रो.अनीसुर रहमान ने अपने अनुसंधान विचारों को आगे बढ़ाते हुए अनुसंधान की विशेषताओं तथा अनुसंधान के विभिन्न प्रकार पर चर्चा की। तत्पश्चात प्रो. रहमान ने अनुसंधान प्रतिमान (Research Paradigm) की बात करते हुए इसके 'व्यवस्थित (Systematic), वैज्ञानिक (Scientific), और सकारात्मक दृष्टिकोण (Positive Approach) के बारे में बताया। इसके बाद उन्होंने प्रतिभागियों के विभिन्न प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया तथा अंत में इस कार्यक्रम के समन्वयक द्वारा मुख्य अतिथि का आभार प्रकट कर सत्र के समापन की घोषणा की गई।

दिनांक : 09-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

इस प्रथम एवं द्वितीय सत्र के कार्यक्रम संचालक द्वारा मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. माधुरी हुड्डा, उपनिदेशक, एफ.डी.सी. शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा के स्वागत हेतु शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर को आमंत्रित किया गया। डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने मुख्य अतिथि डॉ. माधुरी हुड्डा का स्वागत सूतमाला, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र और किट प्रदान कर किया। तत्पश्चात कार्यक्रम संचालक ने डॉ. हुड्डा को अपने व्याख्यान विषय **Designing Online Course Through Module** (मॉड्यूल के माध्यम से ऑनलाइन पाठ्यक्रम डिजाइन करना) पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। डॉ. हुड्डा ने देश में प्रचलित डिजिटल इंडिया की मुहिम और नेशनल मिशन इन एजुकेशन थ्रू आईसीटी (NMEICT) के प्रमुख लक्ष्यों एक्सेस, इक्विटी और क्वालिटी से अपना व्याख्यान आरंभ किया। भारत सरकार के SWAYAM मंच पर मूक्स को स्पष्ट करते हुए आईसीटी का प्रयोग एवं मिश्रित अध्ययन (Blended Learning) पर प्रकाश डाला। मूक्स पर नामांकन और इसके चार भाग जैसे- (1) ई-ट्यूटोरियल तैयार करना, (2) ई-कन्टेंट, (3) आकलन (4) विचार-विमर्श पर विस्तृत चर्चा की।

आपने भारत सरकार द्वारा उच्च शिक्षा में डिजिटल नवाचारों जैसे स्वयं, स्वयं प्रभा, नेशनल डिजिटल लाईब्रेरी, ई-शोध सिंधु, आदि को बिंदुवार स्पष्ट किया। और SWAYAM के नेशनल कोर्डिनेटर्स के बारे में चर्चा करते हुए ई-ट्यूटोरियल के लिए प्रजेंटेशन सॉफ्टवेयरों के बारे में जानकारी दी।

तत्पश्चात डॉ. हुड्डा ने मूडल पर कार्य करने को कॉफी उपयोगी बताते हुए इसकी Philosophy स्पष्ट की। साथ ही उन्होंने मूडल की प्रमुख विशेषताएँ बताते हुए मूडल पर कार्य करने के विभिन्न चरण विस्तार से स्पष्ट किए और स्वयं प्रतिभागियों के सामने इसका उपयोग करके भी दिखाए। इसके बाद प्रतिभागियों ने मुख्य अतिथि की सहायता से इसके उपयोग को भी जाना। साथ ही प्रतिभागियों ने यह भी सिखा कि किस तरह पावर प्वाइंट प्रेजेंटशन को Presentation Tube नामक सॉफ्टवेयर में अपलोड करे, अपना विडियो बनाए, संपादन करे आदि को भी सिखा। इसके पश्चात डॉ. हुड्डा ने सभी प्रतिभागियों को अभ्यास करके सीखने का सुझाव दिया। अंत में इस सत्र का समापन मुख्य अतिथि वक्ता के प्रति आभार व्यक्त के साथ हुआ।

तृतीय एवं चतर्थ सत्र

कार्यक्रम के **तृतीय एवं चतर्थ सत्र** का संचालन श्री विजय कुमार यादव ने किया। इस सत्र के मुख्य अतिथि वक्त प्रो. सुजाता श्रीवास्तव, शिक्षा संकाय, महाराज सैयाजी राव विश्वविद्यालय, बडौदरा, गुजरात उपस्थित थी जिनका स्वागत डॉ. शिरीष पाल सिंह सह प्रोफेसर एवं संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम सचिव, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हि.वि. वर्धा ने सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया। तत्पश्चात कार्यक्रम संचालक ने मुख्य अतिथि वक्ता को अपने विषय 'पाठ्यचर्या विकास' पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। डॉ. सुजाता श्रीवास्तव ने अपने विषय को पाठ्यचर्या का अर्थ और अवधारणा से आरंभ करते हुए इसका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट किया। गुणात्मक पाठ्यचर्या के चार अंगों जैसे शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम अनुभव, विधियाँ और अनुदेशन सामग्री और मूल्यांकन तकनीकों पर बात की।

इसी क्रम में व्याख्यान को आगे बढ़ाते हुए पाठ्यचर्या की आवश्यकता और महत्व, नीति परिप्रेक्ष्य पर विस्तार से चर्चा की। इसमें आगे उन्होंने पाठ्यचर्या के प्रकार, कोर पाठ्यचर्या, हिडन करिकुलम एवं इसके पक्षों को स्पष्ट करते हुए नल करिकुलम पाठ्यचर्या की संरचना, पाठ्यचर्या के विभिन्न आधारों जैसे दार्शनिक, समाजशास्त्रीय मनोवैज्ञानिक दोनों विषय पर बात की।

पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया में पाठ्यचर्या डिजाइन करने, निर्माण करने, क्रियान्वयन और मूल्यांकन करने को भी स्पष्ट किया। तथा उन्होंने पाठ्यचर्या तैयार करने में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के विश्लेषण पर विशेष जोर दिया। और कहा कि शैक्षिक उद्देश्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अत: इन्हें तैयार करते हुए Self Sufficiency (आत्मनिर्भरता), Significance (महत्व), Validity (वैधता), रोचकता, उपयोगिता, व्यवहार्यता का ध्यान रखा जाना चाहिए। क्रियान्वयन में गुणवत्ता को बढ़ाने और दो तरफ संप्रेषण पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए। अंत में इस सत्र के कार्यक्रम समन्वयक ने विषय विशेषज्ञ का धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस सत्र के समापन की घोषणा की।

दिनांक : 11-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

आज के कार्यक्रम संचालक श्री विनोद विनायक ने सर्वप्रथम 10 जुलाई के प्रतिवेदक श्री अमर नाथ पाटिल को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया। श्री अमर नाथ पाटिल ने अपना प्रतिवेदन बड़े सारगर्भित एवं सहज ढंग से प्रस्तुत किया। इसके बाद कार्यक्रम संचालक आज के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. सैयदा फौजिया नदीम शिक्षक प्रशिक्षण और गैर औपचारिक शिक्षा विभाग, जामिया मीलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, अलीगढ़ थी जिनका स्वागत डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने सूतमाला, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र और किट प्रदान कर किया। इसके बाद कार्यक्रम संचालक ने डॉ. सैयदा फौजिया नदीम को अपने विषय 'Diversity and Multilingualism' (विविधता और बहुभाषावाद) पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। डॉ. फौजिया नदीम ने डायवर्सिटी का अर्थ, विविधता, विभिन्नता, परिवर्तन, रूपांतरण ऐसे कई विभिन्न अर्थों के संदर्भ में बताया है। सर्वप्रथम डायवर्सिटी क्यों होनी चाहिए। वह इसलिए होना चाहिए क्योंकि विश्व को बदलने के लिए, सांस्कृतिक एवं आतंरिक रूप से बदलाव की आवश्यकता है। साथ ही एकाग्रता पर आधारित होती है। डायवर्सिटी को अलग-अलग रूप में देख सकते हैं। जैसे- Individual, Race, Unlike characteristics, Diverse, Minorities, Unique, Variety के आधार के रूप में जाना जा सकता है। डायवर्सिटी के बहुत से एजेंडा इस प्रकार है-

1. Understand Diversity (विविधता को समझें)

2. Emphasize the value of Diversity (विविधता के मूल्य पर जोर दें)

3. Multiculturalism (बहुसंस्कृतिवाद)

4. संचार (Communication)

5. Share experiences in Managing Diversity (प्रबंध विविधता में अनुभव साझा करें)।

इन मुद्दों पर चर्चा हुई साथ ही उनका यह भी कहना था। विविधता के पहलू जैसे- आयु, जाति, लिंग, नैतिकता, शारीरिक एवं मानसिक तत्व पर आधारित होता है। इसके स्त्रोत और उद्विकास वसुदैव कुटुंबकम् से होनी चाहिए जो पारिस्थितिकीय विविधता, एकता की विविधता, समानता का अवसर, बहुसांस्कृतिकवाद, पवित्रता यह सब विविधता पर निर्भर करता है। Multiculturalism (बहुसंस्कृतिवाद) के संदर्भ में यह कहा कि आदिवासी को हमेशा एनकरेज एवं सशक्त करने की बात की जाती है। अपने निर्णय खुद लेने की क्षमता होनी चाहिए। महिला, बच्चे या फिर कोई भी समुदाय हो सबका आदर करना चाहिए। इन सभी बातों का उन्होंने उल्लेख किया है। व्याख्यान में उन्होंने यह भी कहा था कि समाज में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जिसके पास भाषा पर प्रभुत्व हो वह कुछ भी कर सकता है। भाषा राजनीति की कुंजी है।

व्याख्यान में बाहुभाषिकवाद के संदर्भ में कहना था कि भारत में कई भाषाए है कोई भी भाषा पवित्र नहीं होती उसमें निरंतर बदलाव आता है परिवर्तित होती रहती है। भाषा की विशेषताएँ भी होती है। भाषा पीढ़ी दर पीढ़ी बदलती है। ट्रान्सलैंग्वेज वह प्रक्रिया है जिसमें एक भाषा बोलते समय कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं। उदहारण- इंग्लिश में कम्पूटर, मोबाइल, लैपटॉप इस शब्दों को शुद्ध हिंदी उच्चारण नहीं किया जाता बल्कि इंग्लिश शब्दों का ही उपयोग किया जाता है। इसके सामने कई चुनौतियाँ है जिसमें सरकारी नीतियाँ भी है।

भाषा पावरफुल टूल है। प्राचीन भारत में पालि और प्राकृत बहुत प्रसिद्ध भाषा थी। इसके बाद में फारसी बनी। ब्रिटिश काल में अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग किया। भाषा का प्रयोग उन्होंने ही किया जिनके पास सत्ता थी दूसरी चुनौती यह है कि शिक्षा के जितने भी फैसले हुए वह शैक्षिक सिद्धान्तों पर नहीं हुए। अब हमारे सामने Three Language Formula (त्रि-भाषा सूत्र) है। जिस भाषा का प्रयोग नहीं करते वह भाषा बोलने में कठिन होती है। उदाहरण के तौर पर मुलायम सिंह यादव ने जयललिता को हिंदी में पत्र व्यवहार किया और जयललिता ने पत्र का उत्तर तमिल भाषा में दिया और दोनों को कुछ समझ नहीं आया। इससे यह पता चलता है कि कही न कही कॉमन भाषा की आवश्यकता है। इस तरह से विस्तारित रूप से चर्चा हुई। साथ ही कुछ प्रतिभागी ने अपने अपने विषय पर बात रखी। प्रतिभागी के विषय निम्नलिखित हैं-

1) Sachin Kumar Behara : Socio-Political Issues – A major different for Tourism
2) Ganpati Kumar : Measurement Assessment & Evolution
3) Dr. Praveen Chauhan : Need Analysis for Curriculum Development
4) Sharmila Bawiskar : Need and Objective of value\Education
5) Dr. Monika Kadiyan : NIOS

अंत में इस कार्यक्रम के समन्वयक ने अपने शब्द सुमन से मुख्य अतिथि वक्ता का आभार व्यक्त किया और इस कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

दिनांक : 12-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

आज के कार्यक्रम शुरुआत दिनांक 11 जुलाई, 2019 के प्रतिवेदन की प्रस्तुतीकरण के साथ डॉ. किरण नामदेव कुम्भरे ने की। तत्पश्चात आज के समन्वय श्री गणपति कुमार ने विशेषज्ञ प्रो. अमृत जी. कुमार, विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल का संक्षिप्त परिचय दिया। इसके बाद डॉ. प्रवीन चौहान द्वारा प्रो. अमृत जी. कुमार का स्वागत सूत माला एवं अंग वस्त्र तथा विश्वविद्यालय के स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया। इसके बाद कार्यक्रम संचालक ने डॉ. कुमार को अपने विषय 'आलोचनात्मक शिक्षण' पर व्याख्यान प्रस्तुतीकरण के लिए आमंत्रित किया।

प्रो. अमृत जी. कुमार ने अपना व्याख्यान बहुत ही सरल एवं रोचक तरीके से देते हुए बताया कि आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र से आशय विषय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को विकसित करना है। इसे उन्होंने श्री आर.के. नारायणन की एक कहानी के माध्यम से समझाया। उन्होंने कहा कि आज न तो शिक्षक को यह पता है कि कोई विषय क्यों पढ़ा रहे हैं और न ही छात्र को पता है कि हम क्यूँ पढ़ रहे हैं। आज हम शिक्षण और शिक्षा परीक्षा तक ही निर्भर रह गए हैं। विषय की समझ एक निश्चित सीमा तक सीमित रह गई है। कक्षा में शिक्षक छात्रों पर हावी रहता है। जिससे छात्रों की जिज्ञासा तथा मनोदशा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। छात्र प्रश्न नहीं पूछ पाता है। जिससे उसे विषय की सही समझ तथा अधिगम नहीं हो पाता है। अत: आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र शिक्षा और सामाजिक आंदोलन का एक दर्शन है। अत: शिक्षक को कक्षा का वातावरण लोकतांत्रिक रखते हुए छात्रों को विषय से संबंधित सभी जिज्ञासाए, अधिगम तथा समझ से संबंधित प्रश्न पूछने के स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए। एक शिक्षक को आलोचनात्मक शिक्षाशास्त्र के महत्व को समझते हुए अपने शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाना चाहिए। सत्र के अंत में प्रो. अमृत ने सभी प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए अपने विषयी व्याख्यान को समाप्त किया।

तृतीय और चतुर्थ सत्र

इस सत्र में प्रतिभागीगण श्री संजीव राज, डॉ. भारती देवी, श्री स्वपनिल दत्तात्रेय, श्री सोमेन दत्ता, डॉ. अतिराज अरुण, श्री अमरनाथ पंडित पाटिल तथा श्री विनोद विनायक ने अपनी-अपनी पावर पांइट के द्वारा प्रस्तुतीकरण की। जिसका मूल्यांकन प्रो. शैफाली पांडया और प्रो. फौजिया नदीम जी द्वारा किया गया। सत्र का समापन श्री गणपति कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

दिनांक : 15-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

आज के सत्र का प्रारंभ 13 जुलाई के प्रतिवेदन प्रस्तुति के साथ किया गया। इस प्रतिवेदन की प्रस्तुति सुश्री केतकी निंबालकर ने किया। इसके बाद आज के कार्यक्रम समन्वय सुधीर पांडुरंग ने आज के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. समीर बाबू सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, केरल विश्वविद्यालय, केरल का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर डॉ. समीर बाबू को अपने विषय 'Duality Concerns in Academic Research' पर व्याख्यान के लिए आंमत्रित किया। उन्होंने अपने व्याख्यान में Quality of Academics पर चर्चा की और कहा हमें क्षेत्र में रहना है तो क्या करना चाहिए। इसके लिए हमें प्रति वर्ष कम से कम दो रिसर्च पेपर प्रकाशित करते रहना चाहिए क्योंकि यह अकादमिक प्रमोशन के लिए भी यह जरूरी है। उन्होंने विदेशों के प्रोफेसर के बारे में बताया कि वे हर महीने रिसर्च पेपर प्रकाशित कराते हैं, कम से कम एक साल में दो स्टैंडर्डस् कॉन्फ्रेंस में प्रतिभाग करते हैं और दो साल में कम से कम एक पुस्तक लिखते हैं। हमें अकादमिक कल्चर बनाने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि शोध पत्र कैसे लिखा जाता है? इसके लिए विभिन्न प्रकार के शोध पत्र को पढ़ने तथा उसके लिखने के विधि के बारे में अध्ययन करना

आवश्यक है। अपना शोध पत्र कैसे आकर्षक हो इसके लिए बहुत सुझाव दिए। कार्यक्रम के दौरान आज के मुख्य वक्ता डॉ. समीर बाबू का स्वागत संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के सचिव एवं शिक्षा विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. शिरीष पाल सिंह ने सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट देकर किया। समापन सत्र के दौरान डॉ. शिरीष पाल सिंह ने रिसर्च पेपर के संबंध में आर.जी. स्कोर, एच. स्कोर एम. इन्डेक्स, जी इन्डेक्स आई.पी.पी, स्लिप स्कोर यूजीसी के केयर लिस्ट आदि के बारे में बताया।

अंत में डॉ. पाल द्वारा प्रतिभागियों को एकल या दो-दो के समूह में दिनांक 14 जुलाई के भ्रमण की रिपोर्ट कल प्रस्तुत करने तथा तृतीय और चतुर्थ सत्र में सभी प्रतिभागियों को सेन्ट्रल लाइब्रेरी का विजिट करने की सूचना के साथ सत्र समापन की घोषणा की गई।

दिनांक : 17-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

आज के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अविराज अर्जुन जात्रटाकर ने सर्वप्रथम सत्र आरंभ से पूर्व 16 जुलाई, 2019 के कार्यक्रम प्रतिवेदक को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया। प्रतिवेदक महोदय ने अपना प्रतिवेदन बड़े सारगर्भित ढ़ग से प्रस्तुत किया। इसके बाद कार्यक्रम समन्वय ने आज के मुख्य अतिथि **प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री**, माननीय कुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश का संक्षिप्त परिचय देते हुए म.गां.अं.हि.वि. वर्धा, के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर को आमंत्रित किया कि वे मुख्य अतिथि का स्वागत एवं अभिनंदन करें। डॉ. ठाकुर ने मुख्य अतिथि का स्वागत सूत माला, अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया। इसके बाद प्रो. अग्निहोत्री ने उच्च शिक्षा के विषय में बात करते हुए बताया कि 70 प्रतिशत विद्यार्थियों का पढ़ने का ध्येय नौकरी साध्य करना होता है और 90 प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जिनके पास पढ़ने के बाद क्या कर सकते हो, इसका उत्तर उनके पास नहीं होता है। अत: शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता है और परिवर्तन प्रथमत: मस्तिष्क के अंदर होता है, और यह परिवर्तक मानवता के प्रति होता है। उन्होंने नोबल पुरस्कार का संदर्भ देते हुए कहा कि नोबल पुरस्कार हमेशा आधारभूत विचार पर मिलते हैं व्यावहारिक पर नहीं। कौन कहता है और कौन-सी भाषा में कहता है इसका बहुत प्रभाव पड़ता है। आधारभूत विचार मातृभाषा में आते हैं। इसलिए मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा मानवी विकास का कारण बनती है। चाय अंतराल के बाद अपनी बात रखते हुए उन्होंने बताया कि एक जमाना ऐसा था कि हम दुनिया का एजेंडा तय करते थे, अब हम केवल फालोअर हो गए है। अत: हमें स्वयं को पहचानने की जरुरत है। शब्द का माहात्म्य बताते हुए उन्होंने कहा कि अक्षर की जब साधना की जाती है तब मंत्र बनता है। अत: करनी भी काम में साधना का महत्व हमें अवगत कराया। अंत में पाश्चात्य संस्कृति एवं भारतीय संस्कृति का भेद बताते हुए उन्होंने कहा कि भारत में परिवार महत्वपूर्ण होता है और पाश्चात्य संस्कृति में व्यक्ति महत्वपूर्ण हो गया है। ये विचारो की प्रेरणा हमें जीवन प्रवाह में जरूर लाभ दाई होगी। कार्यक्रम संचालक के द्वारा प्रो. अग्निहोत्री का आभार व्यक्त के साथ सत्र समाप्त हुआ।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

इस सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. वंदना पांडेय, स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन एंड मीडिया स्टडीज, गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी, गौतमबुद्ध नगर थीं, जिनका स्वागत डॉ. शिरीष पाल सिंह सह प्रोफेसर एवं संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम सचिव, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हि.वि. वर्धा ने सूतमाला, स्मृति चिन्ह, अंग वस्त्र और किट प्रदान कर किया। इसके बाद कार्यक्रम संचालक ने प्रो. पांडेय को अपने विषय 'OBC' (Outcome Best Education) पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। आपने शिक्षा क्षेत्र में अध्यापक का रोल क्या होता है, पाठ्यक्रम में क्या-क्या चीजें पढ़ाई जा रही है, इसके तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया है। बेसिक नॉलेज को मार्केट के हिसाब से हमें ढालना होगा और विद्यार्थियों में शिक्षकों द्वारा सांस्कृतिक एवं सामाजिक विचारधारा रुपानी होगी। शिक्षा ने समाज को केवल Money Mind विद्यार्थी बनाया है, अत: हमें शिक्षा में प्राकृतिक ज्ञान लाना जरुरी है। भारत में, स्वच्छ भारत अभियान, भ्रूण हत्या ये सब हमारे रिसर्च का विषय होना चाहिए, आदि विचारों से हमें लाभांवित किया। अंत में कार्यक्रम संचालक के द्वारा प्रो. पांडेय का आभार के साथ सत्र समाप्त हुआ।

दिनांक : 22-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

सर्वप्रथम आज के कार्यक्रम संचालक डॉ. नरेन्द्र देवे ने 20 जुलाई के कार्यक्रम प्रतिवेदक श्री सुधीर पांडुरंग डोरिगेड को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के लिए आंमत्रित किया तत्पश्चात श्री सुधीर पांडुरंग डोरिगेड ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इसके बाद कार्यक्रम संचालक ने आज के मुख्य वक्ता डॉ. शिरीष पाल सिंह का संक्षिप्त परिचय अपने शब्द सुमन से करते हुए डॉ. संजीव राज को डॉ. पाल का स्वागत करने के लिए आमंत्रित किया। तत्पश्चात डॉ. संजीव राज ने सूतमाला, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं किट प्रदान कर डॉ. शिरीष पाल सिंह का स्वागत किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में कार्यक्रम संचालक ने डॉ. पाल सर को अपने विषय 'Research writing and Publication' पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। डॉ. पाल ने सर्वप्रथम प्रतिभागियों से परिचय प्राप्त किया और उन्हें वर्तमान में रिसर्च पब्लिकेशन में क्या समस्या आ रही है इस पर चर्चा की। इसके बाद उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि रिसर्च को किस तरह से पढ़ा जाए, रिसर्च के बारे में एकेडमी फोरम में कैसी चर्चा है, उस रिसर्च को हम अपने रिसर्च में किस प्रकार प्रयोग कर रहे हैं, कैसे हम उस रिसर्च को आन-लाइन रिसर्च पब्लिकेशन एंजेसी के माध्यम से प्रकाशित करते हैं आदि पर चर्चा की। तत्पश्चात जर्नल्स की चार कारइट एरिया के बारे में बताया। प्रथम क्राइट एरिया में सभी प्रकार के जर्नल्स, द्वितीय क्राइट एरिया के यूजीसी सूची के जर्नल्स जिसमें से क्राइट एरिया क्वालिटी चेक कर चयन किया जाता है। तृतीय क्राइट एरिया जर्नल्स विश्वविद्यालय के जर्नल्स की क्राइट एरिया क्वालिटी जाँच कर करते हैं और चतुर्थ क्राइट एरिया जर्नल्स में संस्था या विश्वविद्यालय के द्वारा रिकमंड की गई जर्नल्स को अपनी क्राइट एरिया क्वालिटी जाँच के आधार पर चयन करते हैं। आपने कैलकुलेशन के बारे में जानकारी प्रदान की। आपने इन्डेक्स, एच-इन्डेक्स आदि के बारे में बताया। आपने गुगल स्कालर जैसे बहुत से प्लेटफार्म बताए, परंतु गुगल स्कालर के विषय में उन्होंने बताया कि यह बहुत ही

आसान है इसमें केवल अपनी स्कालर आइडी बनाकर इसको चलाया जाता है। इसके बाद उन्होंने जिनके पास smartphone है उनसे गुगल स्कालर ओपेन कराकर सभी प्रतिभागियों को इमेल के माध्यम से आईडी बनवाकर अवगत कराया। आर.जी स्कोर, एच. स्कोर एम. इन्डेक्स, जी इन्डेक्स आई.पी.पी, स्लिप स्कोर यूजीसी के केयर लिस्ट आदि के बारे में जानकारी प्रदान की। अंत में अपने व्याख्यान के दौरान प्रतिभागियों की जो शंकाएं थी उसका समाधान किया। कार्यक्रम संचालक ने अपने वक्तव्य से डॉ. पाल का आभार व्यक्त किया।

अंत में प्रतिभागी सचिन बेहरा ने विभिन्न प्रकार के आर्टिकल पढ़ने के लिए SCI Hub वेबसाइट का उपयोग करने पर बल दिया जिसमें DOI को कापी कर SCI Hub वेबसाइट पर सर्च कर आसानी से पीडीएफ के रूप में डाउनलोड किया जा सकता है। इस प्रकार इसके लिए कोई लागिन आई डी की जरूरत नहीं पड़ती है और हम आसानी से पीडीएफ के रूप में आर्टिकल प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार आज तृतीय और चतुर्थ सत्र में विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण एवं निरीक्षण करने की सूचना के साथ आज के सत्र की समाप्ति की घोषणा की गई।

दिनांक : 23-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के अंतिम दिन के प्रथम सत्र का आरंभ आज के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. स्नेह सुधा ने सर्वप्रथम आज के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. जगप्रीत कौर, शिक्षा विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला का संक्षिप्त परिचय दिया गया। इसके बाद उन्होंने इस कार्यक्रम के सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा से अनुरोध किया कि आज के मुख्य अतिथि का स्वागत करें। डॉ. पाल जी ने सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर डॉ. जगप्रीत कौर का स्वागत किया। तत्पश्चात डॉ. स्नेह सुधा जी ने डॉ. कौर को अपने व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। डॉ. कौर ने 'लाइफ स्किल एजुकेशन' विषय पर अपना व्याख्यान देने से पूर्व प्रतिभागियों से उच्च शिक्षा के विषय में उनके अनुभव को प्राप्त किया। इसके बाद अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। अपने व्याख्यान में उन्होंने कौशल के विभिन्न लर्निंग लाइफ स्किल, सोशल लाइफ स्किल और पर्सनल लाइफ स्किल के बारे में बताया। तत्पश्चात उन्होंने प्रतिभागियों के शंकाओं का समाधान कर उनका फीडबैक भी प्राप्त किया| अंत में कार्यक्रम समन्वय डॉ. स्नेह सुधा ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त कर इस सत्र के समापन की घोषणा की।

समापन सत्र

संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के समापन सत्र का संचालन कर रहे डॉ. भरत कुमार पंडा ने सर्वप्रथम आमंत्रित अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ हेतु मंचस्थ सभी अतिथियों को दीप प्रज्ज्वलन हेतु आमंत्रित किया। मुख्य अतिथि प्रो. संजीव कुमार शर्मा माननीय कुलपति, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी, बिहार, प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, प्रो. के.के. सिंह, कार्यकारी कुलसचिव, महात्मा गांधी

अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ. शिरीष पाल सिंह सह प्रोफेसर एवं संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम सचिव ने दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके बाद अपने विश्वविद्यालय की परंपरा का निर्वहन करते हुए विश्वविद्यालय का कुलगीत ''महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय'' के ध्वनि का वादन किया गया।

माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी, बिहार अपना वक्तव्य देते हुए।

भारतीय परंपरा रही है कि 'अतिथि देवो भव' इस परंपरा का निर्वहन करते हुए हमारे बीच अतिथि वक्ता के रूप में पधारे प्रो. संजीव कुमार शर्मा माननीय कुलपति, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी, बिहार का स्वागत अपने विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने बुके, सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट देकर किया। इसके बाद माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल का स्वागत शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष एवं परियोजना के समन्वयक डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने बुके, सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया। विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के.के. सिंह का स्वागत संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. शिरीष पाल सिंह ने सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट देकर किया। कार्यक्रम के अगली कड़ी में कार्यक्रम के संचालक ने शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर को प्रस्तावना वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया। डॉ. ठाकुर ने मंचस्थ मुख्य अतिथियों तथा सभी प्रतिभागियों तथा संकाय सदस्यों का स्वागत तथा अभिनन्दन करते हुए अपने संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम की प्रस्तावना वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा आपने 30 दिवसीय अनुप्रेरण कार्यक्रम में तैतरीय उपनिषद् का उद्धरण देते हुए प्रतिभागियों से आग्रह किया कि जो कुछ भी अनुकरणीय है उसे ही आप ग्रहण कर अपने विद्यार्थियों को बताएं। इसके बाद डॉ. शिरीष पाल सिंह जी ने संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अभी तक लगभग 41 बाह्य विशेषज्ञों के द्वारा इस कार्यक्रम में व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। लगभग 14 राज्यों के प्रतिभागियों ने इस संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इसके बाद प्रतिभागी

गणपति कुमार, विनोद विनायक, भारती, नरेन्द्र दुबे और डॉ. प्रवीन चौधरी ने अपने इस संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के अनुभवों और प्रतिक्रियाओं को साझा किया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में कार्यक्रम के संचालक महोदय ने इस कार्यक्रम में उपस्थित कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के.के. सिंह को वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया। प्रो. सिंह ने अपने वक्तव्य में बताया कि सफलता और सार्थकता का अंतर स्पष्ट करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के वक्तव्य का उदाहरण देते हुए बताया कि उन्होंने शिक्षा देने को सबसे उत्तम कार्य बताया। ज्ञान दान दुनिया की सबसे पवित्र चीज है। ज्ञान यदि कर्म के साथ समन्वित होकर चले तो वह एक बड़ी पूँजी बनकर निकलती है। उन्होंने जयशंकर प्रसाद के एक कविता का उदाहरण देते हुए अपने वक्तव्य को समाप्त किया-

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके यह बिडम्बना है जीवन की।
हम सभी शिक्षक है शिक्षा व्यवसाय नहीं है। यह एक मिशन है।
चिंतन कर यह जान तेरी कि क्षण-क्षण की चिंता से
दूर दूर तक के भविष्य में मनुष्य जन्म लेता है।
आगामी युग के कामों में ध्वनियाँ पहुँच रहा है।

प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने मंच के माध्यम से अपने प्रिय कवि कालिदास द्वारा शिक्षक की परिभाषा देते हुए अपना वक्तव्य शुरु किया।

''श्लिष्टाक्रिया कस्यचिदात्मसंस्था
संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां
धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव।।''

अर्थात् गुरू वही है, जो ज्ञानी भी हो और अपने ज्ञान को दूसरों में संक्रमण अर्थात् संप्रेषण करने में सक्षम भी हो। श्री शर्मा ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए मुख्यत: तीन बातें बताई प्रथम, जिसमें हमें अपनी संप्रेषण क्षमता निरंतर बढ़ाना चाहिए; दूसरा, हमें निरंतर अद्यतन करते रहना चाहिए और तीसरी बात यह है कि हमें स्वयं पर या स्वयं के सामर्थ्य पर विश्वास करना चाहिए। उन्होंने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के तीन बातों का उल्लेख किया कि ''डरना किसी से नहीं, देव से नहीं, दानव से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, तंत्र से भी नहीं और गुरु से भी नहीं।'' अध्यापक को ऐसा होना चाहिए।

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में तैतरीय उपनिषद के शिक्षा वल्ली के संदर्भ को देते हुए कहा कि आचार्य जब सारे उपदेश को देने के बाद कुछ पक्ष

परहेज की चर्चा करते हुए कहता है कि जब आप अपने साधना क्षेत्र या कार्यक्षेत्र में जाते हैं तो वहाँ क्या करेंगे? वहाँ अनुच्छकेम ब्राह्मण की तरह कार्य करना चाहिए। उन्होंने नरोत्तम दास के पंक्ति का उल्लेख करते हुए शिक्षक के संदर्भ में कहा कि

"सिच्छक हौं सिगरे जग को,
तिय ! ताको कहा अब देति है सिच्छा।
जे तप कै परलोक सुधारत,
सम्पति की तिनके नहीं इच्छा।।"

आचार्य कहता है कि जो आपका शुद्ध अंत:करण कहेगा वहीं कार्य करना। हमारा अंत:करण चेतन हो। शिक्षा मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया शिक्षक आधारित प्रक्रिया है। ज्ञान प्रकाश की निरंतर प्रकिया है। शिक्षा प्रकाशित होने और प्रकाशित करने की निरंतर प्रक्रिया है। अंत में प्रो. शुक्ल ने सभी प्रतिभागियों को कार्यक्षेत्र में उन्नति करें इस सुभाषित के साथ अपने वक्तव्य को समाप्त किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. शेष कुमार शर्मा के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

12. भाषा, पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (Language, Curriculum and National Education Policy) (25-26 जून, 2019)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ में पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन के अंतर्गत "**भाषा, पाठ्यचर्या एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति**" विषय पर दिनांक : 25-26 जून, 2019 के बीच दो दिवसीय राष्ट्रीय संवाद का आयोजन किया गया।

दिनांक : 25-06-2019

प्रथम सत्र

इस राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रथम सत्र का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, बाह्य विषय विशेषज्ञ के रूप में पधारे प्रो. आर.पी. शुक्ल, अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी; श्री सुंदरम पार्थसारथी, अध्यक्ष, शिक्षा परिषद, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास; प्रो. संतोष शुक्ल, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली; प्रो. के.के. सिंह, कार्यकारी कुलसचिव, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; इस राष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह, सह-प्रोफेसर शिक्षा विभाग एवं विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग एवं प्रबंधन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एवं विभिन्न विभाग के अन्य प्राध्यापकों ने दीप प्रज्ज्वलन में हिस्सा लिया। इसके पश्चात विश्वविद्यालय के कुलगीत का गान हुआ जिससे पूरे वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हुआ। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो.

रजनीश कुमार शुक्ल के द्वारा अतिथि विषय विशेषज्ञों का स्वागत अंगवस्त्र, सूतमाला एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. शिल्पी कुमारी ने किया।

माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल एवं मुख्य अतिथि प्रो. आर.पी. शुक्ल, प्रो. संतोष शुक्ल तथा उपस्थित अन्य अतिथिगण।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर के स्वागत वक्तव्य से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। डॉ. ठाकुर ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं संकल्पना को स्पष्ट करते हुए बताया कि माननीय कुलपति महोदय के सुझाव से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के मसौदे पर चर्चा करने हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। तत्पश्चात डॉ. ठाकुर ने भतृहरि के वाक्यपदीय में दिए गए "वाणी का अगर भाषिक रूप न हो तो मनुष्य की चेतना भी पूर्ण विकसित नहीं हो पाती है।" इस कथन का उल्लेख करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 में भाषा को लेकर कई बातों का उल्लेख किया। आपने बताया कि भारत में 1800 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषा हमारी संस्कृति को भी धारण करती है। डॉ. ठाकुर ने शिक्षा की भाषा पर चर्चा करते हुए मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया। भाषा सदैव मनुष्य को जोड़ती है पर राजनीति उन्हें तोड़ती है। भाषा का कार्य सदैव माधुर्य उत्पन्न करना है, कटाक्ष करना नहीं। शिक्षा जैविक व्यक्ति को सांस्कृतिक व्यक्ति में बदलने का कार्य है। राष्ट्रीय एकता को संवर्धित करने के लिए किस भाषा का प्रयोग करें, इस पर विचार करने का आग्रह किया। विश्व की महाशक्तियों की भाषा अंग्रेजी नहीं है। उन्होंने विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में कार्य करने के लिए अपनी ही भाषा का प्रयोग किया है। इसलिए अंग्रेजी को एक सहायक भाषा के रूप में रखा जाए।

इसके पश्चात विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के.के. सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को देश के पैमाने पर होना आवश्यक है। हमारे देश में इसकी कमी रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 इस कमी को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगी। प्रो. सिंह ने कहा कि जो बच्चे विदेशी भाषा में शिक्षा ग्रहण करते हैं वे एक गुलाम की भांति नज़र आते हैं, उनके चेहरे पर प्रफुल्लता नहीं होती है।

हमें अंग्रेजी से नहीं अपितु उससे जुड़ी अंग्रेजीयत से खतरा है। उन्होंने रीतिकाल की एक कविता के माध्यम से समझाया कि हमारे देश से अंग्रेज चले तो गए पर अंग्रेजीयत नहीं निकली। आज की भ्रष्ट राजनीति के कारण अंग्रेजी का आंतक नहीं मिट पा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के इस प्रारूप में बहुत-सी समस्याओं पर बात की गई है। उन्होंने 7 जून, 2019 को 'द हिंदू' नामक समाचार पत्र में प्रकाशित जी.एन. देवी के एक लेख का संदर्भ देते हुए कहा कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने में अंग्रेजीयत मानसिकता के लोगों को परेशानी होती है। हिंदी माध्यम की मीडिया में भी इस बात को लेकर कोई ठोस प्रतिरोध दिखाई नहीं देता है। उन्होंने प्रसिद्ध कवि दिनकर जी की एक कविता के द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि हमारे आज के चिंतन से ही भविष्य का निर्माण संभव है। प्रो. सिंह ने गोष्ठी की सफलता के लिए शुभकामनाएँ भी दी।

इसके पश्चात अतिथि विद्वान के रूप में पधारे दक्षिण भारतीय भाषा प्रचार समिति, चेन्नई के अध्यक्ष श्री सुंदरम पार्थसारथी ने कहा कि महात्मा गांधी की भाषा नीति को अपनाकर ही समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। उन्होंने प्रांतीय भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन सहज रूप से करने की बात कही। इसमें किसी भी प्रकार का दबाव नहीं होना चाहिए। सहज स्वीकृति से ही भाषा का विकास संभव है। दक्षिण भारतीय लोगों को प्रांतीय भाषा से समस्या नहीं है, राजभाषा से है। त्रिभाषा सूत्र के अनुसार तृतीय भाषा के रूप में हिंदी को काफी हद तक लागू किया गया है। बी.एड. एवं एम.एड. के चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रमों के साथ इनके दो वर्षीय पाठ्यक्रम भी पूर्ववत चलने चाहिए। आज स्मार्ट तकनीकी के कारण लिखने की प्रथा समाप्त हो रही है तथा बच्चे रटंत विद्या में माहिर हो रहे हैं। हमारी भाषाओं में व्याकरणिक नियमों की संख्या अधिक होने के कारण बच्चे विदेशी भाषाओं की ओर अग्रसर हो रहे हैं। बच्चे विदेशी भाषाओं में अधिक अंक प्राप्त कर नौकरी प्राप्त करने के लिए भी विदेशी भाषाओं की ओर और अधिक आकर्षित हो रहे हैं। अपने देश के कुछ ही राज्यों में हिंदी की अवहेलना हो रही है अन्यथा अन्य राज्यों में हिंदी का बोलबाला है। श्री सुंदरम पार्थसारथी ने कहा कि हिंदी के उज्जवल भविष्य के लिए उसकी वर्तमान स्थिति पर ध्यान देकर विकास करने की आवश्यकता है।

इसके पश्चात जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली से पधारे अतिथि विद्वान प्रो. संतोष शुक्ल ने देश में शिक्षा नीति को लेकर पूर्व में गठित विभिन्न समितियों का उल्लेख किया। प्रो. संतोष शुक्ल ने बताया कि काशी में अंग्रेजों द्वारा स्कूल का निर्माण किया गया तथा भाषिक संस्कार को जोड़ने के लिए अनुवाद का कार्य प्रारंभ किया गया। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 में अनुवाद शिक्षा पर भी बात की। भारतीय भाषाओं में शिक्षा व्यवस्था की शुरुआत हुई। उन्होंने बताया कि संघ की राजभाषा क्या हो, इस बात को लेकर हमेशा विवाद होता है। अंग्रेजी आज भी संघ की राजभाषा के रूप में काबिज है। प्रो. संतोष शुक्ल ने कहा कि क्या हम विदेशी विद्वानों के सिद्धांतों का अनुवाद कर अध्यापन करेंगे या हिंदी या अन्य प्रांतीय भाषाओं के विद्वानों के चिंतन को भी अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र में स्थान देंगे। अपने संबोधन के अंत में प्रो. संतोष शुक्ल ने कहा कि आप जिस भाषा में स्वप्न देखते हैं वही आपकी भाषा है और आपको उसी भाषा में कार्य करना चाहिए।

इसके पश्चात शिक्षा संकाय, बी.एच.यू. से आए अतिथि विद्वान प्रो. आर.पी. शुक्ल ने कहा कि हमारे देश में सिर्फ हिंदी बोलने से ही आपका काम नहीं चल सकता। प्रो. आर.पी. शुक्ल ने कहा कि भाषा मूर्त को अमूर्त से जोड़ती है। देश में किसी एक भाषा का संपर्क भाषा के रूप में पूर्ण रूप से स्थापित होना बहुत आवश्यक हो गया है। जब आदिवासी समुदायों (Tribal) को संपर्क भाषा की आवश्यकता थी तो हमने हिंदी को उनके संपर्क भाषा के रूप में स्थापित नहीं किया। इसी कारण से अंग्रेजी उनकी अपनी भाषा हो गई। त्रिभाषा सूत्र में अंग्रेजी के बजाय हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में लाने की आवश्यकता है। पाँचवी कक्षा तक मातृभाषा का प्रयोग होना चाहिए जिसमें तीसरी कक्षा तक संवाद के रूप में तथा पाँचवी कक्षा तक एक विषय के रूप में मातृभाषा का प्रयोग होना चाहिए। माध्यमिक स्तर से ऊपर की कक्षाओं में हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। उन्होंने शिक्षित लोगों से हिंदी में किताबें लिखने का अनुरोध किया। आज देश की 57.10 प्रतिशत जनसंख्या हिंदी भाषी है। कोई बच्चा यदि अंग्रेजी का प्रयोग करे तो उसकी अवधारणा (Concept) स्पष्ट होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि चुनौतियों को अवसर में किस प्रकार परिवर्तित किया जाए, इस पर ध्यान देने की जरूरत है। प्रो. आर.पी. शुक्ल ने भारतीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण पर बल देते हुए कहा कि देश की पहचान के लिए हिंदी का ऊपर आना जरूरी है। भाषा के संबंध में दोहरापन (Dual) नहीं होना चाहिए। भाषा का संबंध संस्कृति से है।

इसके पश्चात इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के प्रारूप पर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही उन्होंने 'पाठ्यचर्या में भाषा एवं पाठ्यचर्या की भाषा' के बारे में भी बात की। उन्होंने त्रिभाषा सूत्र पर भी अपने विचार व्यक्त किए। सन् 1835 के मैकाले की शिक्षा नीति के बारे में बताते हुए प्रो. शुक्ल ने कहा कि शिक्षा नीति में भाषा का प्रयोग शासन की नीति से जोड़ने की बात है। इस मानसून सत्र से राज्यसभा में भारत की आधिकारिक सभी 22 भाषाओं में कार्य करने की सुविधा प्रारंभ हो गई है, प्रो. शुक्ल ने इस बात की भी जानकारी दी। यह भारतीय स्वभाव में परिवर्तन का द्योतक है। शपथ ग्रहण समारोह में अंग्रेजी का व्यवहार अंग्रेजी के प्रति मोह नहीं है बल्कि हिंदी का विरोध है। त्रिभाषा सूत्र को हृदय से स्वीकार कर जन-स्वीकृति मिलने से ही हिंदी का विकास संभव है। जिस भाषा में जीवन निर्वहन के लिए आवश्यक चीजें न मिले वह भाषा बहुत ही जल्दी समाप्त हो जाएगी। हम अपनी भाषा में ही अपना श्रेष्ठतम कार्य कर सकते हैं। जम्मू-कश्मीर की राजभाषा उर्दू बनी पर उसका विरोध नहीं होता है अपितु हिंदी का विरोध होता है। उर्दू बाजार के विनिमय की भाषा थी। दुनिया उसी का सम्मान करती है जो अपनी भाषा में कार्य करते हैं। भाषा के प्रति गौरव होना आवश्यक है। सिद्धांत एवं व्यवहार का द्वैत समाप्त होना आवश्यक है। अपने वक्तव्य के अंत में माननीय कुलपति महोदय ने कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ भी दी।

प्रथम दिवस के उद्घाटन सत्र के अंत में शिक्षा विद्यापीठ के सह-प्रोफेसर एवं इस कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

द्वितीय सत्र

इस राष्ट्रीय संवाद के प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री सुंदरम पार्थसारथी तथा सह-अध्यक्षता डॉ. उज्जवला चक्रदेव ने की। मंच पर अतिथि विद्वान के रूप में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नागपुर से पधारे प्रो. योगेश देशपांडे भी उपस्थित थे।

इस सत्र में निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार विमर्श किया गया :

1. पाठ्यचर्या में भाषा एवं पाठ्यचर्या की भाषा
2. मातृभाषा / स्थानीय भाषा में शिक्षा, बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति

इस सत्र में समस्त प्रतिभागियों ने उक्त बिंदुओं के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान प्रतिभागियों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 के बारे में अतिथि विद्वानों से कई प्रश्न भी पूछे। अतिथि विद्वानों ने प्रतिभागियों के प्रश्न का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया।

श्री पार्थसारथी ने राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) की भाँति शिक्षक चयन हेतु बार-बार परीक्षा न लेकर केवल एक बार ही शिक्षक पात्रता परीक्षा (CTET एवं TET) ली जाए एवं साक्षात्कार की प्रक्रिया को समाप्त किया जाए। इसके साथ ही साथ उन्होंने परिवीक्षा अवधि (Probation Period) को 3 वर्ष से 1 वर्ष करने का सुझाव भी दिया।

डॉ. उज्जवला चक्रदेव ने शिक्षा में पुस्तकों की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र भले ही कितनी ही स्मार्ट तकनीकी विकसित हो जाए पर पुस्तकों की आवश्यकता एवं उपयोगिता सदैव बनी रहेगी। उन्होंने मातृभाषा में पढ़ाई के शुरूआत की बात की।

प्रो. योगेश देशपांडे ने विभिन्न कार्यों में अपनी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने की बात कही। उन्होंने हिंदी भाषा के विकास एवं संवर्धन हेतु हिंदी भाषा के ब्लॉग्स को पढ़ने की आदत पर बल दिया। प्रो. देशपांडे ने हिंदी के विस्तार हेतु सोशल मीडिया जैसे कि-फेसबुक, ह्वाट्सअप, ट्वीटर आदि पर हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग की बात की।

तृतीय सत्र

इस राष्ट्रीय संवाद के प्रथम दिवस के तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर.पी. शुक्ल ने की। इस सत्र में मंच पर शिक्षा विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. सुहासिनी बाजपेयी एवं डॉ. सरिता चौधरी उपस्थित थीं।

इस सत्र में निम्न बिंदुओं पर विमर्श किया गया :

1. विद्यालयों में त्रिभाषा सूत्र की निरंतरता एवं सार्थक क्रियान्वयन
2. विद्यालय स्तर पर भाषा के चयन में लचीलापन

इस सत्र में भी समस्त प्रतिभागियों ने उक्त बिंदुओं के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान प्रतिभागियों ने उक्त बिंदुओं के बारे में मंच पर उपस्थित विद्वानों से कई प्रश्न भी पूछे जिनका उन्होंने उत्तर देकर प्रतिभागियों की जिज्ञासा को शांत किया। शिक्षा विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. सुहासिनी बाजपेयी एवं डॉ. सरिता चौधरी ने भी शिक्षा में होने वाली भाषायी समस्याओं के बारे में अपने अनुभव एवं विचार प्रस्तुत किए।

प्रथम दिवस के तृतीय एवं अंतिम सत्र के अंत में शिक्षा विद्यापीठ के सह-प्रोफेसर एवं इस कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इसके पश्चात शिक्षा विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. शिल्पी कुमारी ने कार्यक्रम के प्रथम दिवस के समापन की औपचारिक घोषणा की।

दिनांक : 26-06-2019

प्रथम सत्र

इस राष्ट्रीय संवाद के दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. संतोष शुक्ल एवं सह-अध्यक्षता श्री सुंदरम पार्थसारथी ने की। सत्र के प्रारंभ में कार्यक्रम के आयोजन सचिव एवं शिक्षा विद्यापीठ के सह-प्रोफेसर डॉ. शिरीष पाल सिंह ने प्रतिभागियों को कार्यक्रम से जुड़े कुछ दिशा-निर्देश दिए। निम्न बिंदुओं पर विमर्श करने के उद्देश्य से यह सत्र आयोजित किया गया था :

1. माध्यमिक विद्यालयी स्तर पर विदेशी भाषा शिक्षण की संभावना
2. भाषा शिक्षण-अधिगम की पद्धति

प्रो. संतोष शुक्ल ने सर्वप्रथम विषय का परिचय देते हुए इसकी महत्ता एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। प्रो. शुक्ल ने आधुनिक एवं शास्त्रीय भाषाओं के बीच के अंतर को रेखांकित किया। विज्ञान के विषयों हेतु विभिन्न भाषाओं की आवश्यकता क्यों है, इस पर चर्चा की।

मुख्य अतिथि प्रो. संतोष शुक्ल अपने व्याख्यान देते हुए।

द्वितीय सत्र

इस राष्ट्रीय संवाद के दूसरे दिन के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर. एस. सर्राजू ने की। इस सत्र में मंच पर अतिथि विद्वान के रूप में श्री सुंदरम पार्थसारथी, प्रो. सतोष शुक्ल, प्रो. दीपा सिकंद एवं प्रो. अमित कौट्स भी उपस्थित थे। पंचम सत्र का प्रारंभ सत्र की अध्यक्षता कर रहे डॉ. आर.एस. सर्राजू के अतिथि सत्कार से हुआ। अतिथि सत्कार शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने सूतमाला, अंगवस्त्र और स्मृति चिह्न देकर किया। श्री धर्मेंद्र शंभरकर द्वारा प्रो. अमित कौट्स का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर किया गया। इसी क्रम मेंप्रो. दीपा सिकंद का स्वागत डॉ. स्नेह सुधा द्वारा सूतमाला, अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर किया गया।

इस सत्र में निम्न बिंदुओं पर विमर्श किया गया :

1. आधुनिक एवं शास्त्रीय भारतीय भाषा एवं साहित्य शिक्षण
2. विज्ञान को दो भाषाओं में सीखना

प्रो. आर.एस. सर्राजू ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि ये मसौदा केवल दिशा-निर्देश के लिए है क्रियान्वयन के लिए नहीं। यह वैश्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। संपर्क, सेवा एवं शिक्षण हेतु भाषा की आवश्यकता होती है।

श्री सुंदरम पार्थसारथी ने कहा कि भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत है। देश प्रेम हेतु हिंदी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। शिक्षक पात्रता परीक्षा की अनिवार्यता को निजी विद्यालयों से हटाया जाना चाहिए।

मुख्य अतिथि श्री सुंदरम पार्थसारथी अपना वक्तव्य देते हुए।

तृतीय एवं समापन सत्र

इस राष्ट्रीय संवाद कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 से संबंधित विशेषज्ञों के सुझाव:-

1. पाठ्यचर्या की भाषा भारतीय भाषा होनी चाहिए।
2. पाठ्यचर्या मौलिक रूप से भारतीय भाषा में लिखी जानी चाहिए।
3. भारतीय आधुनिक या शास्त्रीय भाषाएँ भाषिक भाषा के रूप में पढ़ायी जानी चाहिए।
4. हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में विकसित करने के लिए पूर्ण योजना तैयार होनी चाहिए।
5. विज्ञान को हिंदी में मौलिक रूप से लिखा जाना चाहिए।
6. त्रिभाषा नीति में केवल भारतीय भाषा होनी चाहिए।
7. विदेशी भाषा को 'समर स्कूल' या 'विंटर स्कूल' में पढ़ाया जाए।
8. प्रत्येक विद्यार्थी को माध्यमिक स्तर तक पहुँचते-पहुँचते पाँच भाषाओं का ज्ञान हो जाए। ऐसी प्रणाली विकसित की जानी चाहिए।
9. आधुनिक एवं शास्त्रीय भाषाओं की लिपियों, पांडुलिपियों एवं ज्ञान-परंपरा को सुरक्षित करने के लिए अलग से धन की व्यवस्था होनी चाहिए।
10. UGC NET की तरह ही CTET एवं TET की वैधता आजीवन होना चाहिए।
11. TET को आप कठिन स्तर का बनायें पर बार-बार उत्तीर्ण होने की वैधता रद्द होनी चाहिए।
12. TET के बाद सुपर TET में 14 विषयों को लेकर परीक्षा ली जा रही है जिससे NTA देने की आवश्यकता क्या है, इस पर विचार किया जाए।
13. तीन वर्ष की परिवीक्षा अवधि को एक वर्ष किया जाना चाहिए।
14. भारतीय भाषाओं की जननी भारतीय संस्कृति, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान आध्यात्म की भाषा को पुनर्जीवित रखने में सक्षम हो।
15. संविधान निर्माताओं द्वारा निर्मित संविधान में अनुच्छेद 343 एवं 351 पर पुनर्विचार कर शत-प्रतिशत अनुपालन करने से समस्या का समाधान मिल सकता है।
16. विद्यालयी पाठ्यक्रम में भाषा-शिक्षण के अंतर्गत भाषा प्रौद्योगिकी को सम्मिलित करना आनेवाली पीढ़ियों के लिए फलदायक होगा।
17. त्रिभाषा सूत्र का पालन अनिवार्य रूप से होना चाहिए।
18. भारतवासी अपनी भाषाओं की लिपियों में टाइप करने की आदत को अपनाएँ। इसके लिए वैज्ञानिक उपकरणों अथवा टूल्स का अभ्यास किया जाना चाहिए। इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा में आवश्यक सुधार होना चाहिए।
19. प्रौद्योगिकी विकास की निरंतरता में भारतीय भाषाओं का समावेश बलवर्धक सिद्ध हो सकता है।
20. बदलते परिप्रेक्ष्य के आधार पर पाठ्यक्रम अति आधुनिक प्रयोजनमूलक एवं व्यावसायिक होना चाहिए।

21. बी.एड. एवं एम.एड. के चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रमों के साथ इनके दो वर्षीय पाठ्यक्रम भी पूर्ववत चलने चाहिए। इससे विद्यार्थी स्वयं की सुविधा के अनुसार पाठ्यक्रम का चयन कर अपने भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।
22. त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत मातृभाषा, राष्ट्रभाषा तथा अंतरराष्ट्रीय को रखा जाना चाहिए।
23. समाज की संस्कृति के साथ भाषा की शिक्षा की व्याख्या के लिए गहन प्रयास करने होंगे।
24. प्रयोजनमूलक या प्रकार्यात्मक भाषा (Functional Language) के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
25. एक प्रभावशाली अनुवाद प्रणाली होनी चाहिए जो विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान की विषय वस्तुओं का गुणवत्तापूर्ण अनुवाद कर सके।
26. लिखित परीक्षा के स्थान पर बोलने, लिखने एवं और प्रभावी श्रवण कौशल को विकसित करने की आवश्यकता है।
27. हिंदी को एक राष्ट्रभाषा के रूप में राष्ट्र एवं राष्ट्र के लोगों को जोड़ने के रूप में प्रचारित किया जाना चाहिए।
28. स्थानीय भाषाओं में पारिभाषिक शब्दावलियों का विकास किया जाना चाहिए।
29. स्थानीय भाषाओं के संरक्षण हेतु सरकार को प्रतिबद्धता दिखानी होगी।
30. त्रिभाषा सूत्र को प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में अपनाना होगा।
31. कक्षा 3 तक संवाद के रूप में तथा कक्षा 5 तक विषय के रूप में मातृभाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए।
32. माध्यमिक स्तर या इससे आगे के स्तर के लिए पाठ्यचर्या का विकास हिंदी भाषा में किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019 से संबंधित प्रतिभागियों के सुझाव:-

1. राष्ट्र के सभी राज्यों में पाठ्यक्रम का स्तर, मूल्यांकन पद्धति एक होनी चाहिए।
2. प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम आवश्यक रूप से मातृभाषा होना चाहिए। क्योंकि केवल मातृभाषा में ही बच्चा किसी भी concept को सहज रूप से सीख सकता है।
3. त्रिभाषा सूत्र में अंग्रेजी के बजाय हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में लाने की आवश्यकता है।
4. चूंकि देश की 57.10 % जनसंख्या हिंदीभाषी है। अत: हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए।
5. अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा है और विश्व से जुड़े रहने के लिए अंग्रेजी की अनिवार्यता आवश्यकता है। अत: अंग्रेजी को प्राथमिक स्तर पर संवाद के रूप में प्रयोग किया जाए तथा माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर एक विषय के रूप में पढ़ाया जाए।
6. कार्यरत अध्यापकों को विशेष भाषायी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
7. प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में स्थानीय शिक्षकों की ही नियुक्ति की जानी चाहिए क्योंकि अन्य क्षेत्रों के शिक्षकों के उच्चारण की शैली अलग होती है।

8. शिक्षा नीति के निर्माण में स्थानीय समस्याओं का अध्ययन भी आवश्यक है। इसके लिए पर्याप्त अवसंरचनाओं (Infrastructure) का होना भी जरूरी है।
9. विज्ञान विषय को स्थानीय/मातृभाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी में सिखाने का विकल्प भी उपलब्ध हो।
10. शिक्षा में सरल हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए।
11. हिंदीभाषी बच्चों को तृतीय भाषा के रूप में वह भाषाएँ सिखाई जाए जो समीपवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती हैं। जैसे- मध्यप्रदेश के उन क्षेत्र के बच्चों को जो महाराष्ट्र की सीमा के निकट निवास करते हैं, मराठी सिखाई जाए।

13. शिक्षण कौशल कार्यशाला (Workshop on Teaching Skills) दिनांक (1-15 जुलाई , 2019)

दिनांक : 01-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ द्वारा पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन के अंतर्गत "**शिक्षण कौशल कार्यशाला**" विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 01-15 जुलाई, 2019 तक किया गया। कार्यक्रम का संचालन कर रही श्रीमती शिल्पी कुमारी (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा) ने सर्वप्रथम मंचस्थ अतिथियों को दीप प्रज्ज्वलन के लिए आमंत्रित किया। मंचस्थ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। तत्पश्चात मंच संचालक के द्वारा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** को मुख्य अतिथि का स्वागत करने हेतु आमंत्रित किया गया। डॉ. ठाकुर ने आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **प्रो. कौशल किशोर** (दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार) का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया। तत्पश्चात डॉ. सुहासिनी वाजपेयी (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग) ने प्रो. अंजली वाजपेयी (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी) का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया। इसके बाद मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. शिरीष पाल सिंह ने शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर का स्वागत सूतमाला से किया, इसके उपरांत श्री धर्मेन्द्र शंभरकर ने डॉ. शिरीष पाल सिंह का स्वागत सूतमाला से किया।

तत्पश्चात कार्यक्रम के संचालक ने विभाग के विभागाध्यक्ष एवं इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर को बीज वक्तब्य के लिए मंच पर आमंत्रित किया। डॉ. ठाकुर ने अपने वक्तव्य में विद्यार्थियों को समय की कीमत एवं शिक्षक के दायित्व से परिचित करवाया और कहा कि समय बहुत मूल्यवान है, जो समय बीत जाता है वह जिंदगी में दोबारा नहीं आता। अत: हमें समय की कीमत समझना चाहिए। इस प्रकार डॉ. ठाकुर ने सभी विद्यार्थियों को अपने बीज वक्तव्य से लाभान्वित किया। कार्यक्रम के सह-समन्वयक श्री धर्मेन्द्र नारायण शंभरकर (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय

हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा) के द्वारा आए हुए अतिथि विषय विशेषज्ञों का धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस सत्र का समापन किया गया।

तृतीय सत्र

विषय विशेषज्ञ : प्रो. कौशल किशोर, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

विषय : शिक्षण कौशल

इस सत्र में प्रो. कौशल किशोर ने अपने वक्तव्य में '**सूक्ष्म शिक्षण क्या है**'? इस विषय पर चर्चा की तथा कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्यार्थियों और शोधार्थियों के समक्ष अपनी अकादमिक उपलब्धि का परिचय न देते हुए सीधे अपने विषय 'शिक्षण कौशल' पर चर्चा प्रारंभ की जिसमें उन्होंने शिक्षण कौशल क्या है, शिक्षण कौशल क्यों आवश्यक है आदि पर आपने विस्तृत व्याख्यान दी और अपने वाचन से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया।

चतुर्थ सत्र

विषय विशेषज्ञ : डॉ. अंजली वाजपेयी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

विषय : प्रस्तावना कौशल

इस सत्र में कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि डॉ. अंजली वाजपेयी (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी) ने 'प्रस्तावना कौशल' विषय पर चर्चा की। महोदया ने विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान को कैसे एक शिक्षक के रूप में जाने यह भी बताया गया और विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान में हम किन-किन वस्तुओं का इस्तेमाल करते थे, सारे घटक विद्यार्थियों के साथ साझा की। कैसे चित्रों के माध्यम से प्रश्नों और कोई वास्तविक वस्तु का प्रदर्शन करें इस संबंध में बताया तथा तीन कॉलम के माध्यम से (छात्राध्यापक/ क्रिया/विद्यार्थी अनुक्रिया) पर अपने कौशल का लेखन करना सिखाया।

दिनांक : 02-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

विषय विशेषज्ञ : प्रो. प्रदीप कुमार मिश्रा, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, गुजरात

मंच संचालक : श्रीमती शिल्पी कुमारी

आज के इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. प्रदीप कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,गुजरात) उपस्थित थे। सर्वप्रथम मंचस्थ विषय विशेषज्ञ का स्वागत शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर द्वारा किया गया। प्रो. प्रदीप कुमार मिश्रा ने अपने व्याख्यान में कहा कि वह ऊर्जावान शिक्षक के वक्तव्य हमेशा अनुकरणीय रहेगा जो हमारे स्मृति पटल पर चित्रित हो गया है तथा महोदय ने विद्यार्थियों को कक्षा में खोपड़ी सिस्टम से हटा कर फेश सिस्टम से पाँच – पाँच के ग्रुप में बैठाया और विद्यार्थियों, शोधार्थियों से अपना परिचय देने को कहा, तत्पश्चात महोदय ने सभी ग्रुप से अंत: क्रिया के साथ समूह चर्चा की

और बताया कि पहले एक शिक्षक को याद कर उनकी कौन-सी ऐसी बात है जो आपको अभी तक याद है बताने के लिए कहा और इस पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर श्रीमती शिल्पी कुमारी द्वारा किया गया। जिसमें शिक्षा विभाग के सभी संकाय सदस्य एवं प्रतिभागी मौजूद थे।

प्रो. प्रदीप कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,गुजरात)

दिनांक : 03-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

विषय विशेषज्ञ : डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव, शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय, कोलकाता)

विषय : प्रश्न कौशल

आज के सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव (शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय, कोलकाता) उपस्थित थे। उन्होंने अपने विषय 'प्रश्न कौशल' में कुशलतापूर्वक सभी घटकों का वर्णन किया और शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका के परिवर्तन की बात की और कहा कि प्रश्न पूछने पर शिक्षण प्रभावी और बेहतर होता है।

डॉ. आशीष कुमार श्रीवास्तव, शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय, कोलकाता

दिनांक : 05-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

विषय विशेषज्ञ : डॉ. दिनेश चहल, सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा

विषय : उद्दीपन परिवर्तन कौशल

आज के सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. दिनेश चहल सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा ने अपने विषय 'उद्दीपन परिवर्तन कौशल' पर चर्चा की तथा यह विचार हम सभी प्रशिक्षु अध्यापकगण के मध्य रखा कि शिक्षण की सफलता का एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि शिक्षक छात्रों के ध्यान को आकर्षित करें और पाठ्यवस्तु पर केंद्रित करवाए जब कभी भी वे शिक्षण कार्य करें तो अपना हाव भाव विषय के साथ वस्तु के स्वरूप परिवर्तित करते रहे। वह जो भी बोले उसे लिखे, कुछ प्रश्न पूछे तो विद्यार्थी के पास चलकर जाए तथा पहाड़ा पढ़ाते समय हाथों को फैलाते हुए इशारा करें कि वह कितना बड़ा या छोटा है। एक दो तीन की विशेषता को अंगुली से समझाते हुए आगे पाठ की गति को बनाए रखे। इस प्रकार उन्होंने निम्नलिखित प्रमुख शिक्षण बिंदु को समझाया :-

1. संचालन
2. हावभाव इंगित करना
3. वाक परिवर्तन
4. केंद्रण
5. अंतर क्रिया शैली परिवर्तन
6. विराम
7. मौखिक दृश्य बदलाव

इसके पश्चात उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों की समझ को विकसित करने के लिए उनके ज्ञान के स्तर की सोच विकसित करनी पड़ती है। सभी कक्षा के विद्यार्थियों को अपने शिक्षण कौशल से प्रभावी बनाने के लिए एक रोचक प्रयास हर समय करते रहना चाहिए। हम जो कुछ भी पढ़ा रहे हैं उसका चित्र प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को लाभान्वित कर पाए हमारा ऐसा प्रयास होना चाहिए। जब भी कभी विद्यार्थी प्रश्न पूछे तो उसका उत्तर अवश्य दे, ताकि वह कुछ नया सोच पाए। हमें एक जगह पर स्थित न रहकर, गतिवान बने रहना चाहिए। इस प्रकार व्याख्या प्रस्तुत कर लेने के पश्चात आपने विद्यार्थियों को कक्षा कार्य करने के लिए दिया जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का समापन डॉ. दिनेश चहल के आभार व्यक्त के साथ हुआ।

दिनांक : 09-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

विषय : सूक्ष्म शिक्षण अधिगम का विकास

प्रथम सत्र का प्रारंभ 'सूक्ष्म शिक्षण अधिगम का विकास' विषय पर विद्यार्थी पुनीत के द्वारा 'भोजन के स्रोत', कविता के द्वारा 'वह चिड़िया जो', लिखिता के द्वारा '1857 का स्वतंत्रता संग्राम', अभय के द्वारा 'लाभ-हानि', संदीप के द्वारा 'बाबा भारती', चमनलाल के द्वारा 'हम पंक्षी उन्मुक्त गगन के' और गजेन्द्र के द्वारा 'सरकार के स्तर' आदि विषय पर शिक्षण का अभ्यास किया गया। शिक्षण कौशल के अंतर्गत प्रश्न कौशल के विभिन्न बिंदुओं अनुबोध क्रिया, अधिक सूचना प्राप्ति प्रविधि, पुन:केन्द्रण प्रविधि, पुन:निर्देशन प्रविधि, समीक्षात्मक अभिज्ञान, बुद्धि प्रविधि आदि पर अभ्यास किया गया। अवलोकनकर्ता अमितरत्न, समीमा, अनुजा, अतुल खेश, रागिनी, ज्योति, एकता, संजय और डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा सभी छात्राध्यापकों के अध्यापन का अवलोकन किया गया। और बहुत से सुझाव दिए गए।

अवलोकनकर्ता के प्राप्त सुझाव के आधार पर डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा निर्देश दिया गया कि आप लोग कल इसी विषय पर, जो आज के अभ्यास के दौरान त्रुटियाँ हुई है उसको सुधार कर नई पाठयोजना का निर्माण करके शिक्षण कार्य करेंगे। इस दिशा निर्देश के साथ आज के प्रथम सत्र के समापन की घोषणा की गई।

तृतीय सत्र

विषय विशेषज्ञ : डॉ. माधुरी हुड्डा, शिक्षा विद्यापीठ,हरियाणा विश्वविद्यालय,

विषय : श्यामपट्ट कौशल

संचालक : श्रीमती शिल्पी कुमारी

आज के सत्र का संचालन कर रही श्रीमती शिल्पी कुमारी (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा) ने सर्वप्रथम अतिथि विषय विशेषज्ञ का संक्षिप्त परिचय देते हुए स्वागत के लिए डॉ. सुहासिनी वाजपेयी (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा) को आमंत्रित किया। डॉ. बाजपेयी ने अतिथि विशेषज्ञ डॉ. हुड्डा का स्वागत सूतमाला, स्मृति चिन्ह, अंग वस्त्र एवं किट प्रदान कर किया।

कार्यक्रम संचालक के द्वारा डॉ. हुड्डा को अपने विषय 'श्यामपट्ट कौशल' पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। डॉ. हुड्डा ने सर्वप्रथम श्यामपट्ट कौशल की सामान्य आवश्यकता के बारे मे परिचय करवाया। इसके बाद दिनांक, विषय, कक्षा, उपविषय, कालांश और प्रकरण लिखकर समझाया। श्यामपट्ट कौशल में उन्होंने बताया कि श्यामपट्ट पर लिखे गए वर्ण समान दूरी और समान रूप में स्वच्छ तथा साफ सुथरा होना चाहिए, हमेशा सीधी रेखा में लिखनी चाहिए, दो लाइन के मध्य समान अंतराल होना चाहिए, लिखते समय पीठ पूरी तरह से पीछे नहीं होनी चाहिए। लेखन ऐसा होना चाहिए कि पीछे बैठने वाले विद्यार्थियों को स्पष्ट दिखाई दे। मुख्य बिंदु या चित्र को प्रदर्शित करने के लिए रंगीन चाक का भी प्रयोग करना चाहिए। श्यामपट्ट पर लिखते समय 45 अंश का कोण बनाते हुए लिखना चाहिए। व्याकरणीए त्रुटि नहीं होना चाहिए आदि।

इस प्रकार समझाकर डॉ. हुड्डा ने सभी विद्यार्थियों की 5-5 का ग्रुप बनाकर श्यामपट्ट कौशल का अभ्यास कराया और विद्यार्थियों के विविध प्रश्नों के उत्तर देकर उन्हें संतुष्ट कर उनका उत्साहवर्धन किया। अंत में कार्यक्रम संचालक श्रीमती शिल्पी कुमारी के द्वारा आभार व्यक्त कर समापन किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. माधुरी हुड्डा, शिक्षा विद्यापीठ, हरियाणा विश्वदविद्यालय अपने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

दिनांक : 10-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

विषय : सूक्ष्म शिक्षण अधिगम का विकास- श्यामपट्ट कौशल

आज के इस सत्र का आयोजन श्यामपट्ट कौशल के अभ्यास हेतु प्रारंभ किया गया। इस सत्र में विद्यार्थी पुनीत के द्वारा 'भोजन के स्रोत', कविता के द्वारा 'वह चिड़िया जो', लिखिता के द्वारा '1857 का स्वतंत्रता संग्राम', अभय के द्वारा 'लाभ-हानि', संदीप के द्वारा 'बाबा भारती', चमनलाल के द्वारा 'हम पंक्षी उन्मुक्त गगन के' और गजेन्द्र के द्वारा 'सरकार के स्तर' आदि विषय पर श्यामपट्ट कौशल पर शिक्षण का अभ्यास किया गया। शोधार्थी समीमा और अमित रत्न के द्वारा अपना अनुभव का वाचन किया गया जिसमें बताया गया कि श्यामपट्ट पर लिखने की गलती में अशुद्ध शब्द एवं छोटा-बड़ा अक्षर लिखते देखे गए। समीमा के द्वारा बताया कि श्यामपट्ट पर लिखते समय पीठ पीछे करके लिखते थे और श्यामपट्ट साफ नहीं करते थे। अंत में शिक्षणोपरान्त धन्यवाद के साथ सत्र का समापन किया गया।

तृतीय सत्र

विषय विशेषज्ञ : डॉ. एन. अमरेश्वरन

विषय : मूल्यांकन शिक्षण कौशल

मंच का संचालन : श्रीमती शिल्पी कुमारी

मंच का संचालन कर रही श्रीमती शिल्पी कुमारी ने मुख्य विषय विशेषज्ञ का सविस्तार परिचय दिया। तत्पश्चात डॉ. अमरेश्वरन का स्वागत सूतमाला, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं किट प्रदान कर किया गया। इसके पश्चात डॉ. अमरेश्वरन को 'मूल्यांकन शिक्षण कौशल' विषय पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। डॉ. अमरेश्वन ने अपना परिचय प्रस्तुत किया और विद्यार्थियों से चर्चा की कि हम शिक्षण को कैसे प्रभावी बनाए। इसके लिए उन्होंने कुछ महत्वूपर्ण एवं प्रभावी उपाय के विषय में चर्चा की और हमें एकीकृत फार्म में 35 मिनट तक की पाठयोजना सुनियोजित कर विद्यार्थी के समक्ष प्रस्तुत करने की कला के बारे में बताया। आपने श्यामपट्ट पर लिखकर कुछ महत्वपूर्ण सूत्र और लाइफ लॉग लर्निंग (Life Long Learning) की विस्तार से व्याख्या की तथा कुछ महत्वपूर्ण लिंक भी साझा किया। जैसे - http:hansareddyblogs. इसके बाद विद्यार्थियों से अभ्यास भी कराए गए। अवलोकनकर्ता अनुजा, अतुल, एकता, रागिनी, संजय और ज्योति ने विद्यार्थियों के शिक्षण का अवलोकन भी किया जिसमें निम्नलिखित आवश्यक सुझाव दिए गए।

1. शिक्षण के दौरान श्यामपट्ट पर लिखते समय बोलना भी चाहिए।
2. सही और गलत बिंदु के लिए अलग-अलग चाक का प्रयोग करना चाहिए।
3. अक्षर श्यामपट् पर एक समान बनाना चाहिए।
4. दो पंक्तियों के बीच समान अंतर होना चाहिए आदि।

डॉ. शिल्पी कुमारी ने सभी छात्रों का सूक्ष्म शिक्षण कौशल के पाठयोजना की जॉच की और जिनके पाठयोजना में कुछ त्रुटियाँ थी उसे पुन: बनाने का निर्देश दिया और श्यामपट्ट कौशल के विकास हेतु कुछ सुझाव भी दिया कि व्याकरणिक त्रुटि न करें, लिखने और बोलने में शुद्धता हो। अंत में आज के मुख्य विषय विशेषज्ञ डॉ. अमरेश्वरन जी का आभार व्यक्त कर इस सत्र का समापन किया गया।

दिनांक : 11-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

विषय : अनुकरण (सेमुलेशन) शिक्षण कौशल

आज के इस सत्र का प्रारंभ श्रीमती शिल्पी कुमारी के कुशल निर्देशन में संचालित किया गया। यह सत्र अनुकरण कौशल के अभ्यास हेतु प्रारंभ हुआ। इस सत्र में विद्यार्थी पुनीत के द्वारा 'भोजन के स्रोत', कविता के द्वारा 'वह चिड़िया जो', लिखिता के द्वारा '1857 का स्वतंत्रता संग्राम', अभय के द्वारा 'लाभ-हानि', संदीप के द्वारा 'बाबा भारती', चमनलाल के द्वारा 'हम पंक्षी उन्मुक्त गगन के' और गजेन्द्र के द्वारा 'सरकार के स्तर' आदि विषय पर अनुकरण कौशल पर शिक्षण का अभ्यास किया गया। इस शिक्षण कौशल के अवलोकनकर्ता शोधार्थी अमितरत्न और समीमा अंसारी; एम.एड. के छात्र बबलू, नेहा, अवनीश तथा बी.एड. एम.एड. एकीकृत के छात्र अनुजा, ज्योति, संजय, रागिनी और प्रियंका थी। इनके द्वारा प्रस्तावना के लिए कठिन शब्दों को न रखे, आप विद्यार्थी की समझ को समझे, हाव-भाव में परिवर्तन करें आदि सुझाव दिए गए। श्रीमती शिल्पी

कुमारी ने बताया कि प्रकरण तथा सूक्ष्म शिक्षण कौशल के तीन या चार घटक को ध्यान में रखकर 20-25 मिनट तक की तैयारी करके बोलने का अभ्यास करें तथा क्रमानुसार अपने घटक के आधार पर ही शिक्षण करें ताकि आपकी समझ विकसित हो। अंत में प्रतिभागियों को आवश्यक सुझाव देकर इस सत्र को समाप्त किया गया।

तृतीय सत्र

विषय : अनुकरण शिक्षण कौशल

इस सत्र का संचालन श्रीमती शिल्पी कुमारी के कुशल निर्देशन में किया गया। श्रीमती शिल्पी कुमारी अवलोकनकर्ताओं से सुझाव प्राप्त कर बताया कि आपका अवलोकन बहुत ही अच्छा रहा है। आज से अब आप सभी अपने अवलोकन के दायित्व से मुक्त हो गए है। श्रीमती शिल्पी कुमारी ने सभी बी.एड के छात्रों को बताया कि हमें इस प्रकार के शिक्षण कौशल का अभ्यास निरंतर करते रहना चाहिए। इसके लिए ग्रुप बनाकर हमें कार्य करना चाहिए तत्पश्चात इस सत्र में अभ्यास कार्य किया गया। अंत में आवश्यक निर्देश के साथ इस सत्र को समाप्त किया गया।

दिनांक : 12-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

विषय विशेषज्ञ : प्रो. शेफाली पांड्या, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई

विषय : उपलब्धि परीक्षण

मंच संचालन : श्रीमती शिल्पी कुमारी

कार्यक्रम के प्रथम सत्र का संचालन कर रही श्रीमती शिल्पी कुमारी ने सर्वप्रथम अतिथि विषय विशेषज्ञ प्रो. शेफाली पाड्या, मुबंई विश्वविद्यालय, मुम्बई का संक्षिप्त परिचय कराया। इसके बाद मुख्य अतिथि का स्वागत करने हेतु डॉ. सुहासिनी बाजपेयी, सहायक प्रोफेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा को आमंत्रित किया गया। डॉ. सुहासिनी बाजपेयी ने प्रो. पाड्या का स्वागत सूतमाला, अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह और किट प्रदान कर किया। इसके पश्चात कार्यक्रम संचालक ने प्रो. शेफाली पाड्या को अपने विषय 'उपलब्धि परीक्षण' पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। प्रो. शेफाली पाड्या ने सर्वप्रथम विद्यार्थियों से पूछा कि आप लोग 'उपलब्धि परीक्षण' के विषय में क्या जानते है? सभी विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएँ दी तथा उन्होंने दूसरा प्रश्न किया कि उपलब्धि परीक्षण करना क्यों आवश्यक है? इस संबंध में उन्होंने प्रमुख विचार प्रस्तुत किए तथा इसके बाद उन्होंने सभी विद्यार्थियों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया और पीपीटी के माध्यम से समझाया। बाद में विद्यार्थियों के लिए प्रश्न तैयार किया और उसमें विद्यार्थियों को क्या समझ आया क्या नहीं। इसकी जाँच के लिए एक उपलब्धि परीक्षण किया। इसके बाद सभी विद्यार्थियों को उपलब्धि परीक्षण के लिए प्रश्न तैयार करने का आवश्यक निर्देश दिए। विद्यार्थीगण प्रश्न निर्माण में आवश्यक सुझाव प्राप्त करते हुए प्रश्न तैयार किए और फिर मूल्यांकन किए। इस प्रकार यह सत्र

बहुत ही प्रभावशाली ढ़ग से चला। कार्यक्रम का समापन डॉ. धर्मेन्द्र नारायण शंभरकर के द्वारा मुख्य अतिथि प्रो. शेफाली पांड्या के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

तृतीय सत्र

विषय : जल के स्रोत

आज के इस सत्र का प्रारंभ विभिन्न विद्यार्थियों के द्वारा 'जल के स्रोत' विषय पर विभिन्न अनुशासनों में विद्यार्थियों के द्वारा शिक्षण कार्य किया गया। सामाजिक विषय के अंतर्गत शिक्षण करने वालों में लिखिता, गजेन्द्र और राधेश्याम; हिंदी विषय का शिक्षण करने वालों में कविता और चमन; पुनीत और अभय ने क्रमश: विज्ञान और गणित में 'जल के स्रोत' विषय पर विभिन्न माध्यमों से शिक्षण कार्य किया गया। हिंदी में दोहे के माध्यम से भी शिक्षण किया गया तो वहीं विज्ञान में प्रायोगिक तौर पर हैंड पंप, बोरिंग, आदि का चित्र बनाकर किया गया। इसके बाद अनुकरण शिक्षण के अंतर्गत एक नाटक का प्रदर्शन किया गया। जिसमें निम्नलिखित छात्रों ने भाग लिया। शिक्षक की भूमिका में चमल लाल, छात्र की भूमिका में कविता, पुनीत, राधेश्याम तथा अवलोकनकर्ता की भूमिका में संदीप, गजेन्द्र और लिखिता रही। सभी ने अपने अभिनय को बड़ी खूबसूरत ढ़ग से प्रस्तुत किया। रंगमंच की क्या-क्या सावधानियाँ होनी चाहिए। इस संबंध में भी जानने का प्रयास किया। अवलोकनकर्ताओं के द्वारा प्राप्त सुझावों को विद्यार्थियों में संप्रेषित किया गया जिससे भविष्य में कोई त्रुटि की गुंजाइस न रहे। आज के सत्र का समापन अभिनय प्रस्तुति के साथ किया गया।

14. जीवन कौशल कार्यशाला (Workshop On Life Skill) दिनांक (24-26 जुलाई , 2019)

दिनांक : 24-07-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा 24 जुलाई, 2019 से 26 जुलाई, 2019 तक "जीवन कौशल कार्यशाला" विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सत्य प्रकाश वर्मा (भूतपूर्व प्रधानाध्यापक, केन्द्रीय विद्यालय) प्रो. आरती कौल (अधिष्ठाता, के.आर. मंगलम विश्वविद्यालय) और पंजाबी विश्वविद्यालय से डॉ. जगप्रीत कौर एवं डॉ. खुशगीत कौर उपस्थित थे। मुख्य अतिथि का स्वागत शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर के द्वारा विश्वविद्यालय के दैनंदिनी प्रदान कर किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. भरत कुमार पंडा उपस्थित थे। इस कार्यशाला में विभाग के सभी विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के तौर पर डॉ. जगप्रीत कौर ने '**शिक्षण कौशल कार्यशाला**' पर विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए बताया कि वर्तमान समय में भारत में युवाओं की आबादी बहुत है, इस स्थिति में जीवन कौशल जानने की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। उन्होंने जीवन कौशल की परिभाषा इस प्रकार दी – ''Life skill training is give for the betterment of the children's pressure.'' उन्होंने अपने परिभाषा की व्याख्या करते हुए चिंताओं के दो भागों (सकारात्मक और नकारात्मक) पर चर्चा की।

मुख्य अतिथि डॉ. जगप्रीत कौर प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करते हुए।

आपने युनिसेफ़ द्वारा शिक्षा के चार स्तंभों पर चर्चा की तथा गांधी जी के 3H में एक H और जोड़ा Health आज के जीवन शैली के लिए महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने Bloom's Taxanomy के स्तरों पर चर्चा के बाद PMI Technique और SOWT Technique की चर्चा की। अंत में कार्यक्रम संयोजक के द्वारा सभी मंचासीन अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया।

तृतीय सत्र

सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. आरती कौल और डॉ. सत्य प्रकाश वर्मा उपस्थित थे। प्रो. आरती कौल ने जीवन कौशल के तीन भागों पर चर्चा की। Frame Work of life Skills-

1. Thinking skills
2. Social Skills
3. Emotinal Skills

इसके बाद उन्होंने 10 विभिन्न जीवन कौशल के बारे में चर्चा की। डॉ. सत्य प्रकाश वर्मा ने एक पंक्ति देकर उनसे कविता लिखने को कहा – 'गीत नया गाऊंगा'।

दिनांक : 25-07-2019

प्रथम सत्र

आज के इस सत्र में प्रो. आरती कौल ने 'सृजनात्मक चिंतन' (Creative Thinking) के छ: स्तरों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. सत्य प्रकाश वर्मा – जीवन कौशल के माध्यम से समस्याओं के सुलझाने का कौशल (Problem Solving Skill) पर विशेष चर्चा की। अंत में अतिथि वक्ता का धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया।

द्वितीय सत्र

कार्यक्रम के इस सत्र में प्रो. आरती कौल ने 'संप्रेक्षण कौशल' पर चर्चा की। डॉ. खुशगीत कौर संधु – 'एक प्यासा कौआ' कहानी के माध्यम से निर्णय लेना (Decision Making) कौशल पर चर्चा की।

कार्यक्रम के अगली कड़ी में डॉ. सत्य प्रकाश वर्मा ने 'Resume, Curriculum Vitae (Bio Data) कैसे बनाया जाए' इस पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। इन्होंने कृत्रिम साक्षात्कार का आयोजन कर साक्षात्कार (Interview) कैसे दे, ये भी सीखाया। अंत में अतिथि वक्ता का धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया।

मुख्य अतिथि प्रो. आरती कौल अपने वक्तव्य देते हुए।

दिनांक : 26-07-2019

प्रथम सत्र

इस सत्र में डॉ. सत्य प्रकाश वर्मा ने Soft Skill पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने विषय को याद रखने के लिए C.A.R. पद्धति के बारे में बताया। इसके बाद उन्होंने Relation Ships पर भी चर्चा की और बताया कि उसे मजबूत कैसे बनाया जाए। अंत में अतिथि वक्ता का धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया।

द्वितीय सत्र

इस सत्र में डॉ. जगप्रीत कौर ने जीवन कौशल और Copying Skill पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों को Copying Skill पर कुछ कार्य दिया तत्पश्चात उसका निरीक्षण कर आवश्यक सुझाव दिया। इसके बाद डॉ. खुशगीत कौर संधु ने पेपर के माध्यम से प्रतिभागियों को 'मीनार' बनाने का सामूहिक कार्य दिया और अंत में सामूहिक सहभागिता कौशल पर चर्चा की। अंत में कार्यक्रम संयोजक के द्वारा इस सत्र के अतिथि वक्ता का धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन किया गया|

15. शिक्षण सहायक सामग्री का विकास (Development of Teaching Learning Material) दिनांक (30-31 जुलाई, 2019)

दिनांक : 30-07-2019

उद्घाटन सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के द्वारा दिनांक 30-31 जुलाई, 2019 तक *'शिक्षण सहायक सामग्री का विकास'* विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके उद्घाटन सत्र का प्रारंभ सर्वप्रथम मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि श्री घनश्याम तिवारी, परियोजना प्रभारी- एकलव्य NGO, मध्यप्रदेश और श्रीमती शोभा बाजपेयी, शिक्षिका, शासकीय हाईस्कूल, उड़ा, हरदा, मध्यप्रदेश के स्वागत से हुआ।

उद्घाटन सत्र में उपस्थित शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष श्री घनश्याम तिवारी का स्वागत करते हुए।

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र ने डॉ. धनश्याम तिवारी का स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह एवं किट प्रदान कर किया तथा डॉ. सुहासिनी बाजपेयी, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र ने श्रीमती शोभा बाजपेयी का

स्वागत सूतमाला, अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह एवं किट प्रदान कर किया। इसके पश्चात कार्यक्रम संचालक ने अध्यक्षता कर रहे डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग को अध्यक्षीय संबोधन के लिए आमंत्रित किया। डॉ. ठाकुर ने विषय विशेषज्ञों का परिचय कराया एवं शिक्षा अधिगम प्रक्रिया के सफल संचालन हेतु शैक्षणिक सामग्री को सहायक सामग्री के रूप में बताया। विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उन सामग्रियों के माध्यम से सरलतम कैसे बनाया जा सकता है, इस पर भी चर्चा की।

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम निदेशक (PMMMNMTT) अपना वक्तव्य देते हुए|

तत्पश्चात विशेषज्ञ श्रीमती शोभा बाजपेयी (शिक्षिका, शासकीय हाईस्कूल, उड़ा, हरदा, मध्यप्रदेश) ने शिक्षण सहायक सामग्री के विकास पर बल देते हुए बताया कि यह शिक्षक के आत्मचिंतन पर निर्भर करता है। विशेषज्ञ श्री घनश्याम तिवारी (परियोजना प्रभारी- एकलव्य NGO, मध्यप्रदेश) ने शिक्षण सहायक सामग्री के प्रकार को समझाते हुए अपने अनुभवों को साझा किया और विद्यार्थियों को अपने परिवेश में उपस्थित उन सामग्री के उपयोग करने पर बल दिया जो निम्नतम एवं सुलभ तरीके से उपलब्ध हों।

श्री घनश्याम तिवारी (परियोजना प्रभारी- एकलव्य NGO, मध्यप्रदेश)

कार्यक्रम का संचालन डॉ. शेष कुमार शर्मा द्वारा किया गया। कार्यशाला के अगले चरण में विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों के (कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित) के आधार पर विशिष्ट सहायक सामग्री बनाने का प्रशिक्षण दिया गया

। कार्यशाला में विद्यार्थियों से संबंधित विषय के शिक्षण अधिगम सामग्री के बारे में सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से स्वयं प्रतिभागियों द्वारा शिक्षण अधिगम सामग्री के क्रियात्मक विकास का अवसर प्रदान किया गया। कार्यशाला का समापन प्रतिभागियों के प्रमाण-पत्र वितरण के साथ किया गया।

16. शैक्षिक अनुसंधान में प्रतिमान विस्थापन (Paradigm Shift in Educational Research) दिनांक (10 - 14 दिसंबर, 2019)

दिनांक :10-12-2019

प्रथम दिवस

उदघाटन सत्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ के अंतर्गत शिक्षा विभाग के द्वारा **"शैक्षिक अनुसंधान में प्रतिमान विस्थापन"** विषय पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन 10 दिसंबर, 2019 को शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता **प्रोफेसर मनोज कुमार**, विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, कार्यशाला आयोजन सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह, बाह्य विशेषज्ञ **प्रो. रजनी रंजन सिंह** *(अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ)* एवं बाह्य विशेषज्ञ **डॉ. तरुणा ढल** *(प्राचार्य, इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय)* के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया गया।

प्रो. मनोज कुमार अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ दीप प्रज्वलित करते हुए।

दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात विश्वविद्यालय कुलगीत से सभी प्रतिभागियों को परिचित कराया गया। अतिथियों के स्वागत क्रम में डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर एवं प्रोफेसर मनोज कुमार के द्वारा विषय विशेषज्ञ प्रो. रजनी रंजन सिंह का स्वागत सूतमाला एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया। बाह्य विषय विशेषज्ञ प्रो. तरुणा ढल का स्वागत विभागाध्यक्ष, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर द्वारा सूतमाला व स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया। शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार का स्वागत विभागाध्यक्ष डॉ.

गोपाल कृष्ण ठाकुर द्वारा सूतमाला से किया गया। विभागाध्यक्ष, डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर का स्वागत विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रामार्चा प्रसाद पाण्डेय के द्वारा सूतमाला प्रदान कर किया गया। कार्यशाला आयोजन सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह का स्वागत विभाग के सहायक अध्यापक श्री धर्मेन्द्र नारायण शंभरकर के द्वारा सूतमाला से किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर **डॉ. शिल्पी कुमारी** ने कार्यशाला का उद्देश्य बताते हुए कार्यशाला के समय सारिणी एवं उप-विषयों की सूक्ष्म चर्चा की। आपने मुख्यत: प्रतिमान की उपयोगिता बताते हुए आलोचनात्मक दृष्टिकोण को खोजने की बात की। स्वागत वक्तव्य में विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने सर्वप्रथम सभी मंचासीन विद्वान संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं देश के विभिन्न प्रांतों से आए विद्वानों का स्वागत किया और नए स्वर रंजन के साथ विश्वविद्यालय के कुलगीत को लाने का श्रेय संगीत प्रोफेसर डॉ. अप्रमेय मिश्र को देते हुए उनके प्रति बधाई ज्ञापित किया।

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर *(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग)* अपने स्वागत वक्तव्य देते हुए।

उन्होंने अपने वक्तव्य में अपेक्षा जताई कि पिछले दशकों में जो प्रतिमान विस्थापन हुआ है उस पर गहन चिंतन की आवश्यकता है। विद्वानों से प्राप्त ज्ञान के आधार पर क्रियाशील बनने की जरूरत है। व्यवहारवादी उपागम के बाद निर्माणवादी उपागम को देखकर जो अलग-अलग अवधारणाएँ विकसित हुई जिसे शायद हम सब समझते हैं। हम सभी यह कोशिश करें कि इस कार्यशाला में एक गंभीर अंतर्दृष्टि विकसित करें, हालांकि इसमें पांच दिन पर्याप्त नहीं हैं फिर भी बदलते हुए परिवेश ने जिस प्रकार सोच को एक नया रूप प्रदान किया हैं उसी रूप में हम अपने शोध को भी एक नया रूप दें। तत्पश्चात कार्यशाला की रूपरेखा कार्यशाला समन्वयक शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर सुश्री सारिका राय शर्मा के द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए विषय विशेषज्ञ प्रो. रजनी रंजन सिंह ने कहा कि शिक्षा अंतरानुशासनिक विषय का एक हिस्सा हैं साथ ही उन्होंने "Trans-Disciplinary Prospective, Pedagogy, Education Prospective" की निरंतर चर्चा पर बल दिया।

तदुपरांत बाह्य विशेषज्ञ **डॉ. तरुणा ढल** ने अपने उद्बोधन में शैक्षिक शोध से संबंधित प्रतिमान विस्थापन को पढ़ाने व सिखाने तक केंद्रित न करते हुए शिक्षा को एक विस्तृत आयाम स्तर पर इसे आगे और सहीं रूप में रखने की आवश्यकता पर बल दिया। शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता **प्रो. मनोज कुमार** ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में Trans Disciplinary की ओर आने की जरूरत को वक्त का तकाजा बताते हुए शोध में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता पर बल देते हुए कार्यशाला के आयोजन के लिए आयोजन समिति को बधाई देते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से शैक्षिक गतिविधियों को बल मिलता है। उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन, कार्यशाला आयोजन सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह के द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र का सफल संचालन सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा किया गया।

प्रथम सत्र

विषय - "शैक्षिक अनुसंधान में प्रतिमान विस्थापन"

द्वितीय सत्र

विषय – "शैक्षिक अनुसंधान में उभरती प्रवृत्तियां"

प्रथम सत्र में बतौर विशेषज्ञ संबोधित करते हुए **प्रो. रजनी रंजन सिंह** *(अध्यक्ष, शिक्षा विभाग)* ने शोधकार्य को Genesis की आरंभिक नींव बताते हुए कहा कि Philosophy way of thinking हैं एवं उन्होंने Variable of Reality के साथ-साथ बताया कि दर्शन (Philosophy) का काम ही होता हैं कि 'एक शाश्वत सत्य की खोज करना'।

प्रो. रजनी रंजन सिंह अपने वक्तव्य देते हुए।

इसी की निरंतरता में उन्होंने Knowledge Generation की बात भी की, जिसे पुराने समय से चलते आ रही परंपरा से भी अवगत कराया। साथ ही उन्होंने कई किताबों का संदर्भ भी दिया। इसी के साथ Research को Zero type thinking से निकालना Challenging task भी माना। इसके पश्चात उन्होंने विश्वविद्यालय के establishment की बात को रखते हुए – 1.

Rule knowledge Education 2. Rule presentation of knowledge को भी समझाया हैं जिसमें Emic Perspective Inner perspective को कितना उपयोगी (useful) व उसका लाभ (Benefit) समाज में क्या प्रतिमान नियुक्ति (Paradigm placement) बनाता हैं इसी के साथ ही उन्होंने तर्कवाद (Rationalism) से भी परिचित कराते हुए शोध (Research) का काम बुद्धि (Brain) को प्रिशक्षित (Trained) करने के रूप मे माना। इसी निरंतरता में, Assumption-I व Assumption-II की चर्चा करते हुए ज्ञान (Knowledge) को अपने आप में कमानी (segmental) मानते हुए निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की-

1. अनुसंधान स्वैच्छिक गतिविधि (Research Voluntary activity) हैं अनैच्छिक गतिविधि (Involuntary Activity) नहीं।
2. समस्या की प्रकृति वैश्विक (Global) हैं तो उत्तर (Answered) की प्रकृति भी वैश्विक (Global) होनी चाहिए।
3. शिक्षा एक अनुशासन के रूप में (Education as a discipline) नहीं यह जटिल प्रक्रिया (complex processor) हैं।

उन्होंने प्रतिमान विस्थापन (Paradigm Shift) की चर्चा करते हुए Disability boundary को shift करने की आवश्यकता को बताते हुए सुनना (Hearing) एक व्यवहारवादी प्रक्रिया (behavioural processor) हैं जिसमें अधिगम (Learning) को समझने के लिए बुद्धि (Mind) व दिमाग (Brain) को समझने की आवश्यकता को बताया। आगे उन्होंने कहा कि हमें अपनी शोध (Research) में 4-5 चयनात्मक चर (Selective Variable) होने चाहिए न कि व्यक्तित्व चर (Personality variable) या उपलब्धि चर (Achievement variable)। इन्होंने अपने अभ्यावेदन के अंत में तुलनात्मक शोध (Quantitative Research) की बात की, जिसमें व्यवहारवाद (Behaviourism) और Pragmatism को बताते हुए इसमें निम्नलिखित दो बिंदुओं सामान्य अनुभव (common experience) और उपयोगिता (utility) को महत्वपूर्ण माना। इसके बाद मूल्यांकन प्रक्रिया (Evaluation process) आदि बातों को गहनता से समझाते हुए उन्होंने अपने सत्र को समाप्त किया।

तृतीय सत्र

विषय – "शैक्षिक अनुसंधान की सामाजिक प्रासंगिकता"

विशेषज्ञ वक्ता – डॉ. तरुणा ढल *(प्राचार्य, इंस्टिट्यूट ऑफ़ टीचर ट्रेनिंग एंड रिसर्च, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा)*

चतुर्थ सत्र

विषय – "शैक्षिक अनुसंधान की मीमांसा व निर्वचन"

विशेषज्ञ – प्रो. तरुणा ढल

भोजनावकाश के बाद कार्यशाला के प्रथम दिन के तृतीय सत्र में ***"शैक्षिक अनुसंधान की सामाजिक प्रासंगिकता"*** विषयक कार्यशाला में बतौर विशेषज्ञ अपनी बात रखते हुए प्रो. तरुणा ढल ने कहा कि जब बात शैक्षिक अनुसंधान में सामाजिक प्रासंगिकता की आती है तो यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारा शोध समाज पर कितना प्रभाव डाल रहा है। सवाल यह भी खड़ा होता है कि हम जो शोध कर रहे है उसका सैद्धांतिक उपयोग क्या होगा? क्या हम शोध, अकादमिक लाभ के लिए या डिग्री

लेने के लिए कर रहे हैं या यह जो हमारा शोधकार्य का क्षेत्र है उसे हम और कुशल और व्यावहारिक बनाने के लिए कर रहे हैं। जब हम इसे व्यावहारिक बनाने के लिए करते हैं तो इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है? कई बार हम देखते हैं कि अध्यापक जो व्यवहार क्लास में करता है उसे हम आदर्श रूप में मान लेते हैं। शोधार्थी समाज के सापेक्ष में दर्शन उधार में नहीं लेना चाहिए आपको यह निर्णय लेना होगा कि आप मानकर जानने में विश्वास रखते हैं या जानकर मानने में। आपको नए ज्ञान या पुराने ज्ञान को नए रूप में समाज के समक्ष रखना होगा। जब तक आप अपनी खोज को लोगों के बीच प्रेषित नहीं करेंगे उसके सामाजिक सार्थकता का पता नहीं चलेगा। कई बार हम महत्वपूर्ण जानकारियों को सही या गलत के उहापोह कि स्थिति में खो देते हैं। कोई भी विचार कब सार्थक है जब वह समय के अनुसार हो, जब उसका सामाजिक प्रभाव हो। आज तक हमने यह नहीं सुना कि अंग्रेजी के जो छब्बीस वर्णमाला है उसमें कुछ बदलाव हुआ है, वह तो वही पुराने है तो क्या वह बुरे है। आप कितना शोध पत्र लिख देते हैं यह बात उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि आप अपने वर्ग कक्ष में जाते हैं तो आप अपने वर्ग के शैक्षिक गतिविधि को कितना समय के सापेक्ष अच्छा बना रहे हो। हम अपने शोध को कैसे लागू करते हैं, उसे हम किस नजरिए से देख रहे हैं यह महत्वपूर्ण होता है। शिक्षा का प्रतिमान हमारे सीखने के अनुसार बदल रहा है। अब शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में नहीं, बल्कि एक सहायक (Facilitator) की भूमिका में है।

शिक्षा में शिक्षा के प्रतिमान में बदलाव आ रहा है। जो पाठ्यक्रम शिक्षक केंद्रित था वह आज छात्र केंद्रित हो गया है, लेकिन क्या हम वास्तव में उसे उस रूप में हम लागू कर पाएं है। मौजूदा सवाल यह भी है कि क्या बच्चों में सीखने की क्षमता का विकास हुआ है? अगर हुआ है तो कितना हुआ है। क्या इसका लाभ समाज को मिल रहा है। अब शोध का प्रतिमान यह होनी चाहिए कि क्या आज जो शिक्षक फैसिलिटेटर के रूप में कार्य कर रहा है परिस्थितियाँ उसके अनुकूल है कि नहीं। हम उन परिस्थितियों का मूल्यांकन कर सकें। अब हमारे शोध का यह प्रतिमान होना चाहिए। हमें यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि हमारा शोध सामाजिक दृष्टिकोण से कितना सार्थक है। हमें अपने ज्ञान को शेयर करना होगा ताकि समाज उसका समय सापेक्ष में उपयोग कर सकें। आज स्थिति यह है कि हम शिक्षा व्यवस्था में सुधार या बदलाव के लिए शोध कर रहे हैं ताकि विद्यालयों में सुधार हो, लेकिन आज हम उन्हीं विद्यालयों में नहीं जाना चाह रहे हैं। आज हम जिस शिक्षा व्यवस्था में बदलाव के लिए शोध कर रहे हैं या करेंगे। हमें उन विद्यालयों में जाना चाहिए ताकि हम उन परेशानियों को महसूस व देख सकें, जिससे हम बदलते सामाजिक प्रतिमानों के अनुरूप अपने शोध के प्रतिमान को गढ़ सकें। जब हम समाज में जाएंगे तभी हम उसे समझ भी सकते हैं और हम उसे कर सकते हैं। शोध में हमें एक फोकस एरिया चुनना होता है कि आखिर आपको करना क्या है आप किस निष्कर्ष पर पहुँचना चाह रहे हैं।

हम सभी जानते हैं कि शिक्षा जीवंत प्रक्रियाओं के साथ जुडी हुई है। पढ़ाया कैसे जा सकता है यह अधूरी बात है – सीखा कैसे जा सकता है यह पूरी बात है। प्रो. ढल ने अपनी बात रखते हुए कहा कि आज हम देख सकते हैं कि तनाव प्रबंधन पर कितना काम हुआ है, लेकिन आज भी तनावग्रस्त लोगों का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। इसका मतलब है कि शोध सामाजिक

रूप से प्रासंगिक नहीं रहा है। शिक्षण का पेशा व्यवहार परिवर्तन का मुख्य वाहक है, लेकिन हम जो बदलाव समाज में लाना चाह रहे हैं वह आ नहीं पा रहा है। मतलब है कि कहीं न कहीं हमारी प्रक्रिया के अंदर या बाहर कुछ कमी है। प्रो. ढल ने प्रतिभागियों से उनकी जिज्ञासा को जाना और फिर उनके जिज्ञासा को अपने उत्तरों से शांत किया। तीसरे सत्र से जोड़ते हुए चौथे सत्र में उन्होंने कहा कि सीखने कि प्रक्रिया हमारे काम को मजबूत करती है। खुद को देखना एक तकनीक है, जो हमारे ज्ञान को मजबूत करती है। कई बार हम सीख कर उसमे सुधार करते हैं। 2015 में एनसीटीई ने बीएड के पाठ्यक्रम में अपने अनुभवों से सिखाते हुए उसमें सुधार किया। यह बदलाव हमारे सीखने को प्रतिबिंबित करता है। हमें अपने काम के लिए तर्क ढूँढना होता है। आज इन्फोर्मेड एक्शन को व्यवहार में लाने कि जरूरत है। नया ज्ञान हमें यह बताता है कि हम जो सीख रहे उसके आधार पर हम आगे कैसे करेंगे और क्या करेंगे। दिवस की समाप्ति पर विशेषज्ञ के प्रति धन्यवाद ज्ञापन सहायक प्रोफेसर डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा किया गया।

दिनांक : 11-12-2019

प्रथम सत्र

विषय – "शैक्षिक अनुसंधान के गुणात्मक व मात्रात्मक उपागम"

प्रो. वंदना सक्सेना ने सर्वप्रथम शिक्षा के माध्यम का परिचय देते हुए स्वयं ने विभिन्न भाषाओं में किस प्रकार से शिक्षा प्राप्त किया इसका परिचय देते हुए बुनियादी शिक्षा के माध्यम का प्रभाव किस प्रकार से शिक्षा पर असर करता है का विस्तृत विश्लेषण किया। आपके द्वारा गुणात्मक शोध क्या हैं? इस प्रश्न के माध्यम से कार्यशाला में चर्चा कर उसे विभिन्न उदाहरणों के द्वारा समझाया गया। इसी क्रम में आपके द्वारा नृजातीय शोध अध्ययन विधि के संदर्भ से कार्यशाला में सहभागी शोधार्थियों को अपने अनुभवों के आधार पर आने वाली समस्याओं के संबंध में बहुमूल्य मार्गदर्शन करते हुए अनेक बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया। जैसे तकनीकी विषय चयन, शोध क्षेत्र, विषय की अवधारणा, न्यायदर्श, पूर्वाग्रह दूषित विचार, कार्य क्षेत्र, प्रदत्तों की वैधता आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। गुणात्मक शोध में त्रिभुजीकरण की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया हैं। इसलिए निश्चित पद्धति का प्रयोग गुणात्मक शोध में किया जाता हैं। गुणात्मक शोध में प्रदत्त आंकड़ों की परिपूर्णता स्तर पर पहुँचने के लिए दो संकल्पनाओं एक व्यक्ति से विभिन्न समय में बातचीत कर प्रदत्त ऑकड़ों का संकलन करना और संबंधित व्यक्ति के पारिवारिक लोगों से बातचीत कर प्रदत्त ऑकड़ों का संकलन करना को महत्वपूर्ण माना गया हैं।

गुणात्मक शोध में शोधार्थी की भूमिका का इन संकल्पनाओं में कैसे महत्वपूर्ण स्थान दिया गया हैं इसकी जानकारी के संबंध में सभी प्रतिभागियों से विस्तृत चर्चा कि गई। शोध कार्य समाजोपयोगी बनाने हेतु अच्छे शोधार्थियों में किस प्रकार के विहितगुणों की आवश्यकता है जिससे शोधकार्य में विद्यार्थियों की रुचि, ईमानदारी, तार्किकता, पूर्वाग्रह दूषित विचार, आदि अनेक गुणों का विस्तृत विश्लेषण कर शोधार्थियों का शोधकार्य के प्रति दृष्टिकोण बदलने में सहायक जानकारी प्रदान किया और

गुणात्मक शोध में निरंतर तुलना की तथा उसके महत्व और उपयोगिता को समझाया। सत्र के समापन करते हुए "जनजातीय" विषय पर शोधकार्य करने हेतु श्रीमती नंदनी सुंदरम द्वारा लिखित पुस्तक को पढ़ने के लिए विशेषज्ञों को प्रेरित किया गया।

द्वितीय सत्र

विषय – "गुणात्मक अनुसंधान की विधियाँ व प्रविधियां"

विशेषज्ञ : प्रो. वंदना सक्सेना, विभागाध्यक्ष, केंद्रीय शिक्षण संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय

द्वितीय सत्र का आगाज़ करते हुए आज शोधकार्य की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालते हुए **प्रो. वंदना** ने कहा कि "आज शोध कार्य केवल पी-एचडी. उपाधि हासिल कर नौकरी पाने का माध्यम मात्र बनता जा रहा है, न कि ज्ञानवर्धन के लिए किया जा रहा"। इस सत्र में शोध कार्य हेतु आवश्यक बुनियादी बातों को स्पष्ट किया गया। जैसे नवीन ज्ञान, समस्या समाधान, कार्यकारण प्रभाव, नए सिद्धांतों के निर्माण सही मायनों में शोध की अवधारणा के बारे में शोध कार्य हेतु शोधार्थी की जिज्ञासा, शोधकार्य के उद्देश्य किस प्रकार से स्पष्ट होना चाहिए, इसके लिए क्रियात्मक शोध कैसे बहुमूल्य है इस बात पर बल दिया गया। गुणात्मक शोध के संबंधित आने वाले समस्या का चयन, साहित्य समीक्षा, शोध का उद्देश्य, प्रदत्तों का संकलन एवं विश्लेषण, मूल्यांकन और निष्कर्ष इस प्रकार शोध की राह में आने वाले सोपानों का खूबसूरती से विश्लेषण किया गया। समस्याओं का चयन करते समय शोधार्थी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समस्या चयन करते समय शोध अवधि आदि का किस प्रकार से ध्यान रखना चाहिए, साहित्य की कैसे आलोचनात्मक समीक्षा करनी चाहिए, शोध कार्य करते समय पूर्व किए गए शोध कार्य की व्यापकता एवं दूरी की किस प्रकार से पहचान करनी चाहिए, शोध कार्य में भटकाव के स्तिथि से दूर रहना, शोध कार्य में नैतिकता, मौलिकता पर विशेष रूप से ध्यान देना, शोधकार्य में सामाजिक स्वीकृति एवं सार्थकता का ज्ञान शोधकर्ता को किस प्रकार होना चाहिए इस बात पर बल दिया गया। इस प्रकार आज के इस द्वितीय दिवस के प्रथम एवं द्वितीय सत्र के द्वारा संबंधित विषय पर उचित एवं मौलिक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

विषय – "गुणात्मक अनुसंधान अभिकल्प"

विशेषज्ञ – प्रो. वंदना सक्सेना (केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय)

इस सत्र का विषय **"गुणात्मक अनुसंधान अभिकल्प"** के साथ-साथ समस्या का चयन, प्रतिदर्शन विधि के चयन में शोधकर्ता की स्वतंत्रता और गुणात्मक शोध की सीमा एवं परिसीमा रहा। उक्त विषय पर चर्चा का प्रारंभ एक प्रतिभागी द्वारा पूछे गए 'प्रश्न समस्या का चयन, समय एवं धन से किस प्रकार प्रभावित होता है?' से शुरू हुआ। जिसके लिए एक समस्या का चयन किया गया कि मान लिया जाए कि कोई शोधार्थी भारत एवं अमेरिका के कक्षा संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहता है तो इस तरह की शोध समस्या चयन का विषय धन से प्रभावित होगी। इस सत्र में चर्चा के दौरान आपके द्वारा यह भी बताया गया कि गुणात्मक शोध में, शोधकर्ता प्रतिदर्श चयन के लिए स्वतंत्र होता है, परंतु उसका औचित्य स्पष्ट करना भी आवश्यक होता है।

गुणात्मक शोध में ऑकड़ों की वैधता को सुनिश्चित करने के लिए त्रिभुजीकरण महत्वपूर्ण होता है। गुणात्मक शोध में अध्ययन की परिसीमा को खुल कर बताया जाना चाहिए। गुणात्मक शोध में सही विधि द्वारा सूक्ष्म स्तर पर भी किया गया अध्ययन बृहद स्तर पर लिए जाने वाले शोध से महत्वपूर्ण होता है।

चतुर्थ सत्र

इस सत्र में **"गुणात्मक शोध में ऑकड़ा संबंधी चुनौतियाँ"** एवं **"शोधकर्ता स्वयं एक चुनौती होता है"** विषय पर चर्चा करते हुए प्रोफेसर सक्सेना ने गुणात्मक शोध के विभिन्न प्रकारों जैसे ऐतिहासिक शोध, नृजातीय शोध अध्ययन, विवरणात्मक शोध, कथा जाँच तथा शोध की नैतिकता पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि गुणात्मक शोध में आँकड़ा संग्रहण के समय शोध नैतिकता का पालन करना महत्वपूर्ण होता है। जैसे- किसी बच्चे से आँकड़ा लेने से पूर्व उसके माता-पिता से अनुमति लेना, शोध में किसी व्यक्ति का फोटो उपयोग करते समय उसका चेहरा धूमिल कर देना आदि। एक शोधार्थी द्वारा प्रश्न पूछा गया कि क्या शोध उपकरण का निर्माण करना शोध के उद्देश्य में लिखा जा सकता है? विषय विशेषज्ञा द्वारा यह उत्तर दिया गया कि यदि किसी शोध के ऑकड़ों के संग्रहण हेतु शोध उपकरण का निर्माण करते हैं तो वह शोध उद्देश्य नहीं होगा, परंतु जब शोध उपकरण बनाना ही शोध का मुख्य कार्य है तो यह एक शोध उद्देश्य होगा। इस प्रकार प्रश्नोत्तर माध्यम से गुणात्मक शोध अभिकल्प के विषय में एक गहन एवं रोचक चर्चा हुई। अतं में सत्र का समापन सहायक प्रोफेसर डॉ. सारिका रॉय शर्मा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

तृतीय दिन

दिनांक : 12-12-2019

प्रथम सत्र व द्वितीय सत्र

विषय – "मात्रात्मक अनुसंधान की विधियाँ व प्रविधियाँ"

कार्यशाला के तीसरे दिन के प्रथम सत्र में विशेषज्ञ के रूप में प्रो. कौशल किशोर, *(शिक्षाशास्त्र संकाय के संकाय अध्यक्ष, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय)* थे। सत्र के प्रारंभ में **प्रो. कौशल किशोर** का स्वागत शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर द्वारा सूत माला व स्मृति चिह्न प्रदान कर किया गया। तत्पश्चात डॉ. शिल्पी कुमारी *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* द्वारा विशेषज्ञ का परिचय कराया गया। आज की कार्यशाला का विषय **'मात्रात्मक अनुसंधान की विधियाँ व प्रविधियाँ'** के संबंध में विशेषज्ञ ने सर्वप्रथम सांख्यिकी के सामान्य परिचय से प्रारंभ करते हुए केंद्रीय प्रवृति की माप तथा सामान्य प्रायिकता वक्र के संबंध में सभी प्रतिभागियों से चर्चा की। वक्ता महोदय ने यह भी बताया कि NPC का प्रयोग हम क्यों करते हैं। वक्ता महोदय द्वारा प्रतिभागियों के पूछे गए प्रश्नों का प्रभावी तरीके से उत्तर दिया गया। द्वितीय सत्र में **प्रो. कौशल किशोर** ने सामान्य प्रायिकता वक्र के अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। महोदय द्वारा इसके अतरिक्त प्रतिदर्श त्रुटि, मानक त्रुटि और मध्यमान की सार्थकता बिंदुओं पर प्रतिभागियों के साथ विस्तृत चर्चा की

तथा उनकी शंकाओं का समाधान किया। द्वितीय सत्र की समाप्ति पर धन्यवाद ज्ञापन **डॉ. शिल्पी कुमारी** (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा) द्वारा किया गया।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

आज दिनांक 12-12-2019 को इस कार्यशाला के तीसरे दिन के **तृतीय सत्र** में विशेषज्ञ के रूप में **प्रो. कौशल किशोर**, *(शिक्षा संकाय, दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय)* से थे। तृतीय सत्र के प्रारंभ में आपने शैक्षिक अनुसंधान में परिकल्पना परीक्षण के विधियों एवं प्रविधियों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। तदुपरांत प्रतिभागियों द्वारा परिकल्पना परीक्षण की प्रक्रिया क्या है? Sampling unit तथा sampling error क्या है? Parametric test तथा Non-parametric test का प्रयोग कब किया जाता है? T-test का प्रयोग कब किया जाता है? सार्थकता स्तर क्या है? आदि प्रश्न पूछें गए, जिसका उत्तर आपके द्वारा प्रभावी तरीके से दिया गया।

चतुर्थ सत्र में उपरोक्त विषय के शेष बिंदुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा किया गया। इस परिचर्चा में महोदय ने बताया कि कैसे किसी Sample को देखकर ये बता सके कि ये Sample mean इस Population से आया है या नहीं। आपने Table value, calculative value तथा Z value क्या होती है इन बिंदुओं पर प्रतिभागियों के साथ विस्तृत चर्चा की एवं उनकी शंकाओं का समाधान किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने शून्य परिकल्पना को उदाहरण के माध्यम से समझाया तथा बताया कि परिकल्पना दो प्रकार की होती है- सांख्यिकी परिकल्पना एवं शून्य परिकल्पना। शून्य परिकल्पना संभाव्यता तुल्यता (Probability equivalence) की जांच करती है। जितनी भी स्थिति विज्ञान (Statics) है वो Null hypotheses को जांच करती है। वक्तव्य में बताया कि शून्य परिकल्पना का निर्माण इसलिए जरूरी है, क्योंकि स्टेटिक्स शोध परिकल्पना (Statics research hypotheses) को नहीं परीक्षण कर पाती है। इसी के साथ महोदय द्वारा प्रभावी तरीके से सभी प्रश्नों का उत्तर दिया गया तथा सत्र का समापन किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिल्पी कुमारी *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* द्वारा किया गया।

दिनांक : 13-12-2019

प्रथम व द्वितीय सत्र

विषय – "प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प"

विशेषज्ञ– डॉ. माधुरी हुडा (उपनिदेशक, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक)

आज दिनांक 13-12-2019 को राष्ट्रीय कार्यशाला के चौथे दिन आयोजन सचिव **डॉ. शिरीष पाल सिंह** *(सह-प्रोफेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र)* द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। तदुपरांत कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. सारिका राय शर्मा द्वारा विशेषज्ञ **डॉ. माधुरी हुडा** का स्वागत सूत माला व स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम में प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प विषयक अपने वक्तव्य को रखते हुए डॉ. माधुरी हुडा ने कहा कि मात्रात्मक

उपागम के लिए प्रयोगात्मक अनुसंधान की रचना की जाती है। उन्होंने प्रयोगात्मक अनुसंधान व कार्योत्तर अनुसंधान (Ex-post facto research) में अंतर बताते हुए कहा कि प्रयोगात्मक अनुसंधान में 'कारण-प्रभाव' शोधकर्ता के सामने होता है, जबकि कार्योत्तर अनुसंधान में प्रभाव तो सामने होता है; लेकिन 'कारण' पहले ही हो चुका रहता है। डॉ. हुडा ने कहा कि प्रयोगात्मक अनुसंधान में चार आवश्यक तत्व होते हैं-(1) नियंत्रण (2) हस्तक्षेप (3) अवलोकन तथा (4) प्रतिकृत। इन चारों तत्त्वों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि बाह्य चर क्या होते हैं? तथा उन्हें हम किस प्रकार नियंत्रण में रख सकते हैं? उनके द्वारा नियंत्रण की अनेक विधियाँ बतायी गई। इसके पश्चात आपके द्वारा प्रयोगात्मक अनुसंधान के निम्नलिखित सोपानो जैसे - संबंधित साहित्य का अध्ययन, समस्या का चुनाव तथा परिभाषीकरण, परिकल्पना का निर्माण तथा प्रयोगात्मक योजना का निर्माण करना आदि के संबंध में बताया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों द्वारा अनेक प्रश्न पूछे गए, जिनका डॉ. हुडा ने प्रभावी तरीके से उत्तर दिया।

द्वितीय सत्र प्रारंभ करते हुए **डॉ. माधुरी हुडा** ने प्रतिभागियों को प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प के विषय में बताते हुए कहा कि जब शोधकर्ता प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प का चयन करे तो उसे तीन बातों Appropriateness, Adequacy of control तथा वैधता (Validity) का ध्यान रखना चाहिए तत्पश्चात उन्होंने प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प के विभिन्न प्रकारों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए उसकी सीमाओं (Limitation) को बताया। इस प्रकार आपने कार्यक्रम में शामिल प्रतिभागियों की प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प से संबंधित शंकाओं का समाधान किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन समन्वयक डॉ. शिल्पी कुमारी *(सहायक प्रोफेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* द्वारा किया गया।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

विषय – प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प

वक्ता – डॉ. माधुरी हुडा *(उप-निदेशक महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय) रोहतक*

विषय विशेषज्ञ ने भोजनावकाश के उपरांत पूर्व में दिए गए व्याख्यान पर आधारित गतिविधि कार्य करवाया। आपके द्वारा गतिविधि आधारित शिक्षण के लिए पांच-पांच प्रतिभागियों का समूह बनवाया गया और इस गतिविधि को करने के लिए 30 मिनट का समय दिया गया। तदुपरांत आपने गतिविधियों का अवलोकन किया। सभी प्रतिभागी अपने-अपने समूह के गतिविधियों में संलग्न हो गए। इस समूह गतिविधि में प्रतिभागियों का कार्य यह था कि प्रयोगात्मक शोध से संबंधित कोई एक शीर्षक का चयन कर उसके चरों को व्याख्यायित करना, अभिकल्प और टेबल बनाना। इस प्रयोगात्मक अनुसंधान की गतिविधियों में प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए कुछ शीर्षक जैसे- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों में अभिप्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना, माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों पर मानसिक विकास पर योग के प्रभाव का अध्ययन करना इत्यादि और इसके बाद सभी समूहों के सदस्यों में से एक सदस्य को उस प्रयोगात्मक शीर्षक के बारे में मंच पर जाकर प्रस्तुत करना था। इन समूहों की संख्या 10 थी। 30 मिनट का समय व्यतीत होने के बाद सभी समूहों के सदस्यों में से कोई एक या दो

सदस्य मंच पर जाकर अपने शीर्षक को प्रस्तुत करता था और विषय विशेषज्ञ ने इसके माध्यम से कार्यक्रम में आए प्रतिभागियों को प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प की उदाहरण सहित विस्तृत जानकारी प्रदान की। अंत में गतिविधि के समाप्त होने के उपरांत कार्यशाला की समन्यवक **डॉ. शिल्पी कुमारी** *(सहायक प्रोफेसर)* द्वारा धन्यवाद ज्ञापन कर पांच दिवसीय कार्यशाला के चौथे दिन का समापन किया।

दिनांक : 14-12-2019

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

विषय – "शैक्षिक में अनुसंधान प्रविधियाँ

विषय विशेषज्ञ : डॉ. ज्ञानेंद्र नाथ तिवारी ***(सह प्रोफ़ेसर, एमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)***

आज कार्यशाला का पांचवां व अंतिम दिन था। आज कार्यशाला में अतिथि विशेषज्ञ के रूप में उत्तर प्रदेश के एमिटी यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर **डॉ. ज्ञानेंद्र नाथ तिवारी** उपस्थित थे। शिक्षा विद्यापीठ की सहायक प्रोफेसर डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा विशेषज्ञ का परिचय दिया गया, तत्पश्चात शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** के द्वारा अतिथि विषय विशेषज्ञ का स्वागत सूत माला, हिंदी विश्वविद्यालय का स्मृति चिन्ह एवं बैग किट प्रदान कर किया गया। सत्र के प्रारंभ में विशेषज्ञ ने प्रतिभागियों से यह जानने की कोशिश की कि सांख्यिकी से कितने लोगों को डर लगता है, काफी लोगों का उत्तर आया कि हमें डर लगता है इस पर आपका कहना था कि आप सभी इन चीजों से भागे न, बल्कि इनकी बारीकियों को समझे। इसके बाद हमें मिश्रित अनुसंधान विधि क्या है? इनका उपयोग भारत में कितना हो रहा है आपके द्वारा बताया गया। महोदय ने बताया कि मिश्रित अनुसंधान का उपयोग रिसर्च में भारत में नहीं किया जाता है। आपने मिश्रित अनुसंधान विधि की विधियाँ भी बताया तथा उन्हें कैसे प्रयोग में लाया जाए इस पर भी प्रकाश डाला, साथ ही मात्रात्मक अनुसंधान विधि की विधियाँ, उनका प्रयोग कैसे किया जाता है, सामान्यीकरण कैसे किया जाए और गुणात्मक रिसर्च का सामान्यीकरण होता है या नहीं, मिश्रित अनुसंधान हमने किसलिए लिया ये सब विशेषज्ञ महोदय के द्वारा हमें रिसर्च में बताया गया। साथ ही यह भी बताया की त्रुटि को कम करने के लिए भी गुणात्मक रिसर्च का प्रयोग किया जाता है। क्लास में एक समूह परिचर्चा कराई MENTIMETAR APP हम सभी को मोबाइल फ़ोन मे ओपन कर इस पर अपना फीडबैक देने का तरीका बताया और प्रतिभागियों ने अपने-अपने फीडबैक इस APP पर जा कर दिए।

तृतीय सत्र

विषय – "शैक्षिक अनुसंधान में मिश्रित विधियाँ"

विशेषज्ञ – डॉ. ज्ञानेंद्र नाथ तिवारी ***(सह प्रोफ़ेसर, एमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)***

समापन सत्र

कार्यशाला के पांचवें दिन भोजनावकाश के उपरांत एमिटी विश्वविद्यालय से आए विषय विशेषज्ञ ने शैक्षिक अनुसंधान में प्रयुक्त होने वाली मिश्रित शोध विधि से सभी प्रतिभागियों को परिचित करवाया। जिसके अंतर्गत उन्होंने मिश्रित शोध विधि के प्रयोग के विभिन्न चरणों के साथ-साथ उसकी विशेषताओं और सीमाओं पर चर्चा किया। इस सत्र में आपने प्रतिभागियों के मिश्रित शोध विधि से जुड़े विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए। इसके उपरांत विषय विशेषज्ञ ने कुछ प्रयोगात्मक कार्य करवाएं, जिसके अंतर्गत उन्होंने प्रतिभागियों से कुछ ऐसी शोध समस्या को चयनित करने को कहा जिसमें मिश्रित शोध विधि का प्रयोग किया जा सके। समस्त प्रतिभागियों द्वारा चयनित शोध समस्या के आधार पर उन्होंने मिश्रित शोध विधि के शोध डिजाइन को समझाया।

कार्यशाला के **समापन सत्र** में विषय विशेषज्ञ ने कार्यशाला के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि उनके लिए यह हर्ष का विषय था कि उन्होंने आज हिंदी माध्यम में शिक्षण कार्य किया। इसके साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि महात्मा गाँधी ने जिस तरह एक पुस्तक से प्रभावित होकर एक आश्रम की स्थापना की, उसी तरह हमें भी अपने पुस्तकीय ज्ञान को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप में लाना चाहिए तथा हमें अपने ज्ञान की भूख को कभी शांत नहीं होने देना चाहिए।

कार्यशाला के समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** महोदय ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि ऐसी कार्यशाला हमारे ज्ञान के ऊपर पड़ी हुई धुल को हटा कर उसे पुनः साफ़ और स्पष्ट कर देती हैं। उन्होंने कहा कि इन कार्यशालाओं की सार्थकता सही मायनों में तभी साबित होगी जब हमारे मन में अनेक तरह के प्रश्न उठे। अकादमिक जगत के साथ-साथ मानव के जीवन में प्रश्नों की महत्ता को बताते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि महाभारत के युद्ध के समय भगवान श्रीकृष्ण ने युद्ध से पहले अर्जुन के प्रश्नों के उत्तर देना महत्वपूर्ण समझा, साथ ही साथ अध्यक्ष महोदय ने यह भी बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रश्नों के महत्त्व पर आधारित एक प्रश्नोपनिषद लिखा गया हैं और आपने यह भी कहा कि शोध और शोध के प्रश्न मानव जीवन के कल्याण और उन्नयन के लिए हों, इस पर हम सभी लोगों को काम करने की आवश्यकता हैं। कार्यशाला के इस समापन सत्र में पांच दिवसीय कार्यशाला की प्रगति प्रतिवेदन सुश्री सारिका राय शर्मा *(सहायक प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग)* द्वारा पढ़ा गया। इस दौरान कुछ प्रतिभागियों ने पांच दिवसीय कार्यशाला के अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया, तत्पश्चात प्रतिभागियों के बीच प्रमाण-पत्रों का वितरण किया गया। कार्यशाला के समापन सत्र में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन कार्यशाला समन्वयक डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा किया गया। समापन सत्र में समस्त प्रतिभागियों के साथ-साथ, विभाग के एम.फिल. व पी.एच-डी के शोधार्थी संकाय अदि मौजूद थे। इस प्रकार इस पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का सफल समापन हुआ।

17. भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि (India Centric Research Approach in Language, Medium and Social Sciences) दिनांक (05 - 07 फरवरी, 2020)

दिनांक : 05-02-2020

प्रथम दिवस

उद्घाटन सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में ***"भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि"*** विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ 5 फरवरी, 2020 दिन बुधवार को प्रातः 10 बजे से गालिब सभागार में हुआ। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल** ने की। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में **श्रीयुत् मुकुल कानिटकर** उपस्थित थे। **प्रो. मनोज कुमार** ने स्वागत वक्तव्य में कार्यशाला के लक्ष्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शोध, ज्ञान और कर्म के समन्वय की प्रक्रिया है। देश में जितने भी शोध होते हैं वे सभी समाज की प्रयोगशाला से जन्म लेते हैं।

डॉ. अमित दशौरा ने विषय प्रवर्तन करते हुए व्याख्यायित किया कि सृष्टि का निर्माण अकारण नहीं हुआ है। इसका प्रवाह बनाए रखने के लिए जीव प्रकृति का रिश्ता है। सृष्टि रंगमंच है और जीवन अभिनय है। यह अभिनय इंद्रियों की तृप्ति के साथ नौरस का सृजनानंद है। इस अभिनय का लक्ष्य केवल भोग नहीं है, बल्कि यह विवेक के जागरण का विषय है। हमें चाहिए कि रंगमंच की इस भारतीय दृष्टि को विश्वपटल पर दृढ़ता से रख सकें। आपने बताया कि ज्ञान के विभिन्न माध्यम हैं। सभी का उद्देश्य सत्य तक पहुँचना है परंतु प्रश्न यह है कि किसका सत्य? और कैसे? हमारी दृष्टि अनुकरण की होने के कारण इसे हम पाश्चात्य सिद्धांतों से खोजते हैं। जबकि भारतीय दृष्टि के अनुसार सत्य वह है जिसका कोई एंटी-थीसिस बचा ही न हो। ऐसे सत्य तक पहुँचने के मार्ग को 'वाद' कहते हैं।

श्रीयुत् मुकुल कानिटकर जी ने अपने बीज वक्तव्य का आरंभ करते हुए शिक्षा और कुशलता में अंतर स्थापित किया। आपने बल दिया कि विद्या मुक्त करती है। विद्यार्थी मुक्तिकामी होता है। इसके अलावा सब कुशलताएँ है जो रोजमर्रा के कार्यों को आसान करती है और इन्हें केवल अभ्यास द्वारा सीखा जा सकता है। शिक्षित होने का पैमाना यह है कि जिसके पास ज्ञान है वह मुक्त है और अनंत के साथ एकाकार होने की ओर प्रवृत्त हो जाता है। भारतीय सिद्धांत देश और काल से परे सनातन और वैज्ञानिक है। भारतीय शिक्षा में विद्यार्थी को केवल जीविका के लिए तैयार नहीं किया जाता, बल्कि उसे जिज्ञासु बनाया जाता है। इसी विषय का विस्तार करते हुए श्रीयुत् मुकुल जी ने जोड़ा कि संस्कृत स्पंदन की भाषा है जो स्वभावतः सारगर्भित है और ज्ञानोन्मेषी चेतना से युक्त है। आपने शोध को ज्ञान प्राप्ति का एक माध्यम बताते हुए व्याख्यायित किया कि ज्ञान के तीन कारण हैं- श्रद्धा, तत्परता और इंद्रियों पर संयम। इनके बिना ज्ञान संभव नहीं है। नचिकेता का उदाहरण लेते हुए समझाया कि प्रश्न पूछने के लिए भी श्रद्धा आवश्यक है।

नचिकेता को अपने पिता पर श्रद्धा थी इसी कारण उन्होंने सवाल पूछा। इसी तरह अर्जुन को कृष्ण पर श्रद्धा थी। इसी श्रद्धा ने 'किं करणीयम्?' के प्रश्न को पैदा किया। इस पृष्ठभूमि में आपने कहा कि विद्यालय वह स्थान है जहाँ श्रद्धा पैदा होती है, प्रश्नाकुलता पैदा होती है। इन्हीं दोनों के कारण गुरु और शिष्य आगे बढ़ते हैं। संचार के पक्ष पर चर्चा करते हुए आपने मत रखा कि इंद्रिय-संयम न होने के कारण संचार भोग का माध्यम बन गए हैं। माध्यम की कोई नीतिमत्ता नहीं होती है। बाजार की भी नीतिमत्ता नहीं होती है।

माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल** ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि सामाजिक विज्ञान ने वैज्ञानिक पद्धति की सीमाओं को रेखांकित किया। आपने बताया कि वैज्ञानिक प्रणाली 'बाइनरी' व्यवस्था के माध्यम से मानव व्यवहार को समझती है। इस मान्यता की सीमाएँ यह है कि समग्र मनुष्य को शरीर और मस्तिष्क, मूर्त और अमूर्त के वर्गों में देखता है, जबकि वर्तमान वैज्ञानिक शोध कार्य भी अखंडता का समर्थन करते हुए 'ईश्वरीय कण' (गॉड पार्टिकल) की बात करते हैं। आपने यह भी जोड़ा कि पाश्चात्य सिद्धांतों के सामाजिक विज्ञानों में सीधे स्थानांतरण के कारण संस्कृतियों को समझने की औपनिवेशिक दृष्टि विकसित हुई। इसकी व्याख्या करते हुए आपने उदाहरण दिया कि डार्विन के सिद्धांत के अनुकरण के कारण वर्चस्ववादी प्रवृत्ति को वैध ठहराया गया। आपने 'मैन इज सोशल एनीमल', 'मैन इज रैशलन एनीमल', 'मैन इज टूल मेकिंग एनीमल' और 'मैन इज सिंबल मेकिंग एनीमल' का उदाहरण लेते हुए व्याख्यायित किया कि ये परिभाषाएं एकांगी है और मनुष्य के व्यवहार के सीमित और बाह्य अवलोकन पर आधारित हैं। इन दृष्टियों पर आधारित सिद्धांत निर्माण कुछ अवलोकन का समावेशन करता है और कुछ का बहिष्करण।

आधुनिक शिक्षा भारतीय चिंतन परंपरा और पद्धति के साथ न्यूनतम तालमेल रखती है। भारतीय विद्या नैतिक मूल्य की स्थापना करती है। वह भाषा के माध्यम से ज्ञान और शोध दोनों को दिशा देती है। आपका सुझाव था कि सत्य को जानने के उपकरणों का भारतीयकरण हो। जो जान रहे हैं उसके उन्मेष हेतु शोध में प्रवृत्त हो। सामाजिक विज्ञानों में भारतीय संदर्भ और युगानुकूलता का विशेष ध्यान रखा जाए।

द्वितीय सत्र

साहित्य विद्यापीठ के महादेवी वर्मा सभागार में द्वितीय सत्र का आयोजन किया गया। सिनेमा, थिएटर और अन्य माध्यमों में भारत केंद्रित दृष्टि विषयक द्वितीय सत्र की अध्यक्षता **प्रो. कृपाशंकर चौबे** ने की। सत्र के प्रारंभ में सिनेमा एवं नाट्यकला विभाग की सहायक प्रोफेसर **डॉ. विधु खरे** ने विषय स्थापना की। उन्होंने बताया कि रंगमंच सिनेमा और संचार के अंतरानुशासनिक अध्ययन के लिए पाठ्यचर्या को शोधपरक बनाए जाने की आवश्यकता है। अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री राकेश मंजुल ने देश भर में चल रहे सिनेमा और नाट्यकला विभाग के पाठ्यचर्या में एकाकारिता की आवश्यकता बताई। उन्होंने बताया कि सिनेमा और रंगमंच का स्वरूप बदल गया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को सिनेमा और नाट्यकला विषय के लिए मानक पाठ्यचर्या बनाने हेतु प्रस्ताव भेजे जाने की आवश्यकता है। तत्पश्चात् माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश शुक्ल** ने कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. उर्मिल कुमार थपलियाल, पत्रकार डॉ. रवि बुले, डॉ. नीलांजन दत्ता आदि अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला की उपलब्धियों को मूर्त रूप देने के लिए सभी के प्रयासों की सराहना करनी चाहिए। मुख्य अतिथि और वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. उर्मिल कुमार थपलियाल ने कहा कि वह विद्वतजनों की सभा में आकर खुद को गौरवांवित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी कला क्षेत्र के सहयात्री हैं। रंगमंच जीवित माध्यम है। जीवन और रंगमंच में साम्य है। दोनों नश्वर हैं। मीडिया में पुनर्जन्म संभव नहीं पर थिएटर में प्रत्येक प्रस्तुति एक नया जन्म है। सिनेमा और रंगमंच में कोई छोटा या बड़ा नहीं है। कलाकार निर्देशक के लिए महज एक उपकरण होता है। कलाकार के पास शरीर और आवाज है, परंतु इसका कहाँ और कैसे प्रयोग करना है? इसका निर्धारण निर्देशक करता है। इसके कारण अब प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम की बहुत की आवश्यकता है। सत्र की अध्यक्षता कर रहे **प्रो. कृपाशंकर चौबे** ने कला और रंगमंच के साथ साहित्य के संबंध को जोड़ते हुए बताया कि किस प्रकार विभूति भूषण बंदोपाध्याय की रचना ने पाथेर पंचाली का स्वरूप ग्रहण किया। उन्होंने बताया कि कवि गुरु रवींद्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन के द्वारा किस प्रकार से लोक संगीत को घर-घर पहुँचाया। उन्होंने स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में ही भारत की दृष्टि देखने का आह्वान किया। सत्र के समापन पर श्री राकेश मंजुल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस सत्र में जनसंचार विभाग, सिनेमा एवं नाट्यकला विभाग के शोधार्थी, विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

कार्यशाला के तृतीय एवं चतुर्थ सत्र का आयोजन साहित्य विद्यापीठ के महादेवी वर्मा सभागार में किया गया। सिनेमा, थिएटर और अन्य माध्यमों में भारत केंद्रित पाठ्यचर्या, शिक्षण और शोध विषयक इस सत्र की अध्यक्षता सिनेमा एवं नाट्यकला विभाग की अध्यक्षा **प्रो. प्रीति सागर** ने की। इस सत्र का आयोजन सिनेमा और नाट्यकला की पाठ्यचर्या में एकरूपता और भारत दृष्टि को लेकर चर्चा की गई। मुख्य वक्ता वरिष्ठ रंगकर्मी नाटककार उर्मिल कुमार थपलियाल रहे। सत्र संचालन और विषय स्थापना श्री राकेश मंजुल ने की। श्री राकेश मंजुल ने विषय स्थापना करते हुए देश में सिनेमा और नाट्यकला की पढ़ाई की मौजूदा व्यवस्था पर असंतोष जाहिर करते हुए पाठ्यचर्या में भारतीय दृष्टि का अभाव होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हिंदी पट्टी में सिनेमा और प्रदर्शनकारी कला के अध्ययन-अध्यापन की स्थिति बहुत खराब है। पाठ्यक्रम में भारतीय दृष्टि का अभाव है। इस दौरान विश्वविद्यालय के सिनेमा और नाट्यकला विभाग की सहायक प्रोफेसर **डॉ. विधु खरे दास** ने सिनेमा अध्ययन संबंधी विश्वविद्यालयों और विभागों की वस्तुस्थिति के सही आँकड़ें रखने के लिए हस्तक्षेप किया। उन्होंने एतराज जताया कि बिना किसी ठोस शोध के किसी भी संस्थान के संबंध में यह धारणा बनाना ठीक नहीं है कि वहाँ कोई काम नहीं हो रहा है। वहीं श्री राकेश मंजुल ने देशभर के विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जा रहे सिनेमा और नाट्य कला की पाठ्यचर्या को नाकाफी बताते हुए इसमें अमूल चूल सुधार कर भारतीय दृष्टि लाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पाठ्यचर्या में प्रायोगिक कार्यकम होने

से विद्यार्थी प्रशिक्षित नहीं हो पा रहे हैं। उन्होंने बताया की बर्कले विश्वविद्यालय में भारतीय सिनेमा पर आधारित शोध कार्य हो रहे हैं।

प्रो. आशीष पांडेय ने कहा कि जब भी किसी विषय को अध्ययन-अध्यापन के दायरे में लाया जाता है तो शुरुआती दौर में समस्याएँ आना स्वाभाविक है। इस संदर्भ में उन्होंने उदाहरण के रूप में प्रबंधन, डिजाइनिंग, कंप्यूटर साइंस आदि की पढ़ाई के बारे में खुले संस्थानों का जिक्र किया। प्रो. पांडेय ने जोर दिया कि विषय की पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी और शिक्षक दोनों के ज्ञान के स्तर में निरंतर वृद्धि हो। उन्होंने पाठ्यचर्या में सैद्धांतिक और प्रायोगिक संतुलन को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रैक्टिकल को 'ज्वायफुल एक्सपीरिएंस' में बदलने की आवश्यकता है। परिचर्चा में भाग लेते हुए श्री नीलांजन दत्ता ने कहा कि सिनेमा औद्योगीकरण का उत्पाद है। सिनेमा का अभ्यास जरूरी है इसलिए इसके लिए उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि एस.के. पाटिल ने 1950 में शोध पत्रिका में इंडियन फिल्म पॉलिसी के बारे में लिखते हैं। जिसमें उन्होंने तीन सुझाव दिए थे। इनमें से दो सुझाव पर तो सरकार ने तत्काल अमल कर दिया, किंतु एक सुझाव को अभी तक नहीं माना। उन्होंने बताया कि भारत के विश्वविद्यालयों के संगठन ने एफटीआईआई की डिग्री को मान्यता दी है। समय की मांग को देखते हुए आज हमें कैमरा, एडिटिंग और स्क्रिप्ट जानना होगा।

अश्विनी चौबे ने कहा की बी.वोक. और एम.वोक. तथा बी.ए. व एम.ए. के पाठ्यक्रम के मूल स्वरूप को समझना होगा और उसके अनुरूप संसाधन जुटाने होंगे तभी हम पठन-पाठन की स्थिति सुधार सकेंगे। नीलांजन दत्ता ने बताया कि आने वाले समय में सिनेमा में बहुत तेजी से बदलाव देखने को मिलेगा। 4 डी. एक्स. सिनेमा और होलोग्राफिक प्रजेंटेशन का सिनेमा दर्शक अनुभव में तेजी से परिवर्तन लाने वाला है।

पत्रकार **श्री रवि बुले** ने भारतीय सिनेमा के उद्भव काल को याद करते हुए व्यावसायिक और गैर व्यावसायिक सिनेमा की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि सिनेमा असेंबल्ड आर्ट है। यह टीमवर्क है। इसमें सफल होने के लिए पैशन की आवश्यकता है। तभी तमाम लोग बिना ट्रेनिंग के भी सफल हो जाते हैं, क्योंकि उनमें पैशन होता है।

वरिष्ठ रंगकर्मी **डॉ. उर्मिल थपलियाल** ने कहा कि अकेला हमारा रंगमंच प्रैक्टिकल थिएटर शोध में नहीं आता, नाटककारों, विचार प्रस्तुतियों पर शोध है, परंतु उनके कंटेंट पर शोध नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि भाषाई रंगमंच को प्राथमिकता दी जाती है, लेकिन बोलियों के रंगमंच को प्राथमिकता नहीं दी जाती। आज थिएटर से लोक को हटा दिया जाता है। पढ़े लिखे में ज्यादा भ्रम है। ज्यादा सभ्य बनने में हम असभ्य हो गए। जब तक स्थानीयता को महत्व नहीं दिया जाएगा तब तक कोई भी पाठ्यक्रम पूरा नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि सिनेमा में आदमी बड़ा, टीवी में छोटा पर रंगमंच में आदमी आदमी दिखाई देता है।

रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन के पदाधिकारी **श्री अमित दसौरा** ने कहा कि थिएटर हमेशा समाज में जीवित रहता है। उन्होंने रामलीला का उदाहरण दिया और बताया कि वह समाज की जरूरत के हिसाब से मंचित होती रही। भारत में किसी भी कला के जीवित रहने के लिए भारतीय दृष्टि होनी जरूरी है।

भारत में शोध की स्थितियाँ ठीक नहीं हैं। सुधार की बहुत आवश्यकता है। थिएटर को जानना जरूरी है। सत्र की अध्यक्षता कर रहीं प्रो. प्रीती सागर ने सत्र में शामिल सभी विचारों को बहुमूल्य बताते हुए वक्ताओं और प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिनांक : 06-02-2020

द्वितीय दिवस, प्रथम सत्र

शिक्षा विद्यापीठ एवं *रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान* में आयोजित **"भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि"** विषय पर आयोजित कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के माननीय प्रति कुलपति **प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल** द्वारा की गई। प्रथम सत्र में मंच संचालन शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. पुष्पा नामदेव द्वारा किया गया। तत्पश्चात माननीय प्रति कुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल द्वारा मुख्य वक्ता डॉ. आशीष पाण्डेय *(रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन)* का सूतमाला तथा प्रतीक चिन्ह द्वारा स्वागत किया गया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए माननीय प्रति कुलपति **प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल**

स्वागत वक्तव्य के रूप में शिक्षा विभाग के अध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** ने अपने विचार प्रस्तुत किए तत्पश्चात डॉ. ऋषभ मिश्र *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग)* द्वारा कार्यशाला के प्रथम दिवस का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** अपने स्वागत वक्तव्य देते हुए।

इसके बाद डॉ. आशीष पाण्डेय जी को **"भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि"** विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया।

डॉ. पाण्डेय ने **रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन** का परिचय देते हुए कहा कि संस्थान का अर्थ पुनरुत्थान के लिए अनुसंधान है जिसमें मानव चेतना, सांस्कृतिक चेतना में जीने के प्रतिमानों को पुनर्स्थापित करने का काम किया जाता है। डॉ. पाण्डेय ने स्वर सिद्धांत, अंतःकरण के बारे में बताते हुए कहा कि अंतःकरण हमारे जानने का तरीका था। शोध के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आज के शोधार्थी अनुसंधान में रिक्त स्थान को ही रिसर्च टिकट मान लेते हैं। इसके बाद उन्होंने रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन के एजेंडा को बताते हुए कहा कि फंडामेंटल क्रिटिकल रिसर्च के द्वारा अवधारणाओं की समालोचना करनी चाहिए, वहीं एप्लाइड रिसर्च पर भी ध्यान देना चाहिए और जब हम रिसर्च मेथोड़ोलोजी पढ़ते हैं तब समझ आता है कि सिर्फ भाषा ही अलग नहीं होती बल्कि जानने के उपकरण भी अलग-अलग होते हैं। उन्होंने बताया कि हमारी ज्ञान-मीमांसा उपकरणों पर आधारित होती है और सत्य को प्रतिपादित करने के लिए उपकरणों की अत्यंत आवश्यकता होती है। अपने वक्तव्य के अंत में उन्होंने कहा कि पी-एचडी. करने की प्रक्रिया दर्दभरी न होकर आनंदमयी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शोध, ज्ञान के सृजन के लिए होना चाहिए और ज्ञान का सृजन तभी हो सकता है जब आप किए जा रहे कार्य का आनंद ले रहे हों, इसलिए कार्यशाला को **आनंदशाला** के रूप में लेना चाहिए। कार्यक्रम की अगली कड़ी में विश्वविद्यालय के माननीय प्रति कुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में मौलिक की बजाय मूलभूत बातों पर ध्यान केंद्रित करते हुए एकान्विक दृष्टि तथा सम्यक दृष्टि इन दो शब्दों की विस्तृत व्याख्या करते हुए दोनों को एक दूसरे का पूरक कहा। उन्होंने कहा कि एकान्विक दृष्टि के लिए सम्यक दृष्टि होना बहुत जरूरी है। इसके बिना एकान्विक दृष्टि संभव नहीं है। भारतीय विश्वदृष्टि ज्ञान को मौलिक नहीं मानती, बल्कि उसके अनुसार ज्ञान पहले से मौजूद होता है तथा शोध का कार्य केवल ज्ञान तक पहुँचना ही नहीं होता है, बल्कि उस ज्ञान को उस तक पहुँचाना भी होता है जिस तक वह नहीं पहुँचा है। उन्होंने बताया कि भारतीय शोध दृष्टि सत्यान्वेषण और सम्यकता पर बल देती है। भारतीय आचार्य क्रियाविधि पर अधिक बल देते थे। प्रो. शुक्ल ने नीति-वचन के माध्यम से क्रियाविधि तथा सूक्तियों द्वारा ज्ञान सृजन की प्रक्रिया को समझाया। ज्ञान की प्रकृति को बहुमुखी बताते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान अन्वेषण की प्रक्रिया है। इसके बाद उन्होंने भाषा तथा बोली की अवधारणा को स्पष्ट किया। भाषा को ज्ञान का प्रकाश बताया। उन्होंने तकनीकी के महत्व को बताते हुए कहा कि तकनीकी जितनी अग्रिम होगी परिवर्तन भी उतना ही तेज़ होगा, लेकिन तकनीकी की भूमिका को भाषा और ज्ञान के साथ नहीं मिलाया जाना चाहिए। तकनीकी स्वयं एक ज्ञान है। अंत में उन्होंने बताया कि भाषा की पहचान मूलतः क्रिया से होती है तथा प्रतिभागियों की जिज्ञासा को शांत करने का यत्न किया। प्रथम सत्र का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र द्वारा किया गया।

द्वितीय दिवस, द्वितीय सत्र

द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र में पैनल चर्चा के दौरान शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, डॉ. सूर्यप्रकाश पाण्डेय *(दर्शन शास्त्र विभाग)*, डॉ. पवन कुलकर्णी *(विज्ञान अधिकारी)*, डॉ. श्रीनिकेत मिश्र *(अनुवाद अध्ययन विभाग)* मंच पर उपस्थित रहे। पैनल चर्चा के दौरान **"शिक्षा सिर्फ नौकरी के लिए बन गई है?"** विषय पर सभी पैनल सदस्यों ने अपना मत रखा। इस दौरान डॉ. पाण्डेय ने कहा कि शोध अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है, शोध एक बार होता है तथा शोधार्थी समाज में कुछ नवीन योगदान के लिए शोध करते हैं। वर्तमान के आलोक में देश तथा समाज को दिशा देने के लिए शोध किया जाना चाहिए। डॉ. श्रीनिकेत ने **"शोध और रोजगार"** पर महत्वपूर्ण विचार रखे। पैनल चर्चा के अगले क्रम में डॉ. पवन कुलकर्णी ने **"भाषा पर पश्चिमी प्रभाव"** पर प्रश्न करते हुए भाषा, माध्यम में प्रतिमान विस्थापन के बारे में विचार रखते हुए डॉ. ठाकुर से चर्चा की। इसके बाद भारत केंद्रित शोध की गलत व्याख्या (misinterpretation) के बारे में चर्चा की गई| इस क्रम में डॉ. पाण्डेय ने कहा कि शोध की भारतीय दृष्टि पुष्पित हो तभी शोध की गलत व्याख्या से बचा जा सकता है। इसके साथ मूल्य आधारित शिक्षा के बारे में बताया गया तथा शोध में सत्यनिष्ठा, मौलिकता की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई। पैनल चर्चा की अगली कड़ी में प्रतिभागियों को शामिल करते हुए प्रश्नोत्तर के माध्यम से "आधुनिकता क्यों जरूरी?" तथा "भाषा को लेकर संघर्ष क्यों?" विषय पर चर्चा की गई। सत्र के अंत में प्रतिभागियों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनकी जिज्ञासा को शांत किया गया।

तृतीय सत्र

कार्यशाला के द्वितीय दिन के तृतीय सत्र में **डॉ. आशीष पाण्डेय** तथा **डॉ. पवन कुलकर्णी** ने प्रतिभागियों को 10 समूह में बाँटकर विभिन्न क्रियाकलाप कराए। प्रथम क्रियाकलाप "आपके अनुसार भारत क्या है?" विषय पर समूह के विचार जानने से संबंधित था इसके लिए उन्होंने प्रत्येक समूह में एक सदस्य को टाइम कीपर तथा एक सदस्य को रिपोर्टर के रूप में नामित करने को कहा जो कि समूह के विचार प्रस्तुत कर सके। विभिन्न समूहों द्वारा भारत की विविधता को केंद्रित करते हुए भारत की अखंडता, भारत का स्थानीय ज्ञान, प्राचीन ज्ञान आदि को बताया गया। अगले क्रियाकलाप में डॉ. पाण्डेय ने सभी समूहों को चार्ट पेपर तथा स्केच द्वारा शब्दों के बिना चित्रों के माध्यम से "भारत क्या है?" की संकल्पना को उकेरने को कहा। सभी समूहों द्वारा भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली, सर्वधर्म समभाव, भारत की भौगोलिक स्थिति में सभी धर्मों के समागम तथा जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान, नारी सशक्तिकरण, किसानों की बदहाली जैसे विषयों को चित्रों के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रस्तुत किया गया। एक अन्य क्रियाकलाप के रूप में सभी समूहों द्वारा "भारत की समस्याओं के लिए शोधार्थी के रूप में समाधान के लिए प्रयत्न" पर आधारित शोध अभिकल्प तैयार करने के लिए दिया गया। अलग-अलग समूहों द्वारा मीडिया साक्षरता, संदेश साक्षरता, विभिन्न शिक्षण पद्धतियों की समस्याओं, प्राथमिक स्तर की शिक्षा समस्याओं तथा आदिवासी समूहों की समस्या को उजागर करने का प्रयास किया गया।

द्वितीय दिवस, चतुर्थ सत्र

कार्यशाला के द्वितीय दिन के चतुर्थ सत्र में **श्री अमित दशोरा** ने न्याय दर्शन के बारे में बताया। इस दौरान उन्होंने कहा कि दुखों के निवारण के लिए शोध किया जाना चाहिए। जब शोधार्थी समालोचक होकर सोचेंगे तभी शोध की गुणवत्ता में सुधार आएगा। श्री दशोरा जी ने "आधुनिकता क्या है?" और "आधुनिकता कहाँ प्रभावित हो रही है?" इसके बारे में चर्चा की। उन्होंने केदारनाथ आपदा का उदाहरण देते हुए बताया कि प्राचीन समय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधुनिक समय की अपेक्षा अधिक था इसलिए बाबा केदार नाथ का प्राचीन भवन आपदा में प्रभावित हुए बिना सुरक्षित रहा, वहीं आधुनिक तकनीकी के प्रयोग से बनी बहुमंजिली इमारतें आपदा में अपना अस्तित्व खो बैठीं। इसी के साथ उन्होंने शोध की प्रक्रिया से अवगत कराते हुए प्राचीन दर्शन के माध्यम से शोध की उपादेयता के बारे में बताया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों से प्रश्नोत्तर किए गए।

दिनांक : 07-02-2020

प्रथम सत्र

"भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि" विषयक तीसरे दिन कार्यशाला के प्रथम सत्र के विषय विशेषज्ञ **डॉ. आशीष पाण्डेय** थे। सत्र का प्रारंभ शोध प्रारूप के प्रस्तुतीकरण से हुई। सभी प्रतिभागियों को छह समूह में विभक्त करके प्रत्येक समूह को आपसी सहमति के आधार पर शोध विषय की पहचान करने को कहा गया। समूह के विषय-संचार साक्षरता, शिक्षाशास्त्र, प्राथमिक स्तर की शिक्षा, आदिवासी शिक्षा, लैंगिक भेदभाव से संबंधी प्रश्न थे। प्रथम शोध प्रारूप का प्रस्तुतीकरण देवेन्द्र यादव, अतुल कुमार गुप्ता, अश्वनी कुमार, मनीषा सुरेन्द्र खरलाकर के समूह के द्वारा "प्राथमिक शिक्षा की दशा एवं दिशा का अध्ययन करना" (श्रावस्ती जिले के संदर्भ में) किया गया। द्वितीय समूह द्वारा "शिक्षकों के द्वारा प्रभावशाली शिक्षण" विषयक शोध प्रारूप का प्रस्तुतीकरण किया गया। इस समूह के प्रतिभागी शशिरंजन, अभिषेक वर्मा, सौरभ कुमार एवं अनामिका यादव थी। रिसर्च प्रारूप में मुख्य रूप से चार बिंदुओं को स्पष्ट करना था –

1. शोध प्रश्न
2. शोध उद्धेश्य
3. शोध दृष्टि
4. शोध विधि

इन चार बिंदुओं पर गहन परिचर्चा प्रतिभागियों के द्वारा की गई। परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए विषय विशेषज्ञ ने कहा कि रिसर्च प्रारूप का उद्धेश्य कुछ सिद्ध करना नहीं, बल्कि इसका उद्धेश्य होता है- मिथ्याकरण करना। शोध प्रारूप बनाते समय विभिन्न दृष्टिकोण से विचार किए जाने पर उन्होंने बल दिया। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए विषय विशेषज्ञ के द्वारा यह बताया गया कि शोध की सीमा में वह पक्ष कभी नहीं डालते हैं जिससे हमारा शोध परिणाम प्रभावित होता है। शोधार्थी को शोध प्रारूप के सभी प्रश्नों पर गहनता से अध्ययन करना आवश्यक होता है।

द्वितीय सत्र

इस सत्र का प्रारंभ विषय विशेषज्ञ डॉ. पवन कुलकर्णी द्वारा वैज्ञानिक प्रक्रिया जो कि मुख्यतः विज्ञान में उपयोग किया जाता है, का सामाजिक विज्ञान में क्या महत्त्व है? इसको रेखांकित करते हुए किया गया। डॉ. कुलकर्णी के द्वारा सिद्धांत, मान्यताओं, संबंध एवं परिभाषाओं को मिलाकर किस तरह एक सिद्धांत बनता है। साथ ही विषय विशेषज्ञ के द्वारा कार्यप्रणाली, संदर्भ, वैश्विक नजरिया, प्रत्यक्षवाद व प्रत्यक्षवाद के बाद का नजरिया आदि पर भी विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए सह विषय विशेषज्ञ डॉ. विश्वजीत पेड्से के द्वारा शोध में अवलोकन के महत्व को रेखांकित किया गया। डॉ. पेड्से के द्वारा शोध केवल उपाधि प्राप्त करने का तरीका नहीं है, बल्कि यह दृष्टिकोण विकसित करने का एक माध्यम है। जिसका परिलक्षण हमारे व्यावहारिक जीवन में भी दृष्टिगोचर होना चाहिए। अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए कहा कि एक शोधकर्ता का लक्ष्य न केवल उसके भविष्य को, बल्कि समाज के भविष्य को भी प्रभावित करता है। शोध समस्या का चयन करते समय यह अवश्य देखें कि क्या आने वाले समय में इसका कुछ महत्त्व रहेगा भी या नहीं। डॉ. पेड्से ने कहा कि आज जिस शोध समस्या को चयन करते हैं वह पांच साल बाद समस्या ही न रहे, ऐसी समस्या का चयन करने से एक शोधकर्ता को बचना चाहिए। उन्होंने बौद्धिक संपदा, शोध के अंतिम परिणाम पर भी विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। सत्र के अंत में शोधार्थियों द्वारा अपनी जिज्ञासा प्रतिपूर्ति के लिए प्रश्न भी किए गए। इस जिज्ञासाओं का समाधान डॉ.आशीष पाण्डेय के द्वारा किया गया।

तृतीय सत्र

कार्यशाला के तीसरे दिन के तृतीय सत्र की शुरुआत करते हुए विषय विशेषज्ञ **डॉ. आशीष कुमार पाण्डेय** ने शोध के उपागम सहित शोध की विधियों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. आशीष ने रिसर्च के क्षेत्र को तीन भागों में बाँटा- (1) विश्लेष्णात्मक उपागम, (2) व्यवस्था उपागम एवं (3) क्रियात्मक उपागम। जिस तरह ज्ञान को ज्ञान-मीमांसा के द्वारा जानने की कोशिश होती है, उसी तरह हम यह जानने की कोशिश करते हैं कि बच्चे गणित किस माध्यम से सीख रहे हैं? संख्यात्मक मूल्यांकन व विश्लेषणात्मक उपागम हमारे शोध के दो मुख्य बिंदु हैं। कहानी के माध्यम से हम रिश्तों को कैसे सीखते है? कहानी सुनना आर्ट पेडागोजी का उदाहरण है। हम जो सीखते हैं वह हमारे व्यवहार में आ रहा है कि नहीं। यह शोध का निष्कर्ष होना चाहिए। समाज विज्ञान में क्रियात्मक रिसर्च का बड़ा महत्व है। यह हमारे व्यवहारों का अध्ययन कर उसके मुताबिक संबंधों को बनाने में सहयोग करता है। इस बार का नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाले श्री अभिजीत बनर्जी की संस्था ने क्रियात्मक रिसर्च के द्वारा ही दुनिया के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। इस रिसर्च का एक सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसका नीति बनाने पर सीधे-सीधे प्रभाव पड़ता है। जो भारत में रिसर्च हो, वही रिसर्च नीदरलैंड में प्रभावी हो; यह जरूरी नहीं है। दुनिया एक बड़ा कैनवास है, इसमें से आपको अपना कैनवास खुद चुनना है। अपने हिस्से के कैनवास को रंग भरने का काम भी खुद परिस्थिति व समय सापेक्ष में करना होगा। समाज विज्ञान में ट्रेंड पता चलने पर उसमें काम करने का मौका अधिक मिलता है।

समापन सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं रिसर्च फॉर रिसर्जन फाउंडेशन, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में **"भाषा, माध्यम और सामाजिक विज्ञान में भारत केंद्रित शोध दृष्टि"** विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र का आयोजन दिनांक : 07 फरवरी, 2020 (दिन-शुक्रवार) को किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. **हनुमान प्रसाद शुक्ल**, *माननीय प्रतिकुलपति, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा* के द्वारा किया गया। इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में **डॉ. विश्वजीत पेंडसे** और **डॉ. पवन कुलकर्णी** मंच पर उपस्थित थे। मंच का संचालन कर रहे डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय ने सर्वप्रथम माननीय प्रतिकुलपति एवं मंचासीन अतिथियों को दीप प्रज्ज्वलन के लिए आमंत्रित किए।

मंच का संचालन करते हुए **डॉ. सूर्य प्रकाश पाण्डेय**

तत्पश्चात माननीय प्रतिकुलपति के द्वारा मुख्य अतिथियों का स्वागत स्मृति चिन्ह और सूतमाला प्रदान कर किया गया। इसके बाद शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष एवं इस कार्यक्रम के निदेशक के द्वारा प्रतिकुलपति महोदय का स्वागत किया गया। तत्पश्चात डॉ. ठाकुर ने इस समापन सत्र के अपने वक्तव्य में बताया कि तीन दिन का समय किसी विषय को पूर्णत्व प्रदान करने के लिए पर्याप्त नहीं होते, लेकिन इस दौरान हम किसी खास दिशा में सोचने की ओर प्रवृत अवश्य होते हैं। यह हमें पस्पर रूप से विरोधी विचारों को जानने व उसके चिंतन मनन करने का मौका देता है। जब कोई युक्ति-युक्त बात कोई बच्चा या वृद्ध करें तो उसे जरूर सुनें, अगर वही विचार युक्तिहीन हो तो उस पर तनिक मात्र ध्यान नहीं देना चाहिए। इस तरह की कार्यशाला से हम पूर्णत्व की ओर आगे बढ़ते हैं। इसके पश्चात प्रतिभागियों के द्वारा अपने अनुभव को साझा किया गया, जिसमें सुश्री नेहा ओझा (प्रतिभागी शोध छात्रा, एम०फिल० जनसंचार विभाग) ने कार्यशाला के बारे में अपने अनुभव रखते हुए सुश्री नेहा ओझा ने कहा कि कार्यशाला में भारतीय दृष्टिकोण को जानने का मौका मिला। ग्रुप में शोध की अंतरदृष्टि का विकास समाज विज्ञान का बड़ा आधार है। वैज्ञानिक विधि, समाज विधि को प्रबंधन विधि के साथ जोड़कर एक व्यापक आयाम में शोध को जानने का मौका

मिला। इसी कड़ी में अपने अनुभव को साझा करते हुए महेंद्र कुमार जयसवाल (शोधार्थी, मानव विज्ञान विभाग) ने कहा कि कार्यशाला के दौरान एक दृष्टिकोण मिला भारत के स्वर्णिम अतीत को समझने का मौका मिला। समाज विज्ञान के विशेषज्ञों को जानने का और अधिक मौका मिलता तो शायद ज्यादा हम अपने शोध को समाज उन्मुख कर सकते। इसके बाद योगेश मिश्रा (शोधार्थी, हिंदी साहित्य विभाग) ने अपने अनुभव में बताया कि कार्यशाला के प्रथम दिन से ही टीमवर्क व ग्रुप वर्क के साथ काम करने के महत्व का पता चला। इस प्रकार से बारी-बारी सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने अनुभव साझा किए। इसके बाद **डॉ. विश्वजीत पेड्से** *(प्रतिनिधि, रिसर्च फॉर रिसर्जेस फाउंडेशन)* आरएफआर ने रिसर्च की गुणवत्ता को आगे बढ़ाने के काम को अपने जिम्मे लिया है। आपने बताया कि आरएफआर ने 80 विश्वविद्यालयों के साथ समझौता किया है। हमने चेन्नई से कटरा तक के विश्वविद्यालयों में यह अनुभव किया कि शोधार्थियों की जिज्ञासा को शांति नहीं मिल रही है, लेकिन महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय का माहौल शोध के लिए काफी उपर्युक्त लगा। यह वातावरण एक जागृत विश्वविद्यालय के अनुरूप है। आरएफआर इस मुहिम को आपके साथ मिलकर बहुत आगे तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके बाद इस कार्यशाला के संयोजक डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र (सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग) ने कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमारी दैनंदिन अंतःक्रिया भी शोध की प्रक्रिया है। इस कार्यशाला में संस्थान के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर विषयों को आगे रखा गया। कैसे भारत व भारतीय दृष्टिकोण को शोध के क्षेत्र में ध्यान रखकर शोध किया जाए, यह कार्यशाला का उद्धेश्य रहा और इन तीन दिनों में हम इस दिशा में आगे बढे हैं। भाषा, माध्यम व सामाजिक विज्ञान केंद्रित शोध भारत का ही नहीं वरन यह विश्व का विषय है। यह भाषा का ही प्रकाश है कि आज हम शोध में दृष्टि, नीतिमत्ता व पारस्परिक सहयोग का बना रहे है। ज्ञान के विकास की परंपरा में भाषा का भी योगदान होता है। आज हमारे समक्ष यह सवाल खड़ा है कि भारत के सापेक्ष आप रिसर्चर के रूप में अपनी भूमिका किस रूप में देखते हैं? अंत में अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल माननीय प्रति कुलपति ने कहा कि शोधकर्ताओं में सवालों के उत्तर खोजने की बेचैनी होनी चाहिए। नई विधियों द्वारा शोध दृष्टि को व्यापक बनाना चाहिए। प्रो. शुक्ल ने छात्रों का आह्वान किया कि वे संवाद की संस्कृति के भागीदार बनें। उन्होंने बल दिया कि शोध विधि के साथ शोध जिज्ञासा भी आवश्यक है। इसके लिए विद्यार्थियों को मनन करना होगा। अपने शोध की दिशा और गुणवत्ता के बारे में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के लक्ष्यों के अनुरूप शोध कार्य होने चाहिए, जिससे हम अपने दायित्व को पूर्ण कर सकें। इन्होंने बल दिया कि शोध की गुणवत्ता सुधार का दायित्व शोधकर्ता और शोध निर्देशक दोनों का होता है । हमें विषय का चुनाव करने में सतर्कता बरतनी चाहिए। यह ध्यान रखना होगा कि विषय प्रासंगिक और अर्थपूर्ण हो। प्रो. शुक्ल ने कहा कि शोध के लिए पश्चिम का स्वरूप अंतिम और पर्याप्त नहीं है। शोधकर्ताओं को तैयारी के साथ शोध की दिशा तय करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। डॉ. आदित्य चतुर्वेदी, सहायक प्रोफेसर, दूर शिक्षा निदेशालय के द्वारा आए हुए सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं इस कार्यशाला में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान करने वाले सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस प्रकार यह कार्यशाला अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने के पथ पर अग्रसर होते हुए समाप्त हुआ।

18. संकाय विकास कार्यक्रम (Faculty Development Programme) दिनांक (10-15 फरवरी, 2020)

दिनांक : 10-02-2020

प्रथम दिवस, उद्घाटन सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं मुंबई विश्वविद्यालय, ठाणे कैंपस, मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक : 10-15 फरवरी, 2020 तक 'संकाय विकास कार्यक्रम (Faculty Development Programme) का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन मुंबई विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सुहास पेड्नेकर, माननीय प्रतिकुलपति प्रो. रवीन्द्र कुलकर्णी तथा पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन के परियोजना समन्वयक एवं शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर एवं शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्टाता प्रो. मनोज कुमार तथा कार्यक्रम आयोजन सचिव डॉ. सुनीता माग्रे के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई के कुलगीत का गायन हुआ। कार्यक्रम के अगली कड़ी में कार्यक्रम सचिव डॉ. सुनीता माग्रे के द्वारा इस राष्ट्रीय कार्यशाला में आए हुए मुख्य अतिथि डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर एवं शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्टाता प्रो. मनोज कुमार का स्वागत विश्वविद्यालय के चिन्ह प्रदान कर किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** एवं प्रो. **मनोज कुमार अधिष्ठाता**, शिक्षा विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि, वर्धा

डॉ. सुनीता माग्रे ने अपने स्वागत संबोधन में सर्वप्रथम आए हुए मुख्य अतिथि एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। तत्पश्चात उन्होंने संकाय विकास कार्यक्रम के महत्वपूर्ण उद्देश्यों एवं इसकी आवश्यकताओं पर अपना जोर देते हुए प्रतिभागियों को यह भी समझाने का प्रयास किया कि कैसे सफल और सार्थक शोध अध्ययन को सुविधाजनक बनाने के लिए गुणात्मक अनुसंधान का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। इसके बाद उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुहास पेड्नेकर

एवं प्रति कुलपति प्रो. रवीन्द्र कुलकर्णी के प्रति आदर व्यक्त करते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के अधिकारियों का भी आभार व्यक्त किया। साथ ही उन्होंने हिंदी विश्वविद्यालय के PMMMNMTT प्रोजेक्ट समन्वयक डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर को उद्घाटन भाषण के लिए आमंत्रित किया।

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने अपने वक्तव्य में सर्वप्रथम **'Qualitative Paradigm of Research'** विषय पर अपना व्याख्यान प्रारंभ किया और गुणात्मक अनुसंधान के दृष्टिकोण तथा प्रतिमान गुणात्मक अनुसंधान पर इसके अवलोकन पर जोर दिया। डॉ. ठाकुर ने बताया कि शोध की चुनौतियों का सामना करने के लिए अद्यतन दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर *(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* अपना व्याख्यान देते हुए।

तत्पश्चात महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार को अपने व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। प्रो. मनोज कुमार ने अपने व्याख्यान में अनुसंधान की विधियाँ पर चर्चा करते हुए उसके दो प्रकार Quantitative और Qualitative अनुसंधान पर बात की। उन्होंने यह बताया कि आप क्या चुनते हो यह आपके शोध प्रश्नों, आपके शोध के अंतर्निहित दर्शन और आपकी प्राथमिकताओं और कौशलों पर निर्भर करेगा।

प्रो. मनोज कुमार *(अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* अपना व्याख्यान देते हुए।

इस प्रकार अपनी बात रखते हुए प्रो. मनोज कुमार ने अपनी बात समाप्त की। अंत में डॉ. सुनीता माग्रे ने मुख्य अतिथि डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर एवं प्रो. मनोज कुमार का आभार व्यक्त के साथ सत्र के समापन की घोषणा की।

प्रथम सत्र

इस सत्र के प्रारंभ में प्रो. प्रद्न्या वक्पैन्जन को अपने व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। **प्रो. प्रद्न्या वक्पैन्जन** ने अपने व्याख्यान में **'Fundamental elements of a qualitative approach to research'** पर चर्चा करते हुए इसे सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया।

द्वितीय सत्र

प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र के प्रारंभ में दुबारा मुख्य अतिथि के रूप में **प्रो. प्रद्न्या वक्पैन्जन** उपस्थित रही। उन्होंने अपने इस सत्र में **'Narrative Research'** के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। साथ ही उन्होंने इस तरह के शोध का उपयोग कर हम अपने अनुसंधान कार्य को कितना अधिक उपयोगी बना सकते हैं इसको भी स्पष्ट किया।

दिनांक : 11-02-2020

प्रथम सत्र

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में **डॉ. संजय रानाडे** को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। डॉ. संजय रानाडे ने अपने व्याख्यान में **'Field Research'** विषय पर व्याख्यान देते हुए रिसर्च के सामाजिक संदर्भ की भूमिका को समझाने का एक उत्कृष्ट तरीका बताया। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि यह जीवन के जटिलताओं को सक्षम बनाता है।

द्वितीय सत्र

आज के इस द्वितीय सत्र में **डॉ. द्न्यानेश्वर मागर** मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। जिनका व्याख्यान विषय **'Policy Research'** था। डॉ. मागर ने सत्र को संवादात्मक बनाकर नीति अनुसंधान की अवधारणा और विभिन्न उदाहरणों से इसको समझाया। डॉ. मागर ने बहुत खूबसूरती से समझाया कि अधिकांश नीति अनुसंधान बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण की व्याख्या करते हैं। डॉ. मागर द्वारा कुछ गतिविधियों के द्वारा 'Concept of Policy research' को बहुत ही सुंदर तरीके से समझाया गया।

दिनांक : 12-02-2020

प्रथम सत्र

कार्यक्रम के तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में डॉ. रीमा मनी को आमंत्रित किया गया। महोदया ने अपने सत्र में 'Phenomenology' एवं 'Grounded Theory' पर चर्चा की। उन्होंने दोनों ही विषय को गतिविधियों तथा आपसी चर्चा के

माध्यम से समझाया और कहा कि फेनोमेनोलॉजी एक शाखा है तथा उन्होंने Grounded Theory को एक व्यवस्थित कार्यप्रणाली बताया।

द्वितीय सत्र

कार्यकम के तृतीय दिवस के द्वितीय सत्र के विषय विशेषज्ञ डॉ. संध्या खेडेकर थी। महोदया ने भोजनोपरांत अपने विषय **'Qualitative Research Design'** पर व्याख्यान दिया। आपने इस विषय के बारे में जानकारी देने के बाद गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को शोध शीर्षक एवं इसके कुछ डिज़ाइन का निर्माण करके बताया तथा इस सत्र में हम गुणात्मक अनुसंधान का निर्माण किस प्रकार करे इसको भी बताया साथ ही उन्होंने उदेश्यों और उपकरणों के निर्माण के साथ इसके विश्लेषण को भी संक्षेप में समझाया।

दिनांक : 13-02-2020

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

कार्यक्रम के **तृतीय दिवस** के प्रथम सत्र में प्रो. सुग्रा चुंनावाला ने **'Qualitative Research'** को किस प्रकार लिखे इस पर अपना व्याख्यान दिया। उनके द्वारा यह भी बताया गया कि गुणात्मक शोध एक कला है उन्होंने इसके विभिन्न चरणों एवं गुणात्मक लेखन के महत्त्व को समझाया। कार्यक्रम के अगले सत्र में डॉ. दीपा चेरी ने **'Analysis of Qualitative Data'** पर अपना व्याख्यान दिया। महोदया ने यह बताया कि गुणात्मक डेटा विश्लेषण एक पुनरावृत्ति और प्रत्यवर्तानात्मक प्रक्रिया है|

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

कार्यक्रम के इस सत्र में **डॉ. सुनीता माग्रे** ने 'Vital aspect Ethnography पर चर्चा की। इससे पहले डॉ. माग्रे ने Ethnography के प्रमुख पहलुओं को समझाया। डॉ. माग्रे ने प्रतिभागियों को अलग-अलग समूहों में बाँटकर उन्हें कुछ गतिविधियों को करने के लिए दिया जिसमे आठ प्रतिभागियों ने Ethnography research को तैयार किया और उसे बहुत ही खुबसूरत तरीके से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अगले सत्र में डॉ. अभिनय कंबले ने 'Feminist perspective on qualitative research' पर चर्चा करते हुए शोध में गुणात्मक दृष्टिकोण का विस्तारपूर्वक व्याख्या की।

दिनांक : 14-02-2020

प्रथम सत्र

आज के इस कार्यक्रम के प्रथम सत्र में **डॉ. हेमलता चेरी** ने वेब एप्लीकेशन DEDOOSE में एक सत्र संचालन किया। साथ ही सभी प्रतिभागियों को इसका उपयोग करने के लिए भी प्रेरित किया और इस वेब एप्लीकेशन के उपयोग को बहुत ही आसान एवं सहयोगी बताया।

द्वितीय सत्र

चतुर्थ दिवस के द्वितीय सत्र में **डॉ. सैली अनोस** ने 'इंटरव्यू एवं ग्रुप डिस्कशन' पर सत्र का संचालन किया। साथ ही डॉ. सैली ने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इस सत्र को रोचक बनाने का प्रयास किया तथा विभिन्न गतिविधियों, उदाहरणों और बातचीत के माध्यम से अवधारणा को स्पष्ट किया गया।

दिनांक : 15-02-2020

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

कार्यशाला के अंतिम अर्थात् **पंचम दिवस** के इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में **डॉ. अंजली काले** उपस्थित थी। महोदया ने अपने सत्र में 'Citation and Referencing' के बारे में बताया। महोदया ने बताया कि हमें अकादमिक लेखन, विचार, निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए Citation and Referencing का उपयोग करना चाहिए। हमें वास्तव में Citation and Referencing को स्पष्ट रूप से समझने के लिए कंप्यूटर का प्रयोग करना चाहिए। कार्यक्रम के सभी सत्र बहुत ही महत्वपूर्ण थे। साथ ही प्रतिभागियों को QR के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया गया और बताया गया कि QR रिसर्च स्कॉलर को प्रेरित करने के लिए मदद करती है।

समापन सत्र

कार्यक्रम के समापन सत्र में डॉ. सुनीता माग्रे ने कार्यक्रम के प्रतिवेदन को पढ़ा। महोदया ने कहा कि इस संकाय विकास कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से 42 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग लिया, मैं उनका आभार व्यक्त करती हूँ कि वे इस कार्यक्रम में अपना बहुमूल्य समय निकालकर आए तथा साथ ही मैं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ कि जिन्होंने इस तरह के कार्यक्रम को आयोजन के लिए हमें उत्प्रेरित किया। साथ ही मैं अपने विश्वविद्यालय के कुलपति के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ कि वे हमें इस कार्यक्रम को सुचारू रूप में आयोजन करने के लिए सहयोग किया। तत्पश्चात डॉ. माग्रे ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के माननीय प्रतिकुलपति डॉ. चंद्रकांत रागीट को समापन सत्र के लिए आमंत्रित किया। प्रो. रागीट ने गुणात्मक अनुसंधान का महत्व बताते हुए शोध से संबंधित विभिन्न उदाहरण दिए। महोदय ने रिसर्च के दोनों प्रकार मात्रात्मक और गुणात्मक से भी अवगत कराया और इसके महत्त्व को बताया। अंत में डॉ. माग्रे ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए इस राष्ट्रीय कार्यशाला के सफल समापन की घोषणा की।

19. सभ्यता की विरासत एवं भविष्य की सभ्यता: गांधी एवं धर्मपाल की सभ्यता दृष्टि (Civilizational Legacy and Futuristic Civilization : Vision of Gandhiji and Dharampal) दिनांक (18-19 फरवरी, 2020)

दिनांक : 18-02-2020

उद्घाटन सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ एवं फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक : **18-19 फरवरी, 2020** को **'सभ्यता की विरासत एवं भविष्य की सभ्यता : गांधी एवं धर्मपाल की सभ्यता दृष्टि (Civilizational Legacy and Futuristic Civilization: Vision of Gandhiji and Dharampal)'** विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन विचारक एवं सामाजिक कार्यकर्ता **श्री के.एन. गोविंदाचार्य** एवं प्रसिद्ध गांधीवादी कार्यकर्ता **श्री कनकमल गांधी** द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**, *माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा* ने की। श्री गोविंदाचार्य जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि आज की आवश्यकता भारत की विशेषताओं के बारे में संसार को अवगत कराने की है। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. शुक्ल ने कहा कि औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति के लिए हमें भारतीय सभ्यता दृष्टि की समझ आवश्यक है।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**

द्वितीय सत्र

प्रथम दिवस के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने की। **'भारतीय शिक्षा : अंतर्वस्तु एवं प्रणाली'** विषय पर प्रो. कुसुमलता केडिया एवं डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर द्वारा भारतीय शिक्षा एवं उपनिवेशी प्रभावों

पर विस्तृत चर्चा की गई। वक्ताओं ने भारतीय शिक्षा के विभिन्न आयामों को विस्तार प्रदान करते हुए उसके सामने उपस्थित चुनौतियों को प्रस्तुत किया। इन समस्याओं के मूल स्रोतों की पड़ताल कर उन्होंने विकल्पों को सामने रखा।

तृतीय सत्र

द्वितीय दिवस के तृतीय तकनीकी सत्र में डॉ. प्रबुद्ध मिश्रा, डॉ. अमित राय, डॉ. अमरेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. मुन्ना लाल गुप्ता, डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र एवं डॉ. के. सी. पाण्डेय ने धर्मपाल जी के लेखन के विविध आयामों पर चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने गांधी विचार और धर्मपाल के लेखन की चर्चा करते हुए उसकी प्रासंगिकता को प्रकट किया।

दिनांक : 19-02-2020

प्रथम सत्र

द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र की अध्यक्षता **प्रो. चंद्रकांत एस. रागीट**, *माननीय प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा* ने की। इस सत्र में **'भारत में विज्ञान एवं तकनीक की परंपरा एवं स्वरूप'** विषय पर विषय विशेषज्ञ श्री राम सुब्रह्मण्यम एवं श्री भरत महोदय ने धर्मपालजी के लेखन के माध्यम से और अन्य अध्येताओं के लेखन से भारत में विज्ञान एवं तकनीक की परंपरा एवं स्वरूप को स्पष्ट करते हुए महत्वपूर्ण आयामों को प्रस्तुत करते हुए भारतीय समाज की समृद्धता को रेखांकित किया। अध्यक्षता कर रहे माननीय प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्राचीन वैज्ञानिक दृष्टि की परंपरा को सहजने और समयानुकूल अद्यतन करने का आह्वान किया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए **प्रो. चंद्रकांत एस. रागीट**, *माननीय प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा*

द्वितीय सत्र

द्वितीय दिवस के **द्वितीय सत्र** में 'स्वशासन एवं सविनय अवज्ञा' विषय पर **श्री के.एन. गोविंदाचार्य** की अध्यक्षता में प्रो. रामेश्वर मिश्र 'पंकज' ने अपनी बात रखते हुए भारतीय स्वशासन एवं सविनय अवज्ञा परंपराओं को रेखांकित किया। समाज की भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि के अंतर को रेखांकित करते हुए आपने भारतीय समाज के सशक्त पक्षों को सामने रखा। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री गोविंदाचार्य जी ने भारतीय समाज की धर्म परंपरा और स्व प्रेरणा गुणों को सिलसिलेवार तरीके बताते हुए धर्मपाल जी के कार्य की प्रासंगिकता स्पष्ट की।

तृतीय सत्र

द्वितीय दिवस के **तृतीय सत्र** में **'स्वदेशी विमर्श'** विषय पर **प्रो. मनोज कुमार** की अध्यक्षता में श्री प्रदीप दीक्षित ने स्वदेशी संबंधी अपने प्रयोगों को स्पष्ट किया। धर्मपालजी के साथ अपने वृहद अनुभवों को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में स्वदेशी एक महत्वपूर्ण आंदोलन है जो एक तरह से आर्थिक आजादी का पर्याय है। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. मनोज कुमार ने गांधीजी के स्वदेशी विचार को व्याख्यायित करते हुए इसकी प्रासंगिकता को बताया।

समापन सत्र

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के **समापन सत्र** की अध्यक्षता **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा** ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. शुक्ल ने स्पष्ट किया कि आधुनिकता ने मशीन और मानव के बीच मशीन की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया। गांधीजी ने इसी प्रभुता को चुनौती दी और भारतीय मानवीय दृष्टि का विकल्प प्रस्तुत किया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में 170 वक्ताओं, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इस तरह इस द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का कुशलतापूर्वक समापन हुआ।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए **माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**

20. अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियां, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य (Changing Scenario, New Trends and Innovation in Teacher Education) दिनांक (20-21 फरवरी, 2020)

दिनांक : 20-02-2020

प्रथम दिवस, उद्घाटन सत्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ के अंतर्गत शिक्षा विभाग के द्वारा **"अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य"** विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रति कुलपति सह कार्यक्रम संरक्षक **प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल**, शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता व कार्यक्रम के सह-संरक्षक प्रोफेसर मनोज कुमार, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष व संगोष्ठी निदेशक डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, मुख्य अतिथि प्रो. नीरजा शुक्ल (एन.सी.ई.आर.टी.), कार्यक्रम समन्वयक डॉ. शिरीष पाल सिंह एवं कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आर. पुष्पा नामदेव के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात विश्वविद्यालय के परंपरानुसार कुलगीत के ध्वनि का वादन किया गया। तत्पश्चात अतिथि देवो भव की परंपरा का पालन करते हुए मंचासीन मुख्य अतिथि प्रो. नीरजा शुक्ला का स्वागत प्रतिकुलपति महोदय के द्वारा सुतमाला एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया।

माननीय प्रतिकुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल दीप प्रज्जवलन करते हुए।

दो दिवसीय इस संगोष्ठी में आगत अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी निदेशक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने अपने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि हम शिक्षा में हमेशा नवाचार की बात करते हैं लेकिन उसे प्रयोग में कैसे लाया जाए यहाँ आकार हमारी चिंतन ठिठक जाती है। लेकिन आज इस संगोष्ठी में नवाचार को प्रयोग में लाने पर हम विचार करेंगे। इसी तरह आनंददायी शिक्षा कैसे प्रदान हो इस पर सालों से चर्चा चल रही है। लेकिन संपूर्णता के दिशा में हम आज भी प्रयासरत है। स्थानीय संसाधनों से नवाचार को हम गति दे सकते हैं। जब तक हमारी नवाचार में स्थानीयता से तारतम्यता नहीं स्थापित होगी तब तक हमारा नवाचारी प्रयोग अधूरा रहेगा। विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल ने अपने स्वागत भाषण में इस बात पर बल दिया कि हम संगोष्ठी के दो दिनों में देश भर से जुटे शिक्षा के विद्वान विशेषज्ञ, प्रोफेसर, शोधार्थी नवाचार कि गतिविधियों को

जागरूक कर सकते हैं। संगोष्ठी की प्रस्तावना रखते हुए कार्यक्रम समन्यवक डॉ. शिरीष पाल सिंह ने कहा कि संगोष्ठी की संकल्पना एक वर्ष पहले तय किया गया था। शिक्षक शिक्षण में हमने कौशल विकास पर अपना ध्यान लगाया है, लेकिन नई शिक्षा नीति से यह स्पष्ट हो गया है कि नई अध्यापक प्रवृतियाँ परंपरागत विषयों के साथ शुरू होने वाली है। नई शिक्षा नीति के द्वारा अध्यापक शिक्षा में ज्यादा परिवर्तन देखने को मिल रहा है। बीच में दूरस्थ शिक्षा के माध्यमों के द्वारा बी.एड, एम.एड के पाठ्यक्रम संचालित किए जाते थे जिससे ज्यादा संख्या में लोग आसानी से इस पेशे में आने लगे, जिससे गुणवत्ता पर काफी प्रभाव पड़ा, लेकिन अब अध्यापकीय शिक्षा को इस तरह से माध्यमों से दूर रखने की कोशिश की जा रही है। आज हम संपूर्ण भारत के 30 से ज्यादा विश्वविद्यालयों में विभिन्न केंद्रों के द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संभावनाओं पर काम कर रहे हैं। आज हम अध्यापकीय शिक्षा में प्रवेश की प्रक्रिया को इतना सरल बना चुके हैं कि कोई भी व्यक्ति आसानी से प्रवेश पा जाता है। इस दो दिवसीय संगोष्ठी में प्रतिभागियों के सुझावों से प्रवृतियों नवाचारों को हम शिक्षा में प्रयोग करें, ताकि हम नवीन विधाओं को जान सके। मुख्य अतिथि प्रो. नीरजा शुक्ला अपने वक्तव्य में बताया कि महात्मा गांधी की पुण्य धरती वर्धा में स्थापित इस विश्वविद्यालय ने एक नई ऊर्जा प्रदान किया है। 1986 की नई शिक्षा नीति के बाद अध्यापकीय शिक्षा में बड़ा बदलाव आया। आज नई शिक्षा नीति 2019 आ रही है। नीति में हमेशा सुझाव का स्थान होना चाहिए, ताकि अध्यापक की रचनात्मकता हमेशा बनी रहे। नीति बनाते समय हमेशा अपने सारे ज्ञान को हम उस नीति में उड़ेल देते हैं जिसके कारण जमीनी सच्चाई नीति में शामिल होने से छूट जाती है। जमीनी सच्चाई से ही हम बच्चों व अध्यापकों की स्थिति को जान कर उसे नीति में शामिल कर सकते हैं। आज स्थिति यह है कि शिक्षक कक्षा में नहीं जाता है। आज स्थिति इतनी विकट हो गई है कि जो ज्ञान हम बच्चों को देना चाहते हैं उसे शिक्षकों को आए इसका कोई प्रयास ही नहीं किया जा रहा है। जिस प्रकार गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद गोखले जी से कहा कि मैं भारत के लिए कुछ काम करना चाहता हूँ तब गोखले जी ने उन्हें भारत को समझने के लिए उन्हें घूमने का सलाह दिया था। आज उसी तरह से हम लोगों को अध्यापकों को कक्षा में भेजने से पहले पूरी जानकारी व तैयारी के साथ भेजने की व्यवस्था होनी चाहिए। अपने विशेष वक्तव्य में शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने समय सापेक्ष में बदलाव की बात कही। उन्होंने गांधीजी के बात को उद्धृत करते हुए कहा कि शिक्षा का मुख्य काम आत्मसम्मान को स्थापित करना है। यही आत्मसम्मान की भावना राष्ट्र को विकसित व समृद्ध बनाती है। हम अपने नवाचारों को पाठ्यचर्या में प्रयोग कर शिक्षा व्यवस्था को नई गति प्रदान कर सकते हैं। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में माननीय प्रति कुलपति प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल जी ने कहा कि जब पाठ्यक्रम में शिक्षक शिक्षा की बात हो तो पाठ्यक्रम का महत्व घट जाता है तथा पाठ्यचर्या का महत्व बढ़ जाता है। पाठयक्रमों की विडंबना यह है कि आज इसके बोझ तले सभी दबे हुए है। पहले के ज़माने में पाठ्यक्रम संक्षिप्त होती थी और पाठ्यचर्या लंबी होती थी। आज विद्यार्थी शिक्षक व पाठ्यपुस्तकों के ऊपर निर्भर नहीं है। लेकिन आज का आधुनिक ज्ञान का माध्यम कितना व्यवस्थित है इसका जाँच अलग विषय है। आज सीखने के लिए सिर्फ श्रव्य माध्यमों पर बल दिया जा रहा है। लेकिन अन्य इंद्रियों के प्रयोग का चलन छूटने से कही हम किसी विकलांगता के शिकार तो नहीं हो रहे हैं। उन्मुखीकरण करना ही कक्षा का मुख्य धर्म है। हम अपने नवाचारों में उन्मुखीकरण पर बल देंगे। यह इस संगोष्ठी से अपेक्षा रहेगी। धन्यवाद ज्ञापन

कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आर. पुष्पा नामदेव के द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र का सफल संचालन सहायक प्रोफेसर डॉ. तक्षा शंभरकर के द्वारा किया गया।

पैनल चर्चा प्रतिवेदन

पैनल चर्चा के लिए मंचासीन अतिथि- प्रो. हेमलता शर्मा *(महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक)*, प्रो. नीरजा शुक्ला *(एन.सी.ई.आर.टी.)*, प्रो. सतविंदर पाल कौर *(केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा)*, **डॉ. गजानन एल. गुलाने** *(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, अमरावती विश्वविद्यालय)* एवं **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** *(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग)* संयोजक सह संचालन- **डॉ. शिरीष पाल सिंह** *(सह-प्रोफेसर)* उद्घाटन सत्र के बाद पैनल चर्चा का संचालन करते हुए डॉ. शिरीष पाल सिंह ने चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए प्रो. हेमलता शर्मा को आमंत्रित किया। **प्रो. शर्मा** चर्चा की शुरुआत करते हुए अपने वक्तव्य में वैश्विक युग में शिक्षा को व्यवसाय के रूप में स्थापित करने के साथ इसके पहचान को भी बनाने पर बल दिया। आज शिक्षक के सामने पहचान का संकट खड़ा है। वकील, डॉक्टर सबका पेशा है उनकी अपनी पहचान है लेकिन अध्यापक शिक्षा आज भी अपनी पहचान के लिए मुहताज है। इस पेशा को बाजार के समक्ष एक पहचान स्थापित करने पर बल देना होगा। हमारे काम करने के तरीकों में बदलाव लाना होगा। आज बाजार के इस युग में गुणवतापूर्ण शिक्षक का निर्माण तथा बाजार से लड़ने के काबिल बनाना होगा। शिक्षा शिक्षण में नेतृत्व विकसित करना होगा ताकि हम अपने पहचान के संकट से लड़ सके। अनुशासन के मायनो ने भी शिक्षकों के सामने संकट पैदा किया है। भारतीय शिक्षा के 4 स्तंभ है– ज्ञान कैसे हासिल करें, कर्म करते रहे, उस प्रक्रिया में लिप्त रहे तथा आत्मसाक्षात्कार। तत्पश्चात **प्रो. सतविंदर पाल कौर** *(केंद्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा)* ने अपने वक्तव्य में प्रोफ़ेसर की तुलना एक अनपढ़ किसान से करते हुए कहा कि किसान धरती पर अन्न उगाता है हम अपने विचारों को नई पीढ़ी में डालते हैं। आज बदले परिदृश्य में कई सारे सवाल हमारे समक्ष खड़ा हुआ है। आज शिक्षक को पहचान क्यूँ नहीं मिल रही है क्यूंकि हमने पहचान के लिए इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया है। आज गुणवत्ता में कमी आई है। TET के परीक्षाओं से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि कितने प्रतिशत विद्यार्थी सफल हो रहे हैं। गांधी जी ने भी शिक्षकों की स्वायत्तता की बात की थी ताकि शिक्षक स्थानीय संसाधनों से प्रयोग कर सकें। हमारे शिक्षा व्यवस्था में पूर्व में ही स्किल डेवलपमेंट की बात गांधी जी ने किया था। आज हमें फिर से इन अवधारणाओं को नए परिप्रेक्ष्य में स्थापित करने की जरूरत है। इसके बाद **डॉ. गजानन एल. गुलाने** *(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, अमरावती विश्वविद्यालय)* ने अपने वक्तव्य में 1968 के शिक्षा आयोग से लेकर 2019 तक शिक्षा आयोगों और उसके बदलावों के बारे में बात कही। प्रतिवर्ष लगभग 50 लाख शिक्षक बनने के लिए बीएड़ कर रहे हैं जिसमे से 3 लाख को ही मौका मिल पाता है। इसीलिए शिक्षक शिक्षा को नौकरी केंद्रित न कर ज्ञान केंद्रित बनाने की आवश्यकता है। **प्रो. नीरजा शुक्ला** *(एन.सी.ई.आर.टी.)* ने अपने वतव्य में आंख खोलकर सीखने पर बल दिया। धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर महोदय व सफल संचालन डॉ. शिरीष पाल सिंह ने किया। विश्वविद्यालय की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मंचासीन अतिथियों का स्वागत सूत माला व स्मृति चिन्ह से किया गया।

प्रथम-सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन योजना MHRD भारत सरकार तथा शिक्षा विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वधान में **"अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य"** विषय पर दो दिवसीय (20-21 फरवरी, 2020) राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र की शुरुआत में बाहर से आए विभिन्न विषय-विशेषज्ञ एवं विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति, प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल एवं शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार एवं विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर तथा वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग के विभागाध्यक्ष, डॉ. शिरीष पाल सिंह, एवं संकाय सदस्यों के द्वारा दीप प्रज्वलन कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया।

इसके उपरांत सभी विद्वतजनों नें बारी-बारी से **"अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य"** विषय पर आंतरिक एवं बाह्य सभी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन दिया। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में बाहर से आये प्रतिभागियों ने अपना-अपना शोध पत्र का प्रस्तुतीकरण दिया। इन प्रस्तुतिकर्ताओं की संख्या नौ थी जिसमें से एक प्रतिभागी अनुपस्थित था। सभापति (chairperson) के रूप में सेंट्रल यूनिवर्सिटी पंजाब से पधारी प्रो. सतविंदर कौर थी, उप-सभापति (Co-chairperson) के रूप में संत गाडगे बाबा विश्वविद्यालय अमरावती से आए डॉ. गजानन एल. गुल्हाने एवं संयोजक (Convener) के रूप में शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र और सहायक प्रोफेसर समरजीत यादव थे और रिपोर्टर (Rapporteurs) के रूप में सहायक प्रोफेसर डॉ. रजनीश अग्रहरी, रिसर्च स्कॉलर श्री गुलशन कुमार, श्री दीपेन्द्र बाजपेयी। इस सत्र में सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने शोध पत्र के माध्यम से "अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य" विषय पर शिक्षा में नवाचार लाने की बात कही जो निम्नलिखित हैं।

- प्रीती साहू

  विषय- अध्यापक शिक्षा में नवाचार के प्रतिमान और प्रासंगिकता,

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से बताया की शिक्षक-शिक्षा में किस प्रकार से नवाचार लाया जा सकता है और साथ ही साथ स्मार्ट क्लासेस का शिक्षा में क्या योगदान हो सकता है, छात्र स्मार्ट क्लास के माध्यम से किस प्रकार अपने ज्ञान का विस्तार कर पाएंगे।

- अर्शदीप

  विषय- Teacher Education in contemporary India : Addressing the concerns of quality vs. Quantity

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से Local challenge, Profection, Teaching Profection, Examination System, Personal and Social Skill, Subject knowledge इत्यादि विषयों पर बात की।

- अतुल कुमार

विषय- भविष्य के अध्यापक एवं अध्यापक शिक्षा में नवाचारिक अनुप्रयोग

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से बताया की अध्यापक शिक्षा में नवाचार किस प्रकार लाया जा सकता है, समूह शिक्षण किस प्रकार से प्रभावी बनाया जा सकता है और साथ ही इन्होंने बताया की गुजरात में पहले- पहल शिक्षक शिक्षा की बात की गई।

- गोपिकांत सुना

विषय- Multidimensional competencies teachers for professional development in 21st century

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से इक्कीसवी सदीं की शिक्षा की बात की जिसके अंतर्गत इन्होंने बताया कि इस सदी में शिक्षा में क्या-क्या नवाचार होगा। और क्या-क्या बदलाव होना चाहिए शिक्षा किस प्रकार की होनी चाहिए, शिक्षा की गुणवत्ता, ज्ञान, TLM, शिक्षक का ज्ञान कैसा हो आदि पर बात की।

- शशि रंजन

विषय- आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र के माध्यम से शिक्षक व्यवसाय में पुनरुत्थान

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से कुछ प्रश्नों को खड़ा किया कि विचार क्या हैं? क्या विचार करना चाहिए? किस बात पर विचार करना चाहिए? और बताया कि शिक्षक किसी विशेष विचारवाद का समर्थक नहीं होता। इसके अलावा राजनीतिक ज्ञान, कक्षाओं की समस्या आदि पर बात की।

- संजीव राज

विषय- वर्तमान परिदृश्य में अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार- आलोचनात्मक विवेचन

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से NCF को आधार बनाकर कई सारी बाते कहीं, और रुब्रिक, समावेशी शिक्षा, नीति नवीन चुनौतियाँ, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद आदि को दर्शाया।

- वेंकटेश्वर मेहर

विषय- Emotional Intelligence and academic performance of four-year Integrated B.Ed Trainees.

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से Emotional intelligence, Self Awareness, motivation इत्यादि के विषय में बताया।

- डॉ. गंगा महतो

विषय- AI (Artificial Intelligence) Teacher and the changing role of Humen teacher in teaching learning Process

इन्होंने अपने पेपर Artificial Intelligence के माध्यम से उदाहरण देते हुए बताया कि रोबोर्ट के द्वारा हम सारे काम करवा सकते हैं लेकिन हम उससे सामाजिकता नहीं ला सकते, हम भावों को पूर्ण रूप से प्रकट नहीं करवा सकते। रोबोर्ट केवल एक प्रोग्राम की भांति काम करता हैं उसे जितना निर्देश देंगे उतना ही कार्य करेगा। उपरोक्त आठ प्रतिभागियों के प्रस्तुतीकरण के बाद सभापति (chairperson) एवं उप सभापति (Co-chairperson) ने सभी प्रतिभागियों के शोध पत्र के विषय में विचार व्यक्त किए और साथ ही साथ उनकी अच्छाइयाँ एवं कमियाँ दोनों बताकर सभा का समापन किया।

द्वितीय-सत्र

अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियां, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य पर राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रथम दिवस उद्घाटन समारोह के बाद द्वितीय तकनीकी सत्र की शुरुआत कक्षा संख्या 206 में हुई। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. मुनेश कुमार *(सह-प्रोफेसर, कानपुर विश्वविद्यालय)* तथा सह-अध्यक्षता डॉ. कीर्ति सदार *(कवि कुलगुरु संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक)* ने की। सत्र में संयोजक की भूमिका में डॉ. शिल्पी कुमारी, डॉ. पुष्पा नामदेव *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* रहीं। सत्र में डॉ. हीरा राजवानी ने "Recent Initiative in Teacher Education" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। डॉ. हीरा ने चार वर्षीय समन्वित अध्यापक- शिक्षा कार्यक्रम की चर्चा करते हुए योगा, मानव-मूल्यों, शोध, अभ्यास शिक्षण, शिक्षण सहभागिता पर अपने विचार रखे। उन्होंने वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमियों को बताते हुए उपाय रखे। इसी क्रम में डॉ. शबाना अशरफ (मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय) ने **"वर्तमान शिक्षा परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की बदलती भूमिका"** पर शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए प्राचीन समय से आधुनिक समय में शिक्षकों की भूमिका को सामने रखा। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग में शिक्षक की भूमिका बहू-आयामी बन गई है इस युग में शिक्षक शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए आईसीटी यानि इंटरनेट का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे शिक्षक की भूमिका चुनौती पूर्ण है अब शिक्षक ज्ञान को स्थानांतरित नहीं करते बल्कि ज्ञान की रचना करने मे विद्यार्थियों के लिए सूत्रधार की भूमिका का निर्वहन करते हैं। इंटरनेट की सुविधा आ जाने से घर घर, गाँव-गाँव तक बच्चे इसका उपयोग कर रहे हैं अब विद्यार्थियो के लिए विषय वस्तु से संबंधित कोई भी जानकारी पल भर मे मालूम करना मुश्किल नहीं है बल्कि वे सेकेंड्स मे ऐसा कर लेते हैं। निष्कर्ष स्वरूप में डॉ. शबाना ने कहा कि इन सब चुनौतियों से यह साफ ज़ाहिर होता है कि शिक्षक की इस बदलती भूमिका कितनी चुनौतीपूर्ण है वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों को समाज सुधारक, समाज को दिशा देने वाला, देश को अग्रसर करने वाला कहना गलत नहीं होगा बल्कि पूरे देश का भविष्य, उसमें रहने वालों के आपसी रिश्ते सब शिक्षकों की बदलती भूमिका से कहीं न कहीं प्रभावित हैं। सत्र में तृतीय शोध पत्र वाचक के रूप में डॉ. रेणु यादव (शिक्षा विद्यापीठ, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय) ने "Curriculum

Transaction through Social Teaching Practices in Teacher Education" विषय पर बात करते हुए सामाजिक शिक्षण अभ्यास के आयामों को बताया जिसमें छात्र-केंद्रित अनुशासन, शिक्षक भाषा, शिक्षक उत्तरदायित्व तथा विकल्प, कक्षागत परिचर्चा, सहकारी शिक्षा शामिल थे। अगली कड़ी में डॉ. शेष कुमार शर्मा तथा डॉ. भरत कुमार पंडा ने "मुक्त एवं दूरस्थ अध्यापक शिक्षा में इलेक्ट्रॉनिक्स अधिगम : एक विश्लेषण" विषय पर शोध-पत्र प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्तमान समय में विद्यार्थी, शिक्षक से आगे सोचते हैं ऐसे में शिक्षकों को और बेहतर होने की आवश्यकता है। शिक्षकों को समावेशी होने की आवश्यकता है। इसके बाद डॉ. पंडा ने विषय के प्रस्थापन के बारे में बताते हुए कहा कि शिक्षा में तकनीकी के साथ संवेगों को भी जोड़ना होगा। उन्होंने कहा कि विषय-वस्तु निर्माण करने के लिए सिर्फ माध्यम महत्वपूर्ण नहीं संवेगों को भी इसमें शामिल करना होगा, क्योंकि विषय-वस्तु को जानने के साथ मानना भी महत्वपूर्ण है दोनों अलग अलग पहलू हैं। सिर्फ शिक्षक ही ज्ञान पुंज के रूप में नहीं होना चाहिए। सत्र के पंचम शोध पत्र वाचक के रूप में श्री आशीष कुमार (शोधार्थी, शिक्षा विभाग) ने "राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय के शैक्षणिक नवाचारों की अवस्थिति : व्यष्टि अध्ययन" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने शोध अध्ययन हेतु गुणात्मक शोध-विधि प्रयोग कर दिल्ली राज्य में स्थित राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय के 20 अध्यापकों का उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन द्वारा चयन कर अपना अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने पाया कि विद्यालय में मुख्य नवाचार जिसमें TSIP (Teacher-Student Interaction Period) शिक्षक छात्र अंत: क्रिया कक्षा, CAC (Cultural Activities Classes) सांस्कृतिक गतिविधि कक्षाएँ, LWD (Last Working Day) अंतिम कार्य दिवस कोलोकियम, YLP (Young Leadership Program) युवा नेतृत्व कार्यक्रम, PG (Pedagogic Gossips) शिक्षाशास्त्रीय गपशप, RAAD (Research and academic development) शोध एवं अकादमिक विकास समूह है इनके कारण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उच्च स्तरीय हो जाता है, अर्थात शैक्षिक स्तर के साथ-साथ सामाजिक स्तर का भी विद्यार्थियों में विकास होता है। षष्ठ शोध पत्र वाचक के रूप में श्री अरविन्द कुमार मिश्र ने "हिंदी माध्यम से अध्यापक शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ एवं उभरती चुनौतियाँ" विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने अध्यापक शिक्षा में शोध की कमी को सामने रखा। कार्यक्रम की अगली कड़ी में विभाग के शोधार्थी श्री अभिषेक वर्मा ने "डिजिटल डिवाइडेशन : अध्यापक शिक्षा के सन्दर्भ में" विषय पर डिजिटल डिवाइडेशन और आईसीटी की भूमिका को प्रस्तुत किया। अष्टम शोध पत्र वाचक के रूप में श्री विनोद पाल (शोधार्थी, शिक्षा विभाग) ने "अध्यापक शिक्षा में प्रतिमान विस्थापन : अपरिहार्य आवश्यकता" विषय पर प्रतिमान विस्थापन की आवश्यकता : क्यों, नीतिगत विकास- सत्ता का प्रभाव, पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन, अध्यापक का कार्य-व्यवहार : उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही, भाषा एवं आई.सी.टी., विभागीय नेतृत्व : समन्वय का सवाल आदि मुद्दे उठाते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए। सत्र के अंतिम शोध पत्र वाचक के रूप में श्री देवेन्द्र यादव (शोधार्थी, शिक्षा विभाग) ने "Constructivism: A Child Centered Education" विषय पर निर्माणवाद में विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा पर विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि ज्ञान का निर्माण किया जाना चाहिए। अंत में सत्र की सह अध्यक्ष डॉ. कीर्ति सदार ने सभी शोध पत्रों के निष्कर्ष को बताया। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. मुनेश कुमार ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अध्यापक शिक्षा में शोध को और बेहतर करने की बात कही।

दिनांक : 21-02-2020

प्रथम सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन योजना MHRD भारत सरकार तथा शिक्षा विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वधान में **"अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य"** विषय पर दो दिवसीय (20-21 फरवरी, 2020) राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन में संगोष्ठी के द्वितीय दिवस के अंतर्गत संगोष्ठी के प्रथम सत्र की शुरुआत में बाहर से आए विभिन्न विषय-विशेषज्ञ के रूप में सभापति (chairperson) प्रो. अनीता नुना एवं उप-सभापति (co-chairperson) डॉ. चित्रा सिंह और (convener) के रूप में शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. शेष कुमार शर्मा एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. आर.पी. पाण्डेय थे। इसके उपरांत सभी प्रतिभागियों नें बारी-बारी से "अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य" विषय पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया। इन प्रस्तुतकर्ताओं की संख्या दस थी|

- डॉ. प्रीती सक्सेना

विषय- "A Qualitative Study of Constructivist Practiec in Teacher Education"

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से 5E पर चर्चा करते हुए कहा कि सीखना बच्चों में स्वयं का दृष्टिकोण विकसित करना है।

- जयंत मनोहर राव

विषय- "बदलते परिवेश में शिक्षकों की भूमिका"

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से बताया कि आज शिक्षक शिक्षण के सिवाय अन्य कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षक शिक्षा देने वाली संस्थाओं पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

- मदन सिंह देउपा

विषय- "Current Trends and Research in Teacher Education"

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से बताया कि भारत एवं नेपाल इतना प्राचीन देश होते हुए भी विकास में कई अन्य देशों से बहुत आगे निकल चुका है जिसका मुख्य कारण शिक्षा है इसमें शिक्षकों की अभिवृति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। और इन्होंने सेकेंडरी डाटा के माध्यम से कहा कि भारत में 25 प्रतिशत शिक्षकों की अभिवृति शिक्षा के प्रति सकारात्मक नहीं है।

- मयाशंकर यादव

विषय- "प्राथमिक स्तर पर कहानी विधि का महत्व एवं उसके प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण"

इन्होंने कहा कि कहानी के माध्यम सोशल साइंस, साइंस आदि विषयों को पढ़ाने से छात्रों की उपलब्धि में वृद्धि होगी, छात्रों की संकल्पना शक्ति का विकास होगा।

- मौसमी कुमारी

विषय- "Studys perception Towards Professional Ethics of Teacher Education"

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से बताया कि शिक्षक का कक्षा में नैतिक आचरण का महती प्रभाव पड़ता है। कई सारे शिक्षक, छात्रों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार करते हैं शिक्षक, छात्रों की पसंद एवं नापसंद को ज्यादा वरीयता देते हैं।

- अभिषेक कुमार

विषय- "वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा शिक्षकों की बदलती भूमिका"

इन्होंने शिक्षा प्रणाली को बताते हुए कहा की सभी शिक्षकों को सृजनात्मक होना चाहिए। उन्हें वर्तमान के साथ-साथ भूतकाल को लेकर शिक्षा देनी चाहए।

- अनामिका यादव

विषय- "मूल्य संवर्धन में शिक्षा की भूमिका"

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से बताया कि समाज उत्थान में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, कक्षा के पाठ्यक्रमों में नैतिकता और आध्यात्मिक शिक्षा को शामिल करना चाहिए।

- कुमारी यशवंती यादव

विषय- "जीवन कौशल शिक्षा के विकास में अध्यापक की भूमिका"

इन्होंने शिक्षा में समूह की भूमिका के बारे में बताया और इन्होंने कस्तूरबा विद्यालय का उदाहरण लेते हुए बताया कि कार्यक्रम की गुणवत्ता में किस तरह सुधार लाना चाहिए।

- पूजा कुमारी साह

विषय- "अध्यापक शिक्षा में नवाचार"

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से बताया कि नवाचार के माध्यम से कैसे छात्रों को पढ़ाया जाए और इन्होंने छत्तीसगढ़ का उदाहरण देते हुए बताया कि अच्छे स्वास्थ के द्वारा ही शिक्षा को उक्त बनाया जा सकता है, इनके पेपर का केंद्र बिंदु नवाचार और स्वास्थ्य था। उपरोक्त प्रतिभागियों के प्रस्तुतीकरण के बाद सभापति (chairperson) प्रो. अनीता नुना एवं उप-सभापति (co-chairperson) डॉ. चित्रा सिंह ने सभा में उपलब्ध सभी प्रतिभागियों, शोधार्थियों को प्रश्न पूछने को आमंत्रित किया और उनके प्रश्नों पर चर्चा कर प्रतिभागियों के पेपर से संबंधित सुझाव दिए और सभा का समापन किया।

द्वितीय सत्र

आज संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता **डॉ. चित्रा सिंह** *(एसोशिएट प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल)* तथा सह अध्यक्षता **डॉ. रेणु यादव** *(सहायक प्रोफेसर, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़, हरियाणा)* द्वारा किया गया। इस सत्र का समन्वयन शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रजनीश अग्रहरी व डॉ. अप्रमेय मिश्र द्वारा किया गया। इस सत्र में कुल 5 शोधार्थियों तथा 3 सहायक प्रोफेसर ने अपने शोध पत्रों का वाचन किया। इस सत्र में **'अध्यापक शिक्षा में नवाचार व अध्यापक शिक्षा में तकनीकी तथा बालकेंद्रित शिक्षा में शिक्षकों की बदलती भूमिका'** पर चर्चा की गई। सभी प्रतिभागियों के शोध पत्र वाचन के उपरांत लोगों के द्वारा उनके शोधपत्र से संबंधित प्रश्नों को पूछा गया जिसका उत्तर संबंधित शोधार्थियों ने दिया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए **डॉ. चित्रा सिंह, डॉ. रेणु यादव एवं अन्य संकाय सदस्य**

तत्पश्चात उन प्रश्नों से संबंधित अन्य पक्षों को मंचासीन विद्वानों ने अपने-अपने अनुसार प्रतिभागियों को समझाया। डॉ. रेणु यादव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शोध पत्र लिखते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि शोध पत्र गुणवत्तापूर्ण हो। शोध पत्र ऐसा हो जिसमें रिफलेक्शन नही दिखाई देना चाहिए। उन्होंने सभी के शोध पत्रों की सराहना करते हुए कहा कि सभी के शोध पत्र के शीर्षक व प्रस्तुतीकरण अच्छा रहा। डॉ. चित्रा सिंह ने शोध पत्रों की प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि अध्यापक शिक्षा में नैतिक सुधार के लिए यह आवश्यक है कि हम गांधी-दर्शन व गांधी जी की शिक्षा को जाने व समझें।

गांधी जी ने कहा था कि कक्षा नियमित रूप से चलनी चाहिए जो बालकों के लिए रुचिपूर्ण तथा आकर्षक होनी चाहिए। गांधी जी की शिक्षा न केवल हमें शिक्षित ही करती हैं अपितु जीविकोपार्जन हेतु हमें सक्षम बनाती हैं। गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरा प्रयोग' के विषय में बात करते हुए डॉ. चित्रा सिंह ने कहा कि गांधी जी की आत्मकथा को छात्रों को पढ़ाना चाहिए तथा इसे पाठ्यक्रम में भी शामिल करना चाहिए। इस सत्र के समापन पर धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अप्रमेय मिश्रा द्वारा किया गया तथा मंच का संचालन डॉ. रजनीश अग्रहरी द्वारा किया गया।

तृतीय सत्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ के अंतर्गत शिक्षा विभाग के द्वारा **"अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियां, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य"** विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तीसरे तकनीकी सत्र का आयोजन कमरा संख्या 206 में किया गया। जिसमें भारत के विभिन्न प्रांतों से आए प्रतिभागियों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। दूसरे दिन के तीसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. चंद्रकांत राघो बावीस्कर *(एस.आर.टी.एम, नांदेड)* व सह अध्यक्षता डॉ. शबाना अशरफ *(मौलाना अब्दुल कलाम यूनिवर्सिटी, भोपाल)* ने किया। मंचासीन अतिथियों का स्वागत शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. भरत कुमार पंडा व सहायक प्रोफेसर डॉ. धर्मेन्द्र शंभरकर के द्वारा स्मृति चिन्ह व सूतमाला से किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित विद्यार्थियों, शोधार्थियों व प्राध्यापकों के द्वारा अपने-अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किया।

सत्र की अध्यक्षता करते प्रो. चंद्रकांत राघो बावीस्कर, डॉ. शबाना अशरफ एवं अन्य संकाय सदस्य

सर्वप्रथम जी.टी.वी. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन बिलासपुर की सहायक प्रोफेसर **कामिनी जांगडे** के द्वारा **"वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका"** विषयक शोध-पत्र प्रस्तुत किया गया। अपने शोध-पत्र के माध्यम से कामिनी जांगडे के द्वारा वर्तमान शिक्षा प्रणाली के गुण-दोष के तरफ इशारा किया गया। मुख्य रूप से गुणवत्ता प्रबंधन, समेकित शिक्षा, आयोग व समितियों, शिक्षा में विस्तार सहित कई बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया। साथ ही साथ अपने शोध पत्र में उन्होंने वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका व उसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों पर भी प्रकाश डाला।

द्वितीय शोध-पत्र महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शोधार्थी (पी-एच. डी.) श्री जयवीर सिंह नेगी व गुलशन कुमार के द्वारा संयुक्त रूप से **"ROLE OF ICT IN LOOMING INNOVATION IN PEDAGOGY OF MATHEMATICES"** विषयक शोध-पत्र प्रस्तुत किया गया। इस शोध-पत्र के अंतर्गत शोधार्थी जयवीर सिंह नेगी के द्वारा गणित में किस तरह नवाचार का प्रयोग कर सुगम शिक्षण बनाया जा सकता है उसके भिन्न-भिन्न पद्धतियों को उदाहरण द्वारा प्रस्तुत किया गया।

तृतीय शोध-पत्र महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शोधार्थी (पी-एच. डी.) शमीमा अंसारी द्वारा **"ICT INTEGRATION IN MADRASA EDUCATION: PROSPECTS AND CHALLENGES"** विषयक शोध-पत्र पढ़ा गया। शोध पत्र में मदरसा में परंपरागत शिक्षण विधि को विश्वसनीय मानने की बात कही गई। साथ मदरसा में ICT का प्रयोग नहीं होने के पीछे बिजली की कमी, तकनीकी की जानकारी का अभाव, शिक्षक-शिक्षिकाओं की कमी सहित तकनीक पर अविश्वास जैसे सवालों को खड़ा किया।

चतुर्थ शोध-पत्र महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शोधार्थी (पी-एच. डी.) सौरभ कुमार के द्वारा "अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का समावेशन : मुक्त शैक्षिक संसाधनों की कमी" विषयक शोध-पत्र प्रस्तुत किया गया। अपने शोध-पत्र में मुक्त शैक्षणिक संसाधनों NROCER, MERIOT को बनाने तथा उसके साथ ही मुक्त शैक्षणिक संसाधन भंडार जैसे- यू-ट्यूब, टीचर -ट्यूब, शलाइड शेयर की जानकारियों को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया। उसी के साथ अध्यापक शिक्षा में मुक्त शैक्षिक संसाधनों पर प्रकाश डाला।

पंचम शोध-पत्र महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की शोधार्थी (एम. फिल.) चंचल कुमारी द्वारा "अध्यापक शिक्षा में भाषा का सवाल" विषयक शोध-पत्र प्रस्तुत किया गया। शोध-पत्र के माध्यम से भाषा के कई अहम् सवालों को उठाते हुए भाषा का महत्व समझाया। साथ ही उन्होंने भाषा के महत्व को विज्ञान के कई उदाहरणों द्वारा भी प्रस्तुत किया। पाठ्यक्रम में भाषा के महत्व को समझाने के लिए विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करते हुए कहा कि उद्धेश्य के आधार पर तो पाठ्यक्रम की व्यवस्था की गई है किंतु उसमें प्रयुक्त पाठ्यक्रम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उतने लाभकारी नहीं है। साथ ही अपने शोध-पत्र के माध्यम से शिक्षण सिद्धांत की बात बताई।

षष्टम शोध-पत्र की प्रस्तुति महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एम.एड. द्वितीय वर्ष की छात्रा शशि पाण्डेय, हिना, दिव्या ने **"हिंदी माध्यम से अध्यापक शिक्षा में समसामयिक समस्या तथा चुनौतियां"** विषयक शोध-पत्र प्रस्तुत किया। कैसे अध्यापक शिक्षा में अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी के किताबों का अभाव पर प्रकाश डाला। ई-अधिगम तथा आई.सी.टी. संबंधित समस्या पर अपने विचार प्रकट किया।

सप्तम शोध-पत्र क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के सहायक प्रोफेसर अरुणाभ सौरभ के द्वारा "अध्यापक शिक्षा में बहुभाषिकता : समाधान के रूप में" विषयक शोध-पत्र रखते हुए बताया कि अध्यापक बहुभाषिक होना चाहिए। NFS-2005

में बहुभाषिकता का उल्लेख किया गया है। बहुभाषिकता के महत्व एवं समझ पर प्रकाश डाला गया है। बहुभाषिकता हमारे बीच एक शैक्षणिक परिणाम लेकर आने वाली है।

अष्टम शोध-पत्र महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा शिक्षा विभाग के सहायक अध्यापक डॉ. रजनीश अग्रहरि द्वारा "सूचना समर में शिक्षक शिक्षा : गुणवत्ता के मापदंड एवं संवर्धन की प्रवृतियाँ" विषय पर प्रकाश डालते हुए शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता पर बल दिया। उन्होंने गुणवत्ता के मायने एवं मापदंड को जानने व उसे परिभाषित करने की आवश्यकता पर बल दिया। शिक्षक शिक्षा में ज्ञान की वैधता, अनुभवजन्य ज्ञान, इन्द्रियानानुभूत ज्ञान के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्रस्तुत किया। सत्र का सफल संचालन सहायक प्रोफेसर श्री संजीव राज ने किया।

चतुर्थ सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन योजना MHRD भारत सरकार तथा शिक्षा विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वधान में **"अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य"** विषय पर दो दिवसीय (20-21 फरवरी, 2020) राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन में संगोष्ठी के द्वितीय दिवस के अंतर्गत संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की शुरुआत में बाहर से आए विभिन्न विषय-विशेषज्ञ के रूप में सभापति (chairperson)

प्रो. हेमंत लता शर्मा एवं उप-सभापति (co-chairperson) डॉ. प्रीति सक्सेना और (convener) के रूप में शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सरिता चौधरी एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. भरत कुमार पंडा और रिपोर्टर (Rapporteurs) के रूप में सहायक प्रोफेसर श्री धर्मेन्द्र शंभरकर, रिसर्च स्कॉलर श्री आशुतोष कुमार विश्वकर्मा, श्री गौरी शंकर ठाकुर थे। इसके उपरांत सभी प्रतिभागियों नें बारी-बारी से **"अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ, नवाचार तथा बदलता परिदृश्य"** विषय पर अपना-अपना प्रस्तुतीकरण दिया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए **प्रो. हेमंत लता शर्मा, डॉ. प्रीति सक्सेना** एवं अन्य संकाय सदस्य

इन प्रस्तुतकर्ताओं की संख्या दस थी जिसमें से आठ प्रतिभागियों ने बारी-बारी से अपना प्रस्तुतीकरण दिया जो निम्नलिखित हैं।

1. श्री सुमित गंगवार और डॉ. सरिता चौधरी

विषय- "शिक्षण वृति के गुणवत्ता संवर्धन में निर्माणवादी शिक्षा दर्शन की भूमिका"

इनका पेपर Conceptual based था इन्होंने अपने पेपर में NCT, NCF, जीन पियाजे की पुस्तक, जोर्ज कैली को कोट करते हुए बताया कि शिक्षा व्यवस्था को निर्माण की तरफ देखना चाहिए तथा शिक्षा के दर्शन को शिक्षा में साथ लेकर चलना चाहिए।

2. प्रवीण सिंह कुशवाहा

विषय- "अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार एवं संस्थागत पहल अध्ययन "

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से बताया की अध्यापक शिक्षा में किस प्रकार सुधार लाया जाए, अध्यापक शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक कौन-कौन से होते हैं? शिक्षकों में नैतिकता व सामाजिकता का भाव पैदा करना होगा, पाठ्यक्रम को नवमानवतावादी होना चाहिए।

3. जयेंद्र आर. मेश्राम

विषय- "समूह गतिशीलता-कक्षा अधिगम में निर्देशात्मक नेतृत्व"

इन्होंने कहा कि शिक्षा का केंद्र बिंदु छात्र होता है और विद्यार्थी शिक्षक प्रबंध शिक्षा में तकनीकीकरण का प्रयोग, समूह गतिशीलता, फोर्मिंग, नोर्मिंग आदि विषयों पर बात की।

4. मुईन मकबूल मीर

विषय- "Constructivist Approach of Teaching and Educationl Attitude A study"

इनका पेपर पूर्णरूप से मात्रात्मक था, इन्होंने अपने पेपर में न्यादर्ष के रूप में 60 छात्रों को लिया है और इन्होंने प्री टेस्ट और पोस्ट टेस्ट का प्रयोग किया और परिणाम इनके द्वारा बनाई परिकल्पना का सकारात्मक था।

5. अनूप कुमार सिंह

विषय- "गुणवत्तापूर्ण अध्यापक शिक्षा के संवर्धन में नयी तालीम शिक्षण पद्धति की भूमिका"

इन्होंने कहा की नई तालीम में व्यावहारिक रूप में दी जाने वाली शिक्षा होती है, इन्होंने नई तालीम के प्रारूप के बारे में बताया।

बेसिक शिक्षा के कार्यक्रम की अवधि सात वर्ष की थी, नई तालीम में शिक्षा मात्र भाषा में दी जाती हैं।

6. वर्तिका सिंह

विषय- "गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए अध्यापक संवर्धन"

इन्होंने अपने पेपर में आदिवासी बालकों पर कार्य किया है इन्होंने बताया कि आदिवासी बालकों को किस प्रकार शिक्षकों को शिक्षा देनी चाहिए और आदिवासी बालकों में विकलांग, हासिये, मानसिक मतान्धता वाले बालकों को किस प्रकार से शिक्षा दी जाए।

7. आशुतोष उपाध्याय

विषय- "अध्यापक शिक्षा का संवर्धन हेतु नीतिगत प्रयास"

इन्होंने अपने पेपर के माध्यम से व्यावहारिक चर्चा की जैसे- इन्होंने कहा कि जिस व्यक्ति का भविष्य खतरे में है, वह शिक्षक बनना चाहता है, जो छात्र बेकार है वह बी.एड करना चाहता है और इन्होंने विभिन्न विद्यालयों का उदाहरण देते हुए कहा की विद्यार्थी केवल हाजरी लगाने विद्यालय जाता है। इससे शिक्षक व छात्र दोनों का हनन हो रहा हैं। इनके पेपर के प्रस्तुतीकरण के बीच में ही रोककर बाहर से आए विषय-विशेषज्ञ प्रो. नीरजा शुक्ला ने इनके पेपर पर सुझाव व्यक्त किया।

उपरोक्त प्रतिभागियों के प्रस्तुतीकरण के बाद सभापति (chairperson) प्रो. हेमलता शर्मा ने सभा में बैठे सभी प्रतिभागियों को प्रश्न पूछने के लिए निमंत्रण दिया और उनके सवालों के जबाब दिए। उसके उपरांत उन्होंने कुछ सुझाव दिए जो निम्नलिखित हैं-

1. प्रतिभागियों को पेपर की गुणवत्ता में सुधार लाने की आवश्यकता है।
2. पेपर में प्रतिभागियों को डाटा के माध्यम से अपनी बात रखना चाहिए।
3. पेपर का प्रस्तुतीकरण देने से पूर्व यह बता देना चाहिए कि पेपर का रूप कौन-सा है।
4. प्रतिभागियों को अपने विषय पर अच्छी समझ हो तभी पेपर का प्रस्तुतीकरण देना चाहिए।

इनके सुझाव के उपरांत शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सरिता चौधरी एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. भरत कुमार पंडा ने भी अपने-अपने सुझाव देकर सभा का समापन किया।

21. संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम (Faculty Induction Programme) दिनांक (24 फरवरी से 24 मार्च, 2020)

दिनांक : 24-02-2020

उद्घाटन सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा **दिनांक : 24-02-2020 से 24-03-2020** तक "**संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम चरण – 3**" का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर **रजनीश कुमार शुक्ल** की अध्यक्षता में किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय कुलपति प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल, विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित प्रोफेसर **कृपाशंकर चौबे**, *विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, जनसंचार विभाग, म.गां.अं.हिं.वि.वि. वर्धा*, संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के संयोजक एवं अध्यक्ष शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हिं.वि.वि. वर्धा के डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर एवं सह-संयोजक डॉ. शिरीष पाल सिंह के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया।

विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर **रजनीश कुमार शुक्ल कार्यक्रम** की अध्यक्षता करते हुए|

तत्पश्चात डॉ. ठाकुर के द्वारा माननीय कुलपति का स्वागत सूत माला और बुके प्रदान कर किया गया। इसके बाद डॉ. शिरीष पाल सिंह ने मुख्य अतिथि प्रो. कृपाशंकर चौबे का स्वागत सूतमाला पहनाकर किया। डॉ. ठाकुर ने अपना स्वागत वक्तव्य देते हुए सभी प्रतिभागियों से आशा व्यक्त की कि संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम से सभी प्रतिभागी निश्चित ज्ञानार्जन कर विभिन्न विशेषज्ञों के ज्ञान से लाभान्वित होंगे। इसके बाद डॉ. शिरीष पाल सिंह ने इस संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। तत्पश्चात विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रोफेसर कृपाशंकर चौबे ने '**कर्त्तव्य एवं अधिकार**' के संदर्भ में विस्तारपूर्वक व्याख्यान प्रस्तुत किया। आपने अपने वक्तव्य में अधिष्ठाता बनने की योग्यता पर विस्तार से चर्चा की एवं बताया कि संकाय एवं विभाग को सुचारु रूप से चलाने में अधिष्ठाता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इस सत्र में सभी प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

आज के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रोफेसर **अवधेश कुमार शुक्ल**, *हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, म.गां.अं.हिं.वि.वि. वर्धा* ने 'व्यक्तित्त्व विकास एवं मूल्यांकन' विषय पर अधिगमपरक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने सहृदय की अवधारणा, जीवन में सुभाषित वाक्यों का पालन करना, व्यक्तित्त्व के स्वरूप : कमलवत, खञ्जनवत, मीनवत, मृगवत एवं व्यक्ति के धर्म : निज धर्म, व्यक्ति धर्म, परिवार धर्म, राष्ट्र धर्म, अंतरराष्ट्रीय धर्म; व्यक्तित्त्व : इड, इगो और सुपर इगो, व्यक्तित्त्व में अंलकारों का होना, वाक् संयम विश्व मैत्री की प्रथम सीढी एवं राम के व्यक्तित्त्व में शक्ति, शील और सौंदर्य आदि पर व्याख्यान दिया।

प्रो. अवधेश कुमार शुक्ल, *प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, म.गां.अं.हिं.वि.वि. वर्धा* अपना व्याख्यान देते हुए|

दिनांक **24-02-2020** एवं **26-03-2020** तक सभी प्रतिभागियों ने विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'अहिंसा का दर्शन एवं गाँधी' विषय पर आए हुए व्याख्याताओं से ज्ञानार्जन प्राप्त किया।

दिनांक : 27-2-2020

आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. दीपक चव्हाण**, *तिलक कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, पुणे* ने मिश्रित अधिगम वातावरण में ई-मूल्यांकन कैसे किया जाता है?, पर विस्तार से चर्चा की, जिसमें उन्होंने Google Sites, Quiz Apps, Sites for creating e-Portfolio, Blog एवं ई-मूल्यांकन की सीमाएँ आदि के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया और इसके साथ ही साथ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला। आज के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. अमित गौतम, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, आगरा ने 'कृत्रिम बुद्धि की उपयोगिता एवं वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिता' विषय पर व्याख्यान दिया।

दिनांक : 28-02-2020

आज के इस सत्र के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. अमित आहूजा**, शिक्षा विभाग, गुरु गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के रूप में उपस्थित थे जिन्होंने अपने व्याख्यान में फ्लिप क्लास रूम का परिचय, इतिहास, आवश्यकता एवं स्रोत के विषय में विस्तार से चर्चा की।

स्रोत रूप में उन्होंने You tube, Khan Academy, Vimeo, Motio, Veoh एवं सर्च इंजन हेतु Google, Yahoo, Bing, Baidu, Ask.com, AOL.com, Duck Duck Go, Cha cha.com और वेबसाइट के लिए www.wolframalpha.com, www.britannica.com, www.howstuffworks.com, www.infoplease.com का उपयोग करते हुए प्रतिभागियों को परंपरागत और फ्लिप क्लासरूम में क्या अंतर है?, इसको भी स्पष्ट किया।

आज के इस सत्र के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. पी.ए. सौदागर, बजाज कॉलेज ऑफ़ साइंस, वर्धा ने अधिगम प्रबंधन प्रणाली की विशेषता, उद्देश्य, तकनीकी पहलू एवं इसके लाभ और हानि पर व्याख्यान दिया।

दिनांक : 29-02-2020

आज के इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. रेखा शर्मा**, एच.आर.डी.सी. नागपुर ने **'भारत में उच्च शिक्षा का मूल्यांकन'** विषय पर व्याख्यान दिया। सर्वप्रथम उन्होंने प्राचीन संस्कृत अध्ययन पद्धति एवं भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक अध्ययन प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ बताया। इसी क्रम में उन्होंने वैदिक शिक्षा प्रणाली का स्वरूप, आश्रम एवं पुरुषार्थ की अवधारणा के विषय में जानकारी प्रदान की, इसी क्रम में आपने प्राचीन संस्कृत विश्वविद्यालयों के बारे में भी बताया, आपने प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली का स्वरूप, नालन्दा, विक्रमशिला, तक्षशिला विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्रणाली, शिक्षा में पाण्डुलिपियों का योगदान, लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति, अंग्रेजी भाषा के विद्यालयों की स्थापना, मानव संसाधन विकास मंत्रालय का स्वरूप एवं कार्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वरूप एवं कार्य तथा एन.ई.पी. के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम के अगले कड़ी में भी डॉ. रेखा शर्मा ने शिक्षा के प्रमुख अभियान, सर्व शिक्षा अभियान, मध्य शिक्षा अभियान, प्रौढ शिक्षा अभियान, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की कार्य पद्धति का विवरण, विश्वविद्यालयों को अनुदान देने की प्रक्रिया के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी प्रदान की। आपके द्वारा वर्तमान में स्थापित शिक्षा संस्थानों, शोध संस्थानों, एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों, कुल केंद्रीय विश्वविद्यालयों, वर्तमान में कुल विद्यार्थियों की संख्या, स्कूल स्तर एवं कॉलेजों में विद्यार्थियों की संख्या की जानकारी प्रदान की गई। इसके साथ ही उन्होंने G Mail, Google Apps आदि के अनुप्रयोग के बारे में जानकारी प्रदान की।

दिनांक : 01-03-2020

आज के इस प्रथम एवं द्वितीय सत्र के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. मनोज कुमार राय**, गाँधी एवं शांति अध्ययन विभाग, म.गां.अं.हिं.वि.वि. वर्धा ने 'विश्वविद्यालय के स्वरूप' विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. पी.ए. सौदागर, बजाज कॉलेज ऑफ़ साइंस, वर्धा ने अधिगम प्रबंधन प्रणाली को माडयूल के माध्यम से बताया।

दिनांक : 02-03-2020

आज के इस संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. ज्योति नारायण बालिया**, शिक्षा विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय जम्मू ने **'पाठ्यचर्या की समझ'** पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने उच्च शिक्षा में पाठ्यचर्या निर्माण के चार प्रमुख घटक : उद्देश्य, पाठ्यचर्या, प्रविधि एवं मूल्यांकन पर विस्तृत चर्चा की और बताया कि 21वीं सदीं की आवश्यकता को देखते हुए भारत में भी शिक्षा नीति में बदलाव किए जा रहे हैं। भारत में पहली शिक्षा नीति 1986 में लागू की गई थी एवं 1992 में इसका मूल्यांकन किया गया। यही शिक्षा नीति अब तक चली आ रही है।

अपने दूसरे सत्र में उन्होंने **'पाठ्यचर्या के प्रकार'** पर व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने यह बताया कि पाठ्यचर्या निर्माण करते समय वस्तुनिष्ठता, आप किसके लिए पाठ्यचर्या निर्माण कर रहे हैं?, उनकी उम्र क्या है?, इस पर विचार करके पाठ्यचर्या का निर्माण करना चाहिए। प्रत्येक इकाई में प्रविधि भी देनी चाहिए जिससे उस इकाई को पढ़ाया जा सके एवं पाठ्यचर्या असफल होने के कारण में एन.सी.एफ. 2005 का उल्लेख करते हुए बताया कि इसमें शिक्षक प्रशिक्षित नहीं होते हैं और इसका परिपालन ठीक तरीके से नहीं किया जाता है।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. प्रदीप मिश्र, शिक्षा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ ने **'उच्च शिक्षा में शिक्षक की भूमिका और उत्तरदायित्व'** पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने शिक्षकों के तीन उत्तरदायित्व : शिक्षण, शोध एवं विषय का प्रचार-प्रसार करना प्रमुख कार्य होता है, के बारे में बताया। उन्होंने अपने व्याख्यान में यह भी बताया कि शिक्षा और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं और शिक्षक का काम विद्यार्थी को सीखने में मदद करना है। इस सभी कार्यों को करते हुए शिक्षक को गतिशील अधिगम वातावरण का निर्माण, विद्यार्थियों की समस्या की पहचान करना, अकादमिक जगत में प्रतिभाग, शिक्षण एवं अधिगम में नवाचारी उपागमों को अपनाना, समाजोपयोगी शोध कार्य करना, प्रसार गतिविधियों में प्रतिभाग एवं अंतरानुशासिक विषयों का एकीकरण करना होता है। 21वीं शताब्दी में शैक्षिक पुनर्जागरण पर अपनी बात रखते हुए कहा कि वर्तमान समय में डिजिटल तकनीकी एवं उपकरण का प्रयोग, सक्रिय अधिगम को बढ़ावा देना, आनंदपूर्ण अधिगम को स्थान, अधिगम रिक्तता की पूर्ति करना, अर्थपूर्ण अधिगम का निर्माण एवं समाज के प्रति सचेत नागरिक का निर्माण करना शिक्षक का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए।

दिनांक : 03-03-2020

संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम में आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में **प्रो. विशाल सूद**, अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला ने **'शोध का अर्थ, प्रकार, प्रविधि और चरण'** पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि सामाजिक विज्ञान के प्राध्यापकों में शोध-प्रविधि की जानकारी कम है; इसकी जानकारी शोध-कार्य के लिए विभिन्न वित्तीय प्रदाता संस्थानों में आए शोध प्रस्ताव को देखने से स्पष्ट होता है। प्रमाण के लिए वे 4 शोध प्रस्ताव के हार्ड कॉपी भी लाए थे, जो अच्छे संस्थानों से थे। उन्होंने बताया कि इम्प्रेस के 104 शोध प्रस्ताव में केवल 6 शोध प्रस्ताव मान्य हुआ। शेष के शोध प्रविधि बहुत कमजोर थी। उस शोध-प्रविधि पर वह शोध कार्य हो ही नहीं सकता। उन्होंने बताया कि किसी घटना का

वैज्ञानिक अध्ययन ही शोध है। कोई घटना किसी कारण से घटित होती है और उसका कोई न कोई प्रभाव होता है। इस कार्य व प्रभाव का वस्तुनिष्ठ और क्रमबद्ध अध्ययन ही वैज्ञानिक अध्ययन कहलाता है। इसे वह भिन्न उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट करते हुए समझाया। शोध के प्रकार बताते हेतु उसे तीन स्तर पर विभाजित किया। पहला, वस्तुनिष्ठता के आधार पर तीन प्रकार के शोध होते हैं : मूलभूत, अनुप्रयुक्त एवं क्रियात्मक को व्याख्यायित किया। दूसरा, घटना के आधार पर भी शोध के तीन प्रकार : विवरणात्मक, ऐतिहासिक और प्रायोगिक में विभक्त कर तीनों को अलग-अलग व्याख्यायित किया। प्रायोगिक शोध को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह विज्ञान विषय में मूलरूप से होता है। इसमें हम समाज में घटना कराकर उसके कारक एवं प्रभाव का अध्ययन करते हैं। तीसरा, आँकड़े के प्रकृति पर शोध के दो प्रकार : मात्रात्मक और गुणात्मक के रूप में व्याख्यायित किया। इसे स्पष्ट करते हुए बताया कि मात्रात्मक और गुणात्मक शोध में कोई अच्छा बुरा नहीं होता है; यह शोध के प्रकृति पर निर्भर करता है कि किसमें कौन-सा प्रविधि प्रयोग होगा या दोनों प्रविधि प्रयोग होगा। इसके पश्चात् उन्होंने शोध के चरण के बारे में बताया।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में राष्ट्रीय मुक्त शिक्षण संस्थान, नोएडा के प्रशिक्षण अधिकारी श्री **चंचल कुमार सिंह** ने मुक्स (moocs) पर व्याख्यान दिया एवं प्रयोगात्मक कार्य के माध्यम से प्रतिभागियों को बताया कि मुक्स में कोई तकनीकी समस्या नहीं है यह उसी प्रकार है जिस प्रकार हम कक्षा में पढ़ाते हैं, संवाद करते हैं और मूल्यांकन करते हैं। इस प्रक्रिया को डिजिटल कर दिया गया है। इसमें भी पढ़ने वाले छात्र ही हैं और पढ़ाने वाले शिक्षक ही हैं। इस प्रक्रिया को डिजिटल कर देने से देश के अंतिम छात्र देश के सर्वोत्तम शिक्षक का ज्ञान फ्री अपने मोबाईल/डेक्सटॉप/लैप्टॉप/टीवी पर पा सकता है। किस प्रकार कोई छात्र स्वयं पोर्टल पर रजिस्टर्ड कर सकता है? इसके लिए दो प्रतिभागियों को स्वयं पोर्टल पर रजिस्टर्ड करने और कोर्स चयन करने की पूरी प्रक्रिया को प्रतिभागियों से ही कराकर बताया। साथ ही साथ हम अपने कोर्स को स्वयं पोर्टल पर कैसे शुरू कर सकते हैं इसका भी ज्ञान क्रमबद्ध रूप से विडियो दिखाकर समझाया। उन्होंने गुगल से कॉपी राईट फ्री फोटो और वीडियों लेने के तरीको को बताया, जो कोर्स शुरू करने के दौरान कारगर सिद्ध होगा।

दिनांक : 04-03-2020

आज के इस कार्यक्रम के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. मधुसूदन**, शिक्षा विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय ने **'विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए परीक्षण एवं अपरीक्षण तकनीकी'** विषय पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने यह बताया कि किस स्थिति में परीक्षण तकनीकी एवं किस स्थिति में अपरीक्षण तकनीकी का शिक्षक प्रयोग करते हैं।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप **प्रो. विशाल सूद** ने शोध प्रस्ताव कैसे बनाते हैं, इस विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने शोध प्रस्ताव को ब्लू प्रिंट बताया। जिस प्रकार भवन निर्माण के पहले वास्तुशिल्पी तैयार करता है उसी प्रकार शोधार्थी भी शोध से पहले शोध प्रस्ताव तैयार करता है। शोध प्रस्ताव बनाने के चरण में उन्होंने प्रस्तावना वाले भाग में : शीर्षक, समस्या कथन, संबंधित साहित्य की समीक्षा, अध्ययन की सार्थकता, संक्रियात्मक परिभाषा, अध्ययन की सीमाएँ एवं मुख्य अवधारणा, आँकड़ों के संकलन करने की प्रक्रिया में : शोध विधि, जनसंख्या एवं प्रतिदर्श, शोध उपकरण, आँकड़ों के संकलन करने की प्रक्रिया एवं आँकड़ों के विश्लेषण करने की प्रक्रिया एवं अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची पर प्रतिभागियों को विस्तार से

अवगत कराया। किसी फंडिंग संस्था को शोध प्रस्ताव भेजने हेतु उसे किस प्रकार से बनाते हैं इस पर उन्होंने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के इम्प्रेस प्रारूप एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के आधार पर बताया। आई. सी.एस.एस.आर. के इम्प्रेस प्रारूप के आधार पर उन्होंने तैयार करने के चरण में : परियोजना का शीर्षक, परियोजना का सारांश, परियोजना की कार्यावधि (माह में), बजट, प्रस्तावित अध्ययन की प्रस्तावना, प्रमुख शोध समीक्षा (राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय) शोध अंतराल की पहचान, प्रस्तावित शोध की विधि एवं प्रारूप, प्रस्तावित शोध में नवाचार, अपेक्षित परिणाम, संभावित शोध परिणाम की नीति निर्माण प्रासंगिता, संबद्धता, परियोजना की बजट एवं परियोजना मूल्यांकन करने के मापदंड एवं मूल्यांकन करने के पैरामीटर पर विस्तार से चर्चा की।

दिनांक : 05-03-2020

आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में **प्रो. निरंजन सहाय**, हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने भारतीय भाषाओं के संदर्भ में विस्तारपूर्वक वर्णन किया। जिसमें उन्होंने भाषा की परिभाषा देते हुए कहा कि 'वह साधन जिसके द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करते हैं और दूसरों के विचार हम समझते हैं'। इसमें विचारों का परस्पर संप्रेषण किया जाता है। भाषा के प्रकार : मौखिक भाषा, लिखित भाषा एवं सांकेतिक भाषा होते हैं। भाषा का स्वरूप बताते हुए कहा कि भाषा ज्ञान का सागर होती है। भाषा के गुण या स्वभाव को भाषा की प्रकृति कहा जाता है। उन्होंने भाषा के विविध रूप : बोलियाँ, ग्राम भाषा, राज्य भाषा, राष्ट्र भाषा, अंतरराष्ट्रीय भाषा को बताया एवं परिनिष्ठित भाषा में संस्कृत, पालि, प्राकृत भाषा मानी जाती है। मानक भाषा में भाषाविदों, भाषा वैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों के द्वारा भाषा का सामान्यत: प्रयोग किया जाता है। भाषाओं के आधार पर राज्यों के गठन के संदर्भ में एस.के. धर कमेटी का गठन, जे.वी.पी. कमेटी का गठन, किसान मजदूर प्रजा पार्टी का गठन (आंध्र प्रदेश), श्री पोट्टी रामालू का अनशन, आंध्र प्रदेश राज्य का गठन, प्रथम – राज्य पुर्नगठन आयोग की स्थापना (22 दिसम्बर, 1952), नेहरू द्वारा पत्र लेखन : माऊंट बैटेन एवं लक्ष्मी पण्डित, 1955 में 16 राज्यों के बनने की सिफारिश की गई, मोरार जी देशाई पर हमलों का वर्णन (80 लोगों ने भाषा को लेकर अपने प्राणों की आहूति प्रदान की), महाराष्ट्र की स्थापना का वर्णन, 1986 की शिक्षा नीति का वर्णन – शिक्षा का लक्ष्य वही हैं जो सविंधान के हैं पर प्रकाश डाला। भाषाओं के विभाजन के संदर्भ में 1966 में त्रिभाषाओं के विभाजन का उल्लेख करते हुए प्रथम भाषा : मातृ भाषा, द्वितीय भाषा : आधुनिक भाषा, तृतीय भाषा अंग्रेजी या आधुनिक भाषा एवं इसके अतिरिक्त हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी या अंग्रेजी होगी। गैर हिंदी भाषी राज्यों में अंग्रेजी या हिंदी होगी। हिंदी भाषा का स्वरूप बताते हुए कहा कि भारत की प्रथम राज्य भाषा : हिंदी, द्वितीय राज्य भाषा : अंग्रेजी एवं संविधान की धारा 343 से 351 भाषाओं का वर्णन है। सभी भारतीय भाषाओं की पारिभाषिक शब्दावली में मूल रूप से संस्कृत भाषा को आधार भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। संविधान में हिंदी का वर्णन धारा 343 से 351 तक है। संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी का वर्णन। उन्होंने बताया कि संविधान की आठवीं अनुसूची के अनुसार प्रत्येक राज्य अपनी भाषा को संविधान में शामिल करवाना चाहता है। उन्होंने बोली

एवं भाषा में अंतर बताते हुए कहा कि बोली का व्याकरण नहीं होता है एवं भाषा में व्याकरण होता है। बोली का साहित्य नहीं होता एवं भाषा का साहित्य होता है।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में **प्रो. पी. शिवस्वरूप**, क्षेत्रीय निदेशक, इंद्रिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नागपुर ने 'शिक्षण में अध्यापन संबंधी मुद्दे' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने इस विषय को विस्तार रूप प्रदान करते हुए बताया कि शिक्षण स्थान पर अपना नैतिक दायित्त्व पूरा करते समय सदैव सहयोगी के रूप में कार्य करें। शिक्षण में महत्त्वपूर्ण कार्य का उल्लेख करते हुए कहा कि अपने दायित्त्व को समय पर पूरा करें, सभी के साथ मधुरभाषी बनकर कार्य करें, समूह में कार्य करना, कार्यों के दायित्त्वों को विभाजित कर सभी का सहयोग ग्रहण करें, प्रत्येक माह में अपने मूल्यांकन को लिखें, वार्षिक अवकाश के दौरान भी अपनी जिम्मेवारी का निर्वहन करें, शिक्षण को सामाजिक स्तर पर प्रयोग करें, शैक्षणिक एवं गैर-शैक्षणिक के साथ सहयोगी के रूप में कार्य करें, दैनिक जीवन के शिक्षण में तनाव से मुक्त रहें, प्रतिदिन अपना शिक्षण पाठ तैयार करें, अपनी शिक्षण संस्था एवं विभाग पर सदैव गर्व करें, अपने संस्थान की प्रगति हेतु निरंतर कार्य करें, समय समय पर अपना मूल्यांकन करें, महिला सहकर्मी का सम्मान करें, कैंपस की कार्यों में सहभागिता ग्रहण करें, कार्य अधिक होने पर सहजता से चिंतन करें, कार्यप्रणाली को समझते हुए तनाव मुक्त रहें, परिवार एवं कार्यालय में समन्वय रखें, सर्वे सर्वा की भावना को मन से दूर रखें, अपने व्यवहार को सदैव सरल एवं अनुकूल बनाएँ, कक्षा में छात्र के अनुसार व्यवहार करें, अपनी कार्यशैली को अधिक मजबूत बनाएँ, दूसरों का उपहास न करें, प्रतिदिन सीखने की प्रवृत्ति को अपनाएँ, अपने विषय में विशेषज्ञता हासिल करें, अपने विभागीय अध्यापकों की शैक्षिक गतिविधियों का मूल्यांकन करें, अपने अधिकारियों का सम्मान करें, अपने प्रकाशन कार्यों में वृद्धि करें, अपने विषय पर अधिक से अधिक व्याख्यान एवं कक्षाएँ ग्रहण करें, सभी शिक्षा नीतियों का पालन करें, अपने को विस्तार रूप देने का प्रयास करें, सभी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें, स्वयं की गलतियों को स्वीकार करें।

अपने दूसरे सत्र में उन्होंने 'कोड् एवं एथिक्स' पर व्याख्यान दिए। व्याख्यान के दौरान आपने अध्यापक का प्राचीन एवं आधुनिक स्वरूप, डॉ. राधाकृष्णन के गुण एवं प्रसिद्धि तथा शिक्षा आयोग – 1948, पर विस्तारपूर्वक प्रतिभागियों से चर्चा की। चर्चा के दौरान प्रतिभागियों की जो जिज्ञासा रही उसे आपने बड़े बखूबी से बताने का प्रयास किया।

उन्होंने शिक्षकों के संबंध में बताया कि हमें सांस्कृतिक विरासत के महत्त्व को समझते हुए डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की शिक्षा में भूमिका एवं उनके आदर्श वाक्य : लक्ष्य का निर्धारण करें, अच्छी शिक्षा प्राप्त करें, कडी मेहनत करें तथा धैर्य को धारण करें; पर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमें माननीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी का संदेश "सभी शिक्षक अपने दायित्त्व की पूर्ति समय पर करें"। का अक्षरश: पालन करना चाहिए। उन्होंने शिक्षण संस्थाओं के संबंध में चर्चा की और बताया कि आजकल अध्यापक कक्षा में अधिक अनुपस्थित रहते हैं और अध्यापन करनें में रुचि नहीं लेते हैं, जिसके कारण कक्षा में छात्रों की उपस्थिति कम होती जा रही है; शिक्षण संस्थानों में पदों का अधिक रिक्त होना, पाठ्यक्रमों में अनावश्यक वृद्धि, उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों को नियुक्ति न मिलना, गरीब विद्यार्थियों को शिक्षण संस्थानों में प्रवेश न मिलना, वास्तविक विद्यार्थियों का

सही मूल्यांकन न होना, विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं में पुस्तकालयों का न होना, अनुत्तीर्ण विद्यार्थियों का मनोबल गिराना, माता-पिता द्वारा बच्चों पर ध्यान न देना, फर्जी प्रमाणमत्रों का व्यापार होना, अयोग्य व्यक्तियों की नियुक्ति का होना, योग्यता होने पर भी नियुक्ति न मिलना, शिक्षण का अच्छा न होना, छात्रों के बीच अच्छा संवाद न होना, छात्रों का उत्साहवर्धन न करना, छात्रों के प्रति एक समान व्यवहार न होना, कक्षा का वातावरण उचित न होना, अधिगम में सहायता प्रदान न करना, विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान न करना, संपूर्ण कक्षा का मूल्याकंन करने में अध्यापक का असमर्थ होना आदि अनेक कारण है जो संस्था को प्रभावित करते हैं। अंत में उन्होंने कहा कि शिक्षकों के संबंध में कहा कि अच्छे शिक्षक अच्छे शोधार्थी होते हैं।

दिनांक : 06-03-2020

आज के इस सत्र के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. वैभव जाधव**, शिक्षा विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे ने प्रोजेक्ट आधारित अधिगम पर व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने किलपैट्रिक का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रयोजना उद्देश्यपूर्ण क्रिया है जो सामाजिक वातावरण में संपन्न की जाती है। इस अधिगम के प्रमुख सिद्धांत : यथार्थ ज्ञान, उपयोगिता, स्वतंत्रता, सहयोग, उद्देश्यनिष्ठता आदि पर उन्होंने चर्चा की। प्रयोजना अधिगम की विशेषताओं के बारे में बताया कि यह अधिगम मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित, क्रियात्मक एवं सर्जनात्मक प्रवृत्तियों का विकास, सामाजिक गुणों का विकास, पिछड़े बालकों को भी अवसर, तर्क चिंतन, निर्णय शक्ति का विकास करता है।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप **प्रो. संतोष सदार**, प्रबंधन विभाग, एस.जी.बी.ए. विश्वविद्यालय, अमरावती ने **'उच्च शिक्षा में नेतृत्व'** विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि शिक्षा जगत में यदि सार्थक कार्य करना है तो विभाग प्रमुख को सभी साथी शिक्षकों को एक साथ लेकर कार्य करना चाहिए। लेकिन वास्तव में ऐसा होता नहीं है सब एक दूसरे की टांग खीचने में लगे रहते हैं।

प्रो. संतोष सदार, प्रबंधन विभाग, एस.जी.बी.ए. विश्वविद्यालय, अमरावती अपना व्याख्यान देते हुए|

दिनांक : 07-03-2020

आज के इस कार्यक्रम के विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. विजू, शिक्षा विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु ने **'ई-पाठ्यवस्तु हेतु ऑनलाइन एवं ऑफ़लाइन उपकरण का निर्माण'** विषय पर व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने यह बताया कि ई-पाठ्यवस्तु का निर्माण कैसे किया जाता है एवं वर्तमान समय में इसकी उपयोगिता और शिक्षक सुगमता से विद्यार्थियों तक पाठ्यवस्तु को कैसे प्रदान करता है, इस विषय पर उन्होंने विस्तार से चर्चा की।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप **प्रो. अनिल कुमार**, एन. टी. टी.टी.आर. भोपाल ने **'आकलन एवं मूल्यांकन में अंतर'** विषय पर व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने बताया कि आकलन संरचनात्मक, प्रक्रिया उन्मुखी, निदानात्मक, लचीला एवं सहयोगात्मक होता है, जबकि मूल्यांकन योगात्मक, उत्पाद उन्मुखी, निर्णायक (ग्रेड, स्कोर) एवं पहले से किसी निर्धारित मानक पर निर्धारित होता है। उन्होंने आकलन एवं मूल्यांकन के उद्देश्य और चरण को भी विस्तार से बताया।

प्रो. अनिल कुमार, एन. टी. टी.टी.आर. भोपाल अपने व्याख्यान देते हुए|

दिनांक : 12-03-2020

आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. एम.टी.वी. नागराजू, शिक्षा विभाग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक ने 'भारत एवं विश्व में सतत विकास के लिए रणनीति' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने सतत विकास के तीन स्तंभ : आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, पर्यावरणीय संरक्षण एवं सुरक्षा को विस्तार से बताया। इसके बाद पानी के स्रोत एवं प्रबंधन, भोजन, ऊर्जा एवं सतत विकास की चुनौतियाँ पर चर्चा की। जनसंख्या सतत विकास में प्रमुख बाधक तत्व है। भविष्य में प्रमुख रूप से पीने का पानी एवं भोजन उत्पादन हेतु जमीन की कमी, मानव स्वास्थ्य, ऊर्जा का उपयोग एवं वृक्षों की कटाई हमारे सामने चुनौतियों के रूप आ सकती है। इसके अलावा गरीबी, असमानता, अशिक्षा भी चुनौतियों का रूप

भविष्य में ले सकती हैं। उन्होंने सतत विकास के क्षेत्र में शोध हेतु सामाजिक एवं आर्थिक विकास, स्वास्थ्य विज्ञान एवं स्वास्थ्य रक्षा, कृषि और बागवानी, जनसंचार, संस्कृति एवं विरासत और ग्रामीण एवं शहरी रूपांतरण का उल्लेख किया।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. के.पी. निम्बालकर**, यशवंत महाविद्यालय, वर्धा ने 'तनाव प्रबंधन' (Stress Management) पर व्याख्यान दिया। तनाव प्रबंधन को परिभाषित करते हुए कहा कि यदि आप तनाव की स्थिति में हैं तो तनाव प्रबंधन से आप के जीवन में परिवर्तन आता है। आपको तनाव रोकने के लिए स्वयं अभ्यास करना चाहिए एवं ऐसी स्थितियों से बचना चाहिए जो आपके जीवन में तनाव लाती हैं। तनाव रोकने हेतु निम्नलिखित पाँच तकनीकों – दस मिनट टहलें, अपने श्वास पर ध्यान केंद्रित करें, व्यायाम रेजिमेंट बनाएं, एक आत्मलोचन पत्रिका लिखें एवं स्वयं को व्यस्थित रखें, पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

दिनांक : 13-03-2020

आज के इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. कीर्ति सदार**, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक नागपुर ने शिक्षक के लिए आवश्यक कौशलों की जानकारी देते हुए बताया कि सूक्ष्म शिक्षण की शिक्षा में क्या उपयोगिता है? सूक्ष्म शिक्षण शिक्षक को शिक्षण कार्य में कैसे मदद करता है। सूक्ष्म शिक्षण से कैसे शिक्षण कौशलों का विकास किया जा सकता है। सूक्ष्म शिक्षण में कम समय में कम छात्रों को एक प्रकरण पढ़ाया जाता है। पढ़ाने के बाद छात्रों से प्रतिपुष्टि प्राप्त होता है, प्रतिपुष्टि के आधार पर शिक्षक अपने पाठ को पुनः बनाता है और फिर से पढ़ाता है और पुनः प्रतिपुष्टि प्राप्त करता है। यह एक चक्र चलता रहता है जिसे सूक्ष्म शिक्षण चक्र कहते हैं। इस शिक्षण में एक बार में एक कौशल पर ध्यान दिया जाता है। सूक्ष्म शिक्षण सेवापूर्व एवं सेवारत दोनों शिक्षकों के लिए जरूरी है।

डॉ. कीर्ति सदार, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, कविकुल गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक नागपुर अपना व्याख्यान देते हुए|

डॉ. सदार ने सूक्ष्म शिक्षण का उद्देश्य, उसके घटक तथा सूक्ष्म शिक्षण से लाभ आदि के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि शिक्षण कौशल 50 से अधिक है उनमें से कुछ प्रमुख कौशलों का विकास सूक्ष्म शिक्षण के अंतर्गत

करते हैं। कुछ प्रमुख शिक्षण कौशल जैसे- पाठ प्रस्तावना, प्रश्न करना, व्याख्या करना, उद्दीपन परिवर्तन, प्रबलन, ब्लेक बोर्ड का उपयोग, कक्षा प्रबंधन शिक्षण कौशल आदि को विस्तार से समझाया। इसके पश्चात् सूक्ष्म शिक्षण पाठ बनाना सिखाया। सूक्ष्म शिक्षण पाठ को किस प्रकार लिखते हैं एवं उसका प्रस्तुतीकरण कैसे करते हैं यह बतलाया। इसके बाद प्रतिभागियों को कौशल के अनुसार कई समूहों में बाटकर प्रत्येक समूह को अपने-अपने विषय पर सूक्ष्म पाठ बनाने के लिए 20 मिनट का समय दिया गया। सभी प्रतिभगियों ने सहभगिता करते हुए अपने-अपने विषय पर सूक्ष्म पाठ तैयार किए।

दिनांक : 14-03-2020

आज के दिन के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. रेनु वी. व्यास्कर**, शिक्षा विभाग, आर.टी.एम. विश्वविद्यालय, नागपुर ने 'हाऊ टू डेवलेप एडवरसिटी कोसेंट' विषय पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने बताया कि हमें कार्य स्थल पर कैसा व्यवहार करना चाहिए।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. पंकज मिश्रा**, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने **'कॉलेज संरचना एवं प्रशासन'** विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि यह संगठनात्मक संरचना और प्रक्रिया का एक संयोजन है जो कॉलेज और विश्वविद्यालय के व्यवहार को आकार देता है। सभी प्रकार के सार्वजनिक और निजी कॉलेज और विश्वविद्यालय मुख्य प्राधिकारी संरचनाओं को शामिल करते हैं, जिसमें एक गवर्निंग बोर्ड, एक अध्यक्ष या चांसलर, प्रशासनिक नेताओं का एक समूह और एक शैक्षणिक सीनेट शामिल होता है।

डॉ. पंकज मिश्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली अपना व्याख्यान देते हुए|

दिनांक : 15-03-2020

आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. पंकज मिश्रा** उपस्थित थे जिन्होंने **'उच्च शिक्षा में शिक्षण कौशल'** विषय पर व्याख्यान दिया। इसके बाद उन्होंने उच्च शिक्षा में प्रयोजन क्या है?, इसके बारें में बताया और कहा कि "सा विद्या या विमुक्ते, सा

विद्या या नियुक्तये" इस माध्यम से उच्च शिक्षा का अर्थ क्या है? इसके बारें में बताया। विद्या वह है जो नियुक्ति करता है। मानवता के स्तर को ध्यान में रखकर उन्होंने आलोचनात्मक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिकता एवं आध्यात्मिक जैसे मुददे पर चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि उच्च शिक्षा में प्रशिक्षण के साथ नेतृत्व भी बहुत महत्वपूर्ण है। हम सभी से ही उन्नत परिवार, उन्नत समाज, उन्नत राष्ट्र का निर्माण होता है और यह सब बिना अध्ययन के संभव नहीं है। यदि उच्च शिक्षा में सत्यम, शिवम्, सुन्दरम् की संकल्पना हो तो शिक्षा किसी दूसरे व्यक्ति की उपेक्षा नहीं करती। उच्च शिक्षा की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कक्षागत अधिगम, दूरस्थ अधिगम एवं ऑनलाइन अधिगम की प्रासंगिकता को विस्तार से समझाया। आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप डॉ.मनोज कुमार राय ने 'विश्वविद्यालय संरचना -II' पर व्याख्यान दिया।

दिनांक : 16-03-2020

संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम में आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. चेतना पी. सोनकाम्बले**, शिक्षा विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर ने **'अनुसंधान प्रतिवेदन की लेखन शैली'** पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान में यह बताया कि अनुसंधान कार्य के औपचारिक प्रकृति के होने के कारण अनुसंधान की समाप्ति के उपरांत अनुसंधानकर्त्ता को अपने द्वारा किए गए समस्त कार्य एवं प्राप्त परिणाम को लिखित रूप में प्रस्तुत करना होता है। इसे अनुसंधानकर्त्ता का अंतिम कार्य भी कहा जाता है। वस्तुतःअनुसंधान प्रतिवेदन ही अनुसंधानकर्त्ता द्वारा किए गए कार्य का मूल्यांकन करने का आधार बनाता है। इससे ही ज्ञान के भंडार में वृद्धि होती है, सैद्धांतिक पक्ष सबल होता है तथा व्यावहारिक क्षेत्र में निहितार्थों का उपयोग होता है। यद्यपि आकर तथा प्रस्तुति की दृष्टि से अनुसंधान प्रतिवेदनों में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती हैं, फिर भी उनमें लेखन शैली तथा प्रस्तुति के सापेक्ष बौद्धिक वर्ग में प्रचलित परंपरागत प्रारूप का अनुसरण किए जाने की अपेक्षा की जाती है। अनेक विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थाओं तथा संगठनों के द्वारा अनुसंधान प्रतिवेदन की प्रस्तुति के संबंध में अपने-अपने स्तर से निर्देशिकाएँ भी तैयार किए गए हैं तथा शोधार्थियों से उनके अनुरूप अपने कार्य को प्रस्तुत करने का निर्देश दिया जाता है।

अनुसंधान प्रतिवेदन के प्रकार में उन्होंने अनुसंधान प्रबंध, अनुसंधान लघु प्रबंध, अनुसंधान प्रोजेक्ट, अनुसंधान पत्र, अनुसंधान टीप (notes) को बताया। अनुसंधान प्रतिवेदन के प्रारूप में समस्या की उत्पत्ति, अनुसंधान प्रश्न, संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण, अध्ययन के उद्देश्य एवं परिकल्पनाएं, अनुसंधान अभिकल्प, प्रतिदर्श, उपकरण, प्रविधियों, परिणाम, निहितार्थ तथा सुझाव जैसे सभी उपकरण समाहित रहते हैं। किसी भी अनुसंधान प्रतिवेदन को तीन मुख्य अंगों अर्थात् (i) प्रारंभिक भाग, (ii) मुख्य भाग तथा (iii) पूरक भाग में विभक्त किया जा सकता है। प्रारंभिक भाग के अंतर्गत : शीर्षक पृष्ठ, प्रमाण-पत्र, घोषणा पत्र, आमुख, विषय-सूची, सारणी सूची, चित्र सूची आते हैं। मुख्य भाग में अध्याय - 1 के अंतर्गत : पृष्ठभूमि, अनुसंधान समस्या, अनुसंधान उद्देश्य, अनुसंधान परिकल्पना, तकनीकी पदों की परिभाषा, अध्ययन की सार्थकता, अनुसंधान कार्य का सीमांकन आते हैं। अध्याय - 2 के अंतर्गत संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण में सैद्धांतिक विवेचन, अनुभाविक साक्ष्य, सर्वेक्षण सार, प्रस्तुत अनुसंधान आते हैं। अध्याय - 3 के अंतर्गत अनुसंधान अभिकल्प में अनुसंधान विधि, जनसंख्या तथा प्रतिदर्श, प्रदत्त संकलन के

उपकरण, प्रदत्त संकलन योजना और प्रदत्त व विश्लेषण प्रविधियाँ आती है। अध्याय - 4 के अंतर्गत प्रदत्त का संकलन, विश्लेषण तथा निर्वचन में प्रदत्तों का संकलन व सारणीयन, प्रदत्तों का विश्लेषण तथा निर्वचन एवं अनुसंधान परिकल्पनाओं का परीक्षण आते हैं। अध्याय - 5 के अंतर्गत निष्कर्ष एवं सुझाव में अनुसंधान निष्कर्ष, परिणामों के निहितार्थ तथा भावी अध्ययन हेतु सुझाव आते हैं एवं अंत में पूरक भाग में ग्रंथ सूची तथा परिशिष्ट आते हैं।

अपने दूसरे सत्र में उन्होंने जर्नल में शोध पत्र कैसे प्रकाशित होते हैं इस विषय पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में भारतीय जर्नल एवं विदेशी जर्नल के बारे में बात करते हुए उन्होंने इम्पैक्ट फैक्टर कैसे निर्धारित होते हैं इस विषय पर भी बात की। आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप डॉ. मनोज कुमार राय 'विश्वविद्यालय संरचना -II' पर व्याख्यान दिया।

दिनांक : 17-03-2020

संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम में आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री कादर नवाज खान के द्वारा प्रतिभागियों को 'अवकाश नियम' के संदर्भ में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई। भारत के राजपत्र, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिसूचना नई दिल्ली, 18 जुलाई, 2018 में प्रस्तुत अवकाश नियमावली के अनुसार विश्वविद्यालयों/ महाविद्यालयों के स्थायी अध्यापकों को विभिन्न प्रयोजनों हेतु तथा विभिन्न परिस्थितियों में अवकाश लेने की व्यवस्था की गई है। स्थायी अध्यापकों के लिए निम्नलिखित प्रकार की छुट्टियाँ स्वीकार की गई हैं :

1. अवकाश जैसे आकस्मिक अवकाश, विशेष आकस्मिक अवकाश तथा इतर कार्यार्थ अवकाश (कर्तव्य अवकाश)
2. सेवा द्वारा अर्जित किया गया अवकाश जैसे अर्जित अवकाश, अर्ध वेतन अवकाश तथा परिवर्तित अवकाश
3. सेवा के बिना अर्जित किया गया अवकाश जैसे असाधारण अवकाश, अर्जन शोध्य अवकाश
4. अवकाश खाते से नहीं काटा गया अवकाश
5. शैक्षणिक उत्कृष्टता हेतु प्राप्त अवकाश जैसे अध्ययन अवकाश, सबैटिकल अवकाश तथा शैक्षणिक अवकाश
6. अन्य अवकाश जैसे प्रसूति अवकाश, संगरोध अवकाश, बालचर्या अवकाश, पितृत्व अवकाश, दत्तक ग्रहण अवकाश तथा सरोगेसी हेतु अवकाश

उन्होंने अवकाश के नियमों को विस्तार से समझाया ही नहीं, अपितु अपने अनुभवों को भी साझा करते हुए किन परिस्थितियों में किस श्रेणी के अवकाश का लाभ उठाना चाहिए, प्रतिभागियों में इस बात की समझ विकसित करने का प्रयास भी किया। चर्चा में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी शंकाएं सामने रखी, जिसका निराकरण किया गया।

अपने द्वितीय सत्र में उन्होंने 'अवकाश यात्रा छूट' (एल.टी.सी.) के संदर्भ में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यान में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि जब केंद्र सरकार के कर्मी अवकाश यात्रा छूट भत्ते का लाभ उठाते हैं तो उन्हें सवेतन अवकाश के साथ कर्मी के शासकीय मुख्यालय से गृहनगर अथवा देश के विभिन्न क्षेत्रों में आने-जाने की टिकटों (परिवार सहित) की राशि की भरपाई की जाती है। प्रति चार वर्षों के खंड में से दो वर्षों में गृहनगर की दो यात्राएँ तथा किसी एक

वर्ष देश के विभिन्न क्षेत्रों (जम्मू कश्मीर, पूर्वोत्तर और अंडमान निकोबार द्वीप समूह) की एक यात्रा हेतु अवकाश यात्रा छूट भत्ते का लाभ उठाया जा सकता है। यदि आवश्यकता हो तो गृह नगर की एक यात्रा को 'देश के विभिन्न क्षेत्रों' (ऑल इंडिया) की यात्रा में परिवर्तित किया जा सकता है। अवकाश यात्रा छूट भत्ते का लाभ उठाने के लिए आवश्यक शर्तों, पात्रता, गृह नगर तथा देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा के चयन में विकल्पों की सुविधा, नवनियुक्त कर्मियों से संबंधित नियमों, अवकाश नकदीकरण, उपयुक्त परिवहन के साधनों (रेल, हवाई जहाज, वाष्प शक्ति चलित जहाज) आदि तथ्यों की सविस्तार जानकारी प्रदान की। आपके द्वारा प्रतिभागियों की शंकाओं का निराकरण भी किया गया।

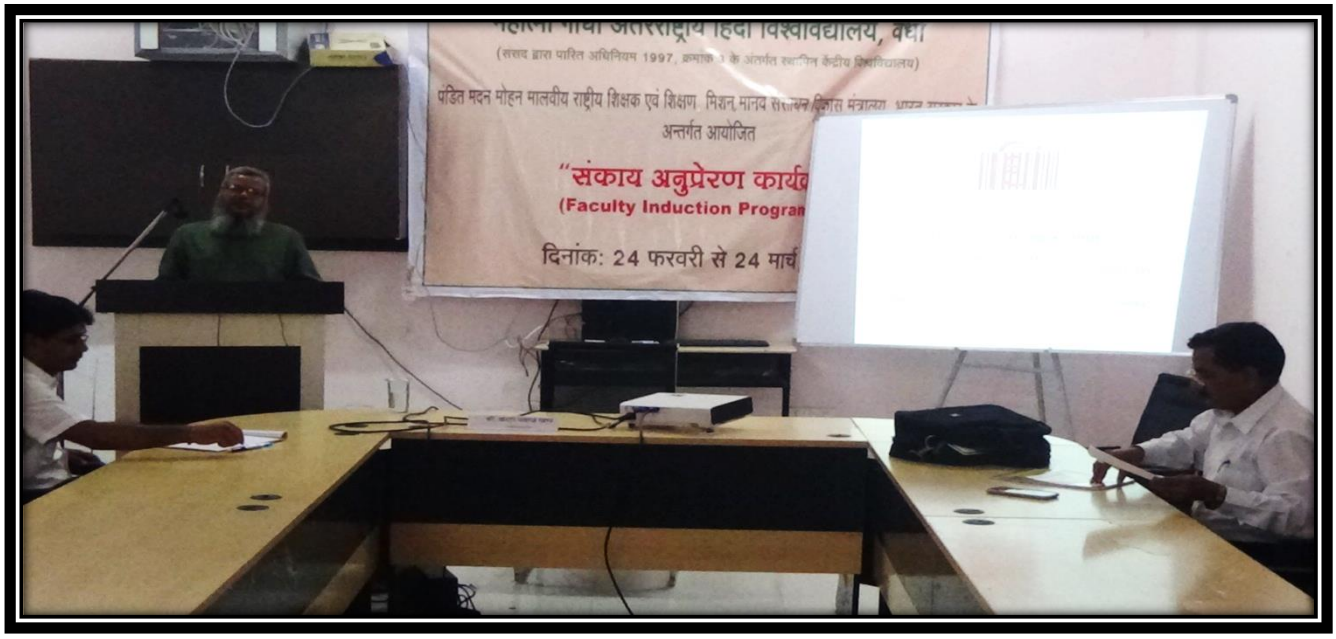

श्री कादर नवाज खान अपना व्याख्यान देते हुए|

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप **प्रो. मनोज कुमार**, अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा ने **'शिक्षण एवं शोध में महात्मा गांधी के विचारों की भूमिका'** विषय पर व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने बताया कि हम सभी शिक्षक होने के साथ ही साथ हम सभी विद्यार्थी भी हैं। जिस दिन हम स्वयं को शिक्षक मान लेते हैं उसी दिन हमारे अंदर का विद्यार्थी समाप्त हो जाता है और हमारे पतन के द्वार खुल जाते हैं।' इस बोध वाक्य के साथ प्रो. मनोज कुमार जी ने व्याख्यान की शुरुआत करते हुए शिक्षण तथा शोध में साहित्य का पुनरावलोकन किस प्रकार से करना चाहिए इस संदर्भ में मार्गदर्शन करते हुए कहा कि बतौर शिक्षक हम सभी पर ज्ञान के सृजन की जिम्मेदारी है अतः हमारा यह दायित्व है कि हम पाठ्य पुस्तकों में लिखित तथ्यों को अक्षरशः लेने की अपेक्षा उन तथ्यों का तार्किक विश्लेषण करें तथा यह सुनिश्चित करें कि क्या सभी अपेक्षित तथ्य सामने आ चुके हैं? यदि नहीं, तो हमें इस दिशा में शोध की गति बढ़ानी होगी। इस बात पर भी ध्यान देना जरूरी होता है कि वर्तमान समय में स्थिति क्या है? तथा उस काल में परिस्थितियाँ क्या थी? जब संबंधित पुस्तक लिखी गई थी। तत्कालीन परिस्थितियों को समझे बिना यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तथ्यों की समीक्षा करते हैं तो निरर्थक शोध तथा निरर्थक शिक्षण सामग्री ही सामने आएगी, जिससे भावी पीढ़ी को कोई विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। पुस्तक का हर शब्द एक विशिष्ट अर्थ व्यक्त करता है। पुस्तकों में हमारे अध्ययन विषय से संबंधित कौन से तथ्य महत्वपूर्ण हैं यह

देखना जरूरी है। साहित्य के पुनरावलोकन के दौरान यह भी खोज निकालना आवश्यक है कि कौन-सा तथ्य चिरस्थायी है। हमें कथा एवं उपन्यासों की भांति ही सिद्धांतों के साथ भी आनंद उठाने की कोशिश करनी चाहिए। गांधीजी के जीवन मूल्यों के अध्ययन का उदाहरण देते हुए यह समझाने का प्रयास किया कि हमें किसी अवधारणा के शाब्दिक अर्थ के मूल तत्व पर किस प्रकार से विचार करना चाहिए। दर्शनशास्त्र के अनुसार सत्य सदैव एक ही होता है। गांधीजी के अनुसार 'सत्य ही ईश्वर है'। परंतु वास्तव में सत्य को देख पाना, उसे सहीं अर्थों में लेना सामर्थ्य की बात है।

प्रो. मनोज कुमार जी ने स्वरचित दो पुस्तकों का उद्धरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'हिंद स्वराज का तत्व दर्शन' पुस्तक में गांधी को एक विचार, एक विकल्प के रूप में सामने रखा गया है तथा 'गांधी की अहिंसा दृष्टि' पुस्तक में अहिंसक विचार की प्रक्रिया क्या है? तथा अहिंसा किन अर्थों में जीवन की पद्धति है? इसे लेकर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। आपने गांधी जी के व्यक्तित्व, विचारों तथा उनके जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में तीन वर्ष रहने के बाद अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में जीवनकाल में की गई अपनी गलतियों से मिली सीख को उस समय लेखबद्ध किया जब पश्चिम के विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकें अन्य द्वारा लिखित कृतिगान मात्र हुआ करती थी। आपके अनुसार जब भी हम किसी विषय को गांधी जी के साथ संबद्ध करके देखते हैं तब गांधीजी सत्य एवं दर्शन की एक अलग परिभाषा प्रस्तुत करते हैं। हमारे अंतर्मन में अच्छाई एवं बुराई का संघर्ष निरंतर चलता रहता है। जगत सत्य है या जगत सत्य नहीं है – इस द्वंद्व से आगे जाकर गांधी जी ने 'सामाजिक सत्य' को स्थान दिया। परंतु बीस वर्षों बाद बदली हुई परिस्थितियों में उन्होंने स्वयं अपने ही बयान को बदला। अतः शिक्षकों का दायित्व है कि समय विशेष में परिस्थितियों के अनुरूप आज का सत्य क्या है यह खोजने का कार्य करें। 'इन्डियन ओपिनियन पत्रिका' तथा 'हिंद स्वराज' गांधी जी के विचारों के प्रसार हेतु 'माध्यम' थे। संदेश का माध्यम जो भी हो सोद्देश्य संवाद होना चाहिए। चूँकि विद्यार्थी ग्रहणकर्ता की भूमिका में होता है अतः शिक्षक को सर्वश्रेष्ठ संप्रेषणकर्ता की भूमिका में होना चाहिए। हमारे लिए शिक्षा का क्या अर्थ है? इसे समझाते हुए आपने कहा कि अक्षर ज्ञान की शिक्षा अनेक साधनों मे से एक साधन है। शिक्षा का प्रयोग किसी भी प्रकार से किया जा सकता है। शिक्षा 'साधन' है। गांधी जी के अनुसार साधन ही महत्वपूर्ण है। दक्षिण अफ्रीका में शिक्षा के संबंध में किए प्रयोग के द्वारा गांधी जी को यह स्पष्ट हो गया कि साध्य हमारे वश में नहीं है। 'सत्य' के अधिकतम नजदीक पहुँचने का प्रयास तो किया जा सकता है परंतु उसे पूर्णतः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। आपने संपूर्ण गांधी वांग्मय (सौ खंड) का उल्लेख करते हुए गांधी जी के प्रबंधन के विज्ञान पर भी प्रकाश डाला। आपने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की आलोचना करते हुए कहा कि भारत में अंग्रेजों के शासन के पूर्व सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था थी। गांधी जी के अनुसार यह आर्थिक सांस्कृतिक साम्राज्यवाद है जिसे आज हमने अंगीकार कर लिया है। प्रो. मनोज कुमार के अनुसार हम गुलाम तब भी थे और आज भी हैं, स्वतंत्र वे हैं जो गांवों के नज़दीक हैं। अपने व्याख्यान के अंत में गांधी जी के सतत विकास की अवधारणा, पर्यावरण के विज्ञान, गांधी जी के अर्थशास्त्र - ग्राम स्वराज, स्वदेशीपन तथा उनके सामाजिक सरोकारों का उल्लेख करते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके विचारों तथा जीवन मूल्यों के प्रभावी एवं प्रासंगिक होने पर विशेष बल दिया तथा समस्त शिक्षकों के द्वारा गांधी जी के विचारों तथा आदर्शों को जीवन में आत्मसात करने के लिए भी उत्प्रेरित किया।

दिनांक : 18-03-2020

आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. के.पी. निम्बालकर, यशवंत महाविद्यालय, वर्धा ने 'तनाव प्रबंधन कौशल II' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया में कि हम व्यायाम, योग, संतुलित आहार, सोने की आदत, समय प्रबंधन और योग एवं ध्यान के द्वारा तनाव को कम कर सकते हैं।

अपने दूसरे व्याख्यान में उन्होंने 'विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य निर्माण करने में शिक्षक की भूमिका' विषय पर व्याख्यान दिया। जिसमें उन्होंने बताया कि अकादमिक रूप से शिक्षक को विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित वातावरण, स्वजागरुक, अभिप्रेरित, सामुदायिक कार्य में भागीदारी और निर्देशन एवं परामर्श जैसी गतिविधियों को अपनाना चाहिए।

दिनांक : 19-03-2020

आज के विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. धर्मवीर सिंह**, भूतपूर्व पुस्तकालय अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने साहित्यिक चोरी क्या है? इस विषय पर व्याख्यान दिया। किसी के ज्ञान एवं संकल्पना को बिना उचित माध्यम अथवा तरीके से सूचित किए अपना बताना अथवा उसे अपना कार्य बताना ही साहित्यिक चोरी है। किस प्रकार हम अनजाने या अज्ञानता में भी इसके अपराधी हो जाते हैं। कानून या विधि यह नहीं देखता कि आप नियम या कानून से परिचित नहीं थे। कानून की नजर में सभी लोग उससे परिचित होते हैं। साहित्यिक चोरी क्यों, कैसे होती है इस बात पर भी उन्होंने जीवंत उदाहरणों से हमें अवगत कराया। उन्होंने सूचना, ज्ञान, विवेक एवं प्रज्ञा (Information, Knowledge, Intelligence and Wisdom) के बारे में विस्तृत से चर्चा की। उन्होंने इन शब्दों की बारीकियों को बखूबी समझाया। सूचना की आवश्यकता, पहुँच, समीक्षा, प्रयोग एवं उसके प्रयोग के नीतिगत बातों को विस्तार से बताया। साहित्यिक चोरी कई प्रकार की होती हैं जैसे- किसी अन्य व्यक्ति के कार्य को स्वयं का बताना, किसी के शब्दों या विचारों को बिना उनका संदर्भ दिए अपने शोधपत्र, पुस्तक या व्याख्यान में उद्धृत करना, उद्धरण चिह्न को छोड़ देना, किसी के वाक्यों को लेकर उनके शब्दों को बदल देना।

इसके उपरांत हमें बताया गया कि साहित्यिक चोरी के संभावित कारण क्या हैं? जिसमें उन्होंने ज्ञान एवं कौशल की कमी, आधिकारिक पहचान का असुरक्षा भाव, सांस्कृतिक विभिन्नता एवं संज्ञानात्मक परिणाम को बताया। कुछ अन्य भी कारण हैं; जैसे आज का कार्य कल के लिए टाल देना। इस पर श्रीमान ने बताया कि 'कल कभी आता नहीं और दिमाग से कभी जाता नहीं'। जल्दी और आसानी से कॉपी/कट एवं पेस्ट (चेपना एवं चिपकाना) हो जाता है। अच्छे नंबर लाने का दबाव भी इसका कारण हो सकता है। कभी-कभी हम सूचना लिख लेते हैं, लेकिन उसका स्रोत लिखना भूल जाते हैं या अनदेखा कर देते हैं। हमारा विश्वास भी इसके मूल में हो सकता है कि इससे किसी की हानि नहीं होती या हम कभी पकड़े नहीं जाएँगे। कभी-कभी हमें भान भी नहीं होता है कि हम साहित्यिक चोरी कर रहे हैं और यह नियम एवं सिद्धांतों के विरुद्ध है। साहित्यिक चोरी मुख्यत: दो प्रकार की होती है - साशय या इरादतन (Intentional Plagiarism) तथा अनाशय या गैरइरादतन (Unintentional

Plagiarism) जब हम जानबूझकर एवं सोच-समझकर किया जाने, साशय है एवं जानकारी के अभाव में या उचित तरीके से उद्धरण न दे पाना अनाशय है। कई बार संक्षिप्तीकरण एवं संक्षेपण अंक सही तरीका नहीं आने से भी हम साहित्यिक चोरी के दायरे में आ जाते हैं। साहित्यिक चोरी के भी कई प्रारूप हैं : क्लोन या हुबहू, CTRL-C, FIND-REPLACE, REMIX (मिश्रण), Hybrid (संकर), Mashup, 404 Error, Recycle, Aggregator, Re-tweet। इसके बाद भारतीय एवं पश्चिमी सभ्यता के बीच ज्ञान को लेकर मूल संकल्पना को बताया। हमारे ज्ञान विकास के लिए है लेकिन वहाँ ज्ञान व्यापार की चीज है। इसके बाद उन्होंने साहित्यिक चोरी क्यों एवं कैसे गलत है; इसके बारे में बताया। उन्होंने Ethics एवं Morality के बीच का अंतर स्पष्ट किया। साहित्यिक चोरी अथवा प्लेजीयारिज्म के क्या नुकसान हैं, इसको विस्तार से समझाया। यूजीसी (UGC) ने इस संबंध में क्या दिशा-निर्देश दिए हैं, इसकी चर्चा हुई साहित्यिक चोरी के क्या स्तर हैं तथा इसके क़ानूनी पहलुओं पर भी आपने बात की। किस प्रकार से साहित्यिक चोरी से बचा जाय इस पर भी उन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया। कई पुस्तकों एवं वेबसाइटों के बारे में बताया जहाँ से हमें इस संबंध और सूचना एवं मार्गदर्शन मिल सकता है। अपने दूसरे सत्र में उन्होंने 'नेतृत्व' पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि नेतृत्व एक ऐसी क्षमता है जिसमें व्यक्ति बिना किसी दबाव के सामने वाले व्यक्ति को सही दिशा में निर्देशित कर सकता है। नेतृत्व के महत्त्व का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि नेतृत्व प्रबंधन एक महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसमें व्यक्ति की दक्षता में वृद्धि एवं अभीष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलता है।

दिनांक : 23-03-2020

संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने 'शोध की प्रासंगिकता' विषय पर गूगल क्लासरूम के माध्यम से व्याख्यान दिया। उन्होंने शोध का दर्शन, ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया, नृजातीय शोध एवं शोध में नैतिकता पर विस्तार से चर्चा की। जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों को बताया कि हमें निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ शोध कार्य करना चाहिए।

आज के इस कार्यक्रम के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में शिक्षा विभाग के सह-प्रोफेसर डॉ. शिरीष पाल सिंह ने 'शोध प्रतिवेदन' पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने बताया कि एक अच्छे शोध प्रतिवेदन में स्पष्टता, यथार्थता एवं संक्षिप्तता का गुण होना चाहिए। उन्होंने शीर्षक पृष्ठ, आमुख, विधि, परिणाम, विवेचना, संदर्भ एवं परिशिष्ट लेखन शैली पर विस्तार से चर्चा की एवं प्रतिभागियों की समस्याओं का भी समाधान किया।

दिनांक : 24-03-2020

संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के अंतिम दिन गूगल मीट के माध्यम से संपूर्ति सत्र में विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया। इसके बाद प्रतिभागियों ने व्यक्तिगत रूप से माननीय कुलपति प्रो.

रजनीश कुमार शुक्ल से अपनी-अपनी बाते रखी। अंत में सभी प्रतिभागियों ने संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम के बारे में अपनी-अपनी प्रतिपुष्टि विडियो क्लिप के माध्यम से दी। इस प्रकार एक माह के संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम का सफल समापन हुआ।

22. अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम (Blended Learning Approach for Teacher Educators) दिनांक (26-28 फरवरी, 2020)

दिनांक : 26-02-2020

प्रथम दिन

उद्घाटन सत्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ के अंतर्गत शिक्षा विभाग के द्वारा **"अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम"** विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**, अधिष्ठाता शिक्षा विद्यापीठ **प्रो. मनोज कुमार**, विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, कार्यशाला सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह, कार्यशाला संयोजिका डॉ. शिल्पी कुमारी सत्र विषय विशेषज्ञ डॉ. गौरव सिंह *इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय* के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**

दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात विश्वविद्यालय का कुलगीत का गान हुआ। अतिथियों के स्वागत क्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने शब्द सुमनों के भावों सहित किया। अपने स्वागत भाषण में डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने कार्यशाला का उद्देश्य बताते हुए कार्यशाला में आगामी अध्ययनरत विषयों की सूक्ष्म चर्चा किया। अपने वक्तव्य में मुख्यत: मिश्रित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने व फेस-टू-फेस अधिगम हेतु कार्यशाला के द्वितीय चरण में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का महात्मा गांधी की कर्मभूमि में स्वागत किया। डॉ. ठाकुर ने पारंपारिक शिक्षण पद्धति में नए-नए विकास तथा नई तकनीकों का अधिगम उपागम में

मिश्रण करके किस तरह से अध्यापक शिक्षा में परिवर्तन लाया जा सकता हैं। शिक्षक को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के निरंतर हो रहें परिवर्तन के साथ अपने शिक्षण में कुशलतापूर्वक इसका सदुपयोग किया जाए जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है कि तकनीकी का सदुपयोग करें किंतु इसके गुलाम कदापि न बने। कार्यशाला को संबोधित करते हुए शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता **प्रो. मनोज कुमार** ने कहा कि शिक्षक चयन की कठिनाइयों से उभारने की क्षमता जिसमें होती हैं वहीं शिक्षक होते हैं उन्होंने चुनौतियों की बात करते हुए वृहतर समाज में शिक्षा को पहुँचाने की बात कही। शिक्षक के आचरण एवं व्यवहार की बात को सुगमता पूर्वक सबके सामने रखा। अपने अध्यक्षीय भाषण में माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल** ने एक शिक्षक के रूप में अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि अपनी ब्लेंडिंग आदतों की इतिहास हैं। इसी की निरंतरता में उन्होंने एक गुरिल्ले का भी उदाहरण देते हुए शिक्षा शिक्षण के इतिहास को भी बताया। आगे उन्होंने तकनीकी के बारें में गहन चर्चा करते हुए वर्ल्ड वाइड वेब का संदर्भ देते हुए काल को संकुचित होने की बात कही। ब्लेंडिग को विस्तारित करने की श्रेणी में जो योजना बनाई जाती हैं तो वह वर्ग के क्रम में न बढ़के A+ A++ के क्रम में बढ़ेगी। साक्षरता की वृद्धि के लिए कुछ क्रम की आवश्यकता होती हैं, कौशल होगा तो ही गति बढ़ेगी, उपागमों के विकास की चर्चा शिक्षा में सोशल मीडिया की चर्चा, विभिन्न अनुप्रयोगों एवं मॉड्यूल की चर्चा विभिन्न डिजाइन व डाइग्राम को नए प्रकार के ज्ञान से सृजित करने की चर्चा, शिक्षण अधिगम के कारगर उपकरण के रूप में आई कांटैक्ट की चर्चा की एवं रियल वर्ड एवं वर्चुअल वर्ड को एक साथ लाने के क्रम में रियल वर्ड की क्लास रूम में वर्चुअल वर्ड की क्लास का छौंक लगाने को ही ब्लेंडिग बताया। इसके साथ ही ऑनलाइन शिक्षा के प्रयोग की सार्थकता एवं उपयोगिता से हमें परिचित कराते हुए सूचना के महत्व पर प्रकाश डाला। मूर्त विधियों के स्थान पर अमूर्त विधियों की उपयोगिता को स्पष्ट किया।

धन्यवाद ज्ञापन शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर एवं कार्यशाला संयोजिका डॉ. शिल्पी कुमारी ने किया। डॉ. शिल्पी कुमारी ने सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के अभिभावक हमारे माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल** का सहृदय से आभार व्यक्त किया। साथ ही शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी के अध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार का सहृदय से आभार व्यक्त किया, जिन्होंने कार्यक्रम में नवीन ऊर्जा का सूत्रपात किया। सत्र विषय विशेषज्ञ **डॉ. गौरव सिंह**, *इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय* का आभार व्यक्त किया जो हमें औपचारिक सत्र में मुक्त शैक्षिक संसाधन एवं मिश्रित अधिगम विषय से भलीं-भांति अवगत कराएंगे। इसी क्रम में SOE प्रोजेक्ट के समन्वयक एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर तथा शिक्षा विभाग के सह अध्यापक डॉ. शिरीष पाल सिंह के प्रति आभार व्यक्त किया। जिन्होंने कार्यक्रम के नियोजन से लेकर क्रियान्वयन तक अमूल्य समय एवं सहयोग हमें प्रदान किया। साथ ही कार्यक्रम का संचालन कर रहें शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य डॉ. शेष कुमार शर्मा का भी आभार व्यक्त किया।

प्रथम व द्वितीय सत्र

विषय : मुक्त शैक्षिक संसाधन एवं मिश्रित अधिगम

"अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम" विषय पर 26 से 28 फरवरी, 2020 में आयोजित द्वितीय राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रथम अकादमिक सत्र में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से पधारे डॉ. गौरव सिंह का अतिथि सत्कार शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर एवं कार्यशाला समन्वयक डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा किया गया। "मुक्त शैक्षिक संसाधन एवं मिश्रित अधिगम उपागम" विषय पर अपना विशेष व्याख्यान **डॉ. गौरव सिंह** द्वारा दिया गया। जिसमें उन्होंने अपने उद्बोधन में मिश्रित अधिगम क्या हैं?, "Introducing technology for the sake of technology doesn't work", मिश्रित अधिगम की निरंतरता में कक्षा कक्ष निर्देशों में ऑनलाइन तत्वों द्वारा अधिगम को विस्तृत करने की बात कहीं एवं ऑनलाइन पाठ्यक्रम को आवश्यक बताया। उन्होंने CABLS को अधिगमकर्ता, शिक्षक, तकनीकी, विषय वस्तु, अधिगम सहायक उपकरण एवं संस्थान – छह तत्वों में वर्गीकृत किया। अधिगम की अगली कड़ी में उन्होंने मुक्त शैक्षिक संसाधन क्या हैं, OCW is an OER, विषय की जानकारी देते हुए बताया कि OER वास्तविक रूप से मुक्त है? विषय में freedom 1, freedom 2, freedom 3 के बारें में बताया। इसके पश्चात उन्होंने क्रिएटिव कॉमन्स (CC) license में Attribution CC BY, Attribution – share A like CC BY-SA, Attribution – NON Commercial CC BY-NC, Attribution No derivative CC BY-ND, attribution on-commercial-share a like CC BY NC-SA, attribution non-commercial-no derivative CC BY-NC -ND विषय पर बताया। Where do I find OER विषय पर बताया और उन्होंने उदाहरण के रूप में विडिओ lecture से इस विषय पर प्रकाश डाला। जिसमें इस सत्र का संचालन सुश्री चंचल कुमारी (शोधार्थी, एम.फिल.) ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सुश्री एकता जैन (शोधार्थी, पी-एच. डी.) के द्वारा किया गया|

तृतीय व चतुर्थ सत्र

विषय : मिश्रित अधिगम उपागम के प्रतिमान

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विद्यापीठ के अंतर्गत शिक्षा विभाग के द्वारा **"अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम"** विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रथम दिन तृतीय व चतुर्थ सत्र का आयोजन आईसीटी कक्ष में किया गया। बाह्य विशेषज्ञ **डॉ. अजीत कुमार राय** *(सहायक प्रोफेसर, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय)* का स्वागत वक्तव्य एसोसिएट प्रोफसर डॉ. शिरीष पाल सिंह ने दिया। विश्वविद्यालय परंपरा के अनुरूप बाह्य विशेषज्ञ का सूत माला व विश्वविद्यालय स्मृति चिन्ह से स्वागत सहायक प्रोफेसर श्री धर्मेन्द्र शंभरकर ने किया। प्रतिभागियों से अपनी बात रखते हुए बाह्य विशेषज्ञ डॉ. अजीत कुमार राय ने कहा कि आज वक्त कि मांग है कि हम फेस टू फेस शिक्षा पद्धति के साथ नई तकनीक से भी छात्रों को जोड़े। आज यह मिश्रित अधिगम में जरूरी है कि –

1. वीडियो लेक्चर
2. टेक्स्ट मैटेरियल
3. बेब रिसोर्स
4. डिस्कशन फॉर्म

यह चारों प्रक्रिया से ही हम मिश्रित अधिगम को प्रभावपूर्ण बना सकते हैं। आज भले ही शिक्षार्थी घंटों ऑनलाइन मोबाइल पर व्हाट्सअप या किसी सोसल साईट पर समय बिता सकता है लेकिन ऑनलाइन स्वाध्याय अध्ययन के लिए शिक्षार्थी को 15 मिनट भी रोक पाना मुश्किल हो जाता है। जरूरत है शिक्षार्थी को ऑनलाइन स्टडी के लिए रोकने की स्कील को विकसित करने की।

कई एप्प इसके लिए मोबाइल व कंप्यूटर में आया है। इसके माध्यम से हम वर्ग में या वर्ग के बाहर भी छात्रों से संवाद स्थापित कर कोर्स को पूरा कर सकते हैं। मिश्रित अधिगम से रिसोर्स पर्सन की सृजनात्मकता बढ़ी है। इसका और बेहतर उपयोग सृजनात्मकता के लिए किया जाना अभी प्रक्रिया में है। हम इसके बेहतर उपयोग की दिशा में आगे बढ़ रहे है। अपने वर्ग के दौरान मिश्रित अधिगम के कई मॉडल के बारे में बताया जिसमें प्रमुख निम्नलिखित हैं -----

1. Enriched Virtual Model
2. Flex Model that is Flexible Model
3. A La Carte Model
4. Rotational Model
5. Flipped Learning Model
6. Morning Beyond Bimodality
7. Further Blending Model
8. Online Application – Mimind and Presentation Tube etc.

जैसे मॉडल के साथ मिश्रित अधिगम के प्रतिमान में बदलाव आ रहा है। नई पीढ़ी को नई तकनीक के साथ जोड़कर ही हम मिश्रित अधिगम को व्यवहार में लाने लायक बना सकते हैं। कार्यक्रम के इस सत्र का संचालन श्री दीपक कुमार (शोधार्थी, पी-एच.डी.) ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री दीपेन्द्र बाजपेयी (शोधार्थी, पी-एच.डी.) ने किया|

दिनांक : 27-02-2020

प्रथम व द्वितीय सत्र

विषय : मोबाईल एप्लीकेशन एवं मिश्रित अधिगम

कार्यशाला के दूसरे दिन सत्र के प्रारंभ में **श्री धर्मेन्द्र शंभरकर** *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* द्वारा **डॉ. अमित गौतम** *(सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र संकाय, दयालबाग़ शिक्षा संस्थान)* का स्वागत स्मृति चिह्न देकर किया गया। तत्पश्चात श्री गुलशन कुमार (*पी-एच.डी. शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* द्वारा बाह्य विशेषज्ञ का परिचय कराया गया। आज के सत्र का विषय **'मोबाइल एप्लीकेशन एवं मिश्रित अधिगम उपागम'** था। विशेषज्ञ द्वारा अपने वक्तव्य का प्रारंभ Today, learner is smart then teacher, I am late but latest, से प्रारंभ किया। विषय विशेषज्ञ ने आज के विषय की शुरुआत 7's model of blended

learning के सामान्य परिचय से प्रारंभ करते हुए search, select, study, self-indicative, skilful ……. पर चर्चा की। प्रतिभागियों के ज्ञानपिपासा को शांत करते हुए उन्होंने चर्चा को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात शिक्षकों के आवश्यक तत्वों के संबंध में सभी प्रतिभागियों से चर्चा की। वक्ता महोदय ने यह भी बताया कि e- content, OER, Blogs पर वक्ता महोदय द्वारा प्रतिभागियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का प्रभावी तरीके से उत्तर दिया गया।

इसके अतिरिक्त महोदय ने डिजिटल इंडिया पर चर्चा की। चाय अंतराल के पश्चात द्वितीय सत्र में आदरणीय **डॉ. गौतम**, ने प्रायोगिक कार्य के अंतर्गत Screencastify software, kahoot App, Edmodo Mobile App, Quillionz App के अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। महोदय द्वारा इसके अतिरिक्त गेम्स के माध्यम से शिक्षण को आसान बनाया जा सकता है, इस पर चर्चा की। महोदय ने उपरोक्त बिंदुओं पर प्रतिभागियों के साथ विस्तृत चर्चा की तथा उनकी शंकाओं का समाधान किया। द्वितीय सत्र में धन्यवाद ज्ञापन **श्री अभिषेक वर्मा** *(एम.फिल. शोधार्थी, शिक्षा विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)* द्वारा किया गया।

तृतीय व चतुर्थ सत्र

विषय : मिश्रित अधिगम वातावरण में ई-आंकलन (ई-रूब्रिक्स, ई-पोर्टफोलियो)

अध्यापक शिक्षकों के लिए मिश्रित अधिगम उपागम विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के दूसरे दिन मध्यान्ह भोजनावकाश के उपरांत तृतीय सत्र प्रारंम्भ हुआ। सत्र के विषय विशेषज्ञ **डॉ. दीपक चौहान** *(तिलक शिक्षा महाविद्यालय पुणे)* थे। विषय विशेषज्ञ का स्वागत डॉ. धर्मेन्द्र शंभरकर सहायक प्रोफेसर (म.गां.अं.हि.वि.) के द्वारा स्मृति चिन्ह देकर किया गया। इस सत्र का विषय था- "मिश्रित अधिगम वातावरण में ई आकलन"। इस सत्र में विषय विशेषज्ञ द्वारा चर्चा किए जाने वाले मुख्य बिंदु थे – ई-पोर्टफोलियो, ई-पोर्टफोलियो के प्रकार, जिसमें आपने छात्र केंद्रित एवं संस्था केंद्रित ई-पोर्टफोलियो पर मुख्य रूप से प्रकाश डाला, साथ ही उद्देश्य के आधार पर ई-पोर्टफोलियो किस प्रकार बनाया जाता है इससे भी अवगत कराया, आगे आपने ई-पोर्टफोलियो के महत्व एवं ई पोर्टफोलियो बनाने के विभिन्न साइट्स, ब्लाग्स एवं गूगल साइट्स (sites.google.com) आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा करते हुए आपने प्रतिभागियों को इनसे अवगत कराया। आगे आपके द्वारा छात्रों के लिए ई-पोर्टफोलियो बनाने के लिए किन-किन जानकारियों की आवश्यकता होती है पर चर्चा – परिचर्चा करते हुए प्रतिभागियो से ई-पोर्टफोलियो बनाने का अभ्यास कराया गया। चाय अंतराल के बाद चतुर्थ सत्र प्रारंभ हुआ, इस सत्र का मुख्य बिंदु था- ई-आकलन। ई-आकलन विषय पर चर्चा करते हुए आपने बताया कि किस प्रकार इसके द्वारा उपचारात्मक, निर्माणात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन किया जा सकता है। आगे आपके द्वारा ई आकलन के प्रकार, महत्व एवं सीमाएँ आदि बिंदुओं पर गहन एवं विस्तृत चर्चा की गई। शिक्षकों के लिए उपलबध विभिन्न प्रकार के निर्माणात्मक मूल्यांकन एप्स जैसे – Kahoot!, verso, socrative teacher, Zoho forms आदि से अवगत कराया। आगे

आपने विभिन्न प्रकार के ई आकलन टूल्स (Mentimeter) एवं इससे संबंधी विभिन्न साइट्स की जानकारी दी एवं ई रूबरिक पर चर्चा के पश्चात सत्र का समापन किया गया।

दिनांक : 28-02-2020

प्रथम व द्वितीय सत्र

विषय : अधिगम प्रबंधन प्रणाली एवं मिश्रित अधिगम

कार्यशाला के तीसरी दिन बजाज़ कालेज ऑफ साइन्स, वर्धा के इलेक्ट्रानिक्स डिपार्टमेंट के प्रोफेसर **डॉ. परवेज़ सौदागर** विषय विशेषज्ञ के रूप में आए थे, जिन्होनें अधिगम प्रबंधन प्रणाली और मिश्रित अधिगम विषय पर इस सत्र में चर्चा किया। इस सत्र में डॉ. सौदागर ने बताया कि आज तकनीकी के इस दौर में हम किस तरह से अपने पाठ्य सामग्रियों का प्रबंधन ऑनलाइन कर सकते हैं। इसके अंतर्गत MOOCs पाठ्यक्रम की चर्चा करते हुए बताया कि MOOCs के द्वारा हम ऑनलाइन connectivity के माध्यम से एक बड़े स्तर के समूह को एक साथ communicate कर सकते हैं। उन्होंने MOOCs पाठ्यक्रम के अंतर्गत कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की चर्चा की जिसके माध्यम से ऑनलाइन कक्षाएं चलाई जा सकती हैं। जैसे- Moodle, EDX, Course Builder, Black Board, Swayam, Future Learn और Cognitive Class डॉ. सौदागर ने बताया कि Moodle छात्रों व शिक्षकों दोनों के लिए लाभप्रद है। उन्होंने बताया कि छात्रों के लिए Moodle निम्नलिखित प्रकार से सहायक है-

- छात्रों के लिए ई-पुस्तक की त्वरित सुविधा।
- छात्र अपने प्रदत्त कार्यों को कभी भी और कहीं से भी सबमिट कर सकता हैं।
- इस पर छात्र किसी भी विषय पर विश्व के किसी भी कोने से ऑनलाइन सामूहिक रूप से चर्चा कर सकते हैं।
- छात्र इस पर क्विज़ प्रतियोगिता के साथ-साथ, सवालों के जबाब दे सकते हैं।
- इसके माध्यम से छात्र सतत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बना रहता हैं।
- इसके माध्यम से छात्र अपनी पाठ्य सामग्री को सबमिट करने के साथ-साथ भविष्य में कभी भी और कहीं से दोबारा देख और पढ़ सकता हैं।

शिक्षकों के लिए Moodle की उपयोगिता –

- शिक्षक Moodle पर अपने विडियो लैक्चर को अपलोड कर सकता हैं।
- इस प्लेटफॉर्म पर अध्यापक अच्छी-अच्छी पुस्तकें ई-बुक के रूप में अपलोड कर सकता हैं।

- इसके माध्यम से अध्यापक विद्यालय व कक्षा शिक्षा से इतर कहीं से और कभी भी टेस्ट और क्विज़ के माध्यम से अपने छात्रों का सतत मूल्यांकन कर सकता है।
- इसके माध्यम से दस्तावेजों को कई वर्षों तक रेकॉर्ड के रूप में रखा जा सकता है।
- इसके माध्यम से अध्यापक कई पाठ्यक्रमों को बना सकता है तथा उस पर ऑनलाइन कक्षाएँ चला सकता है।

Moodle संबंधी सिद्धांतों को समझने के बाद विषय विशेषज्ञ ने सभी प्रतिभागियों से प्रायोगिक कार्य करवाया। इसके अंतर्गत सभी प्रतिभागियों को Moodle पर अपना अकाउंट बनाना, कोर्स बनाना, छात्रों को उन कोर्सेस में पंजीकृत करना साथ ही साथ Moodle पर किस प्रकार पाठ्य से सामग्रियों को नियोजित किया जाए तथा छात्रों को किस प्रकार से वे पाठ्य वस्तुएँ ऑनलाइन उपलब्ध कराई जाए। Moodle से जुड़े इन सभी पक्षों का प्रायोगिक कार्य विषय विशेषज्ञ ने प्रतिभागियों के द्वारा करवाया तथा इस दौरान आने वाली समस्याओं का समाधान किया।

इस सत्र में विषय विशेषज्ञ का स्वागत शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर श्री धर्मेंद्र शंभरकर ने किया तथा सत्र का संचालन पी-एच.डी. शोधार्थी श्री जयवीर सिंह नेगी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन पी-एच.डी. शोधार्थी श्री आशुतोष कुमार ने किया।

तृतीय सत्र

विषय : फ्लिप्पड क्लासरूम

बाह्य विशेषज्ञ - डॉ. अमित आहूजा, सहायक प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, गुरु गोविन्द सिंह इन्द्रप्रश्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

इस सत्र के शुरुआत में विषय-विशेषज्ञ **डॉ. अमित आहूजा** को विभागाध्यक्ष **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** के द्वारा विश्वविधालय के स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। तत्पश्चात विषय विशेषज्ञ डॉ. अमित आहूजा के द्वारा पी.पी.टी के माध्यम से filliped classroom के बारे में बताया गया। तथा फ्लिप्पड क्लासरूम के इतिहास के बारे में और इसका परिचय दिया गया कि फ्लिप्पड क्लासरूम क्या होता है, और फ्लिप्पड क्लासरूम किसे कहते है। इसके बाद महोदय के द्वारा सभी शोधार्थियों व प्रतिभागियों से दस एक्साइज करवाया गया। जिसमें पहला, शोध क्या है? इस पर सभी शोधार्थियों से पांच पांच वाक्य लिखने को बोला गया। साथ ही हाइपोथिसिस, सेम्पलिंग, शोध का सीमांकन आदि पर भी चर्चा हुई। तत्पश्चात लर्निंग रैट, ब्लूम टेक्स्ट, मास्टरी लर्निंग, मूल्यांकन क्या होता है। इसके बाद महोदय के द्वारा कुछ साइट्स के बारे में बताया गया। जिसमें की Google, Yahoo, Bing, Baidu, Ask.com, AOl.com आदि शामिल थे, और स्लाइड अपलोड किया जाता है न की शेयर किया जाता है, यह भी बताया। इसके पश्चात एक्साइज के रूप में महोदय के द्वारा एक-एक करके दो फोर्मेट दिया गया और उस पर सभी शोधार्थियों एवं प्रतिभागियों से एक-एक शोध टॉपिक बनाने के लिए बोला गया। इस तरह पूरे कार्यशाला के अंतिम समय तक शोध से संबंधित एक्साइज आपके द्वारा करवाया गया। सत्र के अंत में कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन (एम.फिल शोधार्थी) गौरी शंकर के द्वारा किया गया।

समापन सत्र

समापन सत्र में मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि व अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल** थे। इसके अलावा मंच पर विभाग के अधिष्ठाता **प्रो. मनोज कुमार**, विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर, मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. शिरीष पाल सिंह एवं विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. शिल्पी कुमारी मंचासीन रहे।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति **प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल**

सत्र में स्वागत वक्तव्य डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर के द्वारा दिया गया। तीन दिनों के कार्यशाला का प्रतिवेदन-प्रस्तुति डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें कार्यशाला में कितने विषय- विशेषज्ञों के द्वारा प्रतिभागियों को लाभान्वित कराया गया और कितने आंतरिक एवं बाह्य प्रतिभागी प्रतिभाग लेकर लाभान्वित हुए। यह बताया गया। इसके अलावा तीन दिवसीय कार्यशाला में किन-किन विषयों पर चर्चा व परिचर्चा हुई, इसके बारे में भी डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा बताया गया। प्रतिपुष्टि डॉ. अरबिंद कुमार *(उष्मानिया विश्वविद्यालय)* ने करते हुए विश्वविद्यालय से आग्रह किया कि भविष्य में इसी तरह के कार्यशाला किया जाता रहे जिससे ज्ञान संवर्धन में मदद मिलती रहे। इसी तरह डॉ. सी. श्रीदेवी *(सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ पोंडिचेरी)*, इन्होंने प्रतिपुष्टि के रूप में विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया और यहाँ के आतिथ्य की सराहना किया। डॉ. विनय जी *(शिवाजी विश्वविद्यालय, कोलापुर)* इन्होंने भी प्रतिपुष्टि के रूप में विभाग के सभी शिक्षकों को धन्यवाद दिया। सुश्री कौमी जी के द्वारा *(डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ)* प्रतिपुष्टि के रूप में यह बताया गया कि हमें इस कार्यशाला से तमाम सारी चीजें सीखने को मिला जैसे अन्य सॉफ्टवेयर मूडल, एड्मोडो आदि इसके अलावा विश्वविद्यालय एवं विभाग के शिक्षकों को धन्यवाद दिया। समापन सत्र के पहले माननीय कुलपति एवं अन्य शिक्षक और प्रतिभागियों के साथ फोटो सेसन भी हुआ। अंत में शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सह-प्रो. डॉ. शिरीष पाल सिंह के द्वारा धन्यवाद व आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

23. अध्यापक शिक्षा के लिए ई -पाठ्य वस्तु तथा मूक्स का विकास (Developing e-Content / MOOCs for Teacher Education) दिनांक (02-06 मार्च, 2020)

दिनांक : 02-03-2020

प्रथम दिवस उद्घाटन समारोह

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के श्यामा प्रसाद मुखर्जी भवन के शिक्षा विद्यापीठ में **"अध्यापक शिक्षा के लिए ई- पाठ्य- वस्तु एवं मूक्स का विकास"** विषय पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय प्रति-कुलपति **प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल** ने कहा कि हमारी भ्रांति है कि तकनीक और प्रौद्योगिकी हर व्यक्ति तक पहुँचने का साधन है, जबकि तकनीक की प्रभाविता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रौद्योगिकी किसके द्वारा निर्मित है, निर्देशित है तथा किसके द्वारा उपयोग की जा रही है इससे उनकी गुणवत्ता तय होती है।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय प्रति-कुलपति **प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल**

इसलिए जितना संभव हो तकनीक को अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना होगा। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन मंचासीन सम-कुलपति-सह संरक्षक प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार, विभागाध्यक्ष-सह-कार्यशाला निदेशक **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर**, कार्यशाला आयोजन सचिव सह प्राध्यापक डॉ. शिरीष पाल सिंह, कार्यशाला संयोजक सहायक प्राध्यापक डॉ. शिल्पी कुमारी व बाह्य विषय-विशेषज्ञ के रूप में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के **प्रो. प्रदीप कुमार मिश्र** के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। उद्घाटन के बाद विश्वविद्यालय के कुलगीत का गायन किया गया। स्वागत वक्तव्य स्वरूप विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आये प्राध्यापकों व शोधार्थियों से कार्यशाला को लाभप्रद बनाने व सहभागिता के साथ इसे अर्थपूर्ण बनाने की बात कहते हुए तकनीक की मदद से ज्ञान को अंतिम

व्यक्ति तक ले जाने की वकालत की। विशेषज्ञ वक्तव्य में प्रो. प्रदीप कुमार मिश्र ने सबको समान और गुणात्मक शिक्षा की बात कही। शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने प्रौद्योगिकी के द्वारा औपचारिक को अनौपचारिक तथा अनौपचारिक को औपचारिक बनाने के काम पर बल दिया। कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए कार्यक्रम के सचिव डॉ. शिरीष पाल सिंह ने कार्यशाला के विषयों पर संक्षिप्त चर्चा की। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का कुशल संचालन करते हुए कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. शिल्पी कुमारी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। कार्यशाला में 15 राज्यों के 25 प्राध्यापक व शोधार्थी बाह्य-सहभागी के रूप में उपस्थित रहे। कार्यशाला में शिक्षा विभाग के प्राध्यापक, शोधार्थी व विद्यार्थी भी अध्यापक शिक्षा के लिए ई- पाठ्य- वस्तु एवं मूक्स का विकास की कार्यशाला में शामिल रहे।

प्रथम दिवस, प्रथम सत्र

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार तथा शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के संयुक्त तत्वाधान में **"अध्यापक शिक्षा के लिए ई-पाठ्य-वस्तु/मूक्स का विकास"** विषय पर पांच दिवसीय (02-06 मार्च, 2020) राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रथम औपचारिक सत्र में **प्रो. प्रदीप मिश्रा** *(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)* ने स्वयं के द्वारा मूक्स **(MOOCs Through SWAYAM)** संकल्पना को युक्तिसंगत एवं प्रभावशाली बनाने के लिए प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा प्रारंभ की।

प्रो. प्रदीप मिश्रा (विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)

प्रो. मिश्र ने प्रतिभागियों से **मूक्स के प्रयोग** से संबंधित प्रश्न किया तथा प्रतिभागियों की राय जानने के लिए सभी प्रतिभागियों को चार-चार प्रतिभागियों के समूह में वर्गीकृत कर उनसे विचार विमर्श किया तत्पश्चात मूक्स के संदर्भ में प्रतिभागियों के प्रश्न जैसे मूक्स का प्रमाणपत्र कितना वैध हैं? मूक्स को तर्कसंगत रूप से कैसे बनाया जाए? मूक्स को तकनीकी रूप में कैसे प्रयोग किया जाए?, मूक्स के माध्यम से शिक्षण तथा परंपरागत शिक्षण में क्या अंतर है?, मूक्स में विषय वस्तु को

खोजने व विकसित करने की क्या प्रक्रिया हैं?, MOOCs व SWAYAM एक ही चीज हैं या भिन्न?, मिश्रित अधिगम एवं मूक्स में मुख्य अंतर क्या हैं? का समाधान किया। उन्होंने मूक्स के तत्वों एवं निर्माण सिद्धांतों को अभिव्यक्त करते हुए **Access, Equity and Quality** पर चर्चा की इसी क्रम में उन्होंने SWAYAM के राष्ट्रीय कोर्डिनेटर पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात MOOCs के तत्वों पर विचार विमर्श किया। उन्होंने वीडियो क्लिप्स, केस स्टडी, मल्टीमीडिया प्रोडक्शन, न्यूज़ के बारे में बताते हुए मूक्स विकसित करने की प्रक्रिया को प्रायोगिक रूप से करवाया। इसी क्रम में उन्होंने अंत में सभी प्रतिभागीगणों की समस्याओं को अपने अनुभव के माध्यम से समाधान किया।

द्वितीय एवं तृतीय सत्र

प्रथम दिवस के द्वितीय तथा तृतीय सत्र में बाह्य विषय-विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. ज्योति नारायण बालिया** *(विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय)* का स्वागत विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा स्मृति चिन्ह देकर किया गया। डॉ. ज्योति नारायण बालिया ने कार्यशाला में अध्यापक शिक्षा के लिए ई-पाठ्य-वस्तु/ मूक्स का विकास के अंतर्गत **ई-पाठ्य सामग्री (ऑडियो, वीडियो सामग्री आदि के विकास के लिए उपकरण)** पर अपना उद्बोधन दिया, उन्होंने कार्यशाला की शुरुआत प्रश्नों के माध्यम से की। उन्होंने प्रश्न पूछा कि e-कंटेंट क्या होता है? काफी प्रतिभागियों ने इस पर अपना विचार दिया। इन्हीं में से एक प्रतिभागी (अभिषेक वर्मा) के प्रतिउत्तर **Local to Global** के मद्दे नज़र बालिया जी ने इस पर काफी चर्चा की जिसमें प्रमुख बातें निम्न रहीं- **17* 17**, चार **A' s (Any where, Anyway, Anytime, Anyone)** उपयुक्त बिंदुओं के बाद उन्होंने ATM का उदाहरण दिया और कक्षा में विडिओ-ऑडियो का इस्तेमाल के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने भारत सरकार के कार्यक्रम स्वयं **(SWAYAM)** के बारे में बताते हुए ऑनलाइन पाठ्यक्रम से जुड़ने की प्रक्रिया से अवगत कराया। इसके बाद उन्होंने मुक्त शैक्षणिक संसाधनों **(OER)** पर चर्चा की। इस चर्चा में उन्होंने प्रश्नों के माध्यम से चर्चा को आगे बढ़ाया। इस चर्चा में सभी प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। चर्चा के क्रम में उन्होंने **Pixabay** सॉफ्टवेयर के बारे में बताते हुए सभी प्रतिभागियों से सॉफ्टवेयर के माध्यम से प्रायोगिक कार्य कराया। प्रायोगिक कार्य के दौरान अन्य जानकारी जैसे Video recorder तथा e- Screen Castify के बारे में बताया।

तृतीय सत्र में डॉ. बालिया ने **Open Shot Video Editor** सॉफ्टवेयर के माध्यम से प्रायोगिक कार्य कराते हुए प्रतिभागियों को वीडियो सम्पादित करने की प्रक्रिया से अवगत कराया इस क्रम में उन्होंने कुछ वीडियो को एक साथ जोड़ना तथा ऑडियो को संपादित करने के लिए भी प्रयोग कार्य कराए। सत्र का संचालन श्रीमती रेशमा चव्हाण (शोधार्थी) द्वारा किया गया सत्र के अंत में गुलशन कुमार (शोधार्थी) के द्वारा डॉ. ज्योति नारायण बालिया का धन्यवाद ज्ञापन कर सत्र का समापन किया गया।

दिनांक : 03-03-2020

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में बाह्य विषय-विशेषज्ञ के रूप में **श्री चंचल कुमार सिंह** *(ट्रेनिंग ऑफिसर भाषा, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा)* का स्वागत विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. शिल्पी कुमारी के द्वारा स्मृति चिन्ह देकर किया गया। श्री चंचल जी ने "स्वयं के माध्यम से मूक्स का अभिकल्प एवं वितरण" विषय पर प्रभावशाली तरीके से प्रतिभागियों से बातचीत के माध्यम से विषय की शुरुआत की, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने मूक्स, मुक्त शैक्षिक संसाधनों के बारे में अपनी बात रखी। विशेषज्ञ ने स्वयं (SWAYAM) पर पंजीकरण करने की प्रक्रिया से रूबरू कराते हुए सभी प्रतिभागियों को स्वयं की वेबसाइट पर पंजीकृत करने के लिए प्रेरित किया। सभी प्रतिभागियों ने प्रयोगकार्य के द्वारा (SWAYAM) पर पंजीकरण करने की प्रक्रिया को पूर्ण किया। इसी श्रृंखला में श्री चंचल ने स्वयं के सभी 8 राष्ट्रीय समन्वयकों के बारे में जानकारी देते हुए प्रतिभागियों को अपनी रूचि के विषय के किसी कोर्स में कार्य करवाया। इसी के साथ महोदय ने मूक्स के लाभ बताते हुए SWAYAM की चार चतुर्थांश उपागम जिसमें उन्होंने **E- Tutorials, E- Content, Self-Assessment, Discussion Forum** के बारे में विस्तार से बताया।

महोदय ने मूक्स की संरचना के बारे में बताते हुए मूक्स के विकास से संबंधित सभी आयामों के बारे में चर्चा की। इसके अंतर्गत उन्होंने क्रेडिट तथा नॉन क्रेडिट पाठ्यक्रमों से संबंधित आवश्यक जानकारी को साझा किया तथा प्रतिभागियों की समस्याओं का समाधान किया। उदाहरण देते हुए श्री चंचल ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की कार्यप्रणाली से अवगत कराया जिसमें भारत वर्ष में गैर प्रशिक्षित सेवाकालीन शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए डी एल. एड. पाठ्यक्रम के रूप में किए गए संस्थान के प्रयास के बारे में चर्चा को प्रमुखता से रखा गया। इसके साथ ही ऑन डिमांड एग्जाम सिस्टम **(ODES)** से बारे में जानकारी दी, जिसमें शिक्षार्थी अपनी सुविधा के अनुसार कभी भी परीक्षा दे सकता है। इसी क्रम में मूल्यांकन तथा प्रमाण पत्र संबंधित प्रक्रिया को समझाते हुए ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली से अवगत कराया। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए **स्वयं प्रभा (SWAYAM PRABHA)** के सभी **33 चैनेल** की जानकरी देते हुए कुछ मुख्य चैनल पाणिनि चैनल, शारदा, वाग्दा, और ज्ञानामृत चैनेल के बारे में बताया। महोदय ने अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रयोग कार्य कराया।

द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र में मूक्स वीडियो के विकास के लिए पटकथा (स्क्रिप्ट) संबंधी जानकारी देते हुए विशेषज्ञ महोदय ने डेमो वीडियो दिखाई जिसमें APRIT के अंतर्गत महात्मा गांधी अंतररराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के भाषा विद्यापीठ से संबंधित वीडियो भी थे। इसके उपरांत वीडियो को संपादित करने के लिए जरूरी पद बताए, जिसमें ऑनलाइन पाठ्यक्रमों से संबंधित पटकथा शामिल रहे। वीडियो संपादन के दौरान अकादमिक तथा तकनीकी पक्षों के बारे में पारस्परिक विचार- विमर्श के माध्यम से चर्चा की गई। सत्र को रोचक बनाते हुए श्री चंचल ने google image से निशुल्क तस्वीरें प्राप्त करने की प्रक्रिया बताई, जिससे अधिकतम कार्य को आसान बनाया जा सके। इसके उपरांत you tube में creative Common

Licences के साथ वीडियो को खोजना बताया तथा प्रयोग कार्य द्वारा कराया गया। मूक्स निर्माण के क्रम में बताया गया कि अपने पाठ्यक्रम की रूपरेखा किस प्रकार तैयार करनी है इसमें मुख्य रूप से पाठ्यक्रम का परिचय, परिचयी वीडियो (जो कि 5 मिनट से ज्यादा न हो) व्यवस्थित करना है, इन वीडियो को राष्ट्रीय समन्वयकों के पास भेजने की पूर्ण प्रक्रिया को प्रयोग कार्य के माध्यम से बताया गया। इस सत्र में प्रायोगिक कार्य बहुत प्रभावी होने के कारण सभी प्रतिभागियों ने आनंद एवं उत्साह वर्धक रूप में अभ्यास किया। पूरा सत्र प्रायोगिक कार्य के माध्यम से बहुत प्रभावशाली, ऊर्जावान तथा ज्ञानदायी साबित हुआ। इस सत्र में मंच संचालन गुलशन कुमार (शोधार्थी) ने किया तथा सत्र के अंत में सौरभ कुमार (शोधार्थी) ने विषय-विशेषज्ञ का धन्यवाद ज्ञापन किया इसके साथ द्वितीय सत्र का औपचारिक समापन किया गया।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

द्वितीय दिवस के तृतीय सत्र में विषय-विशेषज्ञ **डॉ.ज्योति नारायण बालिया** *(विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय)* का स्वागत **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर** *(विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, म.गां.अं.हिं.वि. वर्धा)* द्वारा शब्द-सुमनों से किया गया। तृतीय सत्र के प्रारंभ में श्री अनुप कुमार (पी-एच.डी. शोधार्थी, गढ़वाल वि.वि.) द्वारा ओपन शूट वीडियो एडिटर सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पादित 10 मिनट का विडियो दिखाया गया। जो कि पहले दिन के तृतीय सत्र में डॉ. ज्योति नारायण बालिया जी द्वारा कराए गए प्रयोग कार्य पर आधारित था। वीडियो प्रदर्शन के उपरांत डॉ. बालिया द्वारा स्वयं, मूक्स की मूलभूत जानकारी के साथ-साथ ओपन शूट वीडियो एडिटर सॉफ्टवेयर की जानकारी विस्तृत रूप में प्रदान की गई। इसी क्रम में डॉ. बालिया ने ICT as an Emerging Human Experience के माध्यम से हमारे परिवेश में होने वाले प्रभावों को उदाहरण के माध्यम से प्रस्तुत किया। Technology Integration in Class-room के माध्यम से 4 A's का उदाहरण देते हुए (Anywhere, Anyway, Anytime और Anyone) की विस्तृत जानकारी दी। ई- पाठ्यवस्तु विकास- **Vital Talks** के लिए उन्होंने **Collection, Creation, Storage & Dissemination** विषय पर प्रकाश डाला, साथ ही साथ प्रयोग में लाए जाने वाले उपकरण जैसे- **Open Shot Video editor, Audacity, Powtoon** की विस्तृत जानकारी प्रदान की और इसके उपरांत इस सत्र में Video Record करने के पूर्व Script बनाने के बारे में उदाहरण देते हुए समझाया कि Video Record क्या है और इसका उपयोग कैसे किया जाता है।

डॉ. ज्योति नारायण बालिया ने चतुर्थ सत्र में प्रायोगिक कार्य पर ध्यान केंद्रित किया। जिसमें ऑनलाइन सॉफ्टवेयर डाउनलोड कर उसके उपयोग के बारे में प्रयोग के माध्यम से समझाया गया। जैसे- उन्होंने **storyboard.com** बेवसाइट का प्रयोग करके कहानी (स्टोरी) बनाने की प्रक्रिया प्रयोग के माध्यम से विस्तृत रूप से बताई। इस सत्र में प्रायोगिक कार्य बहुत प्रभावी होने के कारण सभी प्रतिभागियों ने आनंद एवं उत्साहवर्धक रूप में अभ्यास किया। पूरा सत्र प्रायोगिक कार्य के माध्यम से बहुत प्रभावशाली रहा। इस सत्र का मंच संचालन आशुतोष कुमार विश्वकर्मा (शोधार्थी) ने किया। सत्र के अंत में श्रीमती रेश्मा चव्हाण (शोधार्थी) के द्वारा डॉ. बालिया का धन्यवाद ज्ञापन कर सत्र का समापन किया गया।

दिनांक : 04-03-2020

तृतीय दिवस, प्रथम सत्र

राष्ट्रीय कार्यशाला के तीसरे दिन के प्रथम सत्र के विषय विशेषज्ञ **डॉ. विशाल सूद** *(संकाय अध्यक्ष, शिक्षा संकाय हिमांचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय)* रहे। विषय-विशेषज्ञ का स्वागत **डॉ. शिल्पी कुमारी** *(सहायक प्रोफ़ेसर, म.गां.अं.हिं.वि.)* के द्वारा प्रतीक चिन्ह देकर किया गया। इस सत्र में विषय विशेषज्ञ द्वारा किए गए चर्चा के प्रमुख बिंदु विभिन्न प्रकार के मोबाईल एप्लीकेशन जैसे- Screen cost O Matic, A Z Screen Recorder, VEdit Video Cutter and Merger, Google classroom रहे। इन सभी मोबाइल एप्लीकेशन के बारे में विषय विशेषज्ञ ने विस्तारपूर्वक चर्चा की साथ ही उन्होंने सभी एप्लीकेशन के गुण एवं सीमाओं से भी अवगत कराया। उन्होंने अपने वक्तव्य के माध्यम से कहा कि शिक्षण एक आदर्श पेशा है, क्योंकि एक शिक्षक ही होता है जो कि दूसरों के ख़ुशी में भी खुश होता है। शिक्षण कार्य मानव द्वारा मानव के लिए किया जाता है इसलिए मानव सर्वोपरि है न कि तकनीकी हालांकि बदलते समय के साथ तकनीकी का प्रयोग भी आवश्यक हो गया है फिर भी यह ध्यान योग्य है कि तकनीकी का प्रयोग विषयवस्तु को सही तरीके से पहुँचाना होता है अतः तकनीकी से ज्यादा महत्व विषयवस्तु को देना चाहिए। इसी श्रृंखला में उन्होंने बताया कि किसी भी ऑडियो या विडियो का रिकॉर्डिंग के पूर्व ही स्क्रिप्ट तैयार करना आवश्यक होता है, साथ ही एक शिक्षक का शब्द भंडार भी समृद्ध होना चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण है कि एक शिक्षक को यह हमेशा याद रहना चाहिए कि वह एक शिक्षक है न कि तकनीशियन। तृतीय दिवस के द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञ द्वारा Screencost O Matic मोबाइल एप्लीकेशन का प्रतिभागियों से अभ्यास कार्य कराया गया। साथ ही प्रतिभागियों के समस्याओं का निदान किया गया। सत्र का मंच संचालन एकता जैन (शोधार्थी) द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रियंका सिंह (शोधार्थी) द्वारा किया गया।

तृतीय दिवस, तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

कार्यशाला के तृतीय दिवस के तृतीय सत्र में विषय-विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. कृष्णा कुसुम**, *(अनवर जमाल किदवई जनसंचार शोध केंद्र, जामिया मिलिया इस्लामिया)* से रहे। सत्र का विषय **"गूगल सहयोगी उपकरण और ई-पाठ्य सामग्री का विकास"** था। इस सत्र में विशेषज्ञ द्वारा सभी सहभागियों को दो समूह में विभक्त कर प्रश्नोतरी करवाया। इसके माध्यम से यह प्रयास किया गया कि शोधार्थी ई-पाठ्य सामग्री से संबंधित क्या जानकारी रखते हैं। तत्पश्चात उन्होंने गूगल उपकरण पर विस्तार से चर्चा की तथा चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि परियोजना का निर्माण कैसे करना चाहिए। आपने google cloud, html, embedded code, plagiarism पर चर्चा की। तत्पश्चात आपने मूक्स पर चर्चा करते हुए बताया कि मूक्स के कोर्स को चलाने के लिए किसी भी सॉफ्टवेयर की आवश्यकता नहीं होती सिर्फ ज्ञान महत्वपूर्ण होता है मूक्स की एक विशेषता है कि यहाँ सभी विषय के कोर्स स्वयं पर उपस्थित है।

चतुर्थ सत्र का मुख्य बिंदु video scribe सॉफ्टवेयर रहा। महोदय ने इस पर विस्तार-पूर्वक चर्चा की तथा वीडियो बनाने से सबंधित प्रयोग कार्य कराया। प्रयोग कार्य तथा अभ्यास के पश्चात चार प्रतिभागियों ने स्वनिर्मित वीडियो स्क्राइब का प्रस्तुतीकरण किया इसी के साथ इस सत्र का समापन किया गया। सत्र का संचालन जयवीर सिंह द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन सुश्री चंचल द्वारा किया।

दिनांक : 05-03-2020

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

कार्यशाला के चतुर्थ दिवस के प्रथम सत्र में विषय-विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. मधुसूदन जे. वी**. *(सह- प्राध्यापक, शिक्षा एवं शैक्षिक तकनीकी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद)* रहे। कार्यशाला के विषय विशेषज्ञ का स्वागत शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. शिल्पी कुमारी द्वारा किया गया। डॉ. मधुसूदन जे. वी. ने "**Moodle के माध्यम से MOOCs का विकास कैसे किया जाए**?" विषय पर सत्र का आयोजन किया। उन्होंने **Moodle** के विषय में बताते हुए कहा कि मूडल के माध्यम से हम एक पाठ्यक्रम की शुरुआत, छात्रों का पंजीयन, पाठ्य सामग्री को अपलोड कर सकते हैं तथा मूडल के माध्यम से हम छात्रों से **MCQ/Quiz** के माध्यम से प्रश्न पूछ सकते हैं? इसके लिए किसी भी तरह के विद्यालय की कक्षा की आवश्यकता नहीं हैं। मूडल के माध्यम से छात्र ऑनलाइन कहीं से, कभी भी और किसी भी समय पढाई कर सकते हैं। इसके बाद विषय विशेषज्ञ ने मूडल पर अकाउंट, पाठ्यक्रम निर्माण से संबंधित प्रयोग कार्य कराया। साथ ही साथ उस पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाने के साथ-साथ उसमें क्विज बनाने की प्रक्रिया को प्रयोग के माध्यम से बताया। इस तरह से इस सत्र में सभी प्रतिभागियों ने Moodle पर उक्त सभी बिंदुओं पर अभ्यास कार्य किया। सत्र का संचालन सुश्री प्रियंका सिंह द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन आशुतोष विश्वकर्मा द्वारा किया गया।

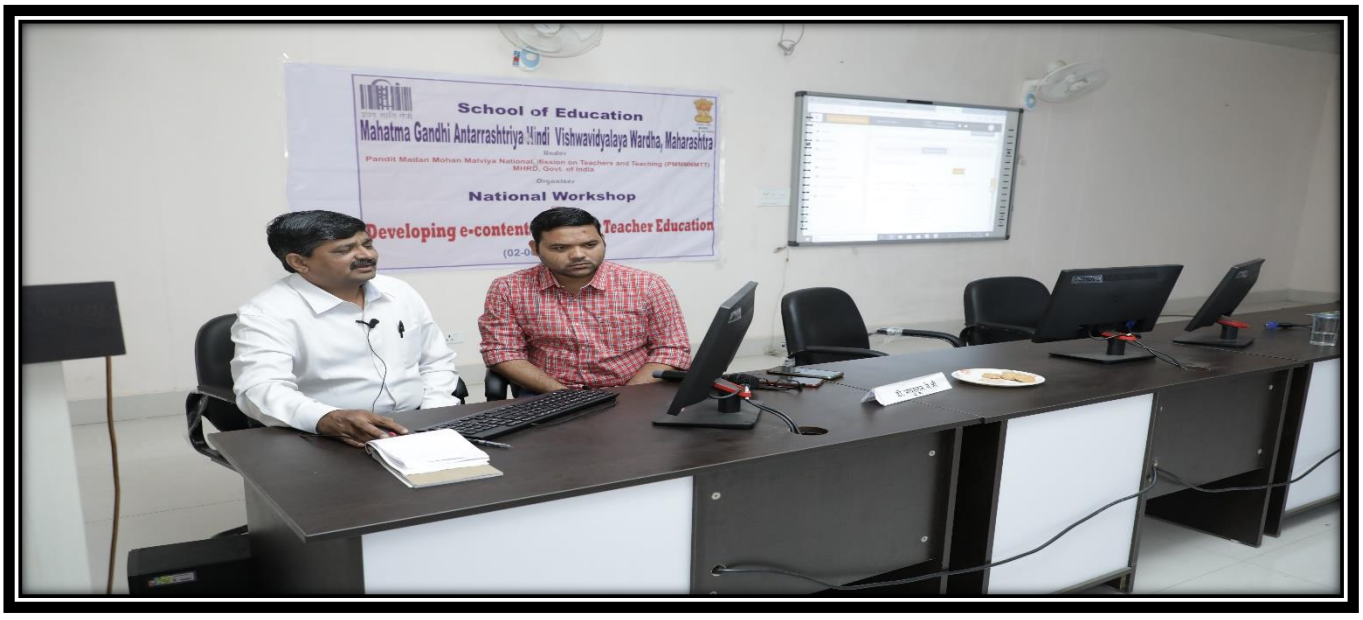

विषय-विशेषज्ञ **डॉ. मधुसूदन जे. वी**. प्रतिभागियों को moodle के बारे में बताते हुए|

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

कार्यशाला के चतुर्थ दिवस में तृतीय सत्र में विषय-विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. मधुसूदन जे.बी.** द्वारा मूक्स के अंतर्गत सभी प्रतिभागियों से कुछ प्रश्न पूछे और उन्हीं प्रश्नों के माध्यम से चर्चा का आरंभ किया।

चर्चा के पश्चात उन्होंने एक मूक्स के अंतर्गत मूडल सॉफ्टवेयर के बारे में बताया तत्पश्चात और भी कई सारे तथ्यों को भी बताया जो निम्नलिखित है-

1. प्रतिभागी अपना पंजीकरण कैसे करें? (Participants enrolment) कैसे करते हैं।
2. मूडलक्लाउड (Moodle Cloud) में असाइनमेंट (Assignment) कैसे जोड़ते हैं।
3. मूडलक्विज़ (Moodle Quiz) कैसे तैयार किया जाता है।
4. मूडल क्लाउड (Moodle Cloud) के उपागम कौन-कौन से होते हैं।
5. मूडल में किस प्रकार से छात्रों को जोड़ा जाता है।
6. मूडल का उपयोग अध्यापक किस प्रकार कर सकते हैं।

यह प्रक्रिया प्रयोग कार्य के माध्यम से बताई गई। अतः इन सब प्रक्रियाओं को करने के बाद उन्होंने सभी प्रतिभागियों को खुद से करने को कहा और वह सभी प्रतिभागियों को जाकर बीच-बीच में दिशा निर्देश देते रहे और अंत में जयवीर सिंह के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन कर सत्र का समापन किया।

दिनांक : 06-03-2020

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

राष्ट्रीय कार्यशाला के पंचम दिवस के प्रथम सत्र में विषय विशेषज्ञ **डॉ. बिजू. के.** *(सहायक प्राध्यापक, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय)* रहे। विषय-विशेषज्ञ का स्वागत **डॉ. शिल्पी कुमारी** *(सहायक प्रोफ़ेसर, म.गां.अं.हिं.वि.)* के द्वारा प्रतीक चिन्ह देकर किया गया। डॉ. बिजू ने ई- पाठ्यसामग्री के विकास हेतु ऑनलाइन तथा ऑफलाइन उपकरण के बारे में बताया। महोदय ने eXelearning XHTML Editor के बारे में प्रयोग कार्य के द्वारा समझाया। इसके बाद महोदय ने SAMR मॉडल, ADDIE मॉडल के वृहद पक्षों को सामने रखा। इस दौरान प्रतिभागी प्रयोग कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं को बताते रहे महोदय ने बहुत ही बारीकी से सबकी समस्याओं का समाधान किया। इसी श्रृंखला में महोदय ने E- Learning, M-Learning, Blended Learning, Flipped Learning के प्रत्यय को लेकर प्रतिभागियों की भ्रांतियों को भी दूर किया। इसके बाद महोदय ने concept mapping सॉफ्टवेयर के बारे में बताते हुए संबंधित प्रयोग कार्य कराए। चर्चा तथा प्रयोग कार्य को आगे बढ़ाते हुए महोदय ने VUE (Visual Understanding Enviornment) से संबंधित प्रयोग कार्य कराते हुए सभी प्रतिभागियों से प्रयोग करवाए। डॉ. बिजू ने google Image, Flicker, के बारे में भी जानकारी दी। इसी क्रम में उन्होंने Xerte तथा लर्निंग एक्टिविटी मैनेजमेंटसिस्टम (LMS) के बारे में बताया।

यह सत्र प्रतिभागियों के लिए बहुत ही उर्वरक तथा फलदायी सिद्ध हुआ। सभी प्रतिभागियों ने प्रयोग कार्य कर ई- पाठ्य सामग्री विकास के लिए जरूरी ऑनलाइन उपकरणों का प्रयोग करना सीखा। सत्र का संचालन श्री गौरी शंकर ठाकुर ने किया। सत्र के अंत में सौरभ कुमार (शोधार्थी) ने विषय विशेषज्ञ महोदय का धन्यवाद ज्ञापन दिया।

तृतीय सत्र

तृतीय सत्र की शुरुआत में विषय-विशेषज्ञ **डॉ. वैभव जाधव** *(सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे)* को विभाग की सहायक प्राध्यापिका **डॉ. शिल्पी कुमारी** के द्वारा स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। इसके बाद कार्यशाला की शुरुआत हुई। जिसमें विषय विशेषज्ञ डॉ. वैभव जाधव के द्वारा पी.पी.टी के माध्यम से swayam के बारे में बताया गया। इसके पहले पिछले चार दिनों से कार्यशाला में जो भी गतिविधियाँ हुई थी। उससे संबंधित भी महोदय के द्वारा उन विषयों पर संक्षिप्त चर्चा हुई। जिसमें कि महोदय के द्वारा 'मूक्स' क्या है?, किसे मूक्स कहते है? इस पर भी महोदय के द्वारा चर्चा किया गया। स्वयं पर किस प्रकार से पंजीकरण किया जाता है, इसके बारे में भी बताया गया और स्वयं से संबंधित महोदय के द्वारा वीडियो भी दिखाया गया। इसके बाद presentation tube और कितने समय का वीडियो बनाना है, कैसे बनाना है, इसके बारे में भी महोदय के द्वारा बताया गया। फिर उन्होंने future learn, Edmodo, GCED ऑनलाइन कैम्पस क्लोबल सिटिज़न एडुकेशन आदि के बारे में बताए। इसके बाद future learn और Edmodo जैसे सॉफ्टवेयर पर सभी प्रतिभागियों से प्रायोगिक कार्य करवाए। महोदय के द्वारा एक ब्लॉग https://hamsaredy.blogspots.com के बारे में भी बताया गया। इसके बाद अंत में तृतीय सत्र का समापन हुआ और अंत में फोटो सेसन हुआ। सत्र के संचालन सौरभ कुमार (शोधार्थी) ने किया। सत्र के अंत में गौरीशंकर ठाकुर (शोधार्थी) ने विषय विशेषज्ञ महोदय का धन्यवाद ज्ञापन दिया।

विषय-विशेषज्ञ **डॉ. वैभव जाधव** *(सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे)* अपना व्याख्यान देते हुए|

समापन सत्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के श्यामा प्रसाद मुखर्जी भवन के शिक्षा विद्यापीठ में **"अध्यापक शिक्षा के लिए ई- पाठ्य- वस्तु एवं मूक्स का विकास"** विषय पर पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का संपूर्ति समारोह का आयोजन हुआ। कार्यशाला के संपूर्ति समारोह में प्रति-कुलपति-सह संरक्षक **डॉ. चंद्रकांत एस. रागीट**, विभागाध्यक्ष-सह-कार्यशाला निर्देशक **डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर**, कार्यशाला आयोजन सचिव सह-प्राध्यापक डॉ. शिरीष पाल सिंह, कार्यशाला संयोजक सहायक प्राध्यापक डॉ. शिल्पी कुमारी मंचासीन रहे। संपूर्ति वक्तव्य स्वरूप विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए प्राध्यापकों व शोधार्थियों से कार्यशाला को लाभप्रद बनाने व सहभागिता के साथ इसे अर्थपूर्ण बनाने के लिए सबका आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा सही मायनों में विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग ने पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक तथा शिक्षण मिशन का संपूर्ण उपयोग किया है। कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कार्यशाला समन्वयक **डॉ. शिल्पी कुमारी** ने बताया कि कार्यशाला में 15 राज्यों के 67 प्रतिभागी शामिल रहे तथा कुल 8 विषय विशेषज्ञों ने कार्यशाला के औपचारिक सत्रों का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए माननीय प्रति कुलपति **डॉ. चंद्रकांत एस. रागीट**

कार्यशाला के अंतिम सत्र में सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे से पधारे विषय-विशेषज्ञ में **डॉ. वैभव जाधव** ने कहा कि कक्षा में तकनीकी के प्रयोग से शिक्षक का स्थान खाली नहीं हो सकता अपितु तकनीक शिक्षक को मजबूत करने का काम कर रही है। कार्यशाला के संपूर्ति समारोह में प्रति-कुलपति-सह संरक्षक **प्रो. चंद्रकांत एस. रागीट** ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कार्यशाला को सराहा तथा सभी प्रतिभागियों से अपने-अपने क्षेत्र में कार्यशाला के सार के साथ प्रज्वलित दीपक को रोशन रखने का आव्हान किया। इसके उपरांत बाह्य प्रतिभागियों में **प्रो. शाहिर सिद्दीकी** *(सहायक प्राध्यापक, तेजपुर विश्वविद्यालय, असम)*, **डॉ. चंद्रा तिवारी** *(गार्गीकॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)* ने प्रतिपुष्टि दी। कार्यक्रम के अंत में कार्यशाला आयोजन सचिव सह-प्राध्यापक डॉ. शिरीष पाल सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा विभाग के शोधार्थियों का उत्साहवर्धन किया। संपूर्ति सत्र का कुशल संचालन डॉ. संजीव राज *(सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग)* ने किया। अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

शिक्षा विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा